काका कालेलकर

स्मरण-यात्रा

[बचपनके कुछ संस्मरण]

काका कालेलकर

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – ९

पहली आवृत्ति ३०००

साढ़े तीन रुपये

अप्रैल १९५९

श्री सीतारामजी सेकसरियाको
जिनका भावुक स्वभाव और सेवामय जीवन
मुझे हमेशा आह्लादित करते आये हैं।

अनुक्रमणिका

१ प्रयोजन और परिचय

बचपनमें हमने जो जीवन बिताया, अुसे संस्मरणोंके रूपमें फिरसे जीनेमें अेक तरहका आनंद रहता है। जीवन-यात्राकी मंजिल बहुत कुछ तै हो जानेके बाद जिस तरह स्मरण द्वारा अुसे फिरसे दोहरानेको ही मैं स्मरण-यात्रा कहता हूँ। मेरे जीवनके लगभग छठे बरससे लेकर अठारहवें बरस तकका हिस्सा जिस स्मरण-यात्रामें आ जाता है।

लेकिन मेरी यह स्मरण-यात्रा कोअी आत्मकथा नहीं, बल्कि बीच-बीचमें याद आये हुअे जीवन प्रसंगोंका अेक संग्रह मात्र है। जिसमें यह जिरादा भी नहीं है कि जीवनके महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों या समय-समय पर आये हुअे गहरे अनुभवोंको दर्ज किया जाय।

शिक्षकके नाते बालकों तथा युवकोंके पवित्र सहवासमें जिसने बहुत दिन बिताये हैं, वह जानता है कि बालकों तथा युवकोंके मनसे संकोचको दूर करके अुन्हें अपने विषयमें बोलनेको प्रवृत्त करना हो, अुनके प्रति हमारी सहानुभूति प्रकट करनी हो या अुन्हें आत्मपरीक्षणकी कला सिखानी हो, तो जिन स्वाभाविक साधनोंका प्रयोग हम कर सकते हैं अुनमें से अेक महत्त्वका साधन यह है कि हम अपने निजी बचपनका प्रांजल अेवं निःसंकोच निवेदन अुनके सामने पेश करें। बचपनमें हमने आशा-निराशाओंका अनुभव किया, अुस वक्त हमारा मुग्ध हृदय कैसे छटपटाता रहा और नये-नये काव्यमय प्रसंग पहली बार हमें कैसे आकर्षित करते गये आदि बातोंका यथार्थ वर्णन अगर हम करें तो बच्चोंका हृदय-कमल अपने आप खिलने लगता है। अपने गुण-दोष, जय-पराजय कभी कभी मनमें आये हुअे क्षुद्र अहंकार, और सहज रूपसे होनेवाले स्वार्थत्याग आदिका हू-ब-हू चित्र अगर हम अुनके सामने खींच दें, तो अुनको असाधारण आनंद मिलता है। क्योंकि अुससे बालकोंको अैसा लगने लगता है कि जिन

बुजुर्गोंका जीवन भी हमारे जीवन जैसा ही था, अतः वे लोग हमारे मानसको आसानीसे ठीक-ठीक समझ पायेंगे। इतना ही नहीं, वे सहानुभूतिके साथ उस पर विचार भी कर सकेंगे।

जब कोअी नया राष्ट्र जन्म लेता है, तो वह दुनियाके सब पुराने राष्ट्रों पर यह जाहिर कर देता है कि 'हम नये नये पैदा हुए हैं, हमारे अस्तित्वको आप लोग स्वीकार करें।' जब मुख्य मुख्य राष्ट्रोंसे उस नये राष्ट्रको स्वीकृति मिलती है, तब उसे धन्यताका अनुभव होता है और यह आत्मविश्वास भी पैदा होता है कि दुनियामें हम भी कोअी हैं।

बच्चों और युवकोंकी भी हालत असी ही होती है। यह देखकर उन्हें बड़ी तसल्ली होती है कि उनके अनुभव, उनकी रुचियाँ, उनकी महत्वाकांक्षायें और उनका बचपन — जिनमें से कुछ भी असाधारण नहीं है, उन्हींके जैसे और भी बहुतेरे हैं, बल्कि मानव-जाति युगोंसे उनके जैसा ही अनुभव लेकर और उन्हींके जैसे आघातोंको सहकर जीवन-समृद्ध होती आयी है। उन्हें असा लगता है कि उनका महत्व यथोचित है, जो चीज दूसरे लोग कर सके उसे वे भी कर सकेंगे। और इस तरह उनका आत्मविश्वास बढ़ने लगता है।

जहाँ तक मेरा संबंध है, अपने जीवन-प्रसंगोंको बिलकुल प्रामाणिक शब्दोंमें युवकोंके सामने पेश करके मैंने कभी मुग्ध हृदयोंको खोल दिया है। जब अन्य किसी प्रकारकी मदद न दे सका उस समय भी मैं उन्हें सहानुभूतिकी मूल्यवान मदद दे सका हूँ।

यह बात नहीं कि प्रत्येक संस्मरणमें कोअी बड़ा भारी बोध यानी नसीहत, विचारोंका गांभीर्य या काव्यमय चमत्कृति होनी ही चाहिये। प्रत्येक संस्मरणसे यदि मुग्ध हृदयका अेक भी तार छेड़ा गया और उससे मुस्कराती या भीगी हुअी आँखोंसे यह स्वीकृति मिल गयी कि 'हाँ, मुझे भी असा ही अनुभव हुआ था।' तो काफी है।

हमारे देशमें जीवन चरित्र लेखन बहुत कम पाया जाता है। हमारे लोग माहात्म्य लिखते हैं स्तोत्र लिखते हैं, लेकिन जीवनियाँ नहीं लिख सकते। जहाँ दूसरोंकी जीवनियोंके बारेमें अैसा अभाव हो वहाँ आत्म कथाकी तो बात ही क्या? तुकाराम महाराजने अपने बारेमें दस-पाँच अभंग लिखनेमें भी कितनी अरुचि अेवं संकोच प्रकट किया था!

पहले मुझे अैसा लगा कि हम लोग जीवनियाँ लिख ही नहीं सकते। लेकिन 'स्मरण-यात्रा' के कुछ अध्याय पढ़कर कभी मित्रोंने अुस पर जो आलोचना की अुसे सुनकर यह बात मेरे ध्यानमें आ गयी कि आत्मकथा या आपबीती लिखना तो हमारी संस्कृति अेवं सभ्यताको मंजूर ही नहीं। लालची मनुष्यके द्वारा आसानीसे होनेवाले अनेक पापोंकी परम्परा गिनाते हुअे बिल्कुल हद या चरम सीमाके तौर पर भर्तृहरिने अपने अेक श्लोकमें 'निजगुणकथापातक' का जिक्र किया है।

आदमी अपनी आत्मकथा लिखे या न लिखे अिसकी चर्चा करके गांधीजीने अपना फ़ैसला दे ही दिया है। मेरा अपना खयाल यह है कि श्रेष्ठ अेवं असाधारण विभूतियाँ ही नहीं, बल्कि अत्यंत साधारण, निर्विशेष प्राकृत व्यक्ति भी अगर प्रांजलतासे, खास शिष्टाचारोंकी पाबन्दियोंमें रहकर आत्मकथायें लिखें तो वह अिष्ट ही होगा।

हरअेक मनुष्यके पास यदि कोअी सबसे क़ीमती चीज़ हो, तो वह अुसका अपना अनुभव है। यदि कोअी सहृदयतापूर्वक अपना अनुभव हमें देना चाहता है तो हम क्यों न अुसका स्वागत करें? मतलबी प्रचारकों द्वारा लिखे गये अितिहास और जीवनियाँ पढ़नेकी अपेक्षा अेक सच्ची आत्मकथा पढ़नेसे हमें ज़्यादा बोध मिलता है। और यदि हमारी अभिरुचि कृत्रिम न बन गयी हो, तो किसी अुपन्यासकी अपेक्षा अैसी आत्मकथामें हमें कम आनन्द नहीं मिलना चाहिये। लेकिन मुश्किलकी बात तो यह है कि बहुतेरे लोग अपने

अनुभवोंको अैसे रूपमें पेश ही नहीं कर सकते कि दूसरे लोग अुन्हें समझ सकें।

लेकिन मेरे लिअे तो स्मरण-यात्राके संबंधमें अितना भी बचाव करनेकी आवश्यकता नहीं क्योंकि जैसा मैंने शुरूमें कहा है यह आत्मकथा है ही नहीं।

किसी किसीको अिस स्मरण-यात्रामें कहीं-कहीं आत्मप्रशंसाकी बू आयेगी। अुसके लिअे वे मुझ पर नाराज हों अुसके पहले मैं अुनसे अितना ही कहूँगा कि मैं जानता हूँ, आत्मप्रशंसासे मनुष्यकी प्रतिष्ठा बढ़ती नहीं बल्कि घटती ही है। मनुष्य जब अपने ही मुँह मियाँ मिट्ठू बनने लगे तो अुसकी छाप अच्छी तो पड़ ही नहीं सकती बल्कि लोग तुरन्त ही साशंक होकर कहने लगते हैं कि आखिर अपने ही मुँहसे अपने आपको दिया हुआ यह प्रमाणपत्र है न?

अितना सजग भान होते हुअे भी जब मैंने कुछ लिखा है तो वह अन्धेकी तरह नहीं बल्कि स्पष्ट जोखिम अुठाकर ही लिखा है। पाठक यदि बारीकीसे जाँच-पड़ताल करेंगे, तो अुन्हें दिखाअी देगा कि जिन प्रसंगोंमें यह सब आया है वे बिलकुल सामान्य है। अुनमें आत्म प्रशंसा करने जैसा कुछ भी नहीं है। फिर बचपनकी बातोंमें अैसा क्या हो सकता है, जिसके कारण मुझ अपनी तटस्थताका त्याग करनेका मोह हो सके? मुझे अपने श्रोताओं तक पहुँचनेके लिअे जितनी स्वाभाविकताकी आवश्यकता जान पड़ी है अुतनी ही स्वतंत्रताका अुपभोग मैंने निःसंकोच होकर किया है। ये संस्मरण मसीहत बननेके अिरादेसे नहीं बल्कि सिर्फ सहानुभूति पैदा करनेके अुद्देश्यसे प्रेरित होकर लिखे गये हैं। बहुत बार नीतिबोधकी अपेक्षा हृदय-परिचय ही ज्यादा मददगार और संस्कारक साबित होता है।

यहाँ जितने भी संस्मरण दिये गये हैं वे सब युवकोंके लिअे ही हैं। यदि अिन्हें दूसरोंको पढ़ना हो और अुन्हें अिनमें की

हुअी आत्मप्रशंसा अखरती हो, तो अुनसे मेरा निवेदन है कि वे जिन्हें काल्पनिक मानकर पढ़ें ताकि पढ़ते समय रंगमें भंग न हो।

राष्ट्र-सेवककी हैसियतसे कार्य करते समय 'स्मरण-यात्रा' लिखने जितना समय मिलना या वैसा संकल्प मनमें पैदा होना संभव नहीं था। लेकिन बीमार पड़नसे जब जीवन-यात्राकी गति रुक गयी तब मुझे मनोविनोदके तौर पर यह स्मरण-यात्रा लिख डालनेकी प्रेरणा हुअी। यदि मेरे तरुण मित्र और साथी श्री चन्द्रशंकर शुक्लने अिसमें मुझे अुत्साहित न किया होता तो यह पुस्तक मैं लिख नहीं पाता। अिस पुस्तकका जितना श्रेय श्री चन्द्रशंकर शुक्लको है, अुतना ही मेरी बीमारीको भी है। बीमारीकी फुरसत भोगनके लिअे लाचार न हो जाता तो अैसे आत्मलक्षी लेखोंके पीछे समय खर्च करनका मुझे हक़ नहीं मिलता।

जब जब अिन प्रकरणोंको मैं पढ़ता हूँ अथवा अिनके बारेमें मित्रोंको बातचीत करते सुनता हूँ तब तब मुझे अैसे ही कभी विविध प्रसंग याद आते हैं। यदि अुन सबको लिखने बैठूं तो अिस स्मरण यात्राके बराबर समानान्तर अैसी जमानेकी दूसरी स्मरण-यात्रा आसानीसे तैयार हो सकती है। जीवनके अुसी कालके संबंधमें यदि नये संस्मरण आजकी मनोवृत्तिमें लिखे जायें, तो अेक नयी चीज आसानीसे दिखाअी दे सकती है। अेक ही जीवनके अेक ही कालके दो प्रामाणिक बयान भिन्न भिन्न कालमें और भिन्न-भिन्न वृत्तिसे लिखे जायें तो यह देखकर आश्चर्य होगा कि अुनमें अेकता होते हुअे भी कितनी भिन्नता आ सकती है। और अुससे हमें अिस बातका कुछ खयाल हो सकता है कि साहित्यमें सोनेकी अपेक्षा सुनारका ही असर कितना अधिक होता है।

जीवनके जिस कालके प्रसंग यहाँ दिये गये हैं अुस कालका मेरा जीवन ज्यादातर कौटुम्बिक था। सामाजिक तो वह लगभग था ही नहीं। व्यापक सामाजिक जीवनका स्पष्ट खयाल तो कॉलेजमें आनेके

बाद ही पैदा हुआ। कॉलिजके अुन चार-पाँच वर्षोंकी अवधिमें सिर्फ़ व्यापक सामाजिक धार्मिक अेवं राजनैतिक जीवनका आकलन ही नहीं हुआ बल्कि जीवनके अनेक अंग-अुपांगोंके बारेमें मेरे आदर्श भी कम या अधिक मात्रामें निश्चित हुअे। अुस वक्तका मनोमंथन और जीवन-दर्शनका नाविन्य अेवं कुतूहल यदि शब्दबद्ध किया जाये तो वह मुसी अवस्थासे गुजरनेवाले लोगोंके लिअे कुछ-न-कुछ अुपयोगी अवश्य हो सकता है।

जिस पुस्तकके मूल लेख कालक्रमसे नहीं लिखे गये थे। जैसे जैसे प्रसंग याद आते गये, वैसे-वैसे मैं लिखता गया। बादमें जिन प्रकरणोंको कालक्रमके हिसाबसे जमानेमें अनेक कठिनाअी अुपस्थित हुअी। कहीं-कहीं स्थान और मनुष्योंका अुल्लेख आदि पहले आता है और अुनके बारेमें प्राथमिक परिचय देनेवाले वाक्य बादमें आते हैं। अुस सबको सुधारने और आवश्यकता होने पर फिरसे लिखनेका समय पहली आवृत्तिके समय न होनेके कारण पाठकोंसे क्षमा माँगी गयी थी। जिस आवृत्तिमें मुझे वैसी क्षमा माँगनेका अधिकार नहीं है फिर भी मुझे कहना तो होगा ही कि जिस बार भी वे आवश्यक सुधार मैं नहीं कर पाया हूँ। यद्यपि छोटे बड़े सभी प्रकरण साधारणतः कालक्रमके हिसाबसे जहाँ जमाने चाहिये जमा दिये गये हैं। मेरा विचार तो था कि जिन सारे प्रकरणोंमें थोड़ी बहुत काट-छाँट करके अमुक हिस्सा तो निकाल ही दूँ, लेकिन वह भी मैं नहीं कर पाया। मालीकी कठोरता और कुशलता जब जिन हाथोंमें आयेगी और जब अुसकी ऋतु आयेगी तब जिसमेंका कुछ हिस्सा निकाल डालनेकी अभी भी मेरी जिच्छा है। लेकिन वह हो जाय तब सही।

८४'४०

सतोष

जीवन-यात्राका अेक बार स्मरण करके स्मरण-यात्रा लिख डाली और अिस प्रकार जीवन रसको दूना बनानका आनन्द प्राप्त किया। अब अिस स्मरण-यात्राको फिरसे छपवाते समय अिसका स्मरण करते हुअे मन रसिक न रहकर समालोचक बन गया है।

अिसलिअे अेक विचार यहाँ पर दर्ज कर देना चाहिये। क्या अैसे साहित्यका दरअसल कुछ अुपयोग भी है? अिसका जवाब लेखक भी दे सकता है और पाठक भी। लेखक प्रधानत अपने दिलकी प्रवृत्तिके अनुसार जवाब दे सकता है। पाठक अिसमें से अुन्हें कोअी रस मिलता है या नहीं कोअी जानकारी मिलती है या नहीं, अिस आधार पर अपनी राय बतला सकते हैं। यदि साहित्यके द्वारा भाषा सुधरती हो और मानवीय अनुभव, भावनाअें कल्पनाअें या अनुमान व्यक्त करनेकी भाषाकी शक्ति बढ़ती हो तो भाषाभक्त अुस कारणसे भी अैसे साहित्यका स्वागत अवश्य करेंगे।

मैं तो केवल समाजशास्त्रके विद्यार्थीके नाते तटस्थ भावसे अिस प्रश्न पर विचार करता हूँ।

कहा जाता है कि बॉसवेलने अंग्रेज विद्वान् जॉनसनका जो जीवन चरित्र लिखा है, अुसमें अुसने भक्तकी तरह कभी छोटी-छोटी बातें भी भर दी हैं। आज पढ़ित जॉनसनको जाननेकी लोगोंकी अिच्छा बहुत कम हो गयी है। बॉसवेलके स्वभावमें रही हुअी अन्ध भक्ति और विभूति-पूजाकी आलोचना करते करते भी समाज थक गया है। आज जो लोग बॉसवेल लिखित जॉनसनकी जीवनी पढ़ते हैं, वे जॉनसनके बारेमें अधिक अच्छी जानकारी प्राप्त करने या बॉसवेलकी मनोवृत्तिको समझनेके लिअे नहीं, बल्कि अिसलिअे पढ़ते हैं कि अुसमें जीवनी लिखनेकी कलाको विकसित करनका अेक नमूना देखनेको मिलता है। और अिससे भी अधिक तो वह पुस्तक अठारहवीं सदीके अिंग्लैण्डकी सामाजिक स्थितिका हू-ब-हू चित्र प्राप्त करनेके लिअे ही आज पढ़ी जाती है। आजका विवेचक मानवीय मन किसीके गढ़े-गढ़ाये अितिहासको पढ़नेकी अपेक्षा अैसे कच्चे दस्तावेजोंके मसालेको जिसके आधार पर अितिहास रचा जा सकता है, जाँचकर अपने आप

अिच्छा होती है, वैसा रस मुसे कभी-कभी मिलता भी है। फिर भी सामान्य मनुष्य विचार तो अपना ही करता है। सामान्य मनुष्यके लिअे यदि दुनियामें स्थान हो, तो अुसके संस्मरणोंको भी साहित्यमें स्थान मिलना चाहिये, बशर्ते कि अुससे हम अूब न जायें।

जब मैं अिस दृष्टिसे विचार करता हूँ तो मेरी पुस्तकके सम्बन्धमें चिन्ता मिट जाती है। क्योंकि साधारण मनुष्यने स्मरण-यात्राके दूसरे संस्करणकी माँग करके अपना अुत्तर दे दिया है। मुझे अिससे सन्तोष है।

२६-३-४०

स्मरण-यात्रा मूल गुजरातीमें लिखी थी। अनेक बरसोंके बाद मन अुसका मराठी अनुवाद किया। अिसके हिन्दी अनुवादके कअी प्रयत्न हुअे। लेकिन अेक मित्र अनुवाद करते तो दूसरेको वह पसन्द न आता और मैं अुदासीन रहता। अैसी हालतमें बेचारी स्मरण-यात्रा चल न सकी। आखिरकार नवजीवन प्रकाशन मंदिर अुत्साहके साथ अिसे पूरा करवाकर हिंदी जगत्‌के सामने घर रहा है। अनुवाद मैं देख जानेवाला था, लेकिन वैसा नहीं कर सका। नवजीवन प्रकाशन मंदिरने श्री सुधार्लासिंह चौहानसे अनुवाद करवाया और सारा अनुवाद फिरसे देख जानेका काम मेरी ओरसे श्री श्रीपाद जोशीने किया। अिस तरह यह अनुवाद हिंदी जगत्‌के सामने रखा जा रहा है।

गुजरातीमें या मराठीमें अिस चीजको पाठकोंके सामने धरते मुझे अुतना संकोच नहीं हुआ था जितना हिंदी जगत्‌के सामने धरते हुअे हो रहा है। गुजरात और महाराष्ट्रके लोग मेरी सब तरहकी विविध प्रवृत्तियोंके साथ मुझे पहचानते हैं। हिंदी जगत्‌ने मुझे केवल हिंदी प्रचारककी हैसियतसे ही पहचाना है। हिंदी जगत् मुझ पर कभी राजी भी हुआ है कभी नाराज भी। जो गांधीजी महात्माजीके प्रति वह व्यक्त नहीं कर सकता था अुसके लिअे अुसने मुझे निशाना भी बनाया था। लेकिन सबक अपनी सेवानिष्ठाम विचलित क्यों हो?

मैंने अूपर कहा ही है कि सामान्य मनुष्यके सामान्य अनुभवोंको मैंने यहाँ वाणीबद्ध किया है। सामान्य मनुष्यको अगर अिसमें कुछ आनंद मिले तो मुझे संतोष है।

१५ मार्च १९५३ काका कालेलकर

स्मरण-यात्रा

१

मेरा नाम

छोटे बच्चोंसे जब अुनका नाम पूछा जाता है, तो अक्सर शर्मसे या संकोचवश वे अपना नाम नहीं बताते। तब मैं मजाकमें अुनसे कहता हूँ दरअसल तुमको अपना नाम याद ही नहीं है। जब छोटे बच्चे सो जाते हैं तो नींदमें अपना नाम भूल जाते हैं और जाग जाने पर जब कोअी अुन्हें अुनके नामसे पुकारता है तब अुन्हें अपना नाम याद आ जाता है। आज सुबहसे तुमको किसीने पुकारा न होगा अिसलिअे तुम्हें अपना नाम याद नहीं आ रहा है। क्यों, है न? अैसा कहनेसे कुछ बच्चे जोशमें आकर कह देते हैं जी नहीं मुझे अपना नाम अच्छी तरह याद है।

क्या सचमुच तुमको अपना नाम याद है? फिर बताओ तो सही!

मेरी यह तरकीब निश्चित रूपसे सफल हो जाती है और वह बच्चा अपना नाम बता देता है। लेकिन अेक बार अेक गुम्मे लड़केसे पाला पड़ गया। जब अुसने मेरा यह शास्त्रोक्त प्रश्न सुना कि क्या तुम अपना नाम भूल गये? तो अुसने अपने गालोंको फुलाकर अेवं आँखोंमें गंभीरता लाकर गर्दन हिलायी और कहा 'जी हाँ, मैं अपना नाम भूल गया हूँ।' मैंने मुँहकी खायी लेकिन किसी तरह लीपा-पोती करनेके विचारसे मैं बोला अरे, यह तो बड़े अफ़सोसकी बात है! है कोअी यहाँ जो आकर अिस बेचारेको अुसका नाम बता दे? मगर वह लड़का भी बड़ा चंट था। अुसने यह देखनेके लिअे चारों ओर नजर दौड़ायी कि क्या सचमुच अुसका नाम बतानेके लिअे कोअी आ रहा है?

~आज यद्यपि मैं बड़ा हो गया हूँ किसीके न पूछने पर भी अपना नाम बतानेवाला हूँ। मैं नहीं जानता कि मैंने अपना नाम पहले पहल कब सुना। यह मैं कैसे बता सकता हूँ कि यही मेरा नाम है अिसकी जानकारी मुझे किस तरह प्राप्त हुअी? किन्तु पशुपक्षियोंको जो नाम हम देते हैं अुसे वे भी पहचानने लगते हैं। अिसका मतलब यही हुआ कि अपने नामको पहचाननेके लिअे बहुत अधिक बुद्धिमत्ताकी आवश्यकता नहीं होती होगी। अिस संबंधमें अगर किसी शास्त्रीसे पूछा जाय तो बड़े प्रतिष्ठित स्वरमें वह कहेगा, 'भूय अवमत नाम-ग्रहणम्।'

जहाँ अक्ल नहीं चलती वहाँ हम संस्कृतको बता देते हैं!

हमारे नाम बहुधा हमारे जन्मनक्षत्रके अक्षरों परसे रखे जाते हैं। पंचांगमें 'अवकहड़ा चक्र' नामका अेक गोल चक्र होता है। अुस चक्रके किनारे पर ठीक वर्णमालाके जैसे अक्षर लिखे हुअे होते हैं और अन्दरके खानेमें नक्षत्र, राशियाँ, गण, नाड़ियाँ आदि अनेक बातें दी जाती हैं। प्रत्येक नक्षत्रके हिस्सेमें चार चार अक्षर आते हैं। अुनमें से किसी अेक अक्षरको आद्य अक्षर मानकर अपनी पसंदका नाम रखनेका रिवाज हमारे यहाँ है। यह काम आम तौर पर जन्मपत्री बनानेवाले जोशी या पुरोहित किया करते हैं।

लेकिन मेरा नाम अिस पुराने ढंगसे नहीं रखा गया। मेरे जन्मसे कुछ दिन पहले अेक साधु हमारे यहाँ आया था। अुसने मेरे पिताजीसे कहा, "अिस बार भी आपके यहाँ लड़का ही पैदा होगा। अुसका नाम आप दत्तात्रेय रखिये, क्योंकि वह श्री गुरु दत्तात्रेयका प्रसाद है।" मेरे पिताजीने अुस साधुसे कुछ दान ग्रहण करनेको कहा तो अुसने कुछ भी लेनेसे अिनकार कर दिया और वह बोला, "आपके यहाँ लड़का पैदा होने पर हर गुरु द्वादशीके दिन आप बारह ब्राह्मणोंको अवश्य भोजन करवाअियेगा।" जब तक मेरे पिताजी जीवित रहे हमारे यहाँ प्रति वर्ष कार्तिकी कृष्णा द्वादशी (गुरु द्वादशी) के दिन बारह ब्राह्मणोंकी यह 'समाराधना' होती रही।

मुझे लगता है कि प्रत्येक व्यक्तिको अपना नाम स्वयं चुननेका अधिकार होना चाहिये। कभी लोगोंको खुद पसन्द न आनेवाला नाम सारी जिन्दगी मजबूरन् बर्दाश्त करना पड़ता है। अिस बारेमें लड़कियोंको कुछ हद तक खुशकिस्मत समझना चाहिये क्योंकि ब्याहके समय अुनके नाम बदले जाते हैं लेकिन अुस वक्त भी अुन्हें अपना नया नाम चुननेकी आजादी कहाँ होती है!

अगर मुझे अपना नाम चुननेके लिअे कहा जाता, तो मैं नहीं कह सकता कि मैं कौनसा नाम पसन्द करता। लेकिन मुझे अितना तो सन्तोष है कि मेरा नाम सुदूर आकाशके तटस्थ तारोंके हाथमें न रहकर मेरे प्रेमल माता-पिताके हाथमें रहा और अुन्होंने फलित ज्योतिषकी शरणमें न जाकर अेक विरागी भक्तके सुझावको स्वीकार किया।

बड़ी अुम्रमें अेक बार अेक आदरणीय व्यक्तिने मेरे नामका महत्त्व मुझे समझाते हुअे निम्नलिखित पंक्तियाँ कही थीं —

'आपणासि करि आपण दत्त।
श्रीपती म्हणति यास्तव दत्त।

अुस दिन मुझे मालूम हुआ कि अपने जीवनको समर्पित कर देनेसे ही दत्त नाम सार्थक होगा। अपना सर्वस्व समर्पित करना किसी चीजका लोभ न रखना स्वात्मार्पण करना — अिस वृत्तिको यदि मैं अपनेमें पैदा कर सका, अिस आदर्शको अगर मैं अपने मनमें और जीवनमें अपना सका तभी मेरा दत्त नाम सार्थक होगा यह मैं जानता हूँ। लेकिन आज भी मैं यह नहीं कह सकता कि अिसके अनुसार मैं अपना जीवन बिता सका हूँ या अुस दिशामें जा रहा हूँ। अतः मेरे अिस नामके साथ अेक प्रकारका विषाद हमेशा ही रहता आया है।

दत्त और आत्रेय मिलकर दत्तात्रेय शब्द बना है। अत्रि ऋषिका लड़का ही आत्रेय है। त्रि यानी त्रिगुण — सत्त्व रज तम। जो अिन तीनों गुणोंसे परे हो गया है त्रिगुणातीत बन गया है यह है अ त्रि ऋषि। असूयारहित अनसूयाके पेटसे त्रिगुणातीत अत्रि

स्त्रीने जिस पुत्रको जन्म दिया हो वह स्वार्पण करके ही तो अपने जीवनको सार्थक और कृतार्थ बनायेगा।

लेकिन जिस दुनियामें नामके अनुसार गुण सर्वत्र कहाँ पाये जाते हैं?

२

दाहिना या बायाँ?

घरमें जो लड़का सबसे छोटा होता है वह जल्दी बड़ा नहीं होता। मेरी स्थिति वैसी ही थी। अपने हाथसे भोजन करना भी सीखना पड़ता है जिसका खयाल तक मुझे नहीं था। माँ खिलाती थीं भी खिलाती या भाभी खिलाती। कभी बार बाबा (बड़े भाजी) चिढ़कर कहते जितना बड़ा भूँट जैसा हो गया है लेकिन अभी तक अपने हाथसे नहीं खाता। वैसी बातें सुनकर मुझे बुरा तो लगता लेकिन जितनी टीका टिप्पणी होने पर भी मेरे दिमागमें यह बात कभी नहीं आयी कि अपने आचरण या आदतमें कुछ परिवर्तन करनेकी जरूरत है।

अेक बार घरके सब लोगोंने अेक षड्यंत्र रचा। सारे दिनकी भुछल-कूदके बाद मैं शामको थककर सो गया था। वहाँसे अुठाकर मुझे रसोईघरमें ले जाया गया। परोसी हुवी अेक थाली मेरे सामने रखी गयी। फिर मेरे तीसरे भाजी विष्णुने चीमीको बुलाकर कहा 'चीमी जिस थालीमें भात-दाल मिलाकर तैयार कर।' चीमी मेरी भतीजी मुझसे डेढ़ वर्ष छोटी थी। अुसने दाल-भात मिलाकर तैयार किया। फिर विष्णुने चीमीसे कहा 'अब जिस दत्तूको खिला!' चीमी अेक निवाला हाथमें लेकर मेरे मुँहके सामने लायी। मैंने हमेशाकी आदतके मुताबिक भोलेपनसे मुँह खोलकर वह निवाला ले लिया। अचानक तालियोंकी आवाज गूँज अुठी। सब खिलखिलाकर हँसने लगे और चिल्लाने लगे 'भतीजी काकाको खिला रही है, फिर भी जिस शर्म

नहीं आती ! ' तब कहीं मुझ पता चला कि मेरी फजीहत हो रही है। मैं झेंप गया और मैंने दूसरा निवाला लेनेसे अिनकार कर दिया। मैं हड़बड़ाकर भाग गया और अुसी वक्त मैंने अपने हाथसे खानेका निश्चय कर लिया।

लेकिन किस हाथसे खाया जाता है यह किसे पता था ? म असमंजसमें पड़ गया। सामने बैठे हुअे लोगोंकी ओर देखा और अुनका अनुकरण करनेकी कोशिशमें मैंने अपना बायाँ हाथ थालीमें डाला। जिस तरह अमीनेमें देखते समय दायें-बायेंकी गड़बड़ी होती है, अुसी तरह मेरी हालत हुअी। विष्णुने फिर ताना कसा 'देखो अिस चोंड़ेको अबतक यह भी नहीं मालूम कि अपना दाहिना हाथ कौन-सा है और बायाँ कौन-सा !

फिर तो म पिताजीके पास बैठकर भोजन करने लगा। दो तीन बार हाथोंकी गड़बड़ी होने पर मैंने मनमें तय किया कि अिस शास्त्रमें निजी बुद्धि किसी कामकी नहीं। तब तो रोजाना खाना शुरू करनेसे पहले मैं पिताजीसे साफ साफ पूछ लेता कि मेरा दाहिना हाथ कौन-सा है ? जहाँ दाहिना हाथ अेकबार जूठा हो गया कि फिर अपने राम निश्चिन्त हो गये।

अेक दिन अचानक ही मेरे दिमागने अेक आविष्कार कर लिया। मेरे दाहिने कानमें दो मोतियोंकी अेक बाली थी। अुस परसे मैंने यह सिद्धान्त बना लिया कि जिस तरफके कानमें बाली है वह दाहिनी बाजू है अुस तरफके हाथसे खाया जाता है। अिस आविष्कारके बाद मैंने पिताजीसे फतवा माँगना छोड़ दिया। खाना शुरू करनेसे पहले मैं दोनों कानोंको टटोलकर देख लेता और जिस कानमें मोतियोंका स्पर्श होता अुस ओरके हाथसे भोजन करना शुरू कर देता। मेरे अिस आविष्कारकी तरफ किसीका ध्यान नहीं गया क्योंकि अपनी हँसी होनेके डरसे मैं बड़ी होशियारीसे यह काम चुपचाप निबटा लेता था।

* * *

बचपनमें हमें बूट पहनने पड़ते थे। वास्तवमें हमारा खानदान पुराने ढंगका था। असुसमें अंग्रेजी फैशन घुस न पाया था। अंग्रेजी फैशनके साथ जो अेक तरहकी अकड़ होती है और गरीबोंके प्रति तुच्छताका जो भाव रहता है वह हमारे घरमें लानेवाला कोअी नहीं था। फिर भी औरोंकी दशा देखी कभी विदेशी वस्तुअें तो हमारे घरमें पैठ ही गयी थीं। मेरे नसीबमें अेक रेशमी चोगा और विलायती बूट पहनना बदा था। चोगा पहननेमें तो ज्यादा कठिनाअी नहीं होती थी। थोड़ी-सी जबर्दस्ती करने पर अुसके बटन लग जाते थे। लेकिन बूटोंमें दाहिना और बायां जैसी दो जातियां थीं जो खास कोशिश करने पर भी मेरी समझमें न आती थीं। हर रोज सवेरे अुठकर मुझे पिताजीसे पूछना पड़ता कि दाहिना बूट कौन-सा है और बायां कौन-सा?

अुन्होंने कअी बार पैर और बूटके आकारकी समानता मुझे समझानेका प्रयत्न किया लेकिन वह बात किसी तरह मेरे दिमागमें बैठी ही नहीं।

मैं नहीं मानता कि पिताजीमें समझानेकी शक्ति कम होगी और न मैं यह माननेको तैयार हूं कि मेरी समझ-शक्ति बिलकुल बेकार होगी। फिर भी मैं दाहिन-बायेंका वह शास्त्र तनिक भी न सीख सका। शायद अुनकी समझानेकी विधा और मेरी समझनेकी विधा दोनों अलग-अलग रही हों। जितना स्पष्ट है कि अुन दोनोंका मेल नहीं बैठता था। मनोविज्ञानके विद्यार्थियोंने असे कअी अुदाहरण देखे होंगे। गणितका कोअी रोजमर्राके कामका सवाल दो व्यक्ति जबानी करते हों लेकिन दोनोंकी हिसाब करनेकी रीतियां भिन्न हों तो अेक क्या कर रहा है अुसको दूसरा नहीं समझ सकता। असी ही कुछ हम दोनोंकी हालत होती होगी।

जिसके बाद मैं दोनों बूट समेव बुद्धिसे चाहे जैसे पहनने लगा और कुछ ही दिनोंमें मैंने दोनों बूटोंको जितना कुछ निराकार बना दिया कि फिर तो पिताजीके लिअे भी यह पहचानना असंभव हो गया कि कौन-सा बूट दाहिना है और कौन-सा बायां!

३

सातारके संस्मरण

अपना परिचय देते समय नाम, स्थान और मुसका पता बताना चाहिये। मैंने तो सिर्फ अपना नाम बता दिया, दूसरी बातें बताना अभी बाकी हैं।

महाराष्ट्रके सातारा शहरमें यादो गोपाल पेठ (मुहल्ले)में लक्कड़ वालेकी कोठीमें हम रहते थे। मेरे जीवनके सबसे पहले संस्मरण साताराके ही हैं। अतः वहींसे प्रारंभ करना ठीक होगा।

भुलटी दुनिया

हम अपने घरके बरामदेकी सीढ़ियों पर खड़े हो जाते तो दाहिनी तरफ दूर 'अजीम तारा' या 'अजिक्य तारा' किला दिखाओी देता। अेक दिन मैंने यह आविष्कार किया कि सीढ़ियों पर खड़े होकर अगर हम अुठ-बैठ करें तो किला भी भूँचा-नीचा होता है। अिस अीजादके बाद मुझ पर अुस आनन्दको लूटनेकी धुन सवार हुअी। अुठ-बैठ करता जाता और मुँहसे 'अ ब' 'म ब' बोलता जाता। यह तो अब याद नहीं कि 'अ ब' ही क्यों बोलता था। मैंने तुरन्त ही अपनी यह खोज अपने भाअी गोंदू (गोविंद) और केशू (केशव)को बतायी। फिर तो वे भी 'अ ब' 'अ ब' करने लगे। पड़ोसके नामदेव दर्जीके लड़के नाना और हरि भी अिस खेलमें शरीक हो गये। अिस आनन्ददायी व्यवसायका आविष्कारकर्ता मैं हूँ अिस गर्वसे मैं फूला नहीं समाता। मानवजातिके बाल्य-कालमें मनुष्यने जब लगातार अैसी खोजें की होंगी तब अुसे भी क्या अैसा ही आनन्द हुआ होगा?

मेरी दूसरी खोज भी अितनी ही आनन्ददायी थी। अेक दिन मैं रास्तेमें दोनों पाँव फैलाकर 'अजीम तारा'की ओर पीठ करके खड़ा

हुआ और नीचे झुककर दोनों टांगोंके बीचसे औंधे सिर मकीम ताउ को देखने लगा। सिर औंधा होनेसे सारी दुनिया औंधी दिखाअी देने लगी। दुनिया औंधी दिखाअी देती अुसका आनन्द तो था ही लेकिन अिस तरह सारा दृश्य विशेष सुन्दर, सुघड और आकर्षक दिखाअी देता था यह अधिक आनन्दकी बात थी। हम रोजाना जो दृश्य देखते हैं अुसमें हमें कोअी खासियत नहीं मालूम होती। लेकिन अगर अुसकी तस्वीर खींची जाय तो वह दृश्य तस्वीरमें और भी ज्यादा सुन्दर दिखाअी देने लगता है। औंधे सिर दुनियाको देखा जाय तो वह भी अुसी तरह काव्यमय हो जाती है। नवं नवं प्रीतिकर नराणाम्। —यही सत्य है। हमेशा औंधे सिर लटकनेवाले चम गादड़की दुनियामें कोअी विशेष काव्य मिलता होगा अैसा नहीं लगता। खैर! अिस खोजको भी मने बड़ी धामसे सब पर जाहिर किया।

अिस आनन्दका लूटत लूटते मुझे अेक अैसा विचार सूझा, जा किसी दार्शनिकको ही सूझ सकता था। आज भी मुझे आश्चर्य होता है कि अुस अुम्रमें मुझे वैसा विचार कैसे सूझा होगा। मै औंधे सिर दुनियाको देख रहा था। मनमें शक पैदा हुआ कि जिस तरह यों दुनिया दिखाअी देती है वह औंधी है या सीधे खड़े होने पर जो दिखाअी देती है वही औंधी है? यदि सभी लोग सिर नीचे और पैर अूपर करके वृक्षकी तरह चलने लगें तो सबको दुनिया अैसी ही औंधी दिखाअी देगी और अुसीको वे सीधी कहेंगे। फिर यदि अुस अैसा कोअी नटखट लड़का अपने पैरों पर खड़ा हो जाय तो अुसे दुनिया वैसी ही दिखाअी देगी जैसी आज हमें दिखाअी देती है और तब वह हैरान होकर कहेगा, 'देखो दुनिया कैसी अुलटी बन गयी है! सिर पर आसमान और पैरोंके नीचे जमीन!

यह विचार मेरे मनमें आया तो सही, लेकिन अुसे प्रकट करनेकी अिच्छा मुझे नहीं हुअी। यह कहना मुश्किल है कि वह अिच्छा क्यों न हुअी। हो सकता है बालकमें जो रहस्य-गोपनकी वृत्ति होती है अुसका

वह परिणाम हो या अिन विचारोंको प्रकट करनेके लिअे जितनी भाषा समृद्धि होनी चाहिये अुतनी अुस वक्त मेरे पास नहीं थी अिसलिअे वैसा हुआ हो। पर्याप्त भाषाके अभावमें मनुष्यजातिने कुछ कम दुःख नहीं अुठाया है।

*　　　*　　　*

मेरे पिताजीको फोटोग्राफीका शौक था। वकस जैसे दो बड़े बड़े कमरे हमारे घरमें थे। हमें सामने कुर्सी पर बिठाकर वे अेक काला कपड़ा अपने सिर पर ओढ़कर कैमरेमें देखते। अेक दिन मैंने अुनसे कहा, तस्वीर खींचनेके अिस यन्त्रमें क्या दिखाअी देता है, यह जरा मुझे देखने देंगे? अुन्होंने मुझे कैमरेके पीछे अेक चौकी पर खड़ा किया और सिर पर काला कपड़ा ओढ़ाकर कहने लगे देखो अुस सफ़ेद शीशे पर क्या दिखाअी देता है? पहले तो मेरा यह खयाल था कि कांचमें से आरपार दिखाअी देता होगा और अुस दीवार पर लटकनेवाला पर्दा देखता हूं। पर मुझे तुरन्त ही मालूम हो गया कि सफ़ेद शीशे पर ही अक्स पड़ता है। लेकिन अरे यह क्या? सामनेकी कुर्सी तो अुलटे पांववाली दिखाअी देती है! और यह देखो, केशू कुर्सी पर आकर बैठ गया तो वह भी सिर नीचे और पैर अूपर करके चलता है। वह देखो, बिल्ली भी पूंछ अूपर अुठाकर केशूके पैरोंसे अपनी नाक रगड़ रही है। केशू जीभ निकालता है और कुत्तेकी तरह हाथ हिलाता है। अब मालूम हुआ कि सच्ची दुनिया औंधी ही है। पागलकी तरह हम पैरों पर चलते हैं अिसलिअे हमें यों औंधा-औंधा दिखाअी देता है। दर असल आकाश नीचे है और जमीन अूपर है!

*　　　*　　　*

पेटकी आग

अेक दिन अेक बहुत दुबला पतला मरियल-सा बूढ़ा हमारे दरवाजे पर आया और कहने लगा थोड़ें ताक द्या। पोटांत आग पडली आहे। (थोड़ा मट्ठा दो पेटमें आग जल रही है।) मेरे मनमें आया

कि अिस आदमीने भूलसे अंगार खा लिये होंगे, वरना पेटमें आग कहांसे लगे? मैंने कहा, मैं तुमे अेक लोटा पानी पिला दूं तो यह आग बुझ जायेगी! मुझे आश्चर्य तो हो ही रहा था कि जिसने आग कैसे खा ली होगी! (श्रीकृष्ण भगवान दावानल खा गये थ, यह बात मैं अुस वक्त नहीं जानता था।) अितनेमें भीतरसे विष्णु आया। अुसने बूढ़ेकी बात सुनी और अुसे अेक लोटाभर छाछ पिलायी। वह बड़ा आशीर्वाद देता हुआ चला गया। दूसरे दिन दोपहरको वह फिर आया और कहने लगा पेटमें आग लगी है थोड़ी-सी छाछ दे दो। तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह बूढ़ा झूठा है, कल ही तो अिसकी आग बुझा दी गयी थी! अतः मैंने गुस्सा होकर अुससे कहा बदमाश कहींका! झूठ बोलता है? हट जा यहांसे वरना लात मार दूंगा।' लेकिन विष्णुने आकर अुलटे मुझीको डांटा और अुसे फिर छाछ पिलायी।

बेचारा बूढ़ा! अगर मैं अुसकी सच्ची हालत जानता तो अुसका मैं अपमान न करता और यदि वह मेरे अज्ञानको जानता तो अुसे भी मेरे शब्दोंका बुरा न लगता। किसे मालूम कि मुझे अब नासमझ बालक समझकर अुसने मेरी बातोंको नजर-अन्दाज कर दिया होगा या बड़े घरका गुस्ताख लड़का समझकर मन ही मन वह मुझसे नाराज हुआ होगा?

लेकिन अब क्या हो सकता है? वह बूढ़ा अब थोड़े ही मुझे फिरसे मिलनेवाला है!

* * *

मेरा पक्षपात-तिलक

काशी मामीके मनमें मेरे प्रति विशेष पक्षपात था। वह मुझ महमानी अच्छे कपड़े पहनाती मेरी छोटी-सी चोटीको गूंथती और माथे पर कुंकुमका गोल टीका लगाकर मेरी तरफ आंखभर देखती।

यह सब देखकर केशू-गोंदू मेरा मजाक भुड़ाते। वे कहते 'देखा यह छोकरीकी तरह चोटी गुथवाता और कुंकुमका टीका लगवाता है। मैं रोवासा हो जाता तो काशी मामी मुझे हिम्मत बँधाती और कहती, 'बकने दो भुन लोगोंको! तुम भुनकी बात पर जरा भी ध्यान मत दो।' लेकिन आखिरकार मैं तो केशूकी बातोंका कायल हो गया और मैंने छोटी मामीसे साफ़ साफ़ कह दिया कि हम कुंकुमका टीका हरगिज नहीं लगवायेंगे।

भुस दिनसे केशू मुझे लाल चंदनका तिलक लगाने लगा। हम लोग स्मार्त शव ठहरे, भिसलिभे हमारा तिलक तो आड़ा ही हो सकता था। मराठीमें तिलकको गंध कहते हैं। गंध लगाकर म माँके पास गया दादीके पास गया और भुनसे पूछने लगा, मेरा 'गंध' कैसा दिखाभी देता है? भुन्होंने कहा बहुत ही सुन्दर! बस, मैं नाचता-कूदता दौड़ा मामें गंध छान छान! (मेरा तिलक सुन्दर है सुन्दर है।) भीसामसीहने कह रखा है कि गिरनेसे पहले मनुष्य पर गर्व सवार होता है। भुस दिन मेरा यही हाल हुआ। मैं दौड़ता हुआ पिछले दरवाजेसे आँगनमें जाने लगा, तो बड़े जोरकी ठोकर खाकर मुँहके बल नीचे गिर गया। सिरमें बड़ी चोट आयी खूनकी धारा बह निकली। मेरी आवाज सुनकर सभी दौड़ आये। कोभी जाकर पिताजीको बुला लाया। भुन्होंने घावको धोकर भुसकी मरहमपट्टी कर दी। केशू कहने लगा, देखो तो दत्तूका जख्म—गुणाकारके चिन्ह जैसा (×) है। मानो वह भी मेरी कोभी बहादुरी ही हो। सभीको मुझ पर तरस आ रहा था, लेकिन तब भी काशी मामीसे यह कहे बिना न रहा गया कि देखो कुंकुमके गोल टीकेकी जगह तिलक करवाने गये भुसका यह फल मिला!' लेकिन जब भेक दफ़ा काशी मामीका साथ छोड़ ही दिया तो फिर भुस निर्णयमें कैसे परिवर्तन हो सकता था? मैंने कुछ अकड़कर कहा चोट तो क्या यदि सिर भी फूट जाय, तब भी मैं कुंकुमका गोल टीका नहीं लगवाभूँगा।

पानी बह रहा था— अेक तरफ मनुष्यका, अेक तरफ गायका तो अेक तरफ सिंहका मुँह था। मेरे मनमें विचार आया कि मनुष्यके मुँहसे निकलनेवाला पानी तो झूठा हो गया। अतः मैंने आगे बढ़कर गायके मुँहसे निकलनेवाला पानी पी लिया। अितनेमें विष्णु चिल्लाया अरे दत्तू, यह तूने क्या किया? अुस ओर तो महार (अछूत) लोग पानी पीते हैं। अुस नलको तो हमें छूना भी नहीं चाहिये। मेरी जिन्दगीमें यह पहला ही सामाजिक गुनाह था। अपना-सा मुँह लेकर मैं घर आया। फिर मुझको और मुझे अुठाकर लानेवाले महापूको भी नहाना पड़ा। मैंने सीख लिया कि जैसा गधा वैसा महार दोनोंको छूआ नहीं जा सकता।

मुझे क्या पता था कि अिन घटनाओं द्वारा मैं धर्म नहीं बल्कि अधर्म सीख रहा हूँ और किसी दिन मुझे अिसका प्रायश्चित्त करना पड़ेगा? अिस प्रकार सातारामें मैंने जो कुछ छुआछूतकी भावना सीख ली, वह पंढरपुर जानेके बाद बहुत कुछ चली गयी। लेकिन अुसका वर्णन मैं यहाँ नहीं करूँगा।

* * *

ककड़-बहादुर

हमारी पाठशालाके रास्तेमें डाक-घर पड़ता था। तार-घर भी अुसीमें था। तारघरका अेक तार पासके पानीके होज़में छोड़ दिया गया था। डांग्या नामक अेक मुसलमान लड़का हमारे पड़ोसमें रहता था। अुसने मुझे पहले-पहल बताया था कि जब आकाशमें बादल गरजते हैं और बिजली गिरती है तो वह अिस तारमें अुतरकर पानीमें समा जाती है। यह तार न हो तो सारा मकान जलकर खाक हो जाय।

अेक दिन पाठशालामें पारितोषिक-वितरणका समारोह था। हम बाल्वर्गमें पढ़नेवालोंका हेडमास्टर साहबने स्कूलमें आनेसे मना किया था। मैंने मनमें सोचा, 'हमें अिनाम भले ही न मिले लेकिन वहाँका

मजा देखनेमें क्या हर्ज है ? मैं बढ़िया रेशमी जामा और तोतेवाली जरकी टोपी पहनकर स्कूल गया, लेकिन मुझे कोअी अन्दर जाने ही न देता। स्वयं हेडमास्टर साहब दरवाजे पर खड़े थे। मैंने गिड़गिड़ाकर अुनसे कहा मुझे अिनाम न मिला तो भी मैं भीतर रोअूँगा नहीं। मुझे अन्दर जाने दीजिये मैं चुपचाप बैठकर सब देखता रहूँगा।' लेकिन वह टससे मस न हुअे। अुन्होंने मुझे डाँटकर वहाँसे भगा दिया। लौटते हुअे मेरा हृदय भर आया, लेकिन रास्तेमें रोया भी कैसे जाता ? घर जानेके लिअे पैर अुठ नहीं रहे थे। हेडमास्टर और पाठशाला पर मुझे बेहद गुस्सा आया। मैं डाक-घरके दरवाजेकी सीढ़ी पर बैठ गया। न जाने कितनी देर तक वहाँ बैठा रहा। गुस्सा किस पर अुतारा जाय ? मनमें अेक विचार आया। अुस पर अमल करनेको मन हुआ। लेकिन साथ ही डर भी लगता था। बहुत देर तक भवति न भवति करके—आगा पीछा सोचकर—आखिर हिम्मत कर ही ली। अिधर अुधर अच्छी तरह देख लिया और मनके सारे गुस्सेको अिकट्ठा करके अपने निश्चयको मजबूत बनाया। फिर बीचके रास्तेपरका अेक कंकड़ अुठाया और झटसे डाक-पेटीमें डाल दिया। मराठीमें अेक कहावत है भित्यापाठी ब्रह्मराक्षस यानी डरपोकके पीछे ही डर लगा रहता है। मैंने कंकड़ डाला ही था कि रास्तेसे जानेवाला अेक आदमी मेरे पास आ खड़ा हुआ और अुसने मुझसे पूछा क्यों बे छोकरे, तूने बक्समें अभी क्या डाला ? मेरी समझमें न आया कि क्या अुत्तर दिया जाय। सिर्फ ओठ हिलाये। अितनेमें अक्ल सूझी कि अैसे मौक़े पर ओंठ हिलानेकी अपेक्षा पैर हिलाना ही ज्यादा मुफ़ीद होता है। अतः मैं वहाँसे अैसा सरपट भागा कि देखते-देखते कंकड़-बहादुर घर पहुँच गये!

४

बाबाका कमरा

मेरे सबसे बड़े भाअी बाबा हमारी नैतिकताके चौकीदार थे। हमारे आचरण पर अुनकी कड़ी निगरानी रहती थी, अिसलिअे हम सब पर अुनकी धाक जमी रहती थी। अगर हम कहीं घर छोड़कर रास्ते पर चले जाते तो बाबा हमें पकड़कर घरमें ला बिठाते। असभ्य लड़कोंके मुँहसे हमारे कानोंमें गन्दे शब्द आ जायें तो हमारी जबान खराब हो जायगी। अिस डरसे हमें रास्ते पर नहीं जाने दिया जाता था।

बाबाके पढ़ने-लिखनेका कमरा मानो अेक बड़ी भारी सार्वजनिक संस्था ही थी। बाबा जब पाठशालामें पढ़नेके लिअे चले जाते तो वहाँ सब सुनसान हो जाता। लेकिन बाकी सारे वक्त वहाँ काव्यशास्त्र और विनोदके फव्वारे छूटते रहते।

बाबाको पुस्तकोंका बेहद शौक था। अतः हाअीस्कूलके विद्यार्थियोंके लिअे आवश्यक तथा अनावश्यक सभी तरहकी विविध पुस्तकोंका ढेर अुनके कमरेमें लगा रहता था। अिसलिअे यह स्वाभाविक ही था कि जिस तरह गुड़को देखकर मक्खियाँ और चींटे जमा हो जाते हैं अुसी तरह स्कूलके बहुत-से विद्यार्थी बाबाके कमरेसे चिपके रहते थे। बाबा पाठशालामें जितना पढ़ते थे अुतना घर आकर विद्यार्थियोंको पढ़ाते थे। संस्कृत और गणित ये दो अुनके विशेष रूपसे प्रिय विषय थे। जब वे सोते न होते तो संस्कृतके श्लोक गुनगुनाया करते और जब श्लोकोंसे थक जाते तो लम्बी तानकर सो जाते! अुनकी नींद भी गूँगी नहीं थी। जहाँ बिस्तर पर पड़े कि तुरन्त ही वे खर्राटे भरने लगते।

बाबासे छोटे भाअी अण्णा थे। अुन्हें बाबाका खर्राटे भरना अच्छा नहीं लगता। वे सूतकी छोटीसी बत्ती बनाकर बाबाको हवा देते।

'हवा देना' यह हमारा पारिभाषिक शब्द था। सूतकी बत्ती नाकमें डालते ही ज़ोरसे छींक आती और नींद खुल जाती। लोक-जागृतिके अिस महान् सेवा-कार्यको 'हवा देना' जैसा सादा नाम दिया गया था।

अेक दिन मेरे मनमें आया कि चलो, अपन राम भी कुछ पुण्य लूट। सूतकी बत्ती कहीं मिली नहीं, अिसलिअे दियासलाअी ले ली और बड़ी सावधानीसे बाबाके नकसूड़ेमें अुसका प्रवेश कराया। कहते हैं कि कलियुगमें कर्मका फल तुरन्त मिल जाता है। मुझे अिसका खासा अनुभव हुआ। अपने कर्मका गर्म-गर्म पुण्य-फल तो मुझे गालों पर चपतोंके मिला ही लेकिन अुसके अलावा 'ग्राड' (शरारती) 'मस्तीखोर' (अुत्पाती) और 'खोडकर' (खुराफ़ाती) अैसी तीन अुपाधियाँ भी मुझे प्राप्त हुअीं।

बाबाको और अण्णाको पढ़ानेके लिअे मिसे मास्टर रातमें आते। भाषा, गणित और कोष ये अुनके खास विषय थे। अुन्होंने घरमें पैर रखा कि हमें मार्जार-मूषक (चूहा बिल्ली) न्यायके अनुसार किसी कोनेमें छिप जाना पड़ता। अत: मिसे मास्टरके प्रति हम छोटे बालकोंमें खास तिरस्कार होना स्वाभाविक था। अेक दिन मिसे मास्टर पढ़ानेमें बड़े तल्लीन हो गये थे। मुझसे वह न देखा गया। रसमें भंग कैसे किया जाय अिस विचारमें मैं पड़ा। (लेकिन पड़ा भी क्योंकर कहूँ?) आखिर कुछ न सूझ पड़ने पर दरवाजेके सामने खड़े होकर मैंने रेलकी सीटीकी तरह 'कुअू अू अू ' के महामंत्रका ज़ोरसे अुच्चारण किया।

बस मिसे मास्टर कालिया नागकी तरह फुफकारने लगे। अुनकी नजर मुझ पर पड़े अुसके पहले ही मैं जान लेकर वहाँसे नौ दो ग्यारह हुआ। अितनेमें गोंडूका दुर्भाग्य अुसे भगाते भगाते वहाँ ले आया। मिसे मास्टरने अुसीको पकड़कर अेक चपत जड़ दी और कहा 'क्यों रे बदमाश शोर क्यों मचाता है?' अुस बेचारेको क्या मालूम? अुसने

सो मुँह फाड़कर ज़ोर ज़ोरसे रोना ही शुरू कर दिया। अिससे मास्टरके मनमें आया यह तो और ही आफ़त हो गयी। क्योंकि जबतक यह चुप न हो जाय तबतक पढ़ाअीका काम कैसे आगे चलता?

लेकिन अिन साहबका दिमाग़ बड़ा अुपजाअू था। अुन्होंने अेक दियासलाअी सुलगायी और गोंदूसे कहने लगे 'मुँह बन्द कर, वरना देख यह तेरे मुँहमें डाल देता हूँ।' मैं धीरेसे आकर पीछे खड़ा-खड़ा यह सारा करुण प्रसंग देख रहा था। पहले तो यही खयाल मनमें आया कि मैं किसी तरह बच तो गया। फिर यह सोचकर हँसी भी आयी कि कैसे अचानक गोंदू आ फँसा और अुसकी अच्छी फ़जीहत हो रही है। लेकिन किसी भी तरह मन प्रसन्न नहीं हो रहा था। अिसमें कुछ न कुछ दोष है, मैंने कुछ अशोभनीय काम किया है, यह खयाल भी मनमें आया, और मैंने अैसी वेदना अनुभव की जिसका मुझे पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था। लेकिन यह शरम किस बातकी है अिसका पृथक्करण मैं तब नहीं कर सका। सज़ा पूरी हो जानेके बाद गोंदू बाहर आया। लेकिन अुसकी आँखसे आँख मिलानेकी मेरी हिम्मत न हुअी। मैंने अुसका कुछ अपराध किया है अिसका तो स्पष्ट भान नहीं हो रहा था, लेकिन कुछ न कुछ ग़लती ज़रूर हुअी है यह बात मनमें — ना, मनमें ही नहीं हृदयमें जम गयी। अुस दिन सोनेके समय तक मैंने गोंदूके साथ विशेष कोमलताका व्यवहार किया, बग़ैर किसी कारणके अुसकी खुशामद की। लेकिन फिर भी मुझे वह शांति नहीं मिली जिससे मैं अुस दिनका प्रसंग भूल जाता।

*   *   *

घरमें हम कुछ भी अूधम मचाते या हमसे कोअी अपराध हो जाता तो हमें बाबाके कमरेमें बैठा दिया जाता था। हमारे लिअे यह सज़ा तमाचे या बेंतसे भी बुरी होती थी। कमरेमें पहुँचे कि अेक कोना दिखाते हुअे अुनका हुक्म होता — बस अिकडे

देवा सारखा हात जोडून। (देवताकी तरह हाथ जोड़कर वहाँ बैठ जा।) मेरा शरीर तो बैठ जाता लेकिन मन थोड़े ही बैठ सकता था? मनमें विचार आता कि देवता कैसे विचित्र हैं! वे न तो बोलते हैं और न भूषण ही मचाते हैं, सिर्फ हाथ जोड़े बैठे रहते हैं! क्या वे सचमुच असे ही बठे रहते होंगे? वास्तवमें असी शंका मनमें आनेका कोओी कारण नहीं था, क्योंकि घरमें सिंहासन परके जिन देवताओंको मैं देखता वे अैसे ही बठे रहते थे। दूसरा नहलाता तब वे नहाते और खिलाता तब वे खाते।

मैं बैठा-बठा बाबाके कमरेका चारों ओरसे निरीक्षण भी किया करता। छड़ी कहाँ है पुस्तकें कहाँ हैं स्याहीकी बड़ी शीशी कहाँ है बिस्तर कहाँ है, वगैरा सब कुछ देख लेता। दीपकके आसपास प्रदक्षिणा करते हुअे मकोड़ोंको देखकर मुझे बड़ा मजा आता और दीपकके भगवान होनेमें कोओी शंका न रहता। सभी मकोड़ अेक ही दिशामें गोल-गोल घूमते लेकिन कोओी बड़ा मकोड़ा अचानक धूमकेतुकी तरह उल्टी ही दिशामें घूमने लग जाता।

अेक दिन किसी तरह बाबाके कमरेमें मेरी स्थापना हो गयी। अशोकवनमें से सीताको छुड़ानेके लिअे रामचन्द्रजीने हनुमानजी जैसे वीरोंको भेजा था। लेकिन मुझे बाबाके कमरेमें से छुड़ानेवाला कोओी नहीं था! अिसलिअे यद्यपि अुस समय शिवाजीका किस्सा मुझे मालूम न था फिर भी मैंने अुन्हीका अनुकरण किया। वहाँ जो लपेटा हुआ बिस्तर पड़ा था अुसके पीछे थककर सो जानेका मैंने बहाना बनाया। यह भी अच्छा तरह जान लिया कि बाबाने मुझे अुस स्थितिमें अेक-दो बार देखा है और फिर किसीका ध्यान नहीं है अैसा मौका देखकर पेटके बल रेंगता हुआ मैं वहाँसे भाग निकला। मुझे यों बाहर आया देख केशूको बहुत प्रसन्नता हुआी। अुसने मेरे पराक्रमकी सारी बातें मुझसे जान लीं और गोंदूके सामने मेरी खूब तारीफ़ की। गोंदूमें दूरदृष्टि नामको भी न थी। अुसने जाकर

बड़ी भाभीसे सब कुछ कह दिया और मेरी पलायन-कलाका भेद सब पर प्रकट हो गया। लेकिन किसीने मेरे सामने मिस प्रसंगकी चर्चा नहीं की।

मैंने मनमें सोचा कि यह अच्छी युक्ति हाथ लगी है। दूसरी बार जब कोमी अपराध मझसे हुआ और कमरेकी सजा मिली तो मैंने फिरसे पहली ही युक्ति आजमामी। लेकिन मिस बार मुझसे बाबा ही ज्यादा होशियार साबित हुओ। अुन्होंने जानबूझकर मेरी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया और मैं खिसकते खिसकते मुश्किलसे दरवाजे तक पहुँचा ही था कि वे अकदम गरज पड़े 'अरे चोरा पळतोस होय? चल में परत! (अरे चोर, भागता है क्या? चल वापस आ!) मैं पकड़ा गया मिसका तो मुझे दुःख न हुआ, लेकिन मेरी साख चली गयी अब सब लोग मुझे हमेशा भगोड़ा चोर ही कहेंगे मिस अस्पष्ट डरसे मैं बेचैन हो गया। शामको भोजन करते समय अम्माने हँसते-हँसते यह घटना सबको कह सुनायी। मैं तो शरमके मारे पानी-पानी हो गया। अुस दिन भोजनमें मूलेकी तरकारी थी। शरमके कारण अुसकी अेक-अेक फाँक गलेसे नीचे अुतारते हुओ कैसे चुभ रही थी अुसका स्मरण आज भी ताजा है।

बालकोंमें भी मिज्जत होती है। फजीहतसे वे कुम्हला जाते हैं। बड़ोंकी अपेक्षा बालकोंमें मिज्जत और स्वमानकी भावना विशेष तीव्र होती है मिसका खयाल बड़े लोग भला क्यों नहीं करते?

दो दिनकी मुझे आम फजीहतके कारण मैं कुछ लापरवाह-सा हो गया। अुसके बाद जब-जब मुझ बाबाके कमरेमें बन्द करके रखा जाता, तब-तब मैं वहाँसे भाग जानेका प्रयत्न करता और यदि अुस प्रयत्नमें पकड़ा जाता तो भी मुझे बिलकुल शरम न आती।

अेक दिन केशूकी दवात लुढ़क गयी। स्कूल जानेका समय हो गया था। स्याहीके बिना कैसे जाया जा सकता था? केशू रोआसा हो गया। मितनेमें मैंने अुससे कहा, केशू बाबाके कमरेमें स्याहीकी

अेक बड़ी शीशी भरी हुआी है अुसमें से चाहे जितनी स्याही मिल सकती है।' फिर तो पूछना ही क्या? केशूने दवात भरकर स्याही ली और चोरी पकड़ी न जाय अिसलिअे अुतना ही पानी अुस शीशीमें भर दिया। यह तो बड़ी सुविधा हो गयी अतः केशू और गोंदू स्याहीकी हिफ़ाज़तके बारेमें लापरवाह हो गये। दिनमें चार बार दवात लुढ़कती और चार बार बाबाकी शीशीसे चुंगी वसूल की जाती! कुछ ही दिनोंमें स्याही बिलकुल पानी जैसी हो गयी और हमारी पोल खुल गयी। बाबाने डाँटकर कहा केशवा तू स्याही तो चोरता ही है लेकिन अूपरसे अुसमें पानी डालकर बाकीकी स्याही भी बिगाड़ डालता है! ठहर तुझ अच्छा सबक़ सिखाता हूँ।'

यह सुनकर मेरा विचार-यंत्र फिर चलने लगा! मैंने केशूसे कहा हम लोग हर शनिवारको कोयलेसे पट्टी घिसते हैं तब काला-काला पानी खूब निकलता है। यदि हम वह शीशीमें भर दें तो न स्याही पतली होगी और न हम पकड़े ही जायेंगे। प्रयोग आजमानेमें देर कितनी थी!

दूसरे दिन शीशीकी सब स्याही फट गयी। अुसके कारण केशू पर मार पड़ी। अुस गुनाहमें मेरा हाथ नहीं था सिर्फ़ दिमाग़ ही था अिसलिअे मुझे गुनाह करनेका भान नहीं हुआ। और केशू पर मार तो पड़ी लेकिन साथ ही कोयलेका या मामूली पानी बोतलमें न डालनेकी शर्त पर ज़रूरत हो तब माँग कहकर बाबाकी शीशीसे स्याही लेनेका हक़ भी मिल गया।

गोंदूके भोलेपनके कारण मेरी अैसी अनेक युक्तियोंकी शोभ घरके सब लोग जान जाते थे। लेकिन मैंने देखा कि मुझसे नाराज़ होने पर भी सभी मुझे प्यार करते थे। अेक तो यह कि मैं सबसे छोटा था और जो कुछ भी करता था वह केशू-गोंदूकी मदद करनेकी नीयतसे करता था। अिसलिअे बाबाके कमरेके सब सदस्योंमें मेरी कीर्ति फैल गयी। सब मुझे अेक मज़ेदार खिलौना समझने लगे।

लेकिन अुसमें से अेक आकस्मिक परिणाम आया। अेक दिन अण्णाने कहा 'या म्हाताऱ्याला आमच्या खोलीतच नीजूं द्या!' (अिस बुड्ढेको हमारे कमरेमें ही सोने दो)। बस अुसी दिनसे मेरा बिस्तर भाअियोंके कमरेमें बिछानेका हुक्म महाराजको दिया गया और अण्णा रोजाना सोनेके पहले मुझे थोड़ा-थोड़ा पढ़ाने लगे।

५

सीताफलका बीज

सातारामें हमारे घरके पीछे सीताफल (शरीफा)का अेक छोटासा पेड़ था। फल लगनेका मौसम आता तो हम रोजाना जाकर यह देखते कि अुसमें कितने नये फल लगे हैं और पहले दिन देखे हुअे फल कितने बड़े हो गये हैं। जब हम फल तोड़ने जाते तब दादी कहती ये फल अभी कच्चे हैं। अुन्हें तोड़ना मत। अुनकी आँखें जरा बड़ी होने दो। आँखें खुलीं कि फल पक गया समझो।

गोंदूका दिमाग बचपनसे ही यांत्रिक खोज करनेकी ओर दौड़ता' और अिसीलिये वह आगे जाकर रसायन शास्त्र पदार्थ-विज्ञान और फोटोग्राफीमें प्रवीण हुआ। अेक दिन वह कहने लगा 'हमारी आँखें अच्छी नहीं हैं। ये छिछली हैं। अिन्हें निकालकर अिनकी जगह सीताफलकी आँखें बिठानी चाहियें। पिताजी जहाँ तसवीरका यंत्र (कैमरा) तिपाअी पर खड़ा करते कि तुरन्त ही गोंदू कहता हमारे पैर अच्छे नहीं हैं। टेढ़े-मेढ़े हैं और बीचमें मुड़ते हैं। अिन्हें काटकर अिनकी जगह कैमरेके सीधे और मजबूत पैर बैठा लेने चाहियें। फिर तो चलनेमें बहुत मजा आयेगा।'

अेक दिन सीताफल खाते-खाते अेक बीज मेरे पेटमें चला गया। मैंने घबड़ाकर केशूसे कहा, केशू मैं सीताफलका बीज निगल गया।

अब क्या होगा ? बात विष्णुने सुनी। मजाकका असा सुन्दर मौका भला वह कैसे जाने देता ? अुसने मुँह लटकाकर कहा अरेरेरे यह क्या गजब किया ? अब तेरी तोंदीमें से पेड़ निकलेगा। और फिर हम केशूने आगे कहा अुस पेड़ पर चढ़कर सीताफल खायेंगे। जैसे जैसे हम फल तोड़ते जायेंगे वैसे-वैसे तेरा पेट दर्द करने लगेगा हम खाते रहेंगे और तू रोता रहेगा।'

मैं बहुत डर गया और पेटमें से पेड़ निकलनेके पहले ही रोने लगा। लेकिन अितनेमें यह शंका मनमें आओी कि क्या आजतक कभी अैसा हुआ है ? क्या पटमें से पेड़ निकलते होंगे ?' अन्दरसे जवाब मिला– हाँ-हाँ अिसमें क्या शक ? अुस चित्रशालावाले चित्रमें साँपकी गेंडली। पर सोये हुअे शेषशायी विष्णुकी नाभीमें से तो कमलकी बेल अुगी है।'

अिस बातकी अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करनेके हेतुसे चुपचाप दादीके पास जाकर मैंने पूछा दादी क्या कमलके भी बीज होते है ?' दादीने कहा होते क्यों नहीं, कमलके बीजोंको कमलककड़ी कहते हैं। अुपवासके दिन अुनके आटेकी लापसी बनाकर खाओी जाती है। मैंने सोचा भगवान विष्णु गलतीसे पूरीकी पूरी कमलककड़ी निगल गये होंगे अिसीलिअे अुनकी तोंदीसे कमलकी बेल फूट निकली है।

अब मुझे सोलह आने विश्वास हो गया कि मेरे पटमेंसे सीताफलका पेड़ जरूर निकलेगा और केशू जब चाहेगा तब अुसके फल तोड़कर खा सकेगा।

अिसके बाद कभी दिनों तक मैं रोजाना अपना पेट टटोलकर देखता कि कहीं अंकुर तो नहीं फूटा है ?

६

'विद्यारंभ'

सातारेके महाराजाके हाथी रोजाना हमारे दरवाजे परसे गुजरते। महाराजाके तीन हाथी थे। अेक बूढ़ी हथनी थी और दूसरा अेक बड़ा हाथी। अुसका नाम दंत्या था क्योंकि अुसके अेक ही दांत था। तीसरे हाथीको 'छोटा हाथी' कहते थे, क्योंकि अुसके अेक भी दांत न था। अेक दिन हम पड़ोसके नामदेव दर्जीकी दूकानमें बैठे थे, जितनेमें रास्तेसे जाता हुआ दंत्या हाथी दूकानके पास आया और अुसने दूकानमें अपनी सूंड़ डाली। हम डर तो गये, लेकिन दूकानसे भाग निकलनेके लिअे रास्ता ही नहीं था। नामदेवने समय-सूचकता बरतकर दूकानमें पड़ा हुआ अेक नारियल हाथीकी सूंड़में दे दिया और हाथी भी नारियल लेकर चलता बना। नामदेवकी अिस होशियारीका किस्सा हम कभी दिनों तक कहते रहे थे। आज मैं समझता हूँ कि हाथीका आगमन कोअी आकस्मिक बात नहीं थी। किसी त्योहारके कारण नामदेवने ही महावतसे हाथीको नारियल देनेकी बात कही होगी, और महावत हाथीको अुसकी दूकानके पास ले आया होगा। वरना अुसी दिन दूकानमें नारियल कहाँसे आ जाता? लेकिन यह तो मेरी आजकी कल्पना है। अुस दिनका अनुभव तो यही था कि अेक महान दुर्घटनासे हम किसी तरह बाल बाल बच गये।

हमारे घरके पिछवाड़े दो पेड़ थे — अेक गूलरका और अेक सीताफलका। दोनोंके बीच अेक बड़ामारी 'तुलसी-वृन्दावन'* था।

---

* मिट्टी या अींट-चूनेका बहुत बड़ा गमला जिसमें तुलसीका पेड़ लगाया जाता है।

भुसके आसपासकी जमीन हमेशा गोबरसे लीप-पोतकर साफ़ रखते और शामका पाँच बजे यहीं हम रोटी खाने बठते। रोटीके साथ घी अचार, भाजी आदिमें से कुछ न कुछ होता ही था लेकिन लोक-कथाओंकी खुराक भी हमें जिसी जगह नियमित रूपसे मिलती। मरी काशी भाभीके पास कहानियोंका भंडार था। काशी भाभीको फुरसत न होती तब मैं अपनी दादीसे कहानियोंका लगान वसूल करता। महादेव-पार्वतीका सारा जीवन चरित्र पहले पहल मैंने अपनी दादीसे ही सुना था। आज भी जब-जब मैं भगवान महादेवका नाम सुनता हूँ, तब-तब दादीके वर्णन किये हुये लम्बी-लम्बी जटावाले और लाल-लाल आँखोंवाले बाबाजीका ही चित्र मेरी आँखोंके सामने खड़ा हो जाता हू।

हम जब घरमें खेलते तब केशू हाथी बनता गोंदू हाथीका महावत बनकर चलता और मैं दलू राजा बनकर केशूकी पीठ पर अम्बारीमें बठता क्योंकि मैं था सबसे छोटा। केशूके सिर पर गुलूबन्द बाँधकर भुसका सिरा सूँड़की जगह लटकता हुआ छोड़ते और घरके अन्दर ही हाथी-हाथी खेलते क्योंकि हमें कोआी रास्ते पर जाने ही नहीं देता था। रास्ते पर जायें तो खराब लड़कोंके मुँहकी गालियाँ कानमें पड़ें! मैं पाँच वर्षका हुआ, तब तक सड़क पर गया ही नहीं। बाजारमें जाता तो महादूके कंध पर बठकर। महादू हमारा वफ़ादार घाटी नौकर था। भुसकी हुकूमत हम पर पूरी पूरी रहती। बाजारमें भी वह हमें पाँच कदम भी नहीं चलने देता। यदि कुछ चला होभूँ तो दादीको राजी करके पीछेके दरवाजेसे हनुमानजीके मंदिर तक —यानी गलीके सिरे तक।

भैसी परिस्थितिमें परवरिश पाया हुआ बालक यदि व्यवहारमें बुद्धू जैसा दिखाओी दे तो भुसमें क्या आश्चर्य? मेरे भाभी गोंदूमें

और मुझमें सिर्फ़ डेढ़ वर्षका अन्तर था। अुसका स्वभाव बिलकुल भोला था अिसलिअे अुसकी तुलनामें मैं हमेशा होशियार माना जाता।

मैं पाँच बरसका हुआ तो जिद करने लगा कि मैं तो पाठशाला जाअूँगा। अब घरमें कोअी मेरी बात नहीं मानता, तो दो-तीन बजे जब पिताजी आफ़िसमें होते और बड़े भाअी पाठशालामें पढ़ते होते तब मैं माँके पास रोता हुआ रट लगाता कि 'मुझे स्कूल भेज दे।' आखिर अेक दिन अूबकर माँने मुझे जाने दिया। सफ़द-सफ़द बुंदकीवाला अेक लाल साफ़ा मेरे सिर पर बाँधा गया और मैं पाठशाला गया। पाठशालाके लड़कोंके लिअे अेक नया खिलौना मिल गया। लड़के मुझे कभी रुलाते तो कभी सताते। अब तो अुस वक्तके पेठे नामक अेक ही मास्टरकी याद है। अुनकी जेबमें हमेशा बताशे पड़े रहते। मुझे देखते तो पास बुलाकर दो अेकाध बताशा दिये बिना नहीं रहते। अिन बताशोंके कारण पाठशालामें मेरे गुरुके संस्मरण अत्यन्त ही मीठे रहे हैं।

लेकिन पहले ही दिन अेक संकट आ खड़ा हुआ। खेलते-खेलते सिर परका साफ़ा खुल गया। मुझे वह दुबारा बाँधना नहीं आता था और यह बात लड़कोंके सामने कबूल करते शरम आती थी अिसलिअे मैं बड़ी फ़िक्रमें पड़ा। अितनेमें अेक लड़केने अपने घुटनों पर साफ़ा बाँध कर मेरे सिर पर रख दिया और मैं साफ़ा-सलामत घर आया।

फिर तो मैं हर रोज पाठशाला जाने लगा। धीरे धीरे सड़क पर चलनेकी हिम्मत भी आयी और फिर सब मना करें तो भी मैं दौड़ता हुआ स्कूल चला जाता। मुझे पकड़नेके लिअे महादू अक्सर मेरे पीछे आता अिसलिअे दौड़ता-दौड़ता भी मैं बार-बार सिंहावलोकन करता जाता।

मेरी अिस शाला-परायणताको देखकर अब शुभ मुहूर्तमें मुझे पाठशालामें दाखिल कराना तय हुआ। बहुत करके वह दशहरेका दिन होगा। सारी पाठशाला अिकट्ठी हुअी थी। स्कूलके सभी लड़के अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर आये थे। पुराने राज-महलके अेक बड़े दालानमें पाठशाला लगती थी अिसलिअे मकानकी भव्यता तो थी ही। सभी लड़कोंको मिठाअी बाँटी गयी। पाठशालाके चपरासियोंको सीलके बड़े-बड़े लड्डू दिये गये। पाठशालाके मास्टरको चाँदीकी तस्तरीमें खास बढ़िया मिठाअी दी गयी। और मैं पट्टी पर बैठा। अेक बूढ़े मास्टर मेरे पास आकर बैठे। अुन्होंने मेरी सिलेट पर बड़े-बड़े सुंदर अक्षरोंमें श्री गणेशाय नमः ओ नामा सीधं * लिख दिया। पट्टी पर हल्दी-कुंकुम वगैरा चढ़ाकर मेरे हाथों अुसकी पूजा करवायी। फिर अुन्होंने मेरे हाथमें अेक पेन्सिल दी, और मेरा हाथ पकड़कर मुझसे अेक-अेक अक्षर पर हाथ फिरवाने लगे और मुँहसे बुलवाने लगे। सारे अक्षरों पर अेक बार हाथ फेरा कि अुस दिनकी पाठशाला खतम। अिस तरह मैं शास्त्रोक्त विद्यार्थी बना और मुझे घर ले जाया गया।

विद्यारंभके अिस अुत्सवके लिअे मेरे हाथोंमें सोनेके कड़े कानमें मोतीकी बालियाँ और गलेमें सोनेकी कंठी पहनायी गयी थी। अिस प्रकार नन्दीकी तरह साज सजा कर मुझे रावाना महादूके साथ स्कूल भेजा जाता। अुसमें अेक बड़ी कठिनाअी पैदा हो गयी। ठीक दसकी घंटी लगते ही लड़के स्लेट और किताबोंका बस्ता लेकर बछड़ोंकी तरह छलाँग मारते अपने-अपने घर जाते। मेरे शरीर पर सोनेके गहनोंकी जोखिम होनेसे हमारे हेडमास्टर मुझे अकेला नहीं जाने देते और महादू तो कभी-कभी दस-दस मिनिट देरसे आता। शुरूसे ही मुझे बिना किसी अपराधके असी बगैर मजाकी

---

* ॐ नमः सिद्धम् का बिगड़ा हुआ रूप।

सजा भुगतनी पड़ती। मैं हेडमास्टर साहबसे बड़ी आजिजीके साथ कहता — कंठी तो कपड़ेके अन्दर है, कड़े मैं बाँहोंके अन्दर छिपाकर दौड़ता-दौड़ता घर चला जाअूँगा। मराठा मुझे रास्तेमें ही मिल जायेगा तो फिर क्या हर्ज है? लेकिन हेडमास्टर साहब टससे मस न होते।

नयी पाठशालाके नौ दिन पूरे हुअे और मेरा यह सारा आनन्द काफ़ूर हो गया। हमारी पाठशालामें चांदवडकर नामक अेक नये मास्टर आये और दुर्भाग्यसे अुन्हें हमारी ही कक्षा सौंपी गयी। वे शरीरसे मोटे-ताजे और हृष्ट-पुष्ट थे। बुद्धि भी कुछ ज्यादा नहीं थी। लेकिन वे जहाँ बैठते वहाँसे अुठनेमें अुन्हें बड़ा आलस्य आता। हर लड़केको अपने सबकके लिअे अपनी स्लेट लेकर अुनके पास जाना पड़ता। हम सब अुनसे दूर अर्धगोलाकारमें बैठते। हम लड़के ही ठहरे, अिसलिअे बग़ैर शरारतके तो रह ही कैसे सकते? और शरारत न करें तो भी किसी-न-किसी कारणसे सज़ा हो ही जाती। सच पूछा जाय तो मुझमें शरारत थी ही नहीं। सख्ती क्या होती है और गुनाह किसे कहते हैं यह भी मैं नहीं जानता था। कलासका थोड़ा बहुत अनुशासन मेरी समझमें आने लगा था और अुसका पालन भी मैं करता था। जहाँ कुछ समझमें न आता वहाँ शून्य दृष्टिसे देखा करता। अुस वक़्तके मेरे फ़ोटोको देखनेसे मुझे लगता है कि मैं बिलकुल बुद्धू-जैसा तो हरगिज़ नहीं दीखता था। सिर्फ़ चेहरे पर थोड़ा भोलापन या नज़ाकत झलकती थी। फिर भी किसी न किसी कारणसे मुझे रोज़ाना मार पड़ती। चांदवडकर मास्टरके पास बाँसकी तीन हाथ लम्बी अेक छड़ी थी। आसन पर बैठे-बैठे लड़कोंको सज़ा देनेके लिअे यह दिव्य शस्त्र अुनके लिअे बहुत ही सुविधाजनक था। छड़ी खानेके लिअे वे गरजकर हमसे हाथ आगे बढ़ानेको कहते। हाथ बढ़ानेकी मेरी हिम्मत नहीं होती। लेकिन हाथ न बढ़ाता तो मुझ

महाराज पालथी मारी हुअी मेरी खुली जाँघ पर छड़ी जड़ देते। अिस कसरतके कारण हाथ बढ़ानेकी हिम्मत मुझमें आ गयी। यह दुःख रोजाना रहता। लेकिन चूँकि सभी लड़के मार खाते थे, अिसलिअे मैंने मान लिया कि स्कूलकी यह भी अेक आवश्यक विधि है। मुझे अैसा कभी लगा ही नहीं कि अिसमें कुछ अनुचित है या अिसकी चर्चा घर पर करनी चाहिये। लेकिन पाठशालामें आनेकी मेरी प्रफुल्लता कुम्हला गयी। अब तो पाठशाला जानेके लिअे मैं बहुत देरसे अुठता, और अुत्साह-हीन-सा पाठशालाका रास्ता काटता।

यह सिलसिला कभी दिना तक चलता रहा। अेक दिन पाठशालासे घर आकर मैं पेज (पतला भात) खानेको बैठा। छड़ीकी मारके कारण हाथ तो लाल-सुर्ख हो गये थे। गरम भात किसी भी तरह हाथमें नहीं लिया जाता था। आँखोंमें आँसू भर आये। लेकिन अुन्हें बाहर भी नहीं निकलने दिया जा सकता था। भाभीने यह देखा और पूछा, स्कूलमें मास्टरने तुझे मारा तो नहीं? मैंने साफ़ अिनकार कर दिया। लेकिन भाभी कुछ अैसी ही माननेवाली नहीं थी। अुसने सारे घरमें शोर मचा दिया कि दत्तूको मास्टर मारता है। मुझ बुद्धूकी समझमें यह न आया कि भाभी मेरा पक्ष लेकर अितना शोर मचा रही है। मैं तो समझा कि भाभी मेरी फ़जीहत करना चाहती है। मार खानेवाला बालक खराब ही होता है, अितना शास्त्रेय नीतिशास्त्र मैं जानने लगा था अिसलिअे मार पड़ने पर भी अुससे अिनकार करनेकी वृत्ति रहती थी। मुझे भाभी पर बहुत गुस्सा आया। लेकिन शाम तक तो मैं सब कुछ भूल भी गया। अिस प्रकरणमें मेरे पीछे क्या क्या बातें हुअीं सो मैं क्या जानूँ?

पाठशालाकी हमारी शिक्षा (!) हमेशाकी तरह बराबर चलती रही। अितनेमें अेक दिन अेक पुलिसका आदमी हमारी क्लासमें आया और चाँदबड़कर मास्टरको बुलाकर ले गया। थोड़ी देर बाद वे वापस आये। अुन्होंने मुझसे पूछा क्यों रे तूने घर आकर

कुछ कहा था?' मैंने बिना कुछ समझे कहा 'नहीं तो।' लेकिन अब चांदवडकर साहबका सारा रुआब भुतर गया था। वे अपना-सा मुँह लेकर रह गये। वे कुछ नहीं बोले और न भुस दिन मुझ या दूसरे लड़कोंको मार ही पड़ी। दूसरे दिन चांदवडकर वर्गमें आये ही नहीं। मूँछी पढ़ाके विद्यार्थियोंसे हमें खुशखबरी मिली कि चांदवडकरको बरखास्त कर दिया गया है। वे बेचारे नये-नये अुम्मीदवार थे।

शिसके बाद मैंने कभी मास्टरोंके हाथों मार खायी होगी लेकिन बेचारे चांदवडकरकी जिन्दगीकी शुरुआतमें ही मैं बाधक बना। बादमें मुझे मालूम हुआ कि मेरी मामीके कहनेसे मेरे बड़े भाअीने कहीं शिकायत की थी और अुसीके परिणामस्वरूप पाठशालाकी छोटी-सी दुनियामें शितनी बड़ी क्रांति हो गयी थी।

शिस घटनाका परिणाम यह हुआ कि सारी पाठशालाका ध्यान मेरी ओर आकर्षित हुआ और चीटमबाले मास्टरके डिसमिससे सारी जमातका मुक्त मनके कारण बैगसे लड़के मुझे दुआ देने लगे।

७

अक्का

हम सातारामें रहते थे। अेक दिन अेक गाड़ी हमारे दरवाजे पर आकर खड़ी हुअी और अुसमें से मजेदार छीटकी साड़ी पहने अेक महिला नीचे अुतरी। अुसके पास सामान भी बहुत था। मैंने चिल्लाकर मांसे कहा 'माँ अपने यहाँ कोअी महिला आयी है।' मेरी आशा थी कि माँ अंदरसे बाहर आती है तब तक वह दरवाजे पर ही शिन्तजार करेगी। लेकिन वह तो सीधी अन्दर चली गयी और घरके ही किसी व्यक्तिकी तरह घरमें घूमने फिरने लगी।

बादमें पता लगा कि वह तो मेरी बहन थी और बहुत दिन ससुरालमें रहकर मायके आयी थी।

भोजनके बाद मेरी अुस बहनने जिसे हम अक्का कहते थे, अपना सब सामान खोल डालकर माँको दिखाया। अुसमें से पाँच छः सुन्दर गोटियाँ निकलीं। अुन्हें मेरे हाथमें देते हुअे अक्काने कहा दत्तू ले यह गोटियाँ। मैं खुश तो हुआ, लेकिन खुशीसे ज्यादा मुझे आश्चर्य हुआ। बाबा हमें गोटियोंको छूने भी न देते थे। यह बात हमारे मन पर अंकित कर दी गयी थी कि गोटियोंका तो जुआरी लोग ही छूते हैं, गोटियोंका गन्दा खेल भले घरके बालकोंके लिअे नहीं होता। अिसलिअे गोल गोल गोटियाँ देखकर मुँहमें पानी भर आता तो भी अुन्हें छूनेकी हिम्मत हमारी नहीं होती थी।

गोटियाँ लेकर मैं खुश तो हुआ लेकिन अुनसे कैसे खेला जाता है यह किसे मालूम था? दौड़ता-दौड़ता मैं गोंदूके पास गया, और अुससे कहा, 'देख य मरी गोटियाँ! लेकिन अुसे भी खेलना नहीं आता था। अिसलिअे हम दोनों आमने-सामने बठकर गोटियाँ फेंकने लगे। जब हमारी गोटियाँ आपसमें टकरातीं तो हमें खूब मजा आता। पर मनमें यह डर भी अवश्य था कि बाबाकी नजर पड़ते ही न सिर्फ़ खेल बन्द होगा बल्कि गोटियाँ भी जब्त हो जायेंगी!

मैंने तुरन्त ही देख लिया कि घरमें अक्काको सब लोग बहुत प्यार करते हैं। माँ तो अुसकी होशियारी और प्रसन्न स्वभाव पर फ़रेफ्ता थीं। पिताजी सारे दिन यही जाननेको अुत्सुक रहते थे कि भागूको* कौनसी चीज पसन्द आती है और अुसे क्या चाहिये। बाबा और अम्मा अुससे तरह-तरहकी मीठी हँसी-ठठोली करके अुसे प्रसन्न

* भागीरथी का संक्षिप्त रूप भा[ू' था।

रखनेका प्रयत्न करता। मेरे मनमें यह बात अंकित हो गयी थी कि अक्काका बरताव ही आदर्श बरताव है। लेकिन अुसकी अेक बात मुझे खटकती थी। अक्का जब हाथमें पुस्तक पकड़ती, तो हमें शालामें बताये हुअे ढंगसे नहीं पकड़ती बल्कि बायीं ओरके पन्नोंको मोड़कर दोनों जिल्दोंको मिला देती और अेक हाथसे पुस्तक पकड़कर तजीस पढ़ जाती। अुसके मुँहसे कहानी सुनना तो मुझे अच्छा लगता था लेकिन अुसका यों पुस्तकको दुर्गत करना मुझे किसी भी तरह गवारा नहीं होता था!

अुसी दिनसे अक्काने मुझे पढ़ाना शुरू किया। मैं पहली कक्षामें था। मुझे पढ़ना नहीं आता था फिर भी वह मुझसे चिढ़ती न थी। बड़े प्रेम और होशियारीसे पढ़ाती। पढ़ानेकी कला वह बहुत अच्छी तरह जानती थी। हररोज नामके वक्त माँको 'रामविजय' पढ़ सुनाती। मैं भी वहाँ नियमित रूपसे जाकर बैठता।

अेक दिन अक्का माँसे कहने लगी "घरमें हमने जो तोता पाल रखा है अुसे हम छोड़ दें।" मैंने आश्चर्यसे पूछा "क्यों? यह तोता तो हम सबका लाड़ला है।" अक्काने तुरन्त ही मधुर कंठसे नल-दमयन्तीका मराठी आख्यान गाना शुरू किया। अुसमें राजाके हाथमें फँसा हुआ हंस छूटनेके लिअे पंख फड़फड़ाता है, अपनको छोड़ देनेके लिअे राजासे अनेक तरहसे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करता है और फिर भी जब राजा अुसे नहीं छोड़ता तो निराश होकर अपनी जराजर्जर माँ सद्यःप्रसूता पत्नी और छोटे बच्चोंका स्मरण करके विलाप करता है। जब यह प्रसंग आया तो अक्कासे न रहा गया। वह बरबस रो पड़ी। थोड़ी देर बाद अुसने आँसू पोंछकर हमें पद्यका अर्थ करके हमें समझाया। सबके हृदय हिल गये और तुरन्त तय हुआ कि तोतेको छोड़ दिया जाय। विष्णुने नीअपरके पेड़ पर पिंजरा टाँगा और धीरसे अुसका दरवाजा खोल दिया। अेक क्षण भर तो तोतेको बाहर निकलना सूझा ही नहीं।

शायद वह आश्चर्यचकित होकर भवड़ा गया होगा। लेकिन दूसरे ही क्षण पिंजरेके सरिया परस कूद कर दरवाजेमें बैठा और वहाँसे भर्रर्रर्र आकाशमें अुड़ गया। अक्काकी आँखोंमें आनन्दाश्रु छलछला आये। केशूने तालियाँ पीटीं और हम सब गर्दन अुठाकर यह देखने लगे कि तोता कहाँ जाता है। थोड़ी ही देर बाद तोता वापस आया और पिंजरे पर आ बैठा। विष्णू कहने लगा 'अरे, यह तो हमें छोड़कर जानेवाला नहीं है। चलो अुसे धीरेसे पकड़कर फिरसे पिंजरेमें बन्द कर दें। लेकिन अक्काने साफ मना कर दिया। बादमें यह तोता हररोज सीताफलके पेड़ पर आकर बैठता था। अुसे केला या मिरचियाँ देते तो हमारे हाथसे लेकर वह खा लेता और अुड़ जाता। यह सिलसिला लगभग अेक महीने तक चलता रहा। कुछ दिनों बाद वह तोता दूसरे तोतोंमें मिल गया और फिर तो हमारे नजदीक आनेसे भी डरने लगा।

कुछ दिन बाद अक्काके पति बेलगाँवसे हमारे घर आये। हमारे अण्णाके बराबर ही अुनकी अुम्र होगी लेकिन पिताजी अुन्हें भाअीजी कहकर आदरसे बुलाते थे और अुनको हाथ धोनेके लिअे खुद पानी देते थे। अैसे नौजवानकी अितनी खुशामद पिताजी क्यों करते हैं यह मेरी समझमें न आता था। मुझे यह सारा कुछ अप्रिय-सा लगता था। अब तो अुनका नाम भी मैं भूल गया हूँ। अितना ही याद है कि वे न बहुत बोलते थे न हममें घुलते मिलते थे। अुनके कानकी बाली बार बार आगे आती थी और भोजनके समय वे बहुत थोड़ा खाते थे।

बाबाकी लड़की चीमी बहुत ही खुशमिजाज थी। घरके सब लोगोंका मानो वह खिलौना था। अपनी अुम्रके लिहाजसे वह बहुत ही होशियार थी। अक्का अुस खेलाते-खेलाते कभी खिन्न हो जाती और मौसे कहती 'आभी शहाणं माणूस जगत नाहीं।' (माँ समझदार आदमी ज्यादा नहीं जीता।) मेरे मनमें यही चिन्ता

पर किये गये हैं कि हमारी मामी जब जितनी समझदार है तो जिसे लम्बी आयु कैसे प्राप्त हो सकेगी। किन्तु अक्काके शब्द मुझी पर लागू होनेवाले हैं यह बात न अुस समय अक्काके ध्यानमें आयी और न मौका ही वैसी आशंका हुओ।

अब हम सातारासे शाहूपुर आ गये थे। सराफ-गलीमें जो जिसेका घर था वह हमारा ननिहाल था। वहाँ हम रहनेके लिअे आये थे। अक्का बीमार थी। हमारी बड़ी मामी रोजाना सबेर अुठकर पेज (चावलका पतला भात) तैयार करती। और हम सब बड़ी कतारमें खाना खाने बैठते। सब्जीकी जगह हमें कद्दूकी बनायी हुओ बड़ियाँ तलकर दी जाती। सातारामें मैं चावलके आटेकी बड़ियाँ खानेका आदी था। मुझे कद्दूकी बड़ियाँ कैसे अच्छी लगतीं? मैंने अपनी नापसन्दगी जिस प्रकार मामीके सामने जाहिर की कि हमारे यहाँकी बड़ियाँ कौओकी तरह काँव्-काँव् बोलती हैं, तुम्हारे यहाँकी चिड़ियाकी तरह चीव् चीव् बोलती हैं। जिसलिअे तुम्हारी बड़ियाँ मुझे नहीं भाती। मेरा यह वाक्य सब जगह फैल गया।

कुछ ही दिनोंमें घरमें सब जगह अुदासी और चिन्ता छा गयी। अक्काको सख्त बुखार आने लगा था। डॉक्टर शिरगांवकरने कहा कि नवज्वर (टाअिफॉअिड) है। प्रसूतिके बादका टाअि-फॉअिड! फिर कहना ही क्या? अेक दिन सबेरे अुठते ही हमें सामनेके घरमें जीमनेका न्यौता मिला। हम सब ल्डकें वहाँ जीमने गये। न जाने क्यों हमें सारा दिन वहीं रोक रखनेकी कोशिशें होने लगीं। मैं घर जानेकी बात करता तो कोअी बड़ा लड़का रोककर कहता 'बस, तुम्हें अेक कहानी सुनाअूँ।' कहानी पूरी होती तो कोअी गान लगता। आखिर शाम होने लगी। अब मुझे लगा कि सारा दिन हमें यहाँ रोक रखनेमें कुछ रहस्य जरूर है। मैं तंग आकर रोने लगा। मुझे रोता देखकर गमबदनाके और पैर गोंदू भी

रोने लगा। जिनके घर हम गये थे वहाँके लड़के भी परेशान हो अुठे। आखिर अुन्होंने अेक नाटक खेलनेका सगूफा छोड़ा। किसी लड़केने अक कपड़ा साफा बाँधकर अुसका सिरा नाकके नीचे लटकता हुआ रखा और जिस तरह अेक सूँडवाले लम्बोदर गणशजी तैयार हुअे। दूसरे किसीने दो चार झाड़ुओंको जिकट्ठा बाँधकर मोर पंखा बनाया और वह अपनी पीठ पर बाँधकर स्वयं मयूरवाहनी सरस्वती बन गया। फिर गणशजी गान लगे और सरस्वती नाचने लगी।

नाटक तो बड़ी देर तक चलता रहा लेकिन किसी भी तरह मजा नहीं आ रहा था। जितनेमें पड़ोसके दूसरे अेक लड़केने आकर मुझसे कहा तेरा बाप जोर-जोरसे रो रहा है। अुसके य शब्द सुनकर मुझे बड़ा गुस्सा आया। मेरे पिताजीके लिअे अुसने सेरा बाप' असे अपमानजनक शब्दोंका प्रयोग किया था। और क्या मेरे पिताजी कभी रो सकते हैं? अपने छोटेसे जीवनमें मन कभी वैसा नहीं देखा था, अतः मैंने चिढ़कर अुससे कहा तू झूठा है। आखिर नौ बजे हमें घर ले आया गया। वहाँ सब जगह मातमकी शान्ति छायी हुअी थी। कोअी किसीसे बोलता न था। श्मशानसे लौटे हुअे लोग गरम पानीसे नहा रहे थे। घरमें घस जितनी ही हलचल दिखाअी देती थी। अेक कोनेमें चावल भरा हुआ आधा बोरा रखा था। अुस पर पिताजी अेक महीन चद्दर ओढ़कर बैठे थे — असा लगता था मानो ठंडसे काँप रहे हों। मुझे गोदमें लेकर दुःखी स्वरसे कहने लगे दत्तू अपनी भागू (भागीरथी) हमें छोड़कर दूर चली गयी। मेरी समझमें नहीं आता था कि आखिर हुआ क्या है। दूर यानी कहाँ तक? किस लिअे? पिताजी जितने दुःखी क्यों हैं? घरमें कोअी किसीके साथ बोलता क्यों नहीं? पिताजी तो बार-बार अेक ही वाक्य कहते थे अपनी भागू हमें छोड़कर दूर चली गयी।

भर किये व ी हैं कि हमारी भीमी जब जितनी समझदार है, तो अिसे लम्बी आयु कैसे प्राप्त हो सकेगी। लेकिन अक्काके शब्द मुझी पर लागू होनेवाले हैं यह बात न अुस समय अक्काके ध्यानमें आयी, और न माँको ही अैसी आशंका हुअी।

अब हम सातारासे शाहपुर आ गये थे। सराफ़-गलीमें जो जिसेका घर था वह हमारा ननिहाल था। वहाँ हम रहनेके लिअे आये थे। अक्का बीमार थी। हमारी बड़ी मामी रोजाना सवेरे अुठकर पेज (चावलका पतला भात) तैयार करती। और हम सब वही पतारमें खाना खाने बठते। सब्जीकी जगह हमें कद्दूकी बनायी हुअी बड़ियाँ तलकर दी जातीं। सातारामें मैं चावलके आटेकी बड़ियाँ खानेका आदी था। मुझे कद्दूकी बड़ियाँ कैसे अच्छी लगती? मैंने अपनी नापसन्दगी जिस प्रकार मामीके सामने जाहिर की कि 'हमारे यहाँकी बड़ियाँ कौअेकी तरह काँव्-काँव् बोलती हैं तुम्हारे यहाँकी चिड़ियाकी तरह चीव् चीव् बोलती हैं। जिसलिअे तुम्हारी बड़ियाँ मुझे नहीं भातीं। मेरा यह काव्य सब जगह फैल गया।

कुछ ही दिनोंमें घरमें सब जगह अुदासी और चिन्ता छा गयी। अक्काको सख्त बुखार आने लगा था। डॉक्टर शिरगाँवकरने कहा कि मवज्वर (टायफ़ॉयिड) है। प्रसूतिके बादका टायि फ़ॉयिड! फिर कहना ही क्या? अेक दिन सवेरे अुठते ही हमें सामनेके घरसे जीमनेका न्योता मिला। हम सब लड़के वहाँ जीमने गये। न जाने क्यों हमें सारा दिन वहीं रोक रखनेकी कोशिशें होने लगीं। मैं घर जानेकी बात करता तो कोअी बड़ा लड़का रोककर कहता, चल तुझे अेक कहानी सुनाअूँ। कहानी पूरी होती तो कोअी गाने लगता। आखिर शाम होने लगी। अब मुझे लगा कि सारा दिन हमें यहाँ रोक रखनेमें कुछ रहस्य जरूर है। मैं खूब जाकर रोने लगा। मुझे रोता देखकर समझदारके तौर पर गोंदू भी

रोने लगा। जिनके घर हम गये थे वहांके लड़के भी परेशान हो अुठे। आखिर अुन्होंने अेक नाटक खेलनेका शगूफा छोड़ा। किसी लड़केने अेक लंबा साफा बाँधकर अुसका सिरा नाकस नीचे लटकता हुआ रखा और अिस तरह अेक सूँडवाले लम्बोदर गणेशजी तैयार हुअ। दूसरे किसीने दो-चार झाड़ुओंको अिकट्ठा बाँधकर मोर पंखा बनाया और वह अपनी पीठ पर बाँधकर स्वयं मयूरवाहनी सरस्वती बन गया। फिर गणेशजी गाने लगे और सरस्वती नाचने लगी।

नाटक तो बड़ी देर तक चलता रहा लेकिन किसी भी तरह मजा नहीं आ रहा था। अितनेमें पड़ोसके दूसरे अेक लड़केने आकर मुझसे कहा तेरा बाप जोर-जोरसे रो रहा है। अुसके ये शब्द सुनकर मुझे बड़ा गुस्सा आया। मेरे पिताजीके लिअे अुसने तेरा बाप जैसे अपमानजनक शब्दोंका प्रयोग किया था। और क्या मेरे पिताजी कभी रो सकते हैं? अपने छोटेसे जीवनमें मैंने कभी वैसा नहीं देखा था अतः मैंने चिढ़कर अुससे कहा तू झूठा है।' आखिर नौ बजे हमें घर ले जाया गया। वहाँ सब जगह मातमकी शान्ति छायी हुअी थी। कोअी किसीसे बोलता न था। श्मशानसे लौटे हुअे लोग गरम पानीसे नहा रहे थे। घरमें बस अितनी ही हलचल दिखाअी देती थी। अेक कोनेमें चावल भरा हुआ आधा बोरा रखा था। अुस पर पिताजी अेक महीन चद्दर ओढ़कर बैठे थे —अैसा लगता था मानो ठंडसे काँप रहे हों। मुझे गोदमें लेकर दुःखी स्वरसे कहने लगे बत्तू अपनी भागू (भागीरथी) हमें छोड़कर दूर चली गयी। मेरी समझमें नहीं आता था कि आखिर हुआ क्या है। दूर यानी कहाँ तक? किस लिअे? पिताजी अितने दुःखी क्यों हैं? घरमें कोअी किसीके साथ बोलता क्यों नहीं? पिताजी तो बार-बार अेक ही वाक्य कहते थे अपनी भागू हमें छोड़कर दूर चली गयी।

मैं अन्दर गया। मैंने देखा कि माँ कपड़ा ओढ़कर सो गयी है। मुझे क्या मालूम कि माँ सोयी नहीं है बल्कि वज्राघातसे बेसुध होकर पड़ी है! मेरी मौसी अुसके पास बैठी थी। मुझे देखकर वह रोने लगी तो मामा अुस पर नाराज हुअे। कहने लगे, अगर अिस तरह तू रोती रहेगी तो बच्चे क्या करेंगे?

रात जैसे तैसे बीती। दूसरे दिन माँने कुछ भी खानेसे अिनकार कर दिया। सब लोगोंने अुसे हर तरहसे समझानेकी कोशिश की मगर अुसने अेक न सुनी। तब आखिरी अुपायके तौर पर राम मामा मुझे अुसके पास ले गये और मुझसे बोले 'तू अपनी माँसे कह कि यदि तू खाना न खाये तो मेरी गलेकी कसम।' मैं कहने ही वाला था कि माँने दृढ़तापूर्वक मना किया, 'दत्तू, अैसा कुछ मत बोल। फिर तो मातृभक्त दत्तूकी जबान मुझसे ही कैसे? तभी मुझ पर नाराज होने लगे। मेरे प्रति राम मामाका तिरस्कार-भाव तो स्पष्ट दिखाओ दे रहा था। लेकिन मैं किसी तरह टससे मस न हुआ।

'महाव माणूस आमत नाही' य ककाके शब्द आखिर ककाके सर्वथम ही सार्थक हुअे। माँ रोजाना अिन शब्दोंको याद करती और रोती। आखिरी दिनोंमें ककाने अनशन छोड़नेका माँगा था, अिसलिअे माँने अुसके बाद फिर कभी अनशन नहीं छोड़ा।

ककाके संबंधमें मेरे प्रमुख संस्मरण तो अितने ही हैं। लेकिन फिर भी बचपनमें अिन्हीं संस्मरणोंका ध्यान करके मैं अपने मनमें अुनका पोषण करता आया हूँ। आम तौर पर हिन्दू कुटुम्बमें लड़कियोंकी अुपेक्षा की जाती है। लड़के तो सब लाड़ले और लड़कियाँ सब अुपेक्षिता, यह हालत अनेक प्रान्तोंमें है। कन्नड़ भाषामें तो यह कहावत ही है कि 'साकु सावित्री बकु बंगरप्पा' यानी जब बहुत लड़कियाँ हो जायें तो लड़कीका नाम रखा जाय सावित्री,

जिसका मतलब यह हुआ कि माकु मानी बस, अब लड़की नहीं चाहिए और अब लड़कोंके लिये भगवानसे प्रार्थना करनी हो तो लड़केका नाम व्यंकटेश रखा जाय। वेंकु मानी चाहिए।

लेकिन हमारे घरकी हालत जिससे अलग थी। हमारे यहाँ अक्काकी स्थिति सब तरहसे स्पृहणीय थी। बाबा-अण्णाकी तरह ही अुसको प्यार किया जाता था और लड़कोंकी तरह ही अुसकी शिक्षा दीक्षा हुअी थी। मनुष्यकी लगभग सभी शुभ वृत्तियाँ कौटुम्बिक वातावरणमें ही खिलती हैं। अुसमें भी माँके बाद यदि लड़कों पर ज्यादासे ज्यादा किसीका प्रभाव पड़ता है तो वह बड़ी बहनका होता है। मनुष्यका अपनी माँके साथका संबंध असाधारण होता है। अपनी पत्नीके साथका अुसका संबंध अेकान्तिक और अद्वितीय ही होता है। अपनी लड़कीका संबंध भी अैसा ही वशिष्टयपूर्ण होता है। लेकिन जो संबंध आसानीसे व्यापक बन सकता है जिसमें सारी स्त्री-जातिका अन्तर्भाव हो सकता है वह तो भाभी-बहनका ही है। मैं बहुत छोटा था तभी मेरी अिकलौती बहन गुजर गयी अिसलिये जिन्दगीका मेरा यह अंग पहलेसे ही धूम्रवत् हो गया है। स्त्रियोंकी भक्ति में दूरसे ही करता हूँ स्वाभाविक ढगसे अुनसे परिचय प्राप्त करना मुझे आता ही नहीं। भगिनी-प्रेमकी भूख रह ही गयी है। जैसे-जैसे जीवनकी व्यापकता और सर्वांग सुन्दरताका आदर्श परिपक्व होता गया वैसे-वैसे जिस विचारसे मन हमेशा अुदास रहा है कि मेरे अेक बहन होती तो कितना अच्छा होता। अपनी बहन न होनेके कारण नअी-नअी बहनें बनाना नहीं आता यह कोअी मामूली कठिनाअी नहीं है।

अपने आदर्शके अनुसार मैं अैसी कअी बहनोंको जानता हूँ जो पूजनीया हैं। और मुझे पूरा विश्वास है कि अुनके परिचयसे मैं अवश्य पावन और मुक्त बनूँगा। लेकिन हृदयकी भूख तो अक्काके जिन थोड़े-से पवित्र संस्मरणोंसे ही बुझानी रही।

विविधता होती है कि वह बड़ोंकी समझमें नहीं आ सकती। जितनी-सी बात भी यदि वे ध्यानमें रखेंगे, और बच्चोंके साथ बरताव करते समय अपनमें आवश्यक धीरज पैदा कर सकेंगे तो बाल-द्रोहसे बच जायेंगे।

आखिरकार गाड़ी घरके दरवाजे पर आकर खड़ी हुअी। मामा कहने लगे 'दत्तू पैसे ला तो दूँ।' दत्तू पैसे कहाँसे लाता? वह तो दीवानकी तरह टुकुर-टुकुर देखता ही रह गया। लेकिन कुछ तो जवाब देना ही चाहिये था। मैंने कहा — 'पैसे तो हाथमें से गिर गये।'

'कहाँ गिर गये? कैसे गिर गये?'

'हनुमानके मंदिरके सामने, जहाँ वे लड़के लड़ रहे थे।'

'तब पगले मुझे अुसी वक्त क्यों नहीं बताया?'

'लेकिन अेक लड़केने अुन्हें अुठाया यह मैंने देख लिया था।'

मामा तिरस्कारसे हँसे। जिसके अुत्तरमें मैंने अपना लज्जित और दीन चेहरा अुन्हें दिखाया। मामा न मुझ पर नाराज हुअे और न मेरे सामने घरमें किसीसे अुन्होंने अुसके संबंधमें कुछ कहा ही। बच जानेके जिस आनन्दमें मैं तो अपनी झेंप भूल गया। अपनी प्रिय बहनका सबसे छोटा लड़का घर आया है अुस पर नाराज कैसे हुआ जा सकता है? जिस अुदार विचारसे ही मामाने मनकी बात मनमें रखी होगी। यह लड़का निरा बेवकूफ है, असा निर्णय भी अुन्होंने अपने मनमें कर लिया होगा और आखिर वह बात वे भूल भी गये होंगे। लेकिन मेरे सामने तो अुस दिनका सारा दृश्य अुस दिन जितना ही आज भी ताजा है। आप यदि कहें तो हनुमानके मन्दिरके सामनेकी वह जगह आज भी बराबर दिखा सकता हूँ।

९

ठूँठा मास्टर

सातारासे हम अक्सर शाहपुर जाते। शाहपुर और बेलगाँव दोनों लगभग अेक ही है। शाहपुरमें हमारा ननिहाल था। अुन दिनों रेल न थी। अिसलिअे मुसाफ़िरी बैलगाड़ीसे होती थी। अेक बार हम बैलगाड़ीमें बैठकर सातारासे शाहपुर आये थे अुसकी मुझे अभी तक याद है। हम अपने मँझले मामा विष्णुकी शादीमें जा रहे थे। अनका अण्णा और बाबास विष्णु छोटा था। वह बाल-विवाहका जमाना था — लड़की आठ बरसकी और लड़का बारह बरसका हो जाता तो अुनके ब्याहकी फ़िक्र माँ-बापों पर सवार हो जाती। अिसीलिअे विष्णुकी शादी भी छोटी अुम्रमें हाने जा रही थी।

रास्तेमें अेक सुन्दर पत्थरके पुलके नीचे नदीके किनारे हम अुतरे थे। पिताजी साथमें नहीं थे। गाड़ीकी मुसाफ़िरीमें बहुत समय लगता था और अुन्हें अितनी छुट्टी मिलना संभव न था। अिसलिअे वे बादमें डाकके ताँगेमें आनेवाले थे। मेरे मामीने नदीके किनारे तीन पत्थर जमा कर चूल्हा बनाया और रसोअी बनानेकी तैयारी की। अितनेमें माँने कहा — 'यहाँ रसोअी नहीं बनायी जा सकती चलो आगे चलें।' अैसा मज़ेदार पुल शीतल छाया और भूखका समय! अैसी हालतमें माँने कूच करनेका हुक्म क्यों दिया होगा यह हमारी समझमें नहीं आया। हम सब माँकी तरफ़ देखते ही रह गये। माँने कहा नदीके पानीमें सब बुलबुले भरे हैं। देखता हूँ तो सचमुच पानी धीरे-धीरे बह रहा था और अूपर बहुत-सा गन्दा फेन और बुलबुले थे। मैंने दलील पेश की अूपर भले ही

बुलबुले हों पर नीचेका पानी तो साफ़ है न!' माँने कहा 'मा यह नदी अपवित्र है। शास्त्रमें कहा है कि अब नदीमें बुलबुले हों, तब अुस पानीको छूना भी न चाहिये। असी नदी रजस्वला समझी जाती है।

शाहपुर पहुँचे तो वहाँकी दुनिया ही अलग थी। जमीन सब लाल-लाल। जमीन पर तनिक बैठ जायें तो कपड़ लाल हो जाते। पहले दिन मने कुछ लाल ककर सिकट्ठे किये लेकिन बादमें अुनका वह आकर्षण नहीं रहा। मेरे मामाकी लड़की मुझसे जिस भाषामें बोलती वह मेरी समझमें पूरी नहीं आती। मेरी भाषा मराठी, अुसकी कोंकणी। सब जगली-जंगली असा लगता था। छाबू बहुन मुझसे कहने लगी, चल! तुम ठूँठे मास्टरकी पाठशालामें पढ़ने चलें।' ठूँठ मास्टर सचमुच अेक विचित्र व्यक्ति थे। कद ठिगना स्वभाव अुग्र और दोनों हाथ ठूँठे। धोती बदलनी होती तो स्त्रीकी मदद लेनी पड़ती! लेकिन पढ़ानेमें बड़े माहिर थे। अुनके यहाँ ओसारेमें लड़क कतारमें बठत। वे हर लड़केके पास बारी-बारीसे आकर बैठत पैरमें सिलेट-पेन्सिल पकड़कर पट्टी पर सुन्दर अक्षरोंमें लिखते और कहते 'अिस पर हाथ फिरा। कागज भी जमीन पर रखकर और पैरके अँगूठे और पासकी अँगुलीमें कलम पकड़कर अितनी तेजीसे और अितने सुन्दर अक्षर लिखते मानो आजकलके अखबारोंके रिपोर्टर हों!

बाँदवडकर मास्टरका अनुभव ताजा ही था। लेकिन ठूँठे मास्टरको देख लेनेके बाद मनमें विचार आया कि यहाँ तो हम सलामत हैं। जहाँ हाथ ही न हो वहाँ छड़ीका भय ही कैसा? लेकिन मरा यह आनन्द अधिक समय तक नहीं टिका। मैं जरा अिधर-अुधर देख रहा था कि ठूँठे मास्टरने आकर पैरसे मेरी मुझी जाँघ पर असी चिमटी भरी कि मैं चीखता हुआ पाठशालासे भाग ही गया। दूसरे दिन पाठशालामें जानेसे मैंने साफ़ अिनकार कर दिया। मैंने विचार किया

कि यहाँ कहाँ बाबा हैं जो मुझे डराकर पाठशाला भेजेंगे ? लेकिन मेरे दुर्भाग्यसे बाबाका काम मेरी बड़ी मामीने किया। वह मुझे जबर्दस्ती उठाकर पाठशाला ले गयीं। रास्तेमें ही मैंने सोचा कि यदि आज हार गये, तो पाठशालाकी बला हमेशाके लिये सिर पर — अथवा सच कहूँ तो कांध पर — चिपट जायेगी। अिसलिअे पाठशालाके दरवाजेमें मामीने मुझे जमीन पर रखा ही था कि मैंने दोनों पैरोंका पूरा अुपयोग करके गलीका दूसरा सिरा पकड़ा। मामीका शरीर कोमी हलका-फुलका न था, जो वे मेरे पीछे दौड़कर मुझे पकड़ लेतीं। आखिर मेरी जीत हुओी, और जब तक हम शाहपुरमें रहे मुझे पाठशाला न जानेकी छूट मिल गयी। मेरे कारण गोदू बहन भी घर पर ही रहने लगी। और हमने कहानियोंका मजा लेना शुरू किया।

१०

तू किसका ?

बेलगुंदी हमारा मूल गाँव। वह शाहपुरसे लगभग आठ मील दूर है। दो छोटी छोटी सुंदर पहाड़ियोंकी तलहटीमें अेक ओर वह बसा हुआ है। हम अेक बार बेलगुंदी देखनेको गये और मामाके यहाँ रहे। पहले ही दिन सहज ही माँके साथ ग्राम-ज्योतिषीके घर गये थे। वहाँ पहुँचे कि तुरन्त ही अपने राम तो झोंपड़ीकी आस्तीके बाँसको पकड़कर झूलने लगे। देहाती छप्पर वह क्या असा जुल्म सह सकता था ? अुसने तुरन्त ही कर्रर कर्रर आवाज करके मेरे खिलाफ शिकायत की। सभी मुझ पर नाराज होने लगे। मुझे वहाँसे तरकीबसे निकालनेके लिये मेरी छोटी मामीने कहा — "तू हमारी अिस छोटी यमू (यशोदा) को लेकर घर जा। अिसे अच्छी तरह सम्हालना। देखो, रास्तेमें ठोकर खाकर दोनों गिर न पड़ना।" भाभी बहनको लेकर चला तो

सही लेकिन मामाका घर किधर है' यह याद न रहा! बहनका हाथ पकड़कर चलता ही चला गया। गाँवका दूसरा सिरा आ गया अन्त्यज-बाड़ा आया फिर भी हम चले ही जा रहे थे। आखिर अेक महतरानी बुढ़ियाने हमें देखकर कहा ये किसके बालक है? कहाँ जा रहे हैं? मेरे सामने आकर वह पूछने लगी बाळ तू कोणाचा? (बेटा तू किसका लड़का है?)

मैं रास्ता भूल गया हूँ और मेरा ठिकाना जाननेके लिअे यह बुढ़िया मुझ पूछ रही है अितना भी मेरे दिमागमें न आया। मैंने तुरन्त ही जवाब दिया मी आमीचा (मैं अपनी माँका)। रास्ते परके सभी लोग हँसने लगे। सच पूछो तो मेरा जवाब कोअी बुद्‌-बुसा तो न था। हमारे घरमें सगे-सबंधियोंमें से कअी बूढ़ियाँ आकर यह जाननेके लिअे कि हमारा प्यार माँकी ओर है या पिताकी ओर हमें सवाल पूछतीं कि बेटा तू किसका? अुस दिनकी अपनी धुनके अनुसार हम कह देते माँका या पिताका। मैंने सोचा कि यह बुढ़िया भी अुसी भावसे लाड़ लड़ानेके लिअे पूछ रही है। अिसलिअे मैंने अपना स्पष्ट जवाब दे दिया था। बुढ़ियाने गेसूकी ओर झुक कर पूछा और बेटी तू किसकी? बहन क्या अपने भाअीके प्रति बेवफा हो सकती है? अुसने तुरन्त ही जवाब दिया 'मी मामाची (मैं मामाकी हूँ)। वह अपने पिताको मामा कहती थी। हमसे अिससे ज्यादा जानकारी मालूम होनेकी संभावना तो थी ही नहीं। अिसलिअे बुढ़ियाने कहा बेटा चल मेरे साथ मैं तुझ घर पहुँचा दूँ। यह तेरा रास्ता नहीं है। हम बुढ़ियाके पीछे पीछे चलने लगे। रास्तेमें पूछती पूछती बुढ़िया हमें अपने मामाके घर तक ले आयी। वहींसे यदि वह लौट जाती तब तो मैं अुसका अुपकार जन्म भर नहीं भूलता। लेकिन अुस बुड्ढीने तो हमारे सवाल-जवाबकी रिपोर्ट मलारध मामाको दे दी। सब हँस पड़े। जहाँ जाता वहीं मेरा जवाब भूकने लगा। जो भी मुझ देखता, कहता —

'भी आओीचा। मैं शरमसे पानी पानी हो जाता। दत्तू निरा बुद्धू है असा मामाके यहाँ सबको पूरा विश्वास हो गया। लेकिन अीश्वरकी कृपासे दूसरे ही दिन मुझे अपनी योग्यता सिद्ध करनेका मौका मिल गया।

११

अमरूद और जलेबियाँ

हमारी मौसीके बगीचेमें बहुत अच्छे अमरूद होते थे। बड़े बड़े अमरूद अन्दरसे बिलकुल लाल होते हुअे भी अुनमें ज्यादा बीज न रहते थे। अेक बार मौसीने अेक बड़ा टोकरा भरके बड़ी बड़ी भारगी असे अमरूद भेजे। नौकर जमीन पर टोकरा रखता अुसके पहले ही हम सब लड़के वहाँ पहुँच गये और हरअेकने अेक-अेक बड़ा अमरूद हाथमें ले लिया। सब लोग यह समझते थे कि छोटे बालक यदि पूरा अमरूद खा जायँ तो बीमार पड़ेंगे। अिसलिअे मेरे बड़े भाअी अण्णा और विष्णु हमारे पीछे दौड़े और कहने लगे, 'लाओ सारे अमरूद लौटाओ।' लड़कियाँ तो सभी डरपोक। जिस तरह हथियारबंदीका क़ानून बन जाते ही हिन्दुस्तानके लोगोंने अपने शस्त्रास्त्र अंग्रेज सरकारको सौंप दिये, अुसी प्रकार लड़कियोंने अेकके बाद अेक अपने अमरूद झट-झट लौटा दिये। लेकिन हम लड़के तो लुटेरे ठहरे! जब तक दममें दम रहे तब तक आत्मसमर्पण न करनेका हमने निश्चय किया। हमने पलायन-युद्ध शुरू किया! अण्णा और विष्णु हमारे पीछे लग गये। कचू गोंदू वगैरा सब पलायन-विद्यामें प्रवीण थे। अुनमें से कोअी हाथ न लगा। मैं सबमें छोटा था। मेरी बिसात ही कितनी? तुरन्त ही अण्णाने मुझे पकड़ लिया। पीछेसे आकर अुन्होंने दोनों बाजूसे पकड़कर मुझ अूपर

ही अुठा लिया। केशू-गोंदून हाहाकार मचाया! और मचायें क्यों नहीं? अपने पक्षका अेक महारथी (यद्यपि कहना तो महापराति चाहिये) मात खाय, यह अुन्हें कैसे सहन हो? और यदि मेरा अमरूद छिन जाता, तो फिर अमरूद खानेमें अुनका मजा ही बस जाता? वे लोग मेरी कोओी मदद तो कर नहीं सकते थे। अतः केशू कहने लगा, फेंक तेरा अमरूद मेरी ओर। लेकिन अुसे क्या मालूम कि विष्णु पीछेसे आकर क्रिकेटके wicket keeper (विकेटरक्षक)की तरह अुसके पीछे ही खड़ा था? मैं यदि अमरूद फेंक देता तो विष्णु अुसे अूपर ही अूपर रोक लेता। तब क्या किया जाय? मेरे हृदयमें अुस वक्त कितना मंथन चल रहा था! आज यदि हार गया तो तमाम बेलगुंदी गाँवमें मेरी अिज्जत न रहेगी। अभी कल ही तो मेरी फजीहत फैल चुकी है। लेकिन जैसा कि भगवद् गीतामें कहा गया है 'ददामि बुद्धियोगं तम्' अिस न्यायसे अुसी वक्त मुझे युक्ति सूझी। मेरे हाथ खुले ही थे। मैंने अमरूदका अेक बड़ा टुकड़ा मुँहसे तोड़ कर अण्णासे कहा 'अब लो यह जूठा अमरूद खाना हो तो।' अुन्होंने मुझे जमीन पर रख दिया और सचमुच अमरूद लेनेके लिअे हाथ बढ़ाया। मैंने बिलकुल अमोघ बुद्धिसे अमरूद बिलकुल ही स्वादसे अुनकी पहुँचीका भी काटा। व मुँहसे अुसके पहले ही केशू और गोंदून विजयध्वनि की। मेरी बहादुरीसे खुश होकर विष्णु भी मेरी तारीफ करने लगा। यह सब देखकर अण्णाने भी अब मुँह फुलानेके बजाय हँसनेमें ही अपनी होशियारी समझी।

आरामसे अमरूद खा लेनेके बाद भोजनकी भूख कम ही थी। लेकिन केशू कहने लगा यदि आज हम कम खायेंगे तो हमारी टीका-टिप्पणी होगी। हमें तो सिद्ध करना चाहिये कि अमरूद खाना तो बच्चोंके लिअे खेल है। अिसलिअे अपनी साख जमानेकी खातिर अुस दिन हमने प्रतिदिनकी अपेक्षा ज्यादा खाया। हमें किसीको यह न सूझ पड़ा कि सच्ची साख तो बीमार न पड़नेमें है। अिसलिअे

जो बात अमरूदसे न होती, वह आबरूके अिस झूठ खयालसे हुअी और ज्यादा खानेसे गोंदू तो सचमुच बीमार पड़ा।

दूसरे दिन अेकान्त देखकर मैंने और केशूने गोंदूको खूब खरी-खोटी सुनायीं कि तू सच्चा बहादुर ही नहीं। आबरू रखनेके लिअे यदि खायें, तो क्या अुससे बीमार पड़ा जाता है? दो दिन भी तुझसे न ठहरा गया?

* * *

चार दिनके बाद गोंदू दो हरी मिरचियाँ ले आया और मुझसे कहने लगा 'दत्तू चल अिसमेंसे अेक तू खा ले।' मैंने पूछा, 'भला क्यों?' तो कहने लगा, 'तुझे मालूम है? आज आबा (नाना) कहते थे कि यदि बचपनमें कष्ट अुठाओगे तो बड़ी अुमरमें सुखी होगे? छुटपनमें कड़वा खाओगे तो बड़े होने पर मीठा मिलेगा। बस, आजसे हम दोनों मिरची खायें ताकि बड़े होने पर हमें पेड़े-जलेबियाँ मिलें।" नानाजीकी बातका यह रहस्य तो मेरी समझमें न आया लेकिन यदि ना कहूँ तो कायर माना जाअूँगा, अिस डरस मैं गोंदूके बुद्दूपनका शिकार बन गया। हम दोनोंने अेक-अेक मिरची खायी। गोंदूको अितना तो सन्तोष था कि अिसके बदलेमें अुसे बड़ा होने पर मीठा-मीठा खानेको मिलेगा। मेरे पास तो अितना सन्तोष भी नहीं था। मरा तो शुद्ध निष्काम कर्म रहा।

कुछ ही दिनोंमें हम फिर शाहपुर गये। न जाने क्यों मुझमें और गोंदूमें जितनी अीमानदारी थी अुतनी केशूमें नहीं थी। वह चाहे जब चाहे जो चीज (अलबत्ता घरकी हो तो ही) और चाहे जिस तरह अुठा लाता। अुसके नीतिशास्त्रमें चोरीकी हद दूसरके घर तक ही मानी जाती अपने घर चाहे जो किया जा सकता था।

सहालग आया। पिताजीने अलमारीमें अेक टोकरी भरकर जलेबियाँ रखी थीं। चीटियोंको भी मालूम हो अुसके पहले केशूको अुसकी खबर लग गयी! अुसने अुसमेंसे दो-चार जलेबियाँ निकाल लीं। लेकिन अपने लाड़ले दत्तूके बिना वह खाता कैसे? मुझ अेकान्तमें बुलाकर

कहने लगा 'ले यह जलेबी खा।' अिसके पहले जलेबी मैंने न कभी देखी थी न खायी थी। अेक टुकड़ा मैंने अपने मुँहमें डाला, लेकिन अुसका खट्टा-मीठा स्वाद मुझे पसन्द नहीं आया। मैंने खानेसे अिनकार कर दिया। अितनी 'होशियारी' से हासिल की हुअी जलेबियोंको व्यर्थ जाते देखकर कच्चूको मुझ पर गुस्सा आया। अुसने मेरा गाल पकड़कर जोरसे खींचा और कहने लगा 'म्हारड्या (बेड) खा! खा नहीं तो पीटता हूँ।' मारके डरसे मैंने जलेबी खायी और बुरा-बुरा मुँह बनाता हुआ मैं वहाँसे चला गया। चार-पाँच दिनों तक रोजाना जलेबी खानेकी यह जबरदस्ती मुझ पर होती रही और अिस तालीमके अन्तमें मैंने जलेबी खाना सीख लिया।

—

१२
सातारासे कारवार

पिताजीका तबादला सातारासे कारवार हो गया और हम लोगोंने सातारासे हमेशाके लिये बिदा ली। घर पर नरसा नामका अेक बैल था। अुसे हमने मामाके घर बळगुंदी भेज दिया। महादूको छुट्टी देनी ही पड़ी। बेचारेने रो-रो कर आँखें सुर्ख कर लीं। नौकरानी यमुनाको छोड़ते समय माँने अुसको अपनी अेक पुरानी किन्तु अच्छी साड़ी दे दी और अुसने हम सबको बहुत दुआयें दीं। घरके बहुत सारे सामान असबाबको ठिकाने लगाकर हम पहले शाहपुर गये और वहाँ कुछ रोज रहकर वेस्टर्न अिण्डिया पेनिनसुलर रेलवेसे मुरगाँव गये। रास्तेमें दूधसागरके स्टेशन पर पानीके फव्वारे छूट रहे थे जिन्हें देखनेमें हमें बड़ा मजा आया। लोंडे पर गाड़ी बदलकर हम डब्लू० आअी० पी० रेलवेके डिब्बेमें बैठ गये।

गोवा और भारतकी सरहद पर कैसल रॉक स्टेशन है। वहाँ पर कस्टमवालोंने हम सबकी तलाशी ली। हमारे पास पूँजीके

लायक भला होता ही क्या ? लेकिन सफ़रमें बच्चोंके खानेके लिअे डिब्बे भर-भरके छोटे-बड़े लड्डू लिये थे। मुँह देखकर कस्टम्सके सिपाहीके मुँहमें पानी भर आया। अुसने निःसंकोच हमसे वह माँग ही लिये। वह बोला 'आपके ये लड्डू हमें खानेको दे दीजिये।' मैंने सोचा कि हमारे लड्डू अब यहीं पर खतम हो जायेंगे। माँका दिल पिघल गया और वह बोली, 'ले भैया अिसमें क्या बड़ी बात है?' लेकिन पिताजीने बीचमें दखल देते हुअे कहा, 'दूसरे किसीको भी दे दो, लेकिन अिस सिपाहीको देना तो रिश्वत देने जैसा है।

सिपाही बोला, 'हम किसीसे कहने थोड़े ही जायेंगे ? आपके पास चुंगीके लायक चीजें मिली होतीं और हमने आपसे चुंगी वसूल न की होती तो आपका लड्डू देना रिश्वतमें शुमार हो जाता।"

पिताजीका कहना न मानकर माँने अुन तीनोंको अेक-अेक बड़ा लड्डू दिया। घीम तले हुअे और चीनीकी चाशनीमें पगे हुअे लड्डू अुन बेचारोंने शायद अुससे पहले कभी खाये न होंगे। मुँहोंमें लड्डुओंके टुकड़े अपने मुँहमें ठूँसकर अपने गालोंके लड्डू बना लिये।

पिताजीको मुखातिब करके माँ बोली, "क्या मैं घरके चपरासियोंको खानेको नहीं देती थी ? ये तो मेरे लड़कोंके समान हैं। अिन्हें खानेको देनेमें शर्म किस बातकी ? आज तक अैसा कभी नहीं हुआ कि किसीने मुझसे कुछ माँगा हो और मैंने देनेसे अिनकार किया हो। आज ही आपकी रिश्वत कहाँसे टपक पड़ी ?"

कैसल रॉकसे लेकर तिनमी घाट तककी शोभा देखकर आँखें ठंडी हो गयीं। यह कहना कठिन है कि अुसमें देखनेका आनन्द अधिक था या अेक-दूसरेको बतानेका। हमने दाहिनी तरफ़की खिड़कियोंसे बायीं तरफ़की खिड़कियों तक और फिर

बायीं तरफ़की खिड़कियोंसे दाहिनी तरफ़की खिड़कियों तक नाच कूदकर डिब्बेमें बैठे हुये मुसाफ़िरोंकी नाकोंमें दम कर दिया।

फिर आया दूधसागरका प्रपात। वह तो हमसे भी ज़ोरज़ोरसे कूद रहा था। हमने जिससे पहले कोबी जलप्रपात नहीं देखा था। जितना दूध बहता देख हमको बड़ा मज़ा आया। हमारी रेलगाड़ी भी बड़ी रसिक थी। प्रपातके बिलकुल सामनवाले पुल पर आकर वह खड़ी हुबी और पानीकी ठंडी-ठंडी फुहार खिड़कीमें से हमारे डिब्बेमें आकर हमको गुदगुदाने लगी। अुस दिन हम सोनेके समय तक जलप्रपातकी ही बातें करते रहे।

हम मुरगांव पहुंच गये। आजकल मुरगांवको लोग मार्मागोवा कहते हैं। हम स्टेशन पर अुतरे और रेलकी बहुतसी पटरियोंको लांघकर अेक होटलमें गये। वहां भोजन करनेके बाद मैं जिधर अुधर पड़ी हुबी सीपियां लेकर खेलने लगा। जितनेमें केशू दौड़ता हुआ मेरे पास आया। अुसकी विस्फारित आंखें और हांफना देखकर मुझे लगा कि अुसके पीछे कोबी बैल लगा होगा।

अुसने चिल्लाकर कहा, 'दत्तू दत्तू जल्दी आ! जल्दी आ! देख, यहां कितना पानी है! अरे फेंक दे यह सीपियां। समुंदर है समुंदर! चल मैं तुझे दिखा दूं।' बचपनमें अेकका जोश दूसरेमें आ जानेके लिये अुसके कारणको जान लेनेकी ज़रूरत नहीं हुआ करती। मुझमें भी केशू जैसा जोश भर गया और हम दोनों दौड़ने लगे। गोंदूने दूरसे हमको दौड़ते देखा तो वह भी भागने लगा, और हम तीन पागल ज़ोर-ज़ोरसे दौड़ने लगे।

हमने क्या देखा! जितना पानी सामने अुछल रहा था जितना अब तक हमने कभी नहीं देखा था। मैं आश्चर्यसे आंखें फाड़कर बोला 'बबबबब ! कितना पानी!' और अपने दोनों हाथोंको जितना फैलाया कि छातीमें तनाव पैदा हो गया। केशू और गोंदूने

भी अपने अपने हाथोंको फैला दिया। अगर अुस हालतमें पिताजीने हमको देख लिया होता, तो अुन्होंने कॅमेरा लाकर हमारी तस्वीरें खींच ली होतीं। कितना पानी है! कितना सारा पानी कहाँसे आया? देखो तो, धूपमें कैसा चमकता है! हम अेक-दूसरेसे कहने लगे। बड़ी देर तक हम समुद्रकी तरफ देखते रहे फिर भी जी नहीं भरा। अब अिस पानीका किया क्या जाय? बिलकुल क्षितिज तक पानी ही पानी फैला हुआ था और अुससे चुप भी न रहा जाता था। अुसके साथ हम भी नाचने लगे और जोर-जोरसे चिल्लाने लगे, समुद्र! समुद्र!! समुद्र!!! हर बार समुद्र' शब्दके मुद्र को अधिकसे अधिक फुलाकर हम बोलते थे। समुद्रकी विशालता लहरोंके खेल और अिस प्रकारका दृश्य पहली ही बार देखनेको मिलनेसे होनेवाले हमारे अत्यधिक आनंदको प्रकट करनेके लिअे हमारे पास अन्य कोअी साधन ही न था। जिस तरह समुद्रकी लहर घूमकर फूलकर फट जाती है अुस तरह हम समुद्रकी रट लगाकर तालके साथ नाचने लगे लेकिन हम लहरें तो थे नहीं अिसलिअे अन्तमें थक गये और अिधर अुधर देखने लग तो अेक तरफ अेक अेक फुटसे जितनी बड़ी अींटें चुनी हुअी हमने देखीं। अुनमें से कुछ टेढी थीं तो कुछ सीधी। अुस समय मुझे दूकानमें रखी हुअी साबुनकी बट्टियों और दियासलाअीकी डिब्बियोंकी अुपमा सूझी। वास्तवमें वह मुरगावका धक्का था जो बड़ी बड़ी अींटोंसे बनाया गया था। शिवजीके साँडकी तरह समुद्रकी लहरें आ आकर अुस धक्केके साथ टक्कर ले रही थीं।

हम घर लौटे और समुद्र कैसा दीखता है अिसके बारेमें घरके अन्य लोगोंको जानकारी देने लगे। समुद्रके नक्कारखानेमें बेचारे दूधसागरकी तूतीकी आवाज अब कौन सुनता?

सूर्य समुद्रमें डूब गया। सब जगह अंधेरा फैल गया। हम खाना खाकर बड़के साथ लगे हुअे जहाज पर चढ़ गये। लोहेके

तारोंका जो कठड़ा होता है अुसके पासकी बेंच पर बैठकर गोंदू और मैं यह देखने लगे कि अूंट जैसी गर्दनवाले भारी बोझ अुठानेवाले यंत्र (क्रेन) बड़े बड़े बोरोंको रस्सोंसे बांधकर कैसे अूपर अुठाते हैं और अेक तरफ़ रख देते हैं। हमारे सामनेके क्रेनने अेक बड़े ढेरमें से बोरे निकालकर हमारे जहाजके पेटको भर दिया। यंत्रोंकी घर्र घर्र आवाजके साथ मल्लाह ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाते, 'आवेस! आवेस! — आम्या! आम्या!' जब वे 'आवेस' कहते तब कलकी ज़ंजीर कस जाती और 'आम्या' कहते तब वह ढीली पड़ जाती। कहते हैं कि ये अरबी शब्द हैं।

हम मज़ा देखनेमें मशगूल थे कि अितनेमें हमारे पीछेसे मानो कानमें ही 'भों भों भों' की बड़े ज़ोरकी आवाज़ आयी। हम दोनों डरके मारे बेंचसे झट कूद पड़े और पागलकी तरह अिधर अुधर देखने लगे। हमारे कानोंके परदे गोया फट जा रहे थे। अितने नज़दीक अितने ज़ोरकी आवाज़ बर्दाश्त भी कैसे हो? कहाँ तो दूरसे सुनाअी देनेवाली रेलकी 'कू कू कू' वाली सीटी और कहाँ यह भैंसकी तरह रेंकनेवाली 'भों भों' की आवाज़! आखिरकार वह आवाज़ रुक गयी। सबकोंका पुल पीछे खींच लिया गया। आन-जानेके रास्ते परसे निकाला हुआ कँटीला कठड़ा फिरसे लगाया गया और धस धस करते हुअे हमारे जहाजने किनारा छोड़ दिया। देखते देखते भंवर शुरू हुआ। किसीने रूमालको हवामें फहराकर तो किसीने सिर्फ़ हाथ हिलाकर अेक-दूसरेसे विदा की। अैसे मौक़ों पर सब लोगोंको कुछ न कुछ भूली हुअी बात ज़रूर याद आ जाती है। वे ज़ोर ज़ोरसे चिल्लाकर अेक दूसरेको वह बताते हैं और दूसरा आदमी अुसकी तसल्लीके लिअे 'हाँ हाँ' कहता रहता है, फिर भले ही अुसकी समझमें ख़ाक भी न आया हो।

यह सब मज़ा देखकर हम अपनी अपनी जगह पर बैठ गये। जहाज़में सब जगह बिजलीकी बत्तियाँ थीं। रेलमें अलग ढंगके

दीये थे। वहाँ खोपरेके और मिट्टीके मिले हुमे तलमें जलनेवाली बत्तियाँ काचकी हंडियोंमें लटकती रहती थीं। यहाँ दीवारोंमें छोटे छोटे काचके गोलोंके अंदर बिजलीके तार जलकर धीमी रोशनी दे रहे थे।

यह सारा दिन नये-नये और विभिन्न अनुभवोंकी अेक मजेदार खिचड़ी थी। आँखें काम और मन अनुभव ले लेकर थक गये थे। अिसलिअे यह मालूम भी न हुआ कि नींदने कब और कैसे आकर घेर लिया। नींदमें से सपनके राजमें केवल अेक ही बातने प्रवेश पाया था कि जहाजका हिंडोला बड़े प्यारसे झूल रहा है।

१३

"मुझे खेला दीजिये"

हमें कारवार गये बहुत दिन हो गये थे। पहले-पहल समुद्र देखनेका कुतूहल कुछ-कुछ कम हो गया था। अूँचे-अूँचे और घने सरोंके पेड़ोंमें से सू-सू करके बहती हुअी हवा अब परिचित हो गयी थी।

मैं मराठी पाठशालामें पढ़ने जाता था। शायद मैं दूसरी कक्षामें पढ़ रहा था। राममामू गोडबोल नामक अेक लड़का हमारे साथ था। अेक दिन अुसने मुझसे पूछा 'क्यों रे कालेलकर, तेरे पास अपने कुछ पैसे हैं या नहीं?' मैंने अनजान भावसे जवाब दिया 'भा भाअी बच्चोंके पास पैसे कहाँसे आयें? अेक दिन मैं किसीके यहाँ गया था, तो वहाँ मिठाअी खानेके लिअे मुझे आठ आने मिले थे। व पैसे मैंने तुरन्त ही घरमें दे दिये थे।' राममामू कहने लगा 'तो अुससे क्या हुआ? वे पैसे कहलायेंगे तो तेरे ही। माँसे माँग लेना। हम बाजारसे कुछ अच्छी खानेकी चीज खरीदेंगे।' मैंने आश्चर्यसे कहा 'हम क्या शूद्र हैं जो बाजारकी चीज लेकर खायेंगे?' तो वह खीझकर कहने

लगा 'तू तो कुछ समझता ही नहीं। पैसे तो न था। फिर तुझे सिखाअूँगा पैसेका क्या करना। तेरे पैसे तुझे न मिलें अिसका क्या मतलब?'

मुझे बाजारसे कोअी चीज खरीदकर खानेकी अिच्छा तो बिलकुल न थी लेकिन घरसे मैं पैसा नहीं पा सकता, यह बात दोस्तोंके सामने कैसे कबूल की जा सकती थी? अिसलिअे मैंने हाँ तो कह दिया। फिर भी रामभाअू बड़ा चतुर था। अुसने कहा 'देख, माँ यदि पैसे देनेसे अिनकार करे तो रो-धोकर ले लेना।'

अितनी सीखसे सुसज्जित होकर मैं घर गया। दूसरे दिन सबेरे माँके पास पैसे माँगने गया। मेरे पैसे मुझे क्यों न मिलें, यह भूत तो दिमागमें घुसा ही था। लेकिन आठ आने माँगनेकी हिम्मत कौन करे? मैंने सिर्फ अेक धेला माँगा। धेला यानी आधा पैसा—डेढ़ पाअी। यह सिक्का आजकल दिखाअी नहीं देता। माँने कहा 'बेटा, मैं ही अपने पास पैसे नहीं रखती तो तुझे कहाँसे दूँ? अुनसे जाकर माँग लेना।

मैं सीधा पिताजीके पास गया और कहने लगा "मुझे अेक धेला दीजिये।

कभी पैसेका नाम न लेनेवाला लड़का आज धेला क्यों माँगता है अिसका अुन्हें आश्चर्य हुआ। अुन्होंने पूछा, तुझे धेला किस लिअे चाहिये?

मैं बड़े संकटमें फँस गया। दोस्तका नाम तो बताया ही कैसे जा सकता था? फिर रामभाअूने मुझे यह ताकीद कर दी थी कि 'भूलकर भी मेरा नाम किसीको मत बताना।' न यह भी कहा जा सकता था कि बाजारकी चीज लेकर खाना है। मुझसे आखिर जानेका डर था। और मेरे मनमें बाजारसे खानेकी चीज खरीदनेकी बात थी भी नहीं। अिसलिअे मैंने बिना कोअी कारण बताये सिर्फ यह रट लगायी कि मुझे धेला दीजिये।'

पिताजीने साफ़ साफ़ कह दिया कि, किस कामके लिअे धेला चाहिये यह बताये बगैर धेला तो क्या अेक पाअी भी नहीं मिल सकती।'

मैंने भी हठ पकड़ा। रिवाजके मुताबिक मैंने रोना शुरू किया — मुझ धेला दी जि ये मुझ धे ला दी जि ये।' रोना सवेरेसे ग्यारह बजे तक जारी रहा। कुछ दिन पहले मेरी छोटी भाभीने मेरी माँसे पूछा था कि पिताजीको तनख्वाह कितनी मिलती है? माँने कहा था 'दो सौ रुपये।' बस घरकी भाभीका कुतूहल जगा। दो सौ रुपये कितने होते होंगे? माँने बहूकी अिच्छा पूरी करनेके लिअे पिताजीको खास तौरसे कहा था कि अिस महीने नोट न लायें। सब नक़द रुपये ही लाअिये। जब रुपये आये तब अेक चाँदीकी थालीमें भरकर माँने भाभीको बतलाये थे। अुस घटनाका स्मरण हो आनसे मने मनमें कहा 'पराये घरकी भाभीके लिअे ये लोग अितना करते हैं और मुझे अेक धला भी नहीं देते।'

पिताजी दफ्तर गये और मैं रोते-रोते सो गया। शाम हुअी। पाँच बजे पिताजी घर आये। अुन्हें देखकर मैंने फिर शुरू किया 'मुझे धला दीजिये।' यह धेला-गीत रातको दस बजे तक चला। आखिर मेरी अिच्छाके बिना और अनजानमें ही निद्राने मुझे घेर लिया और अिस किस्सका अन्त हुआ।

दूसरे दिन पाठशाला जानेका मन न हुआ। रामभाअू पूछेगा तब अुसे क्या जवाब दूँगा, यह विचार ही मनमें बार बार चक्कर लगा रहा था। मेरा बश चलता तो मैं अुस दिन पाठ-शालामें जाता ही नहीं। लेकिन मैं जानता था कि यदि जानमें जरा भी आनाकानी की तो चपरासीके कन्धे पर चढ़कर जाना होगा। अिसमें तो दूनी बेअिज्जती थी — दफ्तरके चपरासियोंके सामने और पाठशालाकी सारी दुनियाके सामने। अिसलिअे मैं पाठशाला

मौक़ा मिला तो मनमें आया कि बिना हककके कुछ असाधारण सम्मान मिला है। मेरे हर्षकी सीमा न रही। मैं बेंच पर बैठा हूँ यह कौन कौन देख रहा है, यह जाननेके लिअे मैंने आसपास नज़र दौड़ायी।

भिवनेमें सभा शुरू हुअी। मेरे लिअे वह बड़ मज़ाकी बात थी। अेक आदमी अुठ खड़ा होता कुछ बोलता और बठ जाता। वह बोलता तब दूसरे कुछ भी न बोलते देवताओंकी तरह बठ ही रहते। और अुसके बैठते ही दूसरे सब तालियाँ बजाते। मेरे मनमें आया कि अिन बड़े-बड़ोंको क्या हो गया है जो ये अैसा कर रहे हैं? अेक आदमी बक-बक किये जाता है और दूसरे अुसमें कुछ भी नहीं जोड़ते। फिर ये लोग तालियाँ क्यों बजाते होंगे? मज़ा सभीकी फजीहत होती होगी?

अुपस्थितोंमें हमारे हेडमास्टर बिलकुल अेक कोनेमें चूहेकी तरह छिपे खड़े थे। मैं अपने मनमें सोचने लगा हमारी पाठशालाके ये सम्राट आज चोरकी तरह यों चुपचाप क्यों खड़े हैं? ये तो अुस चपरासीस भी ज्यादा झेंप रहे हैं!

वक्ताओंमें मेरे परिचित केवल लक्ष्मणराव चिरगाँवकर ही थे। वे तो आकाशकी ओर देखकर ही बोले। व क्या बोले वे यह मैं अुस वक्त भी नहीं समझ सका था तो फिर आज कहाँसे याद आये?

म अूब गया। अुठकर अिधर अुधर घूमनेका मन हुआ। लेकिन दूसरे कोअी अुठत न थ, अिसलिअे बेचैन होकर बैठा रहा। अेक आसनसे बैठनेवा बड़े लोगोंका सब देखकर अुनके प्रति मनमें कुछ प्रशंसाके भाव भी पैदा हुअे।

आखिर अँधेरा होने लगा। रोशनीका कोअी प्रबंध था नहीं। मेरे जैसा ही अूबा हुआ किन्तु व्यवहारकुशल कोअी होगा, अुसने बीचमें ही अुठकर रोशनीकी माँग की। बस सभीके ध्यानमें आया कि

वे बहुत देरसे भाषण कर रहे हैं। जमा-जमाया रंग भंग हुआ। सबको घरकी याद हो आयी। वे अुठकर कुछ थोड़ा-सा बोलकर बाहर चले। मेरे मनमें आया, चलो अिस सभाकी झंझटसे छूटे! अब फिर कभी सभामें नहीं जाअूँगा!

मेरी जिन्दगीकी यह पहली सभा थी।

१५
दो टाअिपोंका चोर

बालक हो या बड़ा मनुष्य जितना स्वादिष्ट पदार्थों या सुन्दरताका रसिक होता है, अुतना ही यांत्रिक चमत्कृति तथा रचना-कौशल्यका भी पुजारी होता है। मथानी या रस्सीकी मददसे दहीसे मक्खन कैसे निकलता है, गाड़ीके पहियें पर लोहेका बंद कैसे चढ़ाया जाता है, चरखेसे सूत कैसे काता जाता है कपड़ा कैसे बुना जाता है, लुहारकी धौंकनी कैसे चलती है खराद या कुम्हारके चाक पर सुन्दर चीजें कैसे बनती हैं यह सब देखनेमें हर बालकको ही नहीं बल्कि हरअेक जीवित मनुष्यको अपार आनन्द मिलता है।

मेरे बड़े मामीके पास R B Kalelkar नामका रबड़का अेक सिक्का था। अुसमें यह खूबी थी कि रबड़के अक्षरों पर स्याहीकी गद्दीवाला अक ढक्कन हमेशा लगा रहता था। हर बार दबाते ही अक्षर अन्दर दब जाते स्याहीकी गद्दी अुन पर बैठ जाती और जहाँ दूसरी बार दबाया कि गद्दी अेक ओर खिसक जाती और ताजे नील अक्षर कागज पर अपनी मुद्रा अंकित कर देते। अूपरका दबाव कम होते ही अक्षर पीछे हट जाते और गद्दीका ढक्कन अुन पर आ बैठता। यह सिक्का देखकर मुझे भी लगने लगा कि यदि मेरे नामका भी अेक अैसा ही सिक्का हो तो

कितना अच्छा? अुस वक्त मैं मराठी दूसरी कक्षामें पढ़ता था। अुसी समय मैंने पूनाके शिवाजी छापाखानेस 'कालेलकर' छापने जितने टािअप वहां काम करनेवाले अेक कम्पोझिटरसे प्राप्त किये थे। अुन्हें धागेसे मजबूत बांधकर यह कालेलकर नाम हर पुस्तक पर छापता था। अुन अुल्टे अक्षरोंसे सीधा नाम छपते देखकर मुझे बहुत ही आश्चर्य होता! पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि अैसे टािअप बाजारमें नहीं मिलते। अत: पिताजी या माँसे हठ करके अुन्हें प्राप्त करनेकी संभावना तो थी ही नहीं। अत: टािअप प्राप्त करनेकी अिच्छा मनमें ही रह गयी।

अुसी साल मैं कारवार गया। यह यात्रा शायद दूसरी बार थी। पाठशाला जाते समय रास्तेमें अेक माड्मेडन प्रिंटिंग वर्क्स आता था। हमारी पाठशालाका अेक लड़का अुसमें काम करता था। मेरे मनमें आया कि अुससे टािअप प्राप्त किये जा सकते हैं। अेक दिन बाजारसे कोअी चीज लेकर मैं लौट रहा था। रास्तेमें छापाखाना दीख पड़ा तो अन्दर चला गया। वास्तवमें यंत्र कैसे चलता है यह देखनेके लिअे ही मैं गया था। लेकिन अन्दर यह सहपाठी काम करता दिखाअी दिया। मैंने अुससे कहा 'भअी, मेरे नामके टािअप मुझे दे दो न?' अुसने मुझसे पूछा 'मुझे क्या दोगे?' मेरे पास देने जैसा था ही क्या? मैंने अुससे कहा, 'दोस्तके नाते यों ही दे देना।' अुसने गंभीर मुद्रासे कहा 'हम दोस्त तो हैं लेकिन टािअप नहीं दिये जा सकते। छापाखानेमें काम करते समय हमें सौगन्ध लेनी पड़ती है कि अिसमेंसे अेक भी टािअप बाहर नहीं जायेगा।' मुझे अुसका साथ दगाबाज करनेकी तो अिच्छा नहीं हुअी लेकिन मनमें आया कि मैं अिसे पैसे देता तो अिसे देनेमें कोअी आपत्ति नहीं होती तब अिसकी वह सौगन्ध कहां जाती?

मैंने अुससे बदला लेनेकी ठानी। यह थोड़ा अिधर-अुधर हुआ कि मैंने धीरेसे मुमकिन सामनेके दो टािअप अुठाये और वहांसे सटका।

मैंने देखा था कि टाअिप कसड़ हैं और वे मेरे किसी कामके नहीं हैं, लेकिन गुस्सेसे भरा आदमी गहराअीसे थोड़े ही सोचता है? फिर मैं तो चिढ़ा हुआ बालक था। रास्तेमें मैं विचार करने लगा कि वह लुच्चा अब अिन टाअिपोंके बिना हैरान-परेशान हो जायेगा। मैंने लिये तो दो ही टाअिप थे लेकिन भुतनेसे ही मुझे संतोष था कि बदमाशको अच्छा मजा चखाया।

मैं कुछ ही आगे बढ़ा हूँगा कि अुसने दौड़ते हुअे आकर मुझे पकड़ लिया। हाथमें टाअिप तो थे ही। अुसने डाँटकर कहा, 'चल अब हमारे मालिकके पास!' मैं रो पड़ा। मैंने कहा, 'तेरे टाअिप वापस ले ले लेकिन मुझे छोड़ दे। क्या दोस्तके लिअे अितना भी न करेगा?' अुसने मुझे जवाब तक न दिया और मेरी कलाअी पकड़कर मुझे खींचता हुआ अपने मालिककी दूकान पर ले गया। मैंने कुछ समय पहले अुसी दूकानसे घरकी आवश्यक वस्तुअें खरीदी थीं। अुस वक्त मैं शरीफ़ था लेकिन अिस बार अुसी दूकान पर चोरकी हैसियतसे जाना मेरे नसीबमें बदा था।

अधिकारियोंके बालकोंका जीवन दोहरा होता है। जब वे अपने पिताके साथ जाते हैं तो सब जगह अुनका आदरके साथ स्वागत होता है, बैठनेका कुर्सी मिलती है, कैसे हो कहकर बड़े-बड़े भी अुन्हें प्यारसे पूछते हैं। लेकिन जब वे पाठशालामें जाते हैं या अपने सहपाठियोंके साथ अकेले घूमते हैं तब साधारण मनुष्य बन जाते हैं। मुझे खुदको पिताजीके साथ घूमते समय मिलनेवाले आदरमें जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। अुसमें कृत्रिमता होती और अिसलिअे बड़े बन्धनमें रहना पड़ता। घूमने जायें और चपरासी साथ हो तो वह मुझे कतअी नहीं भाता। लेकिन हाँ, यदि चपरासी दरअसल या अिरादतन् बालक बनकर मेरी बातें ध्यान देकर सुननेको तैयार हो जाता तब तो मैं अपने साथीकी तरह अुसका स्वागत करता।

अुस दूकानदारके यहाँ में प्रतिष्ठित व्यक्तिकी तरह कभी बार गया था। मनके मुताबिक छाता जब तक न मिला तब तक मैंने अुसको कभी छाते लौटा दिये थे। और आज वो टाअिपोंका चोर बन कर मुझे मुझीके सामने आना था। में रोता हुआ दूकानमें गया — गया क्या वह कंपोझिटर मुझे खींचता हुआ ले गया! दूकानमें मालिक नहीं था। अुसका चौदह-पन्द्रह वर्षका लड़का वहाँ खड़ा था। कम्पोझिटरने अुसके हाथमें वे दो टाअिप देकर अपनी रिपोर्ट पेश की। मुझे अिनकार करनेकी बात सूझ ही न सकती थी, क्योंकि मुझे चोरी करनेकी आदत नहीं थी। यह मेरी सबसे पहली चोरी थी। मैंने रोते-रोते कहा 'फिर कभी अैसा नहीं करूँगा।' दूकानदारके लड़केको यह सब सुननेकी बिलकुल परवाह न थी। वह अितना तो जानता था कि यह अेक अफ़सरका लड़का है। और सवाल सिर्फ़ दो टाअिपोंका है! अुसने लापरवाहीसे कहा "तुम ये टाअिप ले सकते हो। अिसमें कौनसी बड़ी बात हो गयी?" मैंने टाअिप लेनेसे अिनकार कर दिया। अुसने फिर कहा "मैं सच कह रहा हूँ, तुम ये टाअिप ले सकते हो।" मैंने कहा 'असलमें मुझे अिन टाअिपोंकी ज़रूरत ही न थी।'

यह सब सुननेके लि े अुसके पास समय नहीं था। अतः अुसने वे टाअिप रास्ते पर फेंक दिये और अपने काममें लग गया। जाते-जाते मुझने अुस कंपोझिटरकी ओर नाराजीसे देखा।

छुटनेका आनन्द मनाता मैं घर गया। जो कुछ भी हुआ था मैंने वह किसीसे कहा तो नहीं, लेकिन कोअी भी जब मुझे अुस दूकानसे चीज़ लानेको भेजता तो मैं कुछ न कुछ बहाना करके टाल देता। जब अुस कम्पोझिटरने कुछ दिनोंमें पाठशाला छोड़ दी तो मेरे दिलका बोझ हल्का हो गया।

१६

डरपोक हिम्मत

कारवारमें हम अेक बार मुसा सेठकी वखारमें रहते थे। अुस मकानका नाम तो था वखार (गोदाम), क्योंकि मुसा सेठ वहाँका मशहूर कच्छी व्यापारी था। लेकिन था दरअसल वह अेक खासा शानदार बँगला न कि माल भरकर रखनेका गोदाम। बँगलेकी खिड़कियों और दरवाजोंमें सब जगह रंग बिरंगे काँच जड़े हुअे थे। दूसरी मंजिलका हिस्सा हमारे कब्जेमें नहीं था लेकिन चूँकि वह खाली पड़ा था अिसलिअे हम बालक तो दो पहरके वक्त खेलने-कूदने या झगड़नेके लिअे अुसका अुपयोग करते ही थे।

अेक बार हम अेक बहुत खूबसूरत सफ़ेद बिल्ली चुरा लाये। अुसके लिअे रंगीन शीशमहल बनाना था। केशूने और मैंने मिलकर अूपरकी मंजिल पर जाकर पीछेकी खिड़कीके पाँच हरे-पीले काँच निकाल लिये। फिर अपने बढ़अी मारियान लुअीस फर्नांडीसके पास जाकर जिसे हम मेस्त कहते थे, अेक देवदारकी पटीमें खिड़की दरवाजे कटवा कर अुसका अेक छोटा-सा महल बनवाया और अुसमें वे काँच जड़ दिये। अिस प्रकार हमारा मार्जार-प्रासाद तैयार हुआ। 'जब हम पूरा किराया देते हैं तो क्यों काँचोंका अुपयोग न करें? हम गोदाम किराये पर न लेते, तो यहाँ चूहे भी न रहते। तीन-चार काँच काममें लिये अुसमें क्या?' अिस प्रकार अपने आपसे दलील करके हमने अपने पछताते हुअे मनको शान्त किया। खैर।

जब बिल्लीका घर तैयार हुआ तो हमने अुसमें फटे-पुराने कपड़ोंसे बनायी हुअी अेक मुलायम गद्दी रख दी। पहले कुछ दिन तक मजबूरीसे और बादमें अपनी खुशीसे बिल्ली अुसमें रहने

लगी। अलग अलग खिड़कियोंसे अुसकी तरफ़ देखने पर वह बिल्ली अलग अलग रंगकी दिखाअी देती। कअी दिनों तक हम अुस बिल्लीके पीछे ही पागल बने रहे।

जब अिस तरह खेल-कूदमें कअी रोज चले गये और कुछ पढ़ाअी नहीं हुअी तो मन ही मन पछतावा लगा और हमने डटकर पढ़नेका निश्चय किया। जब बच्चे पढ़नेका अिरादा करते हैं तो सबसे पहले अुनको किसी अेकान्त स्थानकी जरूरत महसूस होने लगती है। जिस तरह चीलोंको अपने घोंसलेके लिअे नजदीकके तिनके पसंद नहीं आते दूर दूरसे लाये हुअे तिनके ही पसंद आते हैं अुसी तरह लड़कोंको अध्ययनके लिअे किसी असाधारण स्थानकी आवश्यकता प्रतीत होती है। हमारे बँगलेके आसपास काफ़ी खुली जगह थी जिसमें बहुतसे आमके पेड़ थे। सभी पायरी जातिके थे। बँगलेके चारों तरफ़ अीट चूनेकी बाड़ थी। बँगलेके सामने जैसे सब जगह होता है अीट चूनेके दो मोटे-मोटे खम्भे थे और अिन दोनों खम्भोंको जोड़नेवाली अेक छः अिंच चौरस लंबी लकड़ी लगायी हुअी थी। अिन दो खम्भोंके बीचका फाटक कबका टूट-फूट चुका था और सिर्फ छः अिंच चौड़ा पुल ही रह गया था। अेक दिन मैं दीवाल परसे खम्भे पर चढ़ गया। वहाँ बैठकर मुझे पुस्तक पढ़नी थी। मुझे अिस प्रकार बैठा देखकर केशू मामतकी दीवाल परसे दूसरे खंभे पर चढ़ गया। प्रवेशद्वार पर हम दोनों जय-विजयकी तरह आमने-सामने बैठे थे। मुझे अिसमें खूब मजा आया और मन प्रह्लाद आख्यानकी अेक आर्या पाठ शुरू किया —

पूर्वी जयविजयांतें सनकादिकीष्मा विपरीत घापाने।
झाले जन्मत्रय परि मुक्तिस नेलें रहीस-बापानें॥*

* पहले जनामेंमें सनकादिक ऋषियोंके शापसे जय-विजयको तीन बार राक्षसोंका जन्म लेना पड़ा और प्रद्युम्न-पिता नारायणने अुन्हें राक्षस योनिसे मुक्त किया।

लेकिन भितनेमें मैं ही अेक शापमें फँस गया। कशू मुझसे कहने लगा देख भिस लकड़ीके पुल परसे चलकर मेरी ओर आ। केशूकी आज्ञाका अुल्लंघन कैसे किया जा सकता था? अुसे हमेशा आज्ञा देनेकी आदत थी और हम सबको अुसकी आज्ञाका पालन करनेकी।

लेकिन वहाँ मैंने देखा तो अुन खंभोंके बीच भितना फ़ासला था कि अेक बड़ी गाड़ी आ-जा सकती थी और अुस पुलकी अूँचाओी भी ज़मीनसे कम न थी। फिर अुस लकड़ीके पुलकी चौड़ाओी पूरे छ भिंच भी मुश्किलसे होगी। अुस पार करनेमें अुस परसे पैर फिसल जानेका पूरा अंदेशा था। और कहीं चक्कर आ गया तब तो बग़ैर फिसले भी मैं गिर सकता था। भिसलिअे मैंने केशूसे कहा यह तो मुश्किल है। मुझसे नहीं बनेगा। अुसने ढाढ़स बँधाते हुअे कहा डर मत तेरे लिअे यह कतअी मुश्किल नहीं। बचपनमें यदि मुझे कसरतकी आदत होती तब तो मुझे यह काम मुश्किल न मालूम होता। लेकिन अुस वक्त किसी भी तरह मेरा दिल न बढ़ा। केशूने सख्तीसे हुक्म दिया तुझे आना ही पड़ेगा। अब तू छोटा नहीं है। खासा दस सालका हो गया है। भितनी भी हिम्मत नहीं है? मैं कहता हूँ न कि आ। मैंने भी दृढ़तापूर्वक जवाब दिया यह तो हरगिज़ हो ही नहीं सकता। केशूको गुस्सा होते देर न लगती थी। वह बोला याद रख तू आया तो ठीक वरना आज मैं तेरी अैसी मरम्मत करूँगा कि तेरे गालोंसे खून ही निकल आयेगा। मैंने मनमें सोचा मार खाना तो रोजकी बात है। अिसमें तो अपने राम पक्के हैं। लेकिन अितनी अूँचाओीसे गिरकर सिर फुड़वाना बहुत महँगा पड़ जायगा।

अब मैंने पहली ही बार भाभीकी आज्ञाका सादर निरादर किया। कशूसे मैंने नम्रतापूर्वक कहा भाभी यह तो मुझसे हो

ही नहीं सकता। तू चाहे जो कर लेकिन मेरा पैर नहीं अुठ सकता।'

भाभी भी मेरी अिस कायरतामरी दृढ़ताको देखकर दंग रह गया। आखिर अुसने कहा 'चल हट डरपोक कहींका! तू तो अैसा ही रहेगा। अब म ही तुझ चलकर बताता हूँ।' बस मारके डरसे जो काम नहीं हुआ वह अिस तानेसे हो गया। केशू चलकर बतलावेगा और पहले-पहल अिस पुलको पार करेगा तब तो मेरी आबरू ही क्या रही? मैं अकदम अुठा और पुल परसे सामनेकी ओर चला गया। न मैंने नीचेकी ओर देखा, न अिधर अुधर। सामने केशू भी अुठ खड़ा हुआ था। अुसने मुझे बाहोंमें भींच लिया। अुसकी आँखोंमें खुशीके आँसू थे। अुसने मेरी पीठ थपथपाते हुअे कहा 'कह न रहा था मैं तुझे कि यह तेरे लिअे असंभव नहीं है? तेरी शक्तिको तेरी अपेक्षा मैं ही ज्यादा जानता हूँ।' फिर तो कभी बार मैं अिस ओरसे उस ओर और अुस ओरसे अिस ओर आता-जाता रहा।

अुस दिन शामको केशूने मुझे हनुमानजीकी कहानी सुनायी। सीताजीकी खोज करनेके लिअे लंका तक कौन जाय अिस संबंधमें समुद्रके अिस पार बन्दरोंमें सलाह-मशविरा हो रहा था। किसीकी हिम्मत नहीं होती थी सारी वानरसेना चिंतामें डूब गयी। समुद्रको फाँद कर पार करनेकी शक्ति सिर्फ हनुमानजीमें ही थी। लेकिन देवताओंने यह पहलेसे तय कर रखा था कि जब तक कोओी हनुमानजीको न बताय कि अुनमें कितनी शक्ति है तब तक अुनमें वह शक्ति प्रकट ही नहीं होगी। अुनमें आत्मविश्वास पैदा नहीं होगा।

-

थी ? दूसरा कोओी साधन न हो, तो श्रीश्वरने दाँत और नाखून तो दिये ही हैं। अनका अपयोग किया और अगरबत्तीका आधा हिस्सा सुलगाकर बनात पर अूपरसे रख दिया। अिसमें मैंने अितनी सावधानी रखी कि वह टेबलको छू न जाय तथा अुसका सुलगता हुआ सिरा खुला रहे। फिर मनको कुछ खटका-सा लगा कि दाँतोंके अुपयोगसे सा अगरबत्ती जूठी हो गयी। लेकिन अुस अुसी जगह दबाकर मैं दूसरी मंजिल पर पटाखे छोड़नेको चला गया।

अुस वक्त हम कारवारमें रामजीसेठ सेठी नामके अेक कच्छी व्यापारीके घरमें किरायेसे रहते थे। रामजीसेठके पास जाकर मैंने कहा सेठजी कहानी कहिये। अुन्होंने भी वह मजेदार कहानी कह डाली जिसमें अेक राजाने जंगलमें बढ़िया दूध पिलानेवाले गडरिये पर खुश होकर अेक पत्ते पर ३६० गाँव जागीरीमें लिख दिये थे लेकिन अुसकी बकरीने वह पत्ता ही खा डाला। बेचारा गडरिया रोने लगा —

कहूँ कुछ कहूँ कुछ कहा न जावे,
कोमे सवारे पेटे मेरे मावे,
बकरी अबसो साठ गाम खाकर गयी और भूखोंकी भूखी।

बचपनके ये शब्द अभी भी जैसेक तैसे याद हैं। यह भाषा गुजराती है या कच्छी या मारवाड़ी अिसकी छानबीन मैंने अभी तक नहीं की।

कहानी सुनकर जब मैं घरमें आया तो टेबल पर बनात नहीं थी। वह तो पिताजीके हाथमें थी। और अुसमें जल जानेके कारण खासा गनरके पत्तके बराबर अेक लम्बा सूराख पड़ गया था। त्यौहारके दिन बनात जैसी अुमदा चीज खराब हो गयी और प्रस्थापित गणेशजीको अुठा कर अुनके नीचेसे हटानी पड़ी यह

अपशकुन तो था ही। अिसलिअे पिताजीको गुस्सा चढ़ गया था। अुन्होंने मुझसे पूछा 'यह किसने किया?' मैं अपनी अगरबत्तीका प्रताप तुरन्त ही पहचान गया। अिसलिअे डरते-डरते कहा 'जी, मैंने ही।' तुरन्त ही मेरी कनपटी पर अेक पटाखा फूटा और दूसरा पीठ पर। मैं वहाँसे रोता-रोता भाग खड़ा हुआ।

बादमें माँके साथ बात करनेकी फुरसत मिली तब मैंने सिसकियाँ भरते हुअे कहा 'कनात जल जायगी, अिसका मुझे खयाल ही कैसे आता? मैंने तो भक्तिसे ही अगरबत्तीका टुकड़ा सुलगा कर रखा था। लेकिन गणपति महाराज प्रसन्न न हुअे।'

माँसे मेरी बात सुनकर पिताजीको भी दुःख हुआ और वे बोले 'त्यौहारके दिन मैंने दत्तूको नाहक पीटा।' अुनका यह वाक्य सुनकर मैं अपना दुःख भूल गया और मुझे निर्मल संतोष हुआ।

अगरबत्तीका दूसरा टुकड़ा जब मैंने सुलगाकर देखा तो अुसमें कस्तूरी सुगन्ध न थी। फिर तो अुस अगरबत्ती पर मुझे बहुत गुस्सा आया। दरअसल वह अगरबत्ती सिर्फ़ पटाखे छोड़नेके कामकी ही थी भगवानके आगे रखे जानेकी योग्यता यानी सुगन्ध अुसमें बिलकुल नहीं थी।

१८

गोकर्णकी यात्रा

लंकापति रावण सारे हिन्दुस्तानका पार करके हिमालयमें आकर तपश्चर्या करने बैठा। अुसे अुसकी माँने भेजा था। शिवपूजक महान् सम्राट् रावणकी माता क्या मामूली पत्थरके लिंगकी पूजा करे? अुसने अपने लड़केसे कहा 'बेटा कैलास जाकर शिवजीके पाससे अुन्हींका आत्मलिंग ले आ। तभी मेरे यहाँ पूजा हो सकती है।'

मातृभक्त रावण चल पड़ा। हिमालयके अुस पार मानसरोवर है वहाँसे रोजाना अेक सहस्र कमल तोड़कर वह कैलासनाथकी पूजा करने लगा। यह तपश्चर्या अेक हजार वर्ष तक चली।

अेक दिन न जाने कैसे अेक हजारमें दो कमल कम आये। पूजा करते करते बीचमें तो अुठा नहीं जा सकता था और सहस्रकी संख्यामें अेक भी कमल कम रहे तो काम नहीं चल सकता था। अब क्या किया जाय? आशुतोष महादेव शीघ्रकोपी भी हैं। सेवामें जरा भी त्रुटि रही कि सर्वनाश ही समझो। रावणकी बुद्धि या हिम्मत तो कच्ची थी ही नहीं। अुसने अपना अेक-अेक शिर-कमल अुतारकर चढ़ाना शुरू कर दिया। अैसी भक्तिसे क्या नहीं मिल सकता? भोलानाथ प्रसन्न हुअे और बोले 'वर माँग, वर माँग। तू जितना माँगे अुतना कम है।' कृतार्थ हुअे रावणने कहा 'माँ पूजामें बैठी है, आपका आत्मलिंग चाहिये।' शब्द निकलनेकी ही देर थी। शम्भुने अपना हृदय चीरकर आत्मलिंग निकाला और वह रावणको दे दिया।

त्रिभुवनमें हाहाकार मच गया। देवताओंके देवता महादेव आत्म-लिंग दे बैठे। और वह भी किसे? सुरासुरोंके लिअे आफ़तका

परवाला बने हुओ रावणको! अब तीनों लोकोंका क्या होगा? ब्रह्मा दौड़े विष्णुके पास। लक्ष्मी सरस्वतीसे पूछने गयी। खिन्न मूर्छित हो गया। यमराज डरके मारे कांपने लगे। आखिर सबने विघ्ननाशक गणपतिकी आराधना की और कहा 'चाहे जो करो, लेकिन यह लिंग लंकामें न पहुँचने पाये अिसकी कोअी तरकीब निकालो।

महादेवने रावणसे कह रखा था 'ले जा यह लिंग। लेकिन याद रख जहाँ भी तू अिसे जमीन पर रखेगा, वहीं यह स्थिर हो जायगा।' महादेवका लिंग तो पारसे भी भारी। रावण अुसे हाथमें लेकर पश्चिम समुद्रके किनारे किनारे तेजीसे चला जा रहा था। साँझ होनेको आयी थी। अितनेमें रावणको पेशाबकी हाजत हुअी। शिवलिंगको हाथमें लेकर पेशाबके लिओ बैठा नहीं जा सकता था और जमीन पर तो रखा ही कैसे जाता? अिस अुलझनमें रावण फँसा ही था कि अितनेमें देवताओंके संकेतके मुताबिक गणेशजी चरवाहेका रूप लेकर गायें चराते हुअे प्रकट हुअे। रावणने अुसे पास बुलाकर कहा 'अरे लड़के यह लिंग तो जरा सँभाल। देख जमीन पर मत रखना।' गणेशजीने कहा 'यह है तो बहुत भारी लेकिन मैं कोशिश करूँगा। यदि थक गया तो तुमको तीन बार आवाज दूँगा। अुतनी देरमें तुम आये तो ठीक वरना हम कुछ नहीं जानते।'

हाजत तो पेशाबकी ही थी। अुसमें कितनी देर लगती? रावण बैठ गया। लेकिन न जाने कैसे आज अुसके पेटमें मानो सात समुद्र घुस बैठे थे। अनेमू कान पर चढ़ाया फिर तो बोला भी नहीं जा सकता था! सिद्धि विनायकने अिकरारके मुताबिक तीन बार रावणके नामसे आवाज लगाअी। और अर्र्र्र्र् की चीख मारकर लिंग जमीन पर रख दिया। रखते ही वह पाताल तक पहुँच गया। रावण क्रोधसे लाल-पीला होता हुआ आया और अुसने गणपतिके

माथे पर कसकर अेक घूँसा मारा। गजाननका सिर खूनसे लथपथ हो गया।

फिर रावण दौड़ा लिंग अुखाड़नेको। लेकिन वह तो अब असम्भव था। पाताल तक पहुँचा हुआ लिंग कैसे हाथमें आ सकता था? अुसकी खींचातानीसे सारी पृथ्वी काँपने लगी लेकिन लिंग नहीं निकलता था। आखिर रावणने लिंगको पकड़कर मरोड़ डाला जिससे अुसके हाथमें लिंगके चार टुकड़े आ गये। निराशाके आवेशमें बेचारेने चारों टुकड़े चारों दिशाओंमें फेंक दिये और लंकाको लौट गया। दर असल दुनियामें केवल तपस्यासे काम नहीं चलता। मूर्ख लोगोंकी चालबाजियोंको पहचाननेकी बुद्धि भी आदमीमें होनी चाहिये।

मरोड़ हुआ लिंगका जो मुख्य हिस्सा वहीं पर रह गया अुसीको गोकर्ण-महाबलेश्वर कहते हैं क्योंकि अिस लिंगका अूपरी सिरा गायके कानोंकी तरह पतला और चिपटा है। तमाम पृथ्वी पर अिससे ज्यादा पवित्र तीर्थस्थान नहीं है।

गोकर्ण-महाबलेश्वर कारवार और अंकोला बन्दरगाहोंके बीच तदड़ी बन्दरगाहसे करीब छः मील अुत्तरकी ओर बिलकुल समुद्र किनारे पर है। दक्षिण भारतमें अिसका माहात्म्य काशीसे भी ज्यादा माना जाता है। लिंग अधिकतर जमीनके अन्दर ही है। अुसकी जलाधारीके बीचोंबीच अेक बड़ा छेद है। अुसमें जब अंदर अँगूठा डालते हैं तब भीतर लिंगका स्पर्श होता है। दर्शनका तो सवाल ही नहीं। वहाँके पुजारी कहते हैं कि लिंगकी शिला अितनी मुलायम है कि भक्तोंके स्पर्शसे वह घिस जाती है अिसलिअे प्राचीन लोगोंने अुसके चारों ओर जलाधारी लगाकर केवल अंगुष्ठस्पर्शकी सुविधा रखी है। बहुत समय बाद जब शुभ शकुन होते हैं तब जलाधारी निकालकर तथा आसपासकी जुड़ाओी हटाकर मूल लिंगको दो-तीन हाथकी गहराओी तक खोल दिया जाता है। अिस खुले लिंगके दर्शनके

यह बोट लगभग आखिरी होनेसे गोकर्णमें बढ़नेवाले यात्री भी बहुत थे। वे सबके सब स्टीमलाँचमें कैसे समाते? अिसलिअे सौ आदमी बैठ सकें अैसा अेक पड़ाव यानी बड़ी नाव स्टीमलाँचके पीछे बाँध दी गयी। असके पीछे कस्टम्स (चुंगी) विभागके अधिकारियोंकी अेक सफ़ेद नाव बाँधी गयी थी, जिसमें अुस महकमेके अेक अधिकारी और अन्य सिपाही होकर बैठे थे। मैंने देखा कि खानगी नावोंकी पतवारें जहाँ कड़छीकी तरह गोल होती हैं वहाँ कस्टमवालोंकी पतवारें क्रिकेटके बल्लेकी तरह लम्बी और चपटी होती हैं।

हमारा काफ़िला ठीक समय पर निकला। अेक-दो मील गये होंगे कि अितनेमें आकाश बादलोंसे घिर गया हवा ज़ोरसे बहने लगी और लहरें ज़ोर-ज़ोरसे अुछलने लगीं, मानो खूँख्वार भेड़ियोंको बड़ी भारी दावत मिल रही हो। नावें डोलने लगीं और स्टीमलाँच परका खिंचाव भी बढ़ने लगा।

अरे, यह क्या? छींटे! बरसातके छींटे! बड़-बड़ बेर जैसे छींटे! अब क्या होगा? लहरें ज़ोर-ज़ोरसे अुछलने लगीं। स्टीमलाँच भी बछड़ा घोड़ेकी तरह जोशमें आकर अुछल-कूद करने लगी। पीछेकी नावकी मोटी रस्सियाँ करर्रर्र करर्रर्र आवाज़ करने लगीं। अितनेमें स्टीमलाँच और नावके बीच अेक अितनी बड़ी लहर आयी कि नाव दिखायी ही नहीं देती थी।

मैं स्टीमलाँचके अंजिनके पास लकड़ीके तख्तोंके चबूतरे पर बैठा था। हमारे टंडलको जल्दीसे जल्दी स्टीमर तक पहुँचना था। वह पागलकी तरह स्टीमलाँच पूरी रफ़्तारसे चला रहा था। वह चबूतरा जिस पर मैं बैठा था गरम हुआ। मैं जलने लगा। समझमें न आता था कि क्या किया जाय। ज़रा भी अिधर अुधर हो जाता तो समुद्रास्तुप्यन्तु होनेका डर था! और बैठना तो लगभग

असमव हो गया था। अिस परेशानीसे मुझे बड़े भयकर ढंगसे छुटकारा मिला। समुद्रकी अेक प्रचंड लहरने स्टीमलांच पर चढ़कर मुझे नखशिखान्त नहला दिया! अब बैठक कैसे गरम रह सकती थी?

अुस भयावनी लहरको देखकर पिताजी घबड़ा गये। माँको कुलदवताका स्मरण हो आया मगधा! महाब्रा! मायबापा! तूंच माती आम्हाला तार! (तू ही हमको बचा!) मूसलधार वर्षा होने लगी। हम स्टीमलांचवाले कुछ सुरक्षित थे। लेकिन पीछकी नाववालोंका क्या? शुरू शुरूमे तो स्टीमलांचका पानी काटना था अिसलिअे अुसमें थोड़ा बहुत पानी आ ही जाता था। लेकिन नाव तो हर हिलोर पर सवार हो सकती थी अिसलिअे वह भले चाहे जितनी डोलती हो परतु अुसक अन्दर पानी नहीं आता था। लेकिन अब जब कि हवा और बरसातके बीच होड़ लगी और दोनोंका अट्टहास बढ़ने लगा तब अेक ही हिलोरमें आधीके करीब नाव भर आने लगी। लहरें सामनेसे आतीं तब तक तो ठीक था नाव अुन पर सवार होकर निकल जाती। नाव कभी लहरोंके शिखर पर चढ़ जाती तो कभी दो लहरोंके बीचकी घाटीमें अुतर जाती। कभी-कभी तो वह जहाँ अेक हिलोर पर से अुतरती वहीं नीचसे नयी हिलोर अुठकर अुसे अधरमें ही रोक लेती। अैसी कोअी आकस्मिक बात हो जाती तो अन्दर बैठे हुअे लोग धड़ाधड़ अेक-दूसरे पर गिर पड़ते।

लेकिन अब लहरें बाजुओंसे टकराने लगी। नावके अन्दर बैठी हुअी स्त्रियों और बच्चोंको तो सिर्फ रोनेका ही अिलाज मालूम था! अुसमें जितने जवाँमर्द थे सब डोल गागर या डिब्बा जो भी हाथमें आया अुससे भर-भरकर पानी बाहर अुलीचने लगे। फायर अिजनके बंब (दमकल) भी अुससे ज्यादा तेजीसे काम नहीं कर सकते। नाव खाली होती न होती अितनेमें कोअी क्रूर तरग

विकट हास्यके साथ भ का मस्त मुससे टकराती और अन्दर घड़ बैठती। अुस वक्तकी चीखें और दहाड़ें कानोंको फाड़े डालती थीं, कलेजा चीरे डालती थी। कभी यात्री अवधूत दत्तात्रयको गुहराने लगे, तो कभी पंढरपुरके विठोबाको पुकारने लगे। कोओी अंबा भवानीकी मनौत मानने लगे तो कोओी विघ्नहर्ता गणेशको बुलाने लगे। शुरू-शुरूमें स्टीमलांचका कप्तान और मल्लाह हम सबको धीरज देते और कहते अरे तुम डरते क्यों हो? सारी जिम्मेदारी तो हमारी है। हमने असे कितने ही तूफान देख हैं। अिसमें डरनेकी क्या बात है?' लेकिन देखते देखते मामला अितना बढ़ गया कि कप्तानका भी मुँह मुतर गया। वह कहने लगा भाअियो अब रोनेसे क्या फ़ायदा? मनुष्यको अेक बार मरना तो है ही। फिर वह मौत बिस्तरमें आये या घोड़े पर शिकारमें आये या समुद्रमें। आप देख ही रहे हैं कि हमसे बनती कोशिश हम सब कर रहे हैं। लेकिन अिन्सानके हाथमें है ही क्या? मालिक जो चाहे वही होता है।' मैं अुसके मुँहकी ओर टकटकी बाँधे देख रहा था। यात्राके प्रारम्भमें जो आदमी गाजरकी तरह लाल-सुर्ख था वह अब अरवीके पत्तोंकी तरह हरा-नीला हो गया था।

मैं अुस वक्त बिलकुल बालक था लेकिन गंभीर प्रसंग आने पर बालक भी बड़ोंकी तरह अुसे समझ सकता है। मैं पल-पलमें ध्यान-मग्न हो रहा था। बड़ी मुश्किलसे अपने दोनों हाथोंसे पकड़कर मैं अपने स्थानको सँभाले हुअे था। हमारा सारा सामान अेक ओर पड़ा था, लेकिन अुसकी तरफ देखता ही कौन? फिर भी पूजाकी सभी मूर्तियाँ और अेक नारियल बेंतकी अेक 'सांबळी (डब्बा) में रखी थे। अुन्हें मैं अपनी गोदमें लेकर बैठना नहीं भूला था।

मेरे मनमें कैसे-कैसे विचार आ रहे थे! वह जमाना मेरी मुग्ध भक्तिका था। हर रोज सबेरे दो-दो घण्टे तो मेरा भजन चलता रहता। मेरा जनेअू नहीं हुआ था, अिसलिअे संध्या-पूजा तो कैसे की जाती?

फिर भी पिताजी जब पूजामें बैठते, तब वहाँ बैठकर अुनकी मदद करनेमें मुझे खूब आनन्द आता। अुस दिनका वह प्रलयकारी धूफ़ान देखकर मनमें विचार आया कि आज यदि डूबना ही किस्मतमें बदा हो तो देवताओंकी यह पेटी छातीसे लगाकर ही डूबूँगा। दूसरे ही क्षण मनमें विचार आया कि, माँके देखते यदि लाँचमें से पानीमें लुढ़क जाअूँगा तो माँकी क्या दशा होगी? यह विचार ही अितना असह्य हो गया कि साँस रुकने लगी। सीनेमें अिस तरह दर्द होने लगा मानो वह पत्थरसे टकरा गया हो। मैंने अीश्वरसे प्रार्थना की कि हे भगवान्, हमको यदि डुबाना ही हो तो अितना करो कि माँ और मैं अेक-दूसरेको भुजाओंमें बाँध कर डूबें।

हरअेक बालकके मन अुसके पिता तो मानो धैर्यके मेरु होते हैं। आकाश भले ही टूट पड़े लेकिन अुसके पिताका धैर्य नहीं टूट सकता अितना अुसे विश्वास होता है। अिसलिअे जब अैसा प्रसंग आता है और बालक अपने पिताको भी दिङ्मूढ़ बन हुअे हक्के-बक्के घबड़ाये हुअे देखता है तब वह व्याकुल हो अुठता है। अुस दिन मैं तूफ़ानसे अितना नहीं डरा या बरसातसे अितना नहीं डरा था मनुष्योंकी भूख मार रही है मैं मनुष्यको खा जाअूँगी अैसा कहकर मुँह फाड़कर आनेवाली तरंगोंसे भी अितना नहीं डरा था जितना कि पिताजीका परेशान चेहरा देखकर तथा अुनकी रुँधी हुअी आवाज़को सुनकर सहम गया था।

हरअेक व्यक्ति कप्तानसे पूछता, 'हम कितनी दूर आ गये हैं? अभी कितना बाकी है? चारों ओर जहाँ भी देखते बरसात आँधी और अुत्तुंग तरंगोंका ताण्डव नज़र आता था! अितनी बरसात हुअी लेकिन आकाश ज़रा भी नहीं खुला। मैंने कप्तानसे गिड़-गिड़ाकर कहा लाँच कुछ किनारे किनारे ले जाओ मैं जिससे यदि हमारी स्टीमलाँच डूब ही गयी तो चंद लोग तो किनारे तक तैर कर आ सकेंगे!' कप्तान अुत्साह-हीन तथा विषादयुक्त

हँसी हँसते हुअे बोला 'कैसा बेवकूफ़ है यह छोकरा! आज हम किनारसे जितने दूर हैं अुतने ही सलामत हैं, ज़रा भी पास गये तो चट्टानोंसे टकराकर चकनाचूर हो जायेंगे। आज तो जान-बूझकर हम किनारेसे दूर रह रहे हैं। किसी तरह स्टीमर तक पहुँच जायँ तो काफ़ी है। आज दूसरा अुपाय नहीं है।'

मैंने अिससे पहले कभी बड़ी अुम्रके लोगोंको अेक-दूसरेके गले लगाकर रोते नहीं देखा था। वह दृश्य अुस दिन हमारी लाँचसे बँधी हुअी नावमें देखा। वहाँ तो स्त्री-पुरुष अेक-दूसरेको सीनेसे लगाकर दहाड़ मारकर रो रहे थे। दो-तीन बालकोंकी अेक माँ अेक साथ अपने सब बच्चोंको गोदमें ले लेनेकी कोशिश कर रही थी। केवल पाँच पच्चीस युवक जी-तोड़ मेहनत करके प्रचंड समुद्रके साथ अ-समान युद्ध कर रहे थे। तूफ़ान अितना बढ़ गया और लाँच और नाव अितनी ज़्यादा डोलने लगी कि लोग डरके मारे रोना तक भूल गये। सब जगह मौतकी काली छाया छा गयी। सजग थे केवल नायक बहादुर नौजवान और काली-नीली वर्दी पहने हुअे स्टीम-लाँचके मल्लाह। हमारा कप्तान हुक्म देते हुअे कभी कभी व्यग्र हो अुठता, लेकिन मल्लाह बराबर अेकाग्र होकर बिना परेशान हुअे चुपके अपना अपना काम किये जाते थे। कर्मयोग क्या अिससे भिन्न या अधिक होगा?

आखिरकार तटकी बन्दरगाह आया! हम स्टीमरको देखते अुससे पहले ही स्टीमरने हमारी लाँचको देख लिया और अपना भोंपू बजाया 'भों !' मानो सबकी करुण-वाणी सुनकर भगवानने ही 'मा भै:' की आकाशवाणी की हो! हमारी स्टीम-लाँचने भी अपनी तीखी आवाज़से भोंपूको जवाब दिया। सबके हृदयमें आशाके अंकुर फूट पड़े, चारों ओर जय-जयकार हुआ।

अितनेमें मानो अन्तिम प्रयत्न करके देखनेके हेतुसे तथा हम सबके भाग्यके सामने हारनेसे पहले आखिरी लड़ाई लड़ लेनेके

लिअ अक बड़ी भारी लहर हमारी लाँच पर टूट पड़ी। मेरे पिताजी जहाँ बैठे थे वहीं पर चित गिर गये। मैंने अेक करुण चीख मारी। अभी तक मैं रोया न था। मानो अुसका सारा बदला अुस अेक ही चीखमें लेना था। दूसरे ही क्षण पिताजी अुठ बैठे और मुझे छातीसे चिपटा कर कहने लगे दत्तू, डरो मत मुझे कुछ भी नहीं हुआ।

हम स्टीमरके पास पहुँच गये। लेकिन बिलकुल पास जानेकी हिम्मत कौन करता? कस्टमवाली किश्तीका तो अुन लोगोंने कबका अलग कर लिया था क्योंकि वह लाँच और बड़ी नावके झोंके सह नहीं सकती थी। अुसकी रक्षा तो छूटनेमें ही थी। हमारी स्टीमलाँचने दूरसे स्टीमरकी प्रदक्षिणा कर ली लेकिन किसी भी तरह पास जानेका मौका नहीं मिलता था। क्योंकि धक्केसे यदि लाँच स्टीमरके साथ टकरा जाती तो बिलकुल आखिरी क्षणमें हम सब चूर चूर हो जाते। अन्तमें अूपरसे रस्सा फेंका गया और हमारे मल्लाह लाँचके छत पर खड़े होकर लम्बे लम्बे बाँसोंसे स्टीमरकी दीवारोंसे होनेवाली लाँचकी टक्करको रोकने लगे। तरंगें लाँचको जहाजकी तरफ फेंकनेकी कोशिश करतीं तो मल्लाह अपने लम्बे लम्बे बाँसोंकी नोकोंकी ढाल बनाकर सारी मार अपने हाथों और पैरों पर झेल लेते। अितने पर भी आखिरमें स्टीमरकी सीढ़ीसे स्टीमलाँचकी छत टकरा ही गयी और कड़कड़ करके अेक लम्बा पटिया टूट कर समुद्रमें जा गिरा।

मैं पास ही था अिसलिअे स्टीमरमें चढ़नेकी पहली बारी मेरी ही आयी। चढ़नकी कैसी? गेंदकी तरह फेंके जाने थे। खुद कप्तान और दूसरा अेक मल्लाह लाँचके किनारे पर खड़े रहकर अेक अेक आदमीको पकड़कर स्टीमरकी सीढ़ीके सबसे निचले पाये पर खड़े हुअे मल्लाहोंके हाथमें फेंक देते थे! अिसमें खास सावधानी यह रखी जाती थी कि जब लाँच हिलोरोंके धक्केमें जाती तो मुसाफिरको पकड़कर लाँचके अूपर

आने तक वे राह देखते और दूसरे ही क्षण जब वह तरंगके शिखर पर चढ़ जाती और छोटी बिलकुल पास आ जाती, तो तुरन्त ही मुसाफ़िरको अुस तरफ़ फेंक देते और जहाज़ परके मल्लाह अुसे पकड़ लेते। दोनों ओरके खलासी यदि आदमीका हाथ पकड़ रखें तब तो दूसरे ही क्षण जब लांच तरंगोंके गड्ढेमें अुतर जाती मनुष्यकी फटकर जरासंधकी तरह दो फाँकें हो जातीं!

मैं अूपर चढ़ा और माँ आती है या नहीं यह देखने लगा। जब मैंने अेक बिलकुल अपरिचित बुड्ढे मुसलमानको माँके हाथोंको पकड़े हुअे देखा तो मेरा मन बेचैन हो अुठा। लेकिन वह प्राण बचानेका समय था। वहाँ कोमल भावनाओंका क्या काम? थोड़ी ही देरमें पिताजी भी वहाँ आ पहुँचे। देवताओंकी पेटी तो मैंने कंधे पर ही रखी थी। अूपर अच्छी जगह देखकर पिताजीने हमें बैठा दिया और सामान वापस लेने गये। मैं श्रद्धालु तो अवश्य था, लेकिन अुस वक्त मुझे पिताजी पर दरअसल बहुत गुस्सा आया। चूल्हेमें जायें सारा सामान! प्राण जोखिममें डालनेके लिअे फिर क्यों जाना होगा? लेकिन वे दो तीन बार हो आये। आखिरी बार आकर कहने लगे गोकर्ण-महाबळेश्वरके प्रसादका नारियल पानीमें गिर गया! यह सुनकर माँ और मैं अेकसाथ बोल अुठे। माँने कहा आह! और मैंने कहा बस अितना ही न?

लाँचवाले यात्री चढ़ गये। फिर नाववालोंकी बारी आयी वे भी चढ़े। अुसके बाद लाँच और नाव निशाचर भूतोंकी तरह चीखें मारती हुआी तटके किनारेकी ओर गयीं और वहाँ पर समस्कर्म करते बैठे हुअे यात्रियोंको थोड़ा थोड़ा करके लाने लगीं। तूफ़ान अब कुछ ठंडा हो पड़ा था लेकिन अंधेरी रात और अुछलती हुआी तरंगोंके बीच अुन लोगोंका जो हाल हुआ होगा अुसका वर्णन कौन कर सकता है?

स्टीमर यात्रियोंसे ठसाठस भर गया। जो भी बोलता वह अपने समुद्रमें डूबे हुअे सामानकी ही बातें करता। आखिर यात्री सब आ गये।

अीश्वरकी कृपा थी कि अेक भी आदमीकी जान न गयी। स्टीमर छूटा और लोग अपनी-अपनी पुरानी यात्राओंके अैसे ही संकटपूर्ण संस्मरण अेक-दूसरेको सुनाकर आजका दुःख कम करने लगे। रातको बड़ी देर तक किसीको नींद नहीं आयी। मैं कब सोया, कारवारका बन्दरगाह कब आया और हम घर कब पहुँचे, अिनमें से आज कुछ भी याद नहीं है। लेकिन अुस दिनका वह तूफ़ान तो मानो कल ही हुआ हो, अिस तरह स्मृतिपट पर ताजा और स्पष्ट है। सचमुच

दुःखं सत्यं सुखं मिथ्या
दुःखं जन्तोः परं धनम्।

१६

हम हाथी खरीदें

अेक बार हम साँगलीसे मीरज लौट रहे थे। साँगलीके राजमहलके आसपास हमने कअी हाथी बँधे हुअे देखे। हाथी कभी चुपचाप खड़े नहीं रहते। शरीरका बोझ दाहिनी ओरसे बायीं ओर और बायीं ओरसे दाहिनी ओर फिरानेमें हर समय डोला ही करते हैं। अिस तरह झूमना हाथीकी शोभा है। लोग अैसा समझते हैं कि यदि हाथी अिस तरह न झूमे तो अुसका मालिक छः महीनेके अंदर मर जाता है। न झूलनेवाले अशुभ हाथीको कोअी खरीदता भी नहीं। हाथीके लम्बे-लम्बे दाँत काटकर बेच डालते हैं और बचे हुअे हिस्सेमें सोनेके कड़े फँसाये जाते हैं — फिर भी वे काफी लम्बे तो रहते ही हैं। हाथीकी सभी हड्डियाँ हाथी-दाँतके तौर पर अिस्तेमाल की जाती हैं, लेकिन दरअसल अिन दाँतोंके टुकड़े ही अुत्तम हाथी-दाँत होते हैं और अुनकी क़ीमत भी ज्यादा आती है। हाथीके पीठका भाग यदि ढलता हुआ हो तो वह हाथी बहुत रूपवान

माना जाता है। अगर अुसकी पीठ बिलकुल सपाट हो तो वह हाथी मामूली माना जाता है।

अैसा माना जाता है कि घोड़ेकी तरह हाथी भी रातको न सोता है और न बैठता ही है। हाथी सो जाये तो उसके कान अथवा सूंड़में चींटी घुस जाती है और अुसे काटती है और जहाँ चींटीने काटा कि हाथी मुसी क्षण मर जाता है अैसी भी अेक धारणा लोगोंमें प्रचलित है। यह धारणा अिस नीति-बोध तक तो ठीक है कि अितने बड़े हाथीकी मौत अेक नाचीज़ चींटीके हाथमें है, लेकिन मैंने निश्चित रूपसे जान लिया है कि हाथी बैठता भी है और थोड़ा सोता भी है। कहा जाता है कि जब हाथी सोता है तब अपनी सूंड़में कुछ घुस न जाय अिसलिअे सूंड़ मुंहके अन्दर रखकर सो जाता है। लेकिन फिर वह साँस किस तरह लेता होगा?

मीरजमें प्रवेश करते समय हमने देखा कि अेक छोटा-सा हाथी बिक्रीके लिअे खड़ा है। मैंने पिताजीसे पूछा अिस हाथीकी क़ीमत क्या होगी? हमें खुश करनेके लिअे पिताजीने गाड़ी रुकवायी और गाड़ी पर बैठे हुअे चपरासीसे कहा हाथी कितनेमें बिक रहा है यह ज़रा पूछ तो आ। चपरासीने आकर कहा अुसकी क़ीमत पाँच सौ तक जानेकी संभावना है। बस! मैंने और केशूने हठ पकड़ा हम हाथी खरीदें। पिताजीने कहा हमसे क्या यह हाथी खरीदा जा सकता है? मैंने कहा पाँच सौ रुपयेका ही तो सवाल है। आपकी दो महीनेकी तनख्वाह न दें तो काफी होगा। पिताजीने पूछा लेकिन हाथी लेकर करेंगे क्या? हमने कहा अुस पर बैठेंगे और घूमने जायेंगे। पिताजीने बातको रफ़ा-दफ़ा करनेके लिअे कहा अैसी बेतुकी बातें नहीं की जातीं। हाथी तो राजा ही खरीद सकते हैं। हम जैसे हाथी रखने लगें तो दुनिया हँसेगी। लेकिन अितनेसे न मुझे सन्तोष हुआ और न केशूको ही। हमने अेक ही ज़िद पकड़ रखी — हम हाथी खरीदें।

अितनमें हमारी गाड़ी घर आ पहुँची। पिताजीने सोचा होगा कि यह मौका बालकोंको सबक सिखानेके लिअे अच्छा है। अुन्होंने कहा 'चलो, मैं हाथी खरीदनेको तैयार हूँ। लेकिन हम हाथी खरीदें अुससे पहले तुम पूछताछ करके अितना हिसाब लगा लो कि वह रोजाना क्या खाता है कितना खाता है, अुसके महावतको हर माह क्या तनख्वाह दी जाती है अुसके लिअ हाथीखाना बनानेमें कितना खर्च आता है और फिर मेरे पास आओ।

हम बाहर निकले और अनेक जगह घूम कर जानकारी प्राप्त कर ली तो दंग रह गये! हाथीको रोजाना गेहूँका मलीदा खिलाना पड़ता है। अितनी गाड़ियाँ घासकी बड़के पत्ते और गन्ना मिले तो अितना गन्ना कभी पखालें भरकर पानी तथा गुड़ घी वगैरा हाथीको देना पड़ता है। अुसकी गजशाला अितनी अूँची होनी चाहिये, अुसीके साथ अुसके महावतका घर अुसकी खुराक रखनेकी कोठरियाँ रोजाना हाथीखाना धोकर साफ़ करनेवाला खास नौकर हाथीको नहलानेके समय अुसके मददगार अितने लोग। अिस तरह हाथीका बजट बढ़ता ही चला। फिर हाथी जब मदमस्त होता है तब अुसके चारों पैर मोटी-मोटी साँकलोंसे बाँधने पड़ते हैं। अेक ही साँकल हो तो वह अुसे तोड़कर गाँवमें घूमकर अुत्पात मचाता है आदि विनोद बातें भी हमको मालूम हुअीं।। हिसाब करके देखा तो पता चला कि यदि हम हाथीको खिलायेंगे तो हमें अपने लिअे खानेको कुछ न बचेगा और अुसके लिअे घर बनाना हो तो हमें अपना घर बेच देना होगा। फिर अितना करके भी यदि हाथी रखा तो अुसका अुपयोग क्या? किसी दिन अुस पर बैठकर घूम आयेंगे अितना ही तो है। और घूमनेके लिअे भी हाथीके लायक़ बड़ी झूल और अम्बारी तो होनी ही चाहिये। हम अपनी मूर्खता समझ गये और हमने बुद्धिमानी-युक्त निश्चय किया कि अब पिताजीके सामने हाथीका नाम भी नहीं लेना चाहिये।

लेकिन दूसरे दिन खुद पिताजीने ही बात छेड़ी। हमें अपना सारा हिसाब पेश करना पड़ा। हमें लज्जित देखकर अुन्होंने वह बात वहीं छोड़ दी। फिर जानकारी देते हुअे अुन्होंने कहा, तुम जानते हो, जिन्दा हाथीकी अपेक्षा मरे हुअे हाथीकी कीमत ज्यादा होती है। जिन्दा हाथी जितना खाता है अुतनी मात्रामें हमारे यहां काम नहीं रहता। अिसलिअे अुसी अनुपातसे अुसकी कीमत घट जाती है। मगर हमें हाथीकी हड्डियोंकी कीमत जिन्दा हाथीसे भी ज्यादा होती है। सिर्फ हाथी सबी अुमरका होना चाहिये। यह आखिरी वाक्य अुन्होंने किस मतलबसे कहा होगा भगवान जानें!

फिर किसीने स्यामके राजाके सफ़ेद हाथीकी बात कही। स्यामके राजाके पास अेक पवित्र सफ़ेद हाथी होता है। अेक तो वह राजाका हाथी ठहरा और दूसरे पवित्र होता है अिसलिअे अुससे सवा तो करायी ही नहीं जा सकती। अेक बार वह राजा अपने किसी सरदारसे मन ही मन नाराज हो गया, तो अुसने दरबारमें अुसकी खूब तारीफ़ की और कहा, आओ, मैं खुश होकर तुम्हें अपना सफ़ेद हाथी भेंट करता हूं। राजाका हाथी होनेके कारण अुसे अच्छा खिलाना पिलाना चाहिये और अुसकी भरपूर सेवा भी होनी चाहिये। यह सब करनेमें अुस सरदारका दिवाला ही निकल गया! आज भी जब कोअी बिना फायदेका खर्चीला काम हाथमें ले लेता है, तब लोग कहते हैं कि अुसने सफ़ेद हाथी दरवाजे पर बांधा है। काम कौड़ीका न करे और तनख्वाह खूब ले अैसे नौकर मंत्री या वजीरको भी सफ़ेद हाथी कहते हैं।

अुपरोक्त घटनाके दो-तीन साल बाद मुझे कारवारमें मालूम हुआ कि वहां कोयलु नामक अेक भीमाजी व्यापारी है। अुसने जंगलसे बड़े-बड़े लक्कड़ अुठाकर लानेके लिअे हाथी रखे हैं। अुनसे वह अुनकी खुराककी कीमतसे भी ज्यादा काम लेता है और खूब नफ़ा कमाता

ह। अुन हाथियोंको जब मन अक दिन देखा तो मुझे अत्यन्त दया आयी। व राजाके हाथियों जैसे मोटे-ताजे नहीं थ। अुनकी कनपटियाँ अितनी अन्दर धँसी हुअी थीं मानो बड़े-बड़े गहर ताक ही हों!

२०

वाचनका प्रारंभ

छुटपनमें हमार पढ़ने योग्य पुस्तकें हमें बहुत नहीं मिलती थीं। खानपुरकी नेटिव जनरल लायब्ररी में जब मैं पहल पहल गया और देखा कि महीनमें कमसे कम दो आने देने पर सिर्फ अखबार ही पढ़नको नहीं मिलते बल्कि पुस्तक-संग्रहमेंसे पुस्तकें भी पढ़नेके लिअ मिलती हैं तो मुझे बड़ा आश्चय हुआ। जिसे अिस तरहकी व्यवस्था सूझी होगी अुसकी कल्पनाके प्रति मर मनमें बड़ा सम्मान पैदा हुआ। पुस्तकें खरीदनी न पड़ें फिर भी पढ़नको मिल जायें यह क्या कम सुविधा ह? जिस यह युक्ति सूझी होगी वह मानवजातिका कल्याणकर्ता हैं अिसमें शक नहीं अैसा मुझ अुस दिन अस्पष्ट रूपसे महसूस हुआ। घरमें तो शिवाजीका जीवनचरित्र शिवाजीके गुरु दादाजी कोंडदेवकी जीवनी रमेशचन्द्रके जीवन प्रभात का मराठी अनुवाद और हरिश्चन्द्र नाटक अितनी ही पुस्तकें पढ़ी थीं। अुसमेंसे बहुत कुछ तो समझमें भी न आया था। पुराण सुनने जाते तो वहाँ खूब मजा आता। लायब्ररीसे जो पुस्तक सबसे पहले पढ़ी अुसका नाम था मोचनगढ़'। अिस तरह पढ़नेका शौक शुरू हुआ ही था कि हम मीरज गये। अुस वक्त मैं चाय- मराठी चौथीमें पढ़ता था। मीरजमें मीरजमळा रियासतके हिसाबकी जाँच करनेका काम पिताजीको सौंपा गया था। अुस रियासतके दफ्तरमें न जाने क्यों मराठी पुस्तकोंकी अेक अलमारी थी। केशूने अुस

पुस्तकसंग्रहका किसी तरह पता चल गया। वह वहाँसे पढ़नेको पुस्तक ले आया। मुझे भी पुस्तक लानेकी भिच्छा हुअी। मैंने पिताजीसे कहा ‘मुझे पढ़नेके लिअे पुस्तकें चाहिये।’ जिस कमरेके सुपुर्द यह संग्रह था अुससे अुन्होंने कहा कि अिसे पढ़ने लायक पुस्तकें दे दो।

पिताजी हमारी शिक्षा या संस्कारोंकी ओर जरा भी ध्यान नहीं देते थे। खुद अुन्हें पुस्तकें या अखबार पढ़नेका शौक न था। गपशप करनेके लिअे अुनके पास ज्यादा लोग भी नहीं आते थे। यदि कोअी आ निकलता और बातें करता तो वे शिष्टाचारकी खातिर सुनते जरूर लेकिन अुसमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं लेते थे। कचहरीका या घरका काम बीमारोंकी दवा दवपूजा स्तोत्रपाठ आदिमें ही अुनका सारा समय चला जाता। शामको नियमित रूपसे घूमने जाते। अपनी पसन्दकी सब्जी खरीदनेके लिअे खुद बाजार जाते। रातको साढ़े आठ बजते ही सो जाना और सबेरे साढ़े चार बजे अुठकर भीश्वर चिन्तन करना यह तो अुनका हमेशाका अखण्डित कार्यक्रम था। अुन्हें दूसरा कुछ सूझता ही नहीं था, बीमार पड़ना भी कभी नहीं सूझा! तिहत्तर सालकी अुम्र तक अुनका अेक भी दाँत नहीं टूटा था और लगभग आखिर तक वे बाअिसिकल पर बैठते रहे।

हम क्या शिक्षा पाते हैं कौनसी पुस्तकें पढ़ते हैं जिससे हमारी दोस्ती है अथवा हमारे दिमागमें क्या बसता है यह जाननेकी वे जरा भी फिक्र नहीं करते। फिर भी अुन्हें क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं अिसका हमें कुछ-कुछ खयाल था। अुनके सादे सरल, स्वच्छ और अेकनिष्ठ जीवनका प्रभाव हम पर आप ही आप पड़ता था। लेकिन साहित्यके सबंधमें अुनकी लापरवाही हमारे लिअे बहुत ही बाधक सिद्ध हुअी।

क्लर्कने मुझसे पूछा 'तुम्हें कैसी पुस्तक चाहिये ?' मैं क्या जानूं ? मैंने कहा 'कोओी मज़ेदार पुस्तक आप ही पसन्द करके द दें।' अुसने पांच-दस पुस्तकें हाथमें लेकर अुनमेंसे अेक मुझ दी और कहने लगा 'यह ले जाओ। अिसमें बहुत ही मज़ा आयेगा।' अुसने वे सब पुस्तकें पढ़ी थीं अिसमें तो शक नहीं। अुसने मुझे जो पुस्तक दी थी, अुसका नाम था 'कामकदला'। वह नाटक था या अुपन्यास यह तो मुझे ठीक याद नहीं है। बिना समझ म अुसे पढ़न लगा। अुसमें मुझे विशेष आनन्द नहीं आया। आनन्द आने जैसी मेरी अुम्र भी न थी। फिर भी मैं अितना तो समझ गया कि यह पुस्तक गदी है अश्लील है।

अुस पुस्तककी अपेक्षा मुझ पर अक दूसरे ही विचारका प्रभाव विशेष पड़ा। मैंने मनमें कहा तब क्या केशू भी अैसी गदी पुस्तकें पढ़ता है और अुनमें आनन्द लेता है ? वह क्लर्क अुम्रमें बड़ा ह। लेकिन हम-जस छोट लड़कोंके लिअे वह अैसी पुस्तकोंकी सिफारिश क्यों करता होगा ? चोरी करनी हो तो मनुष्यको अकेले ही करनी चाहिये। दो मिलकर जब चोरी करेंग तो अितनी जानकारी तो अुनको हो ही जायगी कि हम दोनों चोर हैं ? किसीके साथ चोरीमें सहयोग देनेसे अुसके सामन तो बेशर्म बनना ही पड़गा न ? क्या और वह क्लर्क अक दूसरेके प्रति क्या खयाल रखते होंगे ? और बिना किसी संकोचके अुस क्लर्कने मुझे अैसी पुस्तक दी तो मेरे बारेमें वह क्या खयाल करता होगा ? फिर केशू तो मेरा बड़ा भाओी जो मुझे हमेशा समझदार बननेका अुपदेश देता है जिसके नेतृत्वमें ही मैं हमेशा रहता हूं वह कैसी पुस्तकें पढ़ता है यह मुझे मालूम हो गया है यह तो अुसको बताना ही होगा। अैसी खराब पुस्तकें पहले कभी मेरे हाथमें नहीं पड़ीं यह बात वह क्लर्क शायद न जानता हो लेकिन केशू तो जानता ही है। फिर अुसने मुझे अभी पुस्तक लेनेसे या पढ़नेसे रोका क्यों नहीं ?

हम कभी पुस्तकें पढ़ते हैं यह पिताजीको मालूम नहीं मिलना तो मैं जानता ही था और किसीके सिखाये बिना ही मेरे ख्यालमें आ गया कि अैसी बातें पिताजीसे गुप्त ही रखनी चाहिये।

अपरोक्त विचार-परम्पराको अुस वक्त तो अैसी भाषामें अथवा अितनी स्पष्टतासे न प्रकट नहीं कर सकता। लेकिन अितना मैं विश्वासके साथ कह सकता हूँ कि अिसमेंका अेक-अेक विचार अुस वक्तका ही है। जब कोअी यह कहकर अपना बचाव करता है कि 'अमुक काम करना बुरा है यह मैं अुस वक्त नहीं जानता था' तो अुसकी बात आसानीसे मेरी समझमें नहीं आती। अच्छा क्या और बुरा क्या अिसका स्थूल खयाल तो मनुष्यको न जाने किस तरह बहुत ही जल्दी आ जाता है।

सौभाग्यसे अुस वक्त मुझमें अैसी पुस्तकोंकी रुचि पैदा नहीं हुअी थी। अनापशनाप दलन जाना कवितायें रटना, खेल खेलना, गेंदके साथ गप्पें छड़ाना और फुरसतके समयमें बड़े होने पर बड़े बड़े मन्दिर या मकान कैसे बनायेंगे अिसका विचार करना यही मेरा मुख्य व्यवसाय था। बिल्लियाँ और कबूतर मेरे अुस समयके जीवनके मुख्य साथी थे। अेक ब्राह्मण विधवा बुढ़िया हमारे यहाँ भिक्षा माँगनेको आती। अुसके पास लोक-गीतोंका भण्डार था। मेरी माँको लोक-गीतोंका बहुत शौक था। अुस वह शौक मेरी अक्का (बड़ी बहन) में ही समाया था। अक्काके पास लोक-गीतोंका बहुत बड़ा लिखित संग्रह था और वे सब गीत अुसे जबानी याद भी थे। सीताका विलाप द्रौपदीकी पुकार दमयन्तीका संकट रुक्मणीका विवाह हनुमानकी लंका-लीला श्रीकृष्णके द्वारा की गयी गोपियोंकी फजीहत आदि अुन गीतोंके मुख्य विषय थे। कभी-कभी वनवासी बाबा महादेव और अुनकी अनन्य भक्ति करनेवाली शैलजा पार्वतीके बारेमें लोकगीत शुरू हो जाता। मेरी माँ और मेरी भाभियाँ सभी रूपक ही थीं, अिसलिअे शौक पद्धतिसे ही न कविताका स्वाद ले सकती

थीं और गुरुमुखसे ही गीत याद कर सकती थी। वह बुढ़िया लगभग सारी दुपहरी हमारे यहाँ बिताती। अुससे अुसे आमदनी भी काफी होती और माँ व भाभियोंको काव्यका आनन्द मिलता। चूँकि मैंने स्कूल जानेकी जिम्मेदारी स्वीकार नहीं की थी अतः अुस काव्य-रसमें हिस्सा लेनेसे मैं न चूकता। माँके साथ मैं भी कभी लोकगीत अनायास ही सीख जाता था। जब मैं कुछ बड़ा हो गया तो मेरे सिरमें यह भूत समा गया कि औरतोंके गीत याद रखना मर्दोंको शोभा नहीं देता। अिसलिअे मैं प्रयत्नपूर्वक अुन लोकगीतोंको भूल गया।

अुस वक्तके अैसे शुद्ध रसके मुकाबलेमें मैं 'कामकन्दला' में मशगूल नहीं हो सका अिसमें क्या आश्चर्य? अुस पुस्तकको पूरा करनेके पहले ही हमारा मीरजका मुकाम पूरा हो गया और हम जत गये। अैसी पुस्तक मैंने केवल यही पढ़ी। अुसका असर अुस वक्त तो कुछ न हुआ, लेकिन जैसे गर्मीमें बोया हुआ बीज वैसाका वैसा पड़ा रहता है और बरसात होने पर फूट निकलता है तथा बढ़ता है, बस ही अुम्र बढ़ने पर अुस पुस्तकके वाचनने अपना असर बताया और मनमें गन्दे विचार आने लगे। लेकिन घरका रहनसहन और संस्कार शुद्ध, पिताजीकी धर्मनिष्ठा जबरदस्त और बड़े भाअीका नैतिक पहरा निरन्तर जाग्रत रहता था अिसीलिअे अुन गन्दे विचारोंके अंकुर जहाँके तहाँ दब गये और कल्पनाकी विकृतिके अलावा अुसका ज्यादा बुरा असर नहीं हुआ। वातावरण शुद्ध हो तो खराब वाचनके बावजूद मनुष्य कुछ-कुछ बच सकता है। खराब वाचन खराब तो होता ही है, अुससे बालकोंको बचाना चाहिये। लेकिन निर्दोष और प्रेमपूर्ण कौटुम्बिक वातावरण ही सबसे ज्यादा महत्त्व रखता है। जहाँ शुद्ध वात्सल्यका आस्वाद मिलता है वहाँ जीवन सहज ही सुरक्षित रहता है।

२१
यल्लाम्माका मेला

यल्लाम्माके मेलेका कर्नाटकमें बड़ा महत्त्व है। कन्नड़ भाषामें यल्ला मानी सब और अम्मा मानी माँ। जिस तरह यल्लाम्मा देवी विश्वजननी सबकी माता है। अुसीका दूसरा नाम है रेणुका।

यह रेणुका यल्लाम्मा कौन होगी? पशु-पक्षी, मानव-दानव वृक्ष-घासे कृमि-कीट-पतंग सबको जन्म देनेवाली सबका पालन-पोषण करनेवाली यह रेणुका कौन होगी? वन्दे मातरम् कह कर हम जिसका जय-जयकार करते हैं वह धरती माता असंख्य अणुरेणुओंसे बनी हुआी मृण्मयी कृषिमाता ही यल्लाम्मा है। अुस यल्लाम्माका अुत्सव किसानोंके लिअे मज़ेसे बड़ा अुत्सव क्यों न होगा? वेदकालसे ऋषि-मुनि कहते आये हैं कि वर्षा करनेवाला आकाश या द्यौ पिता है और आकाशके पर्जन्य (वर्षा)को धारण करके सस्यशालिनी बननेवाली पृथ्वी माता है।

यल्लाम्माका मेला हर वर्ष लगता है। अुसके निमित्त दूर दूरके किसान अिकट्ठे होते हैं कलावान गुणीजन अुस जगह अपना कौशल प्रकट कर सकते हैं। व्यापारी तरह-तरहका माल बेचनेको लाते हैं। क्रय-विक्रयरूपी महान् विनिमयका यह दिन होता है।

लेकिन यल्लाम्माके मेलेका मुख्य आकर्षण तो बैलोंकी प्रदर्शनी है। आपको बढ़ियासे बढ़िया बैल देखने हों समान आकारके, समान रंगके, समान सींगोंवाले और समान ताक़तवाले खिलारी बैलोंकी चाहे जितनी जोड़ियाँ खरीदनी हों तो आप यल्लाम्माके मेलेमें जाअिये। बड़े-बड़े और अेक तरफ़ झुके हुअे सिरोंवाले बैलोंको गजगतिसे चलते देखकर सचमुच आँखें तृप्त हो जाती हैं।

कुछ बलोंक सफ़ेद शरीर पर रंगमें डुबाये हुअ हाथोंकी छाप लगी होती है। अुनके सींगोंको हिरमिजी लाल तलिया रंग लगाया हुआ होता है। सींगोंकी नोंकमें छेद करके अुनमें पीले भूरे या जामुनी रंगके रेशमी झूमके लटकाये जाते हैं। गलेमें घुंघरू तो होने ही चाहियें। कुछ अूंची जातिके बलोंके अगले पांवमें परमें चांदीका तोड़ा पहनाया जाता है। अुस दिनकी खुशीका क्या पूछना! हरअेक बलके मालिककी छाती अभिमानसे कितनी फूली हुअी होती है! अुसके सामने अुसके बैलकी बात करनी हो तो जरा समझकर ही कीजियेगा! आपकी असी वैसी बात अुससे बर्दाश्त न होगी। सच्चा किसान अपने बैलसे काम तो पूरा लेता है लेकिन वह अुसका आराध्य देवता ही होता है। बैल अुसका प्राण है। बैलकी सेवा वह किसी लाभके स्वार्थसे नहीं करता। अपने बेटेसे भी अुसे अपने बैल पर ज्यादा प्रेम होता है।

अैसे मेले कर्नाटकमें अनेक जगह लगते हैं। जब हम जेलमें थे, तब यल्लाम्माका मेला देखने गये थे। भीड़में घूमना फिरना आसान नहीं था। राजकी ओरसे हमें दो चपरासी मिले थे। वे हमारे सामने चलते हुअे लोगोंको डराकर हमारे लिये रास्ता बनाते। जगह-जगह ग्रामीण खादीकी दूकानें लगी हुअी थीं और दूकानदार दो हाथका लम्बा गज अपनी छाती पर दबाकर कपड़ा माप देते। जब खादीका कपड़ा फटता, तो अैसी मजेदार आवाज निकलती कि अुसे सुननेके लिअे खड़े रहनेका मन होता।

बाजारमें घूमते-घूमते हम अेक असी जगह पहुँचे जहाँ खूब भीड़ थी। वहाँ झूला घूम रहा था। छुटपनमें हमें पैसे तो हाथमें दिये ही नहीं जाते थे जिससे यदि झूलनेका मन हुआ भी तो वह लोभ हमें अपने मनमें ही रखना पड़ा। देहाती बालकों और कुछ शौक़ीन व जोशीले बूढ़ोंको भी झूलेमें झूलते देखकर मेरे मनमें आया कि हमसे ये गरीब लोग कितने सुखी हैं। जब चाहें तभी झूलेमें

नाठ सकते हैं। चितनमें हमारे चपरासीने झूलेवालेसे कहा 'ये झूलेवाले, ये साहबके लड़के हैं। बिन्हें झूलेमें बैठा।' मैंने धीरेसे चपरासीसे कहा 'लेकिन हमारे पास तो अेक भी पैसा नहीं है।' अुसने मेरा हाथ दबाकर मुझसे भी धीमी आवाजमें कहा ''अुसकी फ़िकर नहीं। आप बैठें तो सही।'

बिना विशेष विचार किये हमारा अुत्कंठित मन हमें झूलेकी ओर ले गया। झूलेवाले झूला घुमाते हुअे कुछ गाते जाते थे। अेक आदमी जोरसे फेरोंकी गिनती करता था। बैठनेमें तो खूब ही मजा आया। हम बैठे थे अिसलिअे झूलेवालेने पाँच-दस चक्कर ज्यादा लगाये। अुसने मनमें कहा होगा 'बड़े बापके बेटे हैं पाँच-दस चक्कर ज्यादा लगा दिये तो खुश हो जायेंगे।' 'तुष्यतु दुर्जन'।

हम नीचे अुतरे और चलने लगे। मेरे मनमें तरह-तरहके खयाल आने लगे। शरीर अुतरा लेकिन मन झूले पर चक्कर खाता रहा। हम मुफ्तमें बैठे मानो भिखारी जैसे हुअे यह खयाल मनमें आता कि दूसरे ही क्षण अभिमान कहता, 'भिखारी कैसे? अुसने हम पर दया करके तो बठाया ही नहीं। हम अफ़सरके लड़के ठहरे। हमसे डरकर अुसने हमें बठाया। जब वह हमेशाकी अपेक्षा ज्यादा चक्कर लगा रहा था तब शेष तीन पालनोंमें बैठे हुअे लड़के और प्रेक्षक हमारी ओर ही देख रहे थे न? बड़प्पनके बिना मजा कैसा हो सकता है?' यों मनको तसल्ली तो होती थी लेकिन फिर विचार आता 'झूलेसे अुतरनेके बाद जब हम चलने लगे तब जो शर्म महसूस हुअी वह किस लिअे? जब दूसरे सब अेक-अेक पैसा दे रहे थे तब हमने भी यदि जेबसे चवन्नी निकालकर दी होती और अुसने झुककर सलाम किया होता तब तो यह बड़प्पन शोभा देता। लेकिन हम तो ठहरे बालक! हमारे पास पैसे कहाँसे आयें? हाँ, यह ठीक है। फिर तो हमें झूलेमें बैठना ही न चाहिये था। लेकिन मैं कहाँ अपने आप बैठने गया था? मुझे तो सखारामने

बताया। लेकिन फिर भी क्या मुझे अिन्कार न करना चाहिये था?' अैसे अैसे अनेक विचार मनमें आये और गये! झूलेमें बैठकर हमने अपनी फजीहत ही कर ली अुससे हमारी शोभा तो बढ़ी ही नहीं अिस ख्यालको हटानेका मैं कितना ही प्रयत्न करता था लेकिन वह मनसे हटता नहीं था।

* * *

दूसरे दिन मेलेमें मकरेकी बलि दी जानेवाली थी। राजा साहब (वह भी लगभग मेरी ही अुम्रके थे) खुद आनेवाले थे। अेक तंबू तानकर अुसमें बाबासाहब (जतके राजासाहब) और अुनके सब अफ़सर बैठे थे। बाबासाहबने रेशमका हरा अंगरखा पहना था। सिर पर मराठाशाही पगड़ी तिरछी पहनी थी। अुनके दीवान दाजीबा मुळे अुनके पास बैठे थे। बाबासाहब गंभीरतासे बैठे थे। अितना-सा लड़का अितनी गंभीरता धारण कर सकता है यह देखकर मेरे मनमें अुनके प्रति आदर पैदा हुआ। लेकिन मैंने यह भी देखा कि अुनके साथ रहनेवाला मुसाहिब जब दूरसे अुनकी ओर कनखियोंसे देखता और कुछ सूक्ष्म मसखरी करता तब बाबासाहबको भी अपनी हँसी दबाना मुश्किल हो जाता था। वे कुछ चिढ़कर अुसकी ओर न देखनेका निश्चय करके मुँह फेर लेते थे, फिर भी हठीली आँखें तिरछी नजरसे अुसी दिशामें देखतीं और अुनकी आँखें चार होते ही अुनका हँसी दबानेका संयम और भी ढीला पड़ जाता था। अच्छा हुआ कि अुन दोनोंको पता न चला कि तीसरा मैं अुन दोनोंकी हरकतें दिलचस्पीके साथ देख रहा था।

चाल-धूप बड़ी तेज होती है। नौ बजनेका समय हुआ कि दीवान साहबने जरा-सा अिशारा करके बाबासाहबको तम्बूके पीछे नाश्ता करनेको भेजा। अन्दर जानेके बाद बाबासाहबने कहा होगा कि 'अुन बोर्डिंगके लड़कोंको भी बुलाओ।' हम भीतर गये। अुनके साथ खानेकी

बैठे। मनमें बेचैनी-सी पैदा हुआी। राजा हुआ तो क्या? आखिर है तो वह राजपूत ही, और हम ठहरे ब्राह्मण। जिन लोगोंके साथ बैठकर कैसे खाया जा सकता है?' मैं गोंदूकी ओर देखने लगा और गोंदू मेरी ओर। हमारे साथ वहाँ कोअी बात भी नहीं कर रहा था, यह और भी परेशानीकी बात थी। अितनेमें दीवानसाहब अन्दर आये। शायद पिताजीने अुनसे कुछ कहा हो। अुन्होंने कहा तुम मनमें कोअी संकोच मत रखो। ये तो बूँदीके लड्डू हैं जिन्हें खानेमें कोअी हर्ज नहीं। तुम्हारे लिअे बाहर लोटेमें पानी रखा है वह पी लेना। हमने नाश्ता किया तो सही लेकिन जरा भी मजा न आया। हमें भीतर बुलानेमें कोअी प्रेम भावना नहीं, सिर्फ शिष्टाचार था। किसी प्रकारके परिचयके बिना बातचीत भी कैसे होती? जानवरकी तरह चुपचाप खा लिया बाहरकी पानी पी लिया और किसी तरह वहाँसे अुठकर सबूमें आ बैठे।

अितनेमें बलि चढ़ानेका समय हुआ। अेक बड़ा घेरा बनाकर लोग देखनेके लिअे खड़े हो गये। भीड़के कारण घेरा तंग होने लगा। प्रबंध रखनेवाले पुलिसके आदमी डंडों और कोड़ोंसे लोगोंको हटाने लगे। लेकिन अुसी वक्त दीवानसाहबने अुठकर तेज आवाजसे पुलिसवालोंको डाँटकर कहा खबरदार, यदि लोगोंको मारा तो! लोगोंको समझा बुझाकर पीछे हटाओ। मुझे दीवानका यह हुक्म बहुत अच्छा लगा। अधिकारियोंमें भी लोगोंके प्रति कुछ सद्भावना रहती है यह आश्चर्यजनक खोज अुस वक्त हुअी। मैं दामीबाकी ओर आदरकी दृष्टिसे देखने लगा।

अितनेमें बाजे बजने लगे। अेक छोटासा बकरा बलिदानके लिअे लाया गया। अुसके माथे पर बहुत-सा कुंकुम लगाया गया था और गलेमें फूलोंकी मालायें डाली गयी थीं। अेक गहरी खाअीमें जलते हुअे अंगारे थे। खाअीके आसपास केलेके पेड़ खड़े किये गये थे। अेक आदमीने खाअीकी अेक तरफ खड़े होकर बकरेके पिछले दो पैर पकड़े,

दूसरेने खाओीकी परली बाजूसे दूसरे दो पर पकड़े। बेचारा बकरा खाओीके अूपर लटकने लगा। अितनेमें वहाँ पुरोहित आया। अुसके हाथमें तलवार थी। मेरा दिल कसमसाने लगा। गला रुँध गया। मैंने तुरन्त ही मुँह फेर लिया।

आसपासके लोगोंने 'भुदो भुदो' का नारा लगाया। बकरेके टुकड़े खाओीमें फेंक दिये गये होंगे और पुरोहित तथा अुसके पीछे दूसरे अनेक लोग जल्ती हुआी खाओीमें से गुजर होंगे। देखते देखते सब ओर अव्यवस्था फैल गयी। हम सब अपनी-अपनी सवारियोंमें बैठकर भीड़में से मुश्किलसे रास्ता निकाल कर अपने-अपने घर पहुँचे।

*　　　*　　　*

क्या यल्लाम्माको भैंसा बलिदान भाता होगा? यल्लाम्मा जानती है कि वृक्ष सिर्फ कीचड़ खाते हैं पशु वृक्षोंके पत्ते खाते हैं पक्षी कीटाणुओंको खा जाते हैं मनुष्य अनाज, साग-सब्जी और पशु-पक्षियोंको खाता है सूक्ष्म रोग-कीटाणु मनुष्यको खाते हैं हवा मिट्टी और सूर्यप्रकाश सूक्ष्म कीटाणुओंका नाश करते हैं। अिस तरह हिंसा-चक्र तो चलता ही रहता है। जीवो जीवस्य जीवनम्। लेकिन अिन सबकी माता यल्लाम्मा तो अशना (भूख) और पिपासा (प्यास) दोनोंसे परे है। अिसीलिअे वह यल्लाम्मा है। अुसे भला बलि कैसे चढ़ायी जाये? अुसके सतत आत्मबलिदानसे तो हम सब जीते हैं। अुसे बलि देनेका विधान हो ही नहीं सकता। अुसके बलिदानसे हमें आत्मबलिदानकी दीक्षा लेनी चाहिये।

जब तक जानवरोंकी तरफ़ खाद्यवस्तु अथवा जायदादके रूपमें ही देखा जाता था, तब तक अुनकी बलि क्षम्य थी। लेकिन जब हमने यह जान लिया कि जानवर भी हमारे भाअी-बन्द हैं, यल्लाम्माके बालक हैं तब तो अुन्हें बलि चढ़ाना धर्मके नाम पर शुद्ध अधर्म करनेके समान है।

२२

बिठोबाकी मूर्ति

जब दक्षिण महाराष्ट्रकी अेक रियासतकी राजधानीका शहर था। वहाँसे हम पंढरपुर आ रहे थे। जाड़के दिन थे। बहुत कड़ाकेकी सर्दी थी। बग्गाड़ीमें बैठना हमें बिलकुल पसंद नहीं था। यद्यपि यह सरकारी गाड़ी थी बहुत सुन्दर और सुविधाजनक लेकिन हम जैसे बच्चोंको लगातार बैठे रहना कैसे अच्छा लगता? अतः हम गाड़ीके साथ रोजाना सबेरे शाम पैदल ही चलते। जाड़के दिनोंमें धूलमें चलनेसे शामको पैर फट जाते। तलुवे ही नहीं, बल्कि अूपर टखने तक सारी चमड़ी फट जाती और पिछली परकी चमड़ी भी रेगमालकी तरह खुरदरी हो जाती और तलुवोंकी दरारोंमें से खून निकलने लगता। सोतेके समय पिताजी गरम पानी और साबुनसे हमारे पैर धो डालते और माँ दूधकी मलाजी लेकर गालों और ओठों पर मलती। साबुनसे पैर धुलाना तो असह्य होता, लेकिन मलाजी मलवानेकी क्रिया अच्छी लगती थी। माँ मलाजी मलनेको आती तब मैं तो खानेका बहाना करता और जहाँ माँ की अँगुली ओठोंके पास आती कि तुरन्त ही मैं अँगुली मुँहमें पकड़कर सारी मलाजी चाट जाता था। यह युक्ति अेक-दो बार ही सफल हुअी। लेकिन हमेशा माँ ही मलाजी मलती हो सो बात नहीं थी। किसी दिन बड़ी भाभी आती तो किसी दिन मँझली भाभी। फिर यह भी नहीं था कि जिस तरह मैं जो मलाजी खा जाता था, वह माँको बिलकुल ही अच्छा नहीं लगता था। माँ नाराज अवश्य होती थी लेकिन अुसकी नाराजी अूपर ही अूपरकी रहती।

अेक दिन शामको हमने अेक गाँवमें मुकाम किया। वहाँ धर्मशाला नहीं थी, अिसलिअे बिठोबाके मंदिरमें डेरा डाला। पंढरपुरके आसपास

बहुत दूर तक हर गाँवमें विठोबाका मंदिर तो होता ही है। विठोबा और रखुमाओी (रुक्मिणी) दोनों कमर पर हाथ रखे दोनों पैर बराबर मिलाये हुअे हर मंदिरमें खड़े मिलते ही हैं। शाम हुओी कि गाँवके लोग — स्त्री पुरुष सब — अेकके बाद अेक देव-दर्शनके लिअे आते हैं और बिठोबाको क्षेम देकर — यानी आलिंगन करके — और चरणों पर मस्तक रखकर लौट जाते हैं। यह शुभ प्रदेशका रिवाज ही है। हम तो यह सब आश्चर्यसे देखते।

पीनेका पानी दूरके अेक झरनेसे लाना था। भाभी, गोंदू और मैं तीनों पानी लाने गये। अँधेरेमें रास्ता दीखता न था। जाड़से दाँत कटकटाते थे। मैंने झरनेमें लोटा डुबोया। ओफ़! मानो काले बिच्छूने डंक मारा हो अिस तरह हाथकी हालत हुओी। पानी अितना ठंडा था कि मैंने लोटा छोड़कर हाथ पीछे खींच लिया और कहा अैसे पानीमें अब फिरसे हाथ डालनेकी मेरी हिम्मत नहीं है। लेकिन लोटा क्या अैसे ही छोड़कर आया जा सकता था? गोंदूने हिम्मतके साथ पानीमें से लोटा बाहर निकाला अितना ही नहीं अुसने बाकीके सारे बरतन भी भर दिये।

हम लौटे। गोंदूकी अिस बहादुरीको देखकर मेरे मनमें अुसके प्रति आदर पैदा हुआ। अुसका अेक सूत्र था — आज दुःख अुठायेंगे तो कल सुख मिलेगा। आज मिरची खायेंगे तो कल शक्कर खानेको मिलेगी। और अिस सूत्रका वह अक्षरशः पालन भी करता था। बड़े होने पर खूब मीठा-मीठा खानेको मिलेगा अिसके लिअे वह कअी बार खुशी-नाखुशीसे मिर्च खाता अितना ही नहीं बड़े भाओीका अधिकार चलाकर मुझे भी खिलाता! मैं गोंदूके समान श्रद्धावान नहीं था। अिसलिअे अुसके सिद्धान्तका अक्षरार्थ नहीं मान सकता था। लेकिन जो छः भाअियोंमें सबसे छोटा था अुसे पाँच गुनी ताबेदारी अुठानी पड़ती थी। अिस तरह गोंदूके अिस सिद्धान्तके कारण मुझमें तितिक्षाका

भाव काफी मात्रामें आ गया था। मैं भी तितिक्षा बतलाता तो सही, लेकिन वह बहादुरीके खुमारसे या जोशमें आकर ही करता था।

पानी लेकर हम घर आये। रात हो गयी थी अिसलिअे गाँवके लोगोंका आना-जाना बंद हो गया था। अब गोंदूका भक्तिभाव जाग्रत हुआ। अुसके मनमें भी आया कि गाँवके लोगोंकी तरह हम भी विठोबाको क्षेम दें। धीरसे वह मंदिरके भीतरी भागमें गया और भक्तिके अुबालके साथ अुसने विठोबाको दोनों बाहुओंमें बाँध लिया। लेकिन अरे! कैसी भगवानकी लीला! विठोबाकी मूर्ति अपना स्थान छोड़कर गोंदूके हाथोंमें आ गयी! अुसका बोझ गोंदूकी छातीके लिअे असह्य हो गया। गोंदूने देखा कि मूर्तिके पैर टखनोंके कुछ अूपरसे टूट गये हैं। अब क्या किया जाय? यह तो गजब हुआ! विठोबाकी भक्ति बहुत ही महँगी पड़ी! अुसने चिल्लाकर मुझसे कहा, दत्तू दत्तू अिकड़े ये हें बघ काय झालं? (दत्तू दत्तू यहाँ आ यह देख क्या हो गया?)

मैं दौड़ता हुआ गया। थोड़ी-सी कोशिशसे मैंने विठोबाको गोंदूके बाहु-पाशसे छुड़ाया। बादमें हम दोनोंने मिलकर विठोबाको फिरसे पैरों पर खड़े करनेका प्रयत्न किया। लेकिन अट्ठाअीस युगों तक किसी तरह खड़े रहनेसे विठोबा महाराज बिल्कुल अूब गये थे। वे फिरसे खड़े होनेको तैयार न थे। हम हार गये। अतः मैंने गोंदूके मना करने पर भी पिताजीको बुलाया और सारी स्थिति बतलायी। अुन्होंने पहले तो मूर्तिको किसी तरह ठीक किया और फिर हम दोनोंको फटकारा। मेरा इसका दोष तो था ही नहीं लेकिन मैंने सोचा कि यदि मैं अपना बचाव करूँगा तो गोंदूको और भी ज्यादा सुनना पड़ेगा। अिसके बजाय यदि चुपचाप अुसके साथ सुनता रहूँ, तो बेचारेका दुःख कितना तो कम होगा न? सुख-दुःख समान रूपमें बाँट लेना, यह हम तीनों भाअियों (केशू, गोंदू और मैं)का क़ौल-क़रार था। लेकिन विठोबाके आलिंगनसे

मिलनेवाले पुण्यका आधा हिस्सा मुझे मिलेगा या नहीं, अिसका मैंने विचार तक नहीं किया।

दूसरे दिन सवेरे अेक लड़की विठोबाको क्षेम देने आयी। विठोबाने अुस पर भी अपने टूट जानेकी बात प्रकट की। मैं तो अपने बिस्तरमें पड़े-पड़े यह देख रहा था कि अब क्या होता है? लेकिन वह लड़की जरा भी न डरी। मुझे बिस्तरमें से ताकते हुअे देखकर कहने लगी: अिस मूर्तिके पैर पहले भी अेक बार टूट गये थे। गाँवके लोगोंने जैसे-तैसे बैठा दिये थे। आज फिर ढीले हुअे जान पड़ते हैं।

रायटरके संवाददाताकी मारफत मैंने यह खबर पहले गोंदूको और फिर पिताजीको दी तो हम तीनोंके जी ठण्डे हुअे। शरीर तो कड़कड़ाते जाड़ेमें काँप ही रहे थे।

२३

अुपास्य देवताका चुनाव

लोकमान्य तिलकने हिन्दू धर्मकी परिभाषा अिस प्रकार की है —

प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु साधनानामनेकता ।
अुपास्यानामनियमः अेतद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

अिस श्लोकमें हिन्दू धर्मकी अुदारता और विशेषता आ जाती है। अीश्वरको पहचानने और प्राप्त करनेके साधन अनेक हैं क्योंकि मनुष्यका स्वभाव विविध है। फिर अेकेश्वरवादी हिन्दू धर्ममें अुपास्य देवता भी अनन्त है, क्योंकि अीश्वरकी विभूतिका अन्त नहीं है। साधन और अुपास्यके संबंधमें कुल-धर्म भी बाधक नहीं होता। कअी बार यह देखनेमें आता है कि मनुष्यका कुलदेवता अलग

भाव काफी मात्रामें आ गया था। म भी सितिदा वतलाता तो सही लेकिन वह बहादुरीके खयालसे या जोशमें आकर ही करता था।

पानी लेकर हम घर आये। रात हो गयी थी जिसलिअे गाँवके लोगोंका आना-जाना बंद हो गया था। अब गोंदूका भक्तिभाव जाग्रत हुआ! अुसके मनमें भी आया कि गाँवके लोगोंकी तरह हम भी विठोबाको क्षेम दें। धीरेसे वह मंदिरके भीतरी भागमें गया और भक्तिके अुबालके साथ अुसने विठोबाको दोनों बाहुओंमें बाँध लिया। लेकिन अरे! कैसी भगवानकी लीला! विठोबाकी मूर्ति अपना स्थान छोड़कर गोंदूके हाथोंमें आ गयी! अुसका बोझ गोंदूकी छातीके लिअे असह्य हो गया! गोंदूने देखा कि मूर्तिके पैर टखनोंके कुछ अूपरसे टूट गये हैं। अब क्या किया जाय? यह तो गजब हुआ! विठोबाकी भक्ति बहुत ही महँगी पड़ी! अुसने चिल्लाकर मुझसे कहा, दत्तू, दत्तू, भिकडे ये, हें बघ काय झालं? (दत्तू, दत्तू यहाँ आ, यह देख क्या हो गया?)

मैं दौड़ता हुआ गया। थोड़ी-सी कोशिशसे मैंने विठोबाको गोंदूके बाहु-पाशसे छुड़ाया। बादमें हम दोनोंने मिलकर विठोबाको फिरसे पैरों पर खड़े करनेका प्रयत्न किया। लेकिन अट्ठाअीस युगों तक किसी तरह खड़े रहनेसे विठोबा महाराज बिलकुल अूब गये थे। वे फिरसे खड़े होनेको तैयार न थे। हम हार गये। अतः मैंने गोंदूके मना करने पर भी पिताजीको बुलाया और सारी स्थिति बतलायी। अुन्होंने पहले तो मूर्तिको किसी तरह ठीक किया और फिर हम दोनोंको फटकारा। मेरा खुदका दोष तो था ही नहीं लेकिन मैंने सोचा कि यदि मैं अपना बचाव करूँगा तो गोंदूको और भी ज्यादा सुनना पड़ेगा। जिसके बजाय यदि चुपचाप अुसके साथ सुनता रहूँ तो बेचारेका दुःख अितना तो कम होगा न? सुख-दुःख समान रूपमें बाँट लेना यह हम तीनों भाअियों (केशू, गोंदू और मैं)का कौल-करार था। लेकिन विठोबाके आलिंगनमें

मिलनेवाले पुण्यका आधा हिस्सा मुझे मिलेगा या नहीं, अिसका मनमें विचार तक नहीं किया।

दूसरे दिन सवेरे अेक लड़की विठोबाको धान देने आयी। विठोबाने अुस पर भी अपने अूब जानेकी बात प्रकट की। मैं तो अपने बिस्तरमें पड़े-पड़े यह देख रहा था कि अब क्या होता है? लेकिन वह लड़की जरा भी न डरी। मुझे बिस्तरमें से ताकते हुअे देखकर कहने लगी, अिस मूर्तिके पर पहले भी अेक बार टूट गये थे। गाँवके लोगोंने जस-तैसे बैठा दिये थे। आज फिर ढीले हुअे जान पड़ते हैं।'

रायटरके संवाददाताकी गतिसे मैंने यह खबर पहले गोंदूको और फिर पिताजीको दी तो हम तीनोंके जी ठण्डे हुअे। शरीर तो कड़कड़ाते जाड़में काँप ही रहे थे।

२३
अुपास्य देवताका चुनाव

लोकमान्य तिलकने हिन्दू धर्मकी परिभाषा अिस प्रकार की है —

> प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु, साधनानामनेकता ।
> अुपास्यानामनियमः अेतद्धर्मस्य लक्षणम् ॥

अिस श्लोकमें हिन्दू धर्मकी अुदारता और विशेषता आ जाती है। अीश्वरको पहचानने और प्राप्त करनेके साधन अनेक हैं क्योंकि मनुष्यका स्वभाव विविध है। फिर अेकेश्वरवादी हिन्दू धर्ममें अुपास्य देवता भी अनन्त हैं, क्योंकि अीश्वरकी विभूतिका अन्त नहीं है। साधन और अुपास्यके सम्बन्धमें कुल-धर्म भी बाधक नहीं होता। कअी बार यह देखनेमें आता है कि मनुष्यका कुलदेवता अलग

काष्ठ, पाषाण सबमें है, तुझमें भी है और मुझमें भी है। लेकिन देवता तैंतीस करोड़ माने जाते हैं।' मैंने पिताजीसे पूछा, 'क्या आपको ये तैंतीस कोटि देवता मालूम हैं?' सवाल बटपटा था। पिताजीने कहा, देवता चाहे जितने हों तो भी वे सिर्फ पाँच देवताओंके ही अवतार हैं। पंचायतनमें सब समा जाते हैं। मैंने पूछा, 'पंचायतन यानी क्या? पिताजी बोले, शि ना ग र दे।' मैं कुछ भी न समझ पाया। हँस कर पिताजीने कहा: 'शि यानी शिव, ना यानी नारायण, ग यानी गणपति, र यानी रवि और दे यानी देवी। अिन पाँचोंकी पूजा करनेसे सब देवताओंकी पूजा हो जाती है। अपनी रुचिके अनुसार अिन पाँचोंमें से किसी अेकको बीचमें रखकर अुसके चारों ओर चारोंको बिठाया जाता है और अुनकी पूजा की जाती है। अिसीको पंचायतन पूजा कहते हैं।

मुझे वह चीज मिल गयी जो मैं चाहता था। अब मुझे अिन पाँचमें से ही चुनना था। शिव तो हमारा कुलदेवता। वही पहले आता है। लेकिन वह बहुत ही क्रोधी है। जरा-सी गलती हो जावे, तो सत्यानाश कर देता है। अुसके सामने सदा ही डरते रहना पड़ता है। वह अपने कामका नहीं। नारायण यानी कृष्ण, वह तो ठहरा कुकर्मी। अुसकी अुपासना कौन करे? गणपति वर्षमें अेक बार घरमें आता है और यह सही है कि तब हमें मोदक खानेको मिलते हैं। लेकिन वह तो विद्याका देवता है, अुसकी पूजा पाठशालामें ही करनी चाहिये। वह अुपास्य देवताकी जगह शोभा नहीं पा सकता। फिर वह है तो शिवजीका लड़का ही, यानी कोअी बड़ा देवता तो है नहीं। अतः अुसको छोड़ ही देना अच्छा। रवि है तो तेजस्वी, लेकिन अुसकी कहीं भी मूर्ति नहीं मिलती। अुसका मन्दिर भी कहीं देखनेमें नहीं आता। वह कोअी बड़ा देवता नहीं माना जा सकता। अब रही देवी। वह ठहरी औरत। अुसकी पूजा क्या मर्द कर सकता है?

पाँचमें से अेक भी पसन्द न आया। लेकिन पाँचोंकी निन्दा मनमें आयी, यह बात दिलको चुभने लगी। अब तो पाँचों देवताओंका कोप होगा, और न जाने कौनसी आफत आयेगी। मन ही मन में पाँचों देवताओंसे क्षमा माँगने लगा। महादेवसे सबसे ज्यादा। फिर भी किसीको पसन्द तो किया ही नहीं।

अिसी अरसेमें मैं पिताजीको अुनकी पूजामें मदद करता था। हमारे देवघरमें अनेक देवता थे। सबको निकालकर नहलाना, पोंछना फिर अुनकी जगह पर अुन्हें रख देना, चंदन-अक्षत-फूल वगैरा चढ़ाना यह सब बड़े परिश्रमका काम था। मुझे अिसमें मजा आता और पिताजीको कुछ राहत मिलती। अुनका समय भी बच जाता। पूजाके मंत्र तो मैं नहीं जानता था लेकिन तंत्र सब समझता था। अेक दिन मूर्तियोंको अुनके स्थानों पर बैठाते समय विचार आया कि अिस बालकृष्णको देवीके पास नहीं बैठाना चाहिये। बालकृष्ण दीखता तो छोटा है लेकिन असे राधाके घर यह अेकाअेक बड़ा हो गया बस ही यदि यहाँ हो जाये तो देवी बेचारी नाहक हैरान होगी। चरित्रहीन देवता पर विश्वास न रखना ही अच्छा है। अतः मैं बालकृष्णको अेक सिरे पर रखने लगा और देवीको बिलकुल दूसरे सिरे पर। अितनेसे भी सन्तोष न होता तो सुरक्षितताको विशय मजबूत करनेके लिअे मैं देवीके पास गणपतिको रख देता। मैं मान लेता कि अिस जबरदस्त हाथीके सामने तो बालकृष्णकी आनेकी हिम्मत ही न होगी।

अिस तरह मेरे विचार चल रहे थे और साथ ही मेरा पौराणिक अध्ययन भी जोरोंसे चल रहा था। पढ़ते-पढ़ते मुझमें गुप्त दत्तात्रेय मिला। मेरे ही नामवाला अिसलिअे अुसके प्रति मेरे मनमें पक्षपात होना स्वाभाविक था। बचपनसे ही न जाने क्यों मेरे मनमें स्त्री-द्वेष समा गया था। मेरे ठेठ बचपनके संस्मरणोंमें भी स्त्री-जातिके प्रति मेरे मनमें रहनेवाली नापसन्दगी मं

है गुरुभक्तिसे ही चरित्रका निर्माण होता है, गुरुभक्तिसे ही मोक्ष मिलता है यह मैंने समझ लिया। बादमें मैंने देख लिया कि दत्तात्रेय तो परमात्माकी त्रिगुणात्मक विभूतिका प्रतीक है। त्रिगुणातीत अत्रिका यह लड़का असूयारहित अनसूयावृत्तिके पेटसे जन्मा था। सबाक लिअ असने अपने आपको अर्पित कर दिया था जिसलिअे असे दत्त कहते हैं।

यह सब तो हुआ लेकिन मेरी अुपासना तो निश्चित हुअी ही नहीं। मैं कभी दत्तात्रेयका नाम लेता, कभी 'जय हरिविट्ठल' गाता, तो कभी निवृत्ति ज्ञानदेव सोपान मुक्ताबाओी अेकनाथ नामदेव तुकाराम की शरण जाता। लेकिन अकसर सांब सदाशिव, सांब सदाशिव शिव हर शंकर सांब सदाशिव,' की ही धुन गाता था। अन्तमें यह सब छोड़कर मैंने प्रणव-जपको ग्रहण किया और ॐकारकी गंभीर ध्वनि मुँहसे निकालने लगा।

२४

पंढरी

पंढरीचे वाटे, बाभळीचे कांटे।*
सखा माझा भेटे　　　पांडुरंग॥

कभी बर्षोंकी आकांक्षाके बाद हम पंढरपुर आ पाये। बैलगाड़ी या पैदल मुसाफ़िरी करनेमें जो आनन्द, अनुभव और स्वतंत्रता मिलती है वह रेलगाड़ीमें कतअी नहीं होती। पंढरपुरकी भूमि यानी सबसे पवित्र भूमि। वहाँका अेक-अेक कंकर और पत्थर सन्तोंके चरणोंसे पुनीत बना है। वहाँकी अेक-अेक वस्तु सुन्दर है, पवित्र है हितकारक

* पंढरपुरके रास्ते पर जहाँ बबूलके कांटे हैं वहाँ मेरा मित्र पांडुरंग मुझे मिलता है।

हूं यह माननेके लिअे मन पहलेस ही तैयार था। मन्दिरके रास्ते पर बठे हुअे अंधे लूले कोढ़ी और अपग लोग भी मेरी नजरमें असे लगते थ, मानो किसी दूसरी ही दुनियाके रहनवाले हों।

चन्द्रभागा नदी पर हम नहाने गये वहां सबसे पहला मन्दिर देखा पुंडलीकका। वहां अेक बुढ़िया अूंचे स्वरसे गा रही थी

'कां रे पुंडधा मातलासी
भुमें केलें विठ्ठलासी।'

पुंडलीक माता-पिताकी सेवामें अितना तल्लीन था कि अुसकी भक्तिसे खुश होकर श्रीकृष्ण खुद जब अुसे वरदान देनेके लिअे आये तब भी अुसे माता-पिताकी सेवा छोड़कर परमात्माके स्वागतके लिअे अुठना ठीक न लगा। अुसने पास पड़ी हुअी अेक वीट (अींट) भगवानकी ओर फेंक दी और कहा — लो आसन। जरा खड़े रहो। मेरी सेवा पूरी हो जाने दो।

सेवासे फारिग होनेके बाद पुंडलीकने पूछा, 'कस आये?
तेरी भक्तिसे सन्तुष्ट हुआ हूं। वरदान देनेको आया हूं।'

माता-पिताकी सेवामें मुझे पूरा आनन्द है। वरदान यदि देना ही चाहते हो तो अितना मांग लेता हूं कि अभी यहां खड हो वैस ही अट्ठाअीस युगों तक भक्तोंको दर्शन देनके लिअे खडे रहो।'

अुस दिनसे विष्णुका नाम विठ्ठल' (अींट पर खड़ा रहनेवाला) पड़ा। अुस समय शायद रुक्मिणी भगवानके साथ नहीं थी, अिसलिअे पंढरपुरमें विठ्ठलके साथ रुक्मिणीकी मूर्ति नहीं है। रुक्मिणीका मन्दिर अलग है। पंढरपुरमें रुक्मिणीको रखुमाअी कहते हैं और राधाको 'राअी कहते हैं। राअी-रखुमाअी विठ्ठलभक्तोंकी मातायें हैं। चन्द्रभागाके किनारे जहां भी देखिये वहां भजन चलता रहता है। यहां वर्णाश्रम या कर्मकांडका महत्त्व नहीं है। यह तो भक्तिका पीहर, सर्व सन्तोंका धाम है।

सजाओंको भाप आज भी बाजमा सकते हैं। दो पैसे दीजिये तो अेक मनुष्य पत्थरकी बनायी हुआी अेक छोटीसी नौका 'पुंडलीक वर दे हरि विट्ठल' कहकर पानीमें छोड़ देता है और वह नौका पानीमें तैरती है। मुस नौकाको तैरते हुओ मैंने खुद अपनी आँखोंसे देखा है। मैंने मुस मनुष्यसे कहा, 'अिसी नौकाको नदीके पानीमें छोड़ देना। वहाँ डूब जाये तो मान लेंगे कि अिस जगहमें कोमी विशेषता है। मुसने मेरी बात नहीं मानी क्योंकि मैं छोटा था।

शामको जल्दीसे भोजन करके हम विठोबाकी पूजा देखने गये। विठोबाकी मूर्तिका रसभरा वर्णन सन्तोंके वचनोंमें जितना सुना था कि साक्षात् मूर्ति मुरूप या बेढंगी जान पड़ती है यह स्वीकार करनेके लिये मन तैयार न हुआ। जाड़ेके दिन थे, अतः विठोबा गरम पानीसे नहाये। बड़े भर-भरकर दूधसे नहलाया गया। फिर दहीसे। मुँहमें मक्खनका अेक गोला भी चिपका दिया था। अेक लोटा शहद भी मूर्ति पर डाला गया। फिर घीकी धारी आयी। आखिरमें अेक प्याला भर कस्तूरीका पानी सिर पर डाला गया। कस्तूरी गरम चीज है। कस्तूरीसे नहानेके बाद पंचामृतकी ठंडक तकलीफ नहीं देती। कस्तूरीकी गरमी मुतारनेके लिये चंदनके पानीका लोटा सिर पर डाला गया। आखिरमें शुद्धोदक आया। शरीर पोंछकर विठोबा रेशमी किनारकी धोती पहननेको तैयार हुओ। विठोबाकी धोतीकी नीवी तो बहुत ही फेशनेबल होनी चाहिये। हम जैसे भक्तोंकी आँखें चकित हो जाती थीं। फिर आया जरीका जामा। मुस पर महाराष्ट्रीय पद्धतिका रेशमी अंगरखा। फिर पगड़ी बाँधनेकी क्रिया शुरू हुआी। विठोबा तैयार पगड़ी नहीं पहनते सिर पर ही बँधाते हैं। मुसीमें आधा घण्टा गया। अब विठोबा बड़े बाँके दिखाओ देने लगे। जाड़ेके दिनोंमें ओवरकोटके बिना कैसे चलता? लेकिन ओवरकोट तो आधुनिक वस्तु! अिसलिये कश्मीरी रेशमकी अेक गुदड़ी सबके अूपर ओढ़ायी गयी। अब तो विठोबाके शरीरका भरा अूमकी मूँघामीसे भी बढ़ गया।

विठोबाके माथ पर कस्तूरीका टीका लगाया गया। फिर भोग चढ़ाया गया। अुस वक्त दरवाज़े बन्द थ। विठोबाको भोजन करते समय यदि मूर्ख लोग देख लें तो अुन्हें नज़र लग सकती है और अजीर्ण भी हो सकता है। मेहरबानी पंडोंकी कि विठोबाको ताम्बूल हमारे सामने ही दिया गया।

अब विठोबाको शयनगृहमें आनेकी जल्दी हुअी। शयनगृह दाहिनी ओर सुन्दर रीतिस सजाया गया था। लेकिन वहाँ विठोबा कैसे जाते? अिसलिअे विठोबाके पैरस लेकर शयनगृहके मंच तक अेक नया कपड़ा ताना गया। अुस पर लाल रंगसे विठोबाके पदचिह्न छपे हुअे थे। हमारे पंडेने कहा, 'अब तो कलियुग बढ़ गया है वरना पहले तो शयनगृहमें जब पानका बीड़ा रखते, तो सबेरे तक वह अलोप हो जाता और पिकदानीमें पानकी लाल सीठी पड़ी हुअी दिखाअी देती थी। भक्त लोग अुसे लेकर जाते थे।'

दूसरे दिन सवेरे चार बजे हम काकड़ आरती देखनेको गये। अुस वक्त भी लोगोंकी भारी भीड़ थी। कार्तिकी पूर्णिमास लेकर माघ पूर्णिमा तक पौ फटनेसे पहले नदीमें नहानका पुण्य विशष है। और काकड़ आरतीके समय दर्शन कर लेना तो पुण्यकी चरम सीमा हो गयी। अिन दोनोंमें से अेक भी लाभको हमने अपने हाथसे जाने नहीं दिया। हमें रोज़ाना अभिषेकके पंचामृतमें से अेक-अेक लोटा तीर्थ मिलता। हमारा सबेरेका नाश्ता अुसकी मददस ही होता।

पंढरपुरमें अेक ही वस्तु विशेष आकर्षक लगी थी। वहाँ सामान्यतः अूँच-नीच भाव नहीं रहता ह। सभी सन्त और सभी समान। यह ज्ञानदेव, नामदेव जनाबाअी गोरा कुम्हार वगैरा सन्तोंकी शिक्षाका फल है।

पंढरपुरके बारेमें मैंने यहाँ जो लिखा है, वह तो बचपनमें देखी हुअी बातोंका संस्मरण मात्र है। यह लगभग पचास साल पहलेकी

याद है। अुसके बाद फिर पंढरपुर जानेका मौक़ा नहीं आया। कुछ रोज़ पहले मैं गोकर्ण गया था। तब मैंने देखा कि बचपनके संस्कारों और आजके संस्कारोंमें बहुत कुछ फ़र्क़ हो गया है, लेकिन वैसे हुमे स्थान तो जैसेके वैसे ही थे।

विठोबाकी मूर्तिका जो वर्णन मैंने यहाँ किया है अुससे कोओी सज्जन यह न समझ बैठें कि अुस पूजाकी दिल्लगी अुड़ानेका हेतु मेरे मनमें है। अुस समय मेरे हृदयमें अत्यंत अुत्कट भक्ति थी। घरके देवताओंकी पूजा करनेमें मैं बिलकुल तल्लीन हो जाता था। मंदिरकी मूर्तिकी पूजा करनेका मौक़ा मिलता तो भी मैं अपनेको बड़भागी मानता। लेकिन अुस समय भी विठोबाकी पूजाका यह सारा दृश्य मुझे मलील-सा लगा था। और आज जब अुस वक्त देखी हुअी बातोंका चित्र मेरी आँखोंके सामने फिर आता है तो भी कसमसाता है। पूजामें चर्चा और तड़क-भड़क बहुत थी लेकिन पुजारियोंमें सौंदर्यका कुछ ख़याल भी हो अैसी शंका तक वे नहीं आने देते थे। ओीसाअियोंके प्रार्थना-भवनोंमें गंभीरताका जो दिखावा होता है, वह भी हमारे मंदिरोंमें नहीं होता। लेकिन यहाँ मुझे न तो अपने विचारोंका प्रचार करना है और न समाजको कुछ अुपदेश ही देना है। यहाँ तो सिर्फ़ बचपनके संस्मरण लिखने हैं।

२५

बड़े भाओीकी शक्ति

रामदुगसे हम लौट रहे थे। तोरगलका सात दीवारोंवाला किला पार करके हम आगे बढ़े। रास्तेमें अेक नदी आती थी। कौनसी नदी थी, यह आज याद नहीं। अुस नदीके किनारे दोपहरको हमने मुकाम किया। मैं बड़े मजेदार तीन पत्थर लाया और अुन्हें धोकर चूल्हा बनाया। आसपाससे सूखी हुअी लकड़ियाँ अिकट्ठी करके चूल्हा सुलगाया। हमारे बड़े भाअी बाबा नहाकर नदीसे पानी लाये। माँ रसोअी बनाने लगी। खाना तैयार होते होते अेक बज गया। पिताजी बहुत ही थके हुअे थे। लेकिन पूजा किये बिना भोजन कैसे किया जा सकता था? गोंदू कहींसे तुलसी और दो चार फूल लाया। पिताजीको पूजामें कुछ देर लगी। हम छोटे-छोटे लड़के भूखसे तिलमिलाते हुअे भूख और नींदके बीच झूल रहे थे। पिताजीकी पूजा जल्दी पूरी नहीं हो रही है और भोजन तैयार होते हुअे भी बच्चोंको खानेको नहीं मिल रहा है, यह देखकर मेरी माँ कुछ नाराज-सी थी। पिताजीने सोचा था कि मुकाम पर पहुँचते ही साथके संबलमेंसे बच्चोंको कुछ खानेको दे दिया जाये। लेकिन अिस वक्त यदि अुन्होंने संबलमें से खा लिया तो जीमेंगे क्या? और सारे दिन पानी-पानी करेंगे।' यों कहकर माँने हमें कुछ खानेके लिअे देनेसे साफ़ अिनकार कर दिया। अुसी समयसे मामला कुछ बिगड़ गया था। पिताजीको नाराज होनेकी आदत कतअी न थी। लेकिन जब नाराज होते तो सुभ मूक बात थे। फिर भी वे हम बालकों पर ही गुस्सा होते थे। कचहरीमें क्लर्क पर शायद ही कभी बिगड़ते। चपरासियोंको भी कठोर शब्द कहनेकी अुन्हें आदत न थी। पर न जाने क्यों आज पिताजी खूब नाराज थे। जब

माँने कहा कि 'आपकी पूजा जल्दी पूरी होगी भी या नहीं?' तो पिताजीने तुरन्त ही गरम होकर कुछ कठोर शब्द कहे, और वह भी हम सबके सामने। माँको बहुत ही अपमानजनक लगा। मुझे अच्छी तरह याद है। माँका मुँह लालसुर्ख तो क्या बिल्कुल नीला हो गया था। हमारे सामने रोया भी कैसे जा सकता था? अुसन बहुत ही प्रयत्न किया फिर भी दो मोती तो टपक ही पड़े। मैं कुछ समझता न था अिसलिअे वहींका वहीं भौचक्का-सा खड़ा रहा। बाबा वहाँसे कब खिसक गये यह हममें से किसीको भी मालूम न पड़ा। वे शायद ही कभी पिताजीसे बोलते थे। बचपनसे ही डरसे कहिये या दूर रहनेकी आदतसे कहिये वे पिताजीके सामने खड़े ही नहीं रहते थे। यदि कोमी काम करवाना होता तो मेरी मारफत पिताजीसे कहलाते। मैं सबसे छोटा था। मुझे डर-शरम काहेकी? पिताजी यदि जल्दी न मानते तो मैं अुनके साथ दलील भी कर लेता था।

भोजनका समय हुआ। थालियाँ—नहीं पत्तलें—परोसी गयीं। गोंदू तो शुरू करनेके लिअे आतुर हो रहा था। लेकिन बाबा कहाँ हैं? वे तो वहाँसे खिसक ही गये थे। मैंने 'बाबा', 'बाबा' कहकर कभी आवाजें लगायीं। लेकिन बाबा थे ही कहाँ? पिताजीने कहा, 'जाओ आसपास कहीं बैठा होगा, जाकर बुला लाओ।' मैं आसपास खूब घूमा। आखिर बाबाको अेक वृक्षके नीचे बैठे हुअे पाया। बैठे हुअे नहीं, सिर नीचा करके वे चक्कर लगा रहे थे। मैंने देख लिया कि बाबा बहुत गुस्सेमें हैं। मैंने कहा, 'चलो जीमने सब राह देख रहे हैं।' अुन्होंने कहा, 'न तो मुझे आना है और न जीमना ही है।' मैंने दलील की 'लेकिन तुम्हारी पत्तल भी तैयार है। गोंदूने शुरू भी कर दिया होगा। सब तुम्हारी ही राह देख रहे हैं।' कड़े शब्दोंमें बाबाने कहा 'गोंदूको कहना कि पेट भर कर खाना। तू जा मैं नहीं आना चाहता।' मैंने लौटकर सारी बातें कह सुनायीं। पिताजीने कहा, 'क्या जिद है अिस लड़केकी! अुससे कहना कि

मैं राह देख रहा हूँ। जल्दी आ जाये।' मैं फिर दौड़ता हुआ गया। अिस बार बाबा जितने शान्त दिखाओी देते थे अुतने ही कड़े हो गये थे। बहुत ही सोच-विचार कर अुन्होंने अपना जवाब तैयार कर रखा था। मुझसे कहने लगे और कहते कहते अेक-अेक अक्षर पर बराबर जोर देते गये, 'जाकर कह दे कि यदि अैसा ही सुनना हो तो न मुझे जीमना है और न घर ही आना है।'

घरमें जब-जब मतभेद होता हम बालक हमेशा पिताजीका ही पक्ष लेते, क्योंकि वह पक्ष समर्थ था। माँका तो हमेशा सहन करनेका ही व्रत था। अतः पिताजीका पक्ष लेना ही आसान था। फिर अिस बातका पूरा विश्वास भी था कि माँ कभी नाराज नहीं होगी और सब कुछ जल्दी ही भूल जायेगी। लेकिन बाबाको आज अेकदम यों पलातर करते देख मेरे आश्चर्यकी सीमा न रही। बाबाका प्रभाव ही अैसा था कि अुनके सामने ज्यादा बोला ही नहीं जा सकता था। मैं सीधा वापस आया और रिपोर्टरकी तरह तटस्थताके साथ बाबाका सन्देश जैसेका तैसा कह दिया। अुस वक्त पिताजी पर क्या गुजरी होगी अिसकी कल्पना मैं आज कर सकता हूँ। वे खुद कभी नाराज नहीं होते थे सो आज नाराज हुअे। कड़े शब्द मुँहसे निकल गये। अुससे माँको बहुत दुःख हुआ। मैं भूखा यहाँसे वहाँ और वहाँसे यहाँ दौड़ रहा था। गोंदू भोजन छोड़कर पिताजीके मुँहकी तरफ़ टकटकी लगाये देख रहा था। और बाबा जो कभी सामने भी खड़ा नहीं होता था, अिस तरहसे सन्देश भेज रहा था। कुछ देर तक तो वे बोले ही नहीं। आखिर जरा मुश्किलसे बोले, अुससे कहना कि जीमने आ जाओ। मैं क्या जानता था कि अिस वाक्यमें सब कुछ आ जाता था? मैंने कहा, 'अिस तरह तो वे नहीं आयेंगे।' बस, पिताजी मुझ पर भी बिगड़े। लेकिन वे मुँहसे कुछ बोलते अुससे पहले ही मैं वहाँसे खिसक गया। मन सोचा, मुझे अैसे सन्देश आज न जाने कितने आने-जाने होंगे। लेकिन

मैं चला गया और बाबाको पिताजीके शब्द ज्यों के त्यों कह दिये। और कैसा आश्चर्य! जरा भी आनाकानी किये बगैर और कुछ सन्तोषसे बाबा भोजन करने आ गये।

अिस प्रसगका रहस्य अुस वक्त तो मेरी समझमें बिलकुल नहीं आया था और अिसीलिअे वह मुझे याद रहा। सचमुच ही अुस दिनसे माँकी मृत्यु तक कभी भी पिताजी माँ पर गुस्सा नहीं हुअे। बाबामें अितनी शक्ति होगी अिसका मुझे खयाल तक न था। जैसे-जैसे अिस प्रसंगको याद करता हूँ वैसे-वैसे प्रेमका भाव ज्यादा-ज्यादा समझमें आता जाता है और आखिर अिसी निश्चय पर पहुँचता हूँ कि प्रेमका सामर्थ्य अमोघ है। प्रेम सार्वभौम और सर्वशक्तिमान है।

२६

घटप्रभाके किनारे

जहाँ तक मुझे याद है हम रामदुर्गसे वापस बेलगाँव आ रहे थे। गाड़ीकी मुसाफ़िरी पूरी हुअी। अब शेष यात्रा रेलगाड़ीकी थी। हम रातके आठ बजे गोकाक पहुँचे। रेलका 'टाअिम' दोपहरके बारह बजेका था अिसलिअे हम अेक धर्मशालामें ठहरे और थके-थकाये सभी गहरी नींदमें सो गये।

रातका पिछला पहर था। लगभग तीन बजे होंगे। अितनेमें अेक कुत्ता धर्मशालामें घुसा और हमारा अेक तपेला जो कमालमें अिसलिअे बँधा हुआ था कि अुसमें कुछ खानेकी चीज थी अुसने अुठाया और हमारे बड़े भाअी अुठे अुसके पहले तो धर्मशालासे छू हो गया। कुत्तेके पैरोंकी आवाज सुनकर तीन-चार व्यक्ति अुठे और कुत्तेके पीछे दौड़े, लेकिन तपेला गया सो गया ही।

अिस गड़बड़ीके कारण मैं सवेरे कुछ देरीसे अुठा। अुठकर देखा तो आसपास बहुतसे लोग आते-जाते थे। शौच जानेके लिअे कहीं सुविधाजनक जगह नहीं थी। वहाँसे सीधा घटप्रभा नदीके किनारे तक गया। सोचा था कि नदीके किनारे पर शौच जानेकी अेकान्त जगह जरूर मिलेगी। लेकिन नदी पर आकर देखता हूँ तो वहाँ सारे गाँवके लोग हाजिर। कोअी कपड़े धो रहा है कोअी पानी भर रहा है, कोअी बरतन माँज रहा है। मैंने आसपास बहुत दूर तक जाकर देखा, लेकिन कहीं भी अेकान्त नहीं मिला। नदीके किनारे बड़ी दूर तक अूपरकी ओर गया। वहाँ भी निर्जन स्थान नहीं मिला। जहाँ देखता वहाँ बूढ़ा या बुढ़िया, और नहीं तो कोअी ढोर चरानेवाले लड़के तो होते ही। नदीके किनारेके लोगोंको बचपनसे शर्म तो होती ही नहीं। वे चाहे जहाँ बैठ जाते हैं। अैसे भी लोगोंको मैंने देखा। लेकिन अुन्हें शर्म भले न हो, मुझे तो थी। अत: दूरसे अिस लोगोंको देखकर मुझे रास्ता बदलना पड़ता।

अब धीरे-धीरे मेरा धैर्य टूटने लगा। समयसे यदि वापस नहीं जाअूँगा तो माँ नाराज होगी। और बिना टट्टी किये वापस जाना भी सम्भव नहीं था। मेरे मनमें आया कि अब किया क्या जाय? कहाँ जाअूँ? बेशर्म होकर वहाँ लोगोंके सामने बैठना तो असम्भव ही था क्योंकि शरीरको वैसी आदत न थी।

आखिर मुझे अेक अुपाय सूझा। यह निर्णय करना कठिन है कि अुसे काव्यमय कहा जाय या नहीं! पास ही अेक वृक्ष था, आसानीसे चढ़ने जैसा। अुसके पत्ते अितने घने थे कि अुस पर चढ़ जानेके बाद कोअी भी देख न सकता था। भाग्यसे वृक्षके आसपास कोअी न था। अत: मैंने अपना भरा हुआ लोटा लेकर वृक्षारोहण किया। खूब अूपर चढ़कर अनुकूल डाली खोज निकाली। मनको खुशी हुअी कि अैसा कभी न मिला था अैसा सुन्दर हवाअी अेकान्त आज मिला है। फिर भी डर तो था ही कि कहीं वृक्षके नीचे कोअी गाय न आ जाय और अुसके पीछे कोअी चरवाहा आकर न खड़ा हो जाय। लेकिन

अीश्वरको अितनी कड़ी परीक्षा नहीं लेनी थी। मैं आरामसे वापस आया। मेरे भाभी अिसी अुद्देश्यसे नदी पर गये थे, लेकिन निराश होकर अुन्हें वापस आना पड़ा था। अुन्होंने मुझसे पूछा 'शौच कहां गया था?' मैंने कहा, नदी पर। भाभीने पूछा, वहां अेकान्त जगह थी?' मैंने कहा, हां।

भाअीसाहब यह स्वीकार करना नहीं चाहते थे कि वे जैसे-के-वैसे लौट आये हैं, और मुझे यह कहनेमें शर्म लग रही थी कि मैंने बन्दरका काम किया है। अिसलिअे 'तेरी भी चुप और मेरी भी चुप' करके हमने अुस प्रश्नोत्तरीका आगे नहीं बढ़ने दिया। कअी महीने तक मैंने अपनी यह बात छिपा रखी। कालके प्रतापसे शर्मका परदा फट जानेके बाद ही मेरी अुस दिनकी बात कहनेकी हिम्मत हुअी।

मनुष्य बहुत बड़ा पाप या गुनाह करने पर भी जितना नहीं शरमाता अुतना अैसी चीजोंके बारेमें बोलते हुअे शरमाता है। लज्जाके प्रीड़ाका कवच विशेष दुर्भेद्य होता है।

निश्चयका बल

[महाशिवरात्रि]

'चाहे जो हो मैं महाशिवरात्रिका अुपवास तो रखूँगा ही।'

मेरा जनेअू भी नहीं हुआ था। अितनी छोटी अुम्रमें मुझे महाशिवरात्रि जैसा कठिन अुपवास कौन करने देता? लेकिन मैंने हठ किया कि 'चाहे जो हो मैं महाशिवरात्रिका व्रत रखूँगा ही।'

महाराष्ट्रके ब्राह्मणोंमें स्मार्त और भागवत जैसे दो मुख्य भेद होते हैं। स्मार्त सब महादेवके ही अुपासक होते हैं सो बात नहीं और न यही नियम है कि भागवत सब विष्णुके ही अुपासक हों। फिर भी कुछ अैसा भेद है अवश्य। हम महादेवके अुपासक थे। मंगलेश और महालक्ष्मी हमारे कुलदेवता। हमारे घरकी सभी धार्मिक विधियाँ स्मार्त सम्प्रदायके अनुसार चलतीं। सिर्फ़ अेकादशीका मुसमें अपवाद होता। जब दो अेकादशियाँ आतीं तो हम दूसरी मानी भागवत अेकादशी करते थे। फिर भी घरमें विष्णुकी अुपासना नहीं होती थी।

मेरे मामी केशूके सहवाससे मेरा महादेवकी ओर विशेष झुकाव हो गया था। महादेव ही सबसे बड़ा देवता है। अुसके सामने सभी देवता तुच्छ हैं। समुद्र-मन्थनके समय हरअेक देवता लालची भिखारीकी तरह अेक अेक रत्न अुठा ले गया। विष्णुने तो बराबर 'जिसकी लाठी अुसकी भैंस' वाला न्याय चरितार्थ किया और लक्ष्मी आदि कभी रत्न हड़प कर लिये। सिर्फ़ महादेव ही दुनियाके दुःखको दूर करनेके लिअे हलाहलको पीकर नीलकंठ बने। देवता हो तो अैसा ही हो यह बात दिलमें पक्की जम गयी थी। मुझे भी अिसी न्यायसे जिन्दगीमें चलना चाहिये यह भी मनमें आता था। अिसी अरसेमें मानाने कुछ हठ करके पिताजीसे शिवलीलामृत

की पुस्तक छ ली थी। फिर तो पूछना ही क्या? हम हर रोज सबेर अुठकर नहा-धोकर अुसके अेक-दो या ज्यादा अध्याय पढ़ते। भीमर कविकी भाषा। जब वह वर्णन करता है तब नजरके सामने प्रत्यक्ष दृश्य खड़ा हो जाता है। और शब्द-समृद्धि तो अपार है। यह ठीक है कि बीच-बीचमें बहुत ही खुला शृंगार आ जाता है लेकिन हमें अुसका स्पर्श तक नहीं होता था। अितना तो जानते थे कि यह भाग गन्दा है, लेकिन हमारी अैसी अुम्र नहीं थी कि मनमें विकार पैदा होते।

अिस शिवलीलामृतमें महादेवके अनेक अवतारों और भक्तोंके चरित्रोंका वर्णन किया गया है। महादेव जितने शीघ्रकोपी हैं, अुतने ही आशुतोष भी है। भोले शंभु जब खुश होते है, तो चाहे जो दे देते हैं। अैसे देवताकी जो भक्ति नहीं करता वह अभागा है, यह बात मनमें बिलकुल तय हो चुकी थी। हम सबेरे अुठकर घंटों नामस्मरण करते, सारे शिवलीलामृतका पाठ करते दूर दूर जाकर चाहे जहाँसे बिल्वपत्र ले आते और महादेवकी पूजा करते।

अेक दिन हमने पढ़ा कि छोटे बालकोंकी भक्तिसे महादेव विशेष प्रसन्न होते हैं। मैंने जिद पकड़ी कि हम महाशिवरात्रिका व्रत जरूर रखेंगे। माँने कहा 'तू बड़ा हो जा, तुझे अेक लड़का हो जाय फिर असे ही महाशिवरात्रि करना। तू शिवरात्रि करे तो हमें खुशी है। लेकिन यह व्रत तुम अैसे बालकोंके लिअे नहीं है। पर मैं क्यों मानने लगा? पिताजी तक बात पहुँची कि दत्तू न तो भोजन करता है न और कुछ खाता है।

पिताजीने मुझे अनेक तरहसे समझानेका प्रयत्न किया। अुन्होंने कहा, महाशिवरात्रि महादेवका व्रत है। जिसे न तोड़ा जा सकता है, न छोड़ा ही जा सकता है। अेक बार लिया कि हमेशाके लिअे पीछे लग गया। जिसके पालनमें गफलत होने पर महादेव सत्यानाश ही कर डालते हैं। तुझे फलाहार ही करना हो, तो अेकादशी कर। वह आसान व्रत है। जितने दिन भी करो अुसका पुण्य मिलता है और

छोड़ दो तो भी कोओी नुकसान नहीं। विष्णु किसीका संहार नहीं करते।' मैंने कहा, 'मुझे शिवजीकी ही भक्ति करनी है। मैं फलाहारके लालचसे व्रत करनेको नहीं बैठा हूँ। मुझे महादेवको प्रसन्न करना है। मैं तो महाशिवरात्रि ही करूँगा।'

'लेकिन तू अपने बड़े भाअियोंको तो देख। अेक तो सन्ध्या भी नहीं करता और प्याजके पकौड़ोंके बिना अुसे भोजन भी अच्छा नहीं लगता। दूसरेने औसाओी लोगोंकी तरह सिर पर लम्बे बाल रखे हैं और अब तो हर आठवें दिन हजामत करवानेके बदले सिर्फ़ दाढ़ी ही बनाता है। घरमें भ्रष्टाचार पैठ गया है। तू भी जब कॉलेजमें जायेगा तब अैसा ही होगा। मैंने अिन लोगोंको पूना भेज दिया यह मेरी भूल ही हुआी। आज व्रत लगा और कल तोड़ डालेगा तो किस कामका? समझदार बनकर भोजन करने बैठ जा हमें नाहक दुःख न दे।'

मैंने तो अेक ही बात पकड़ रखी। मैंने गिड़गिड़ाकर कहा मैं अुन लोगों जैसा नहीं बनूँगा। आप विश्वास रखें कि मैं शिवरात्रिका व्रत कभी भी नहीं तोड़ूँगा।' अपनी निष्ठाको सिद्ध करनेके लिअे मैंने अेक अुदाहरण दिया अभी कुछ दिन पहले मैं रेशमी लँगोटी पहनकर जीमने बैठा था। अितनेमें अण्णा हजामत बनाकर आया और बिना नहाये अुसने मुझे छू दिया। मैं तुरन्त थाली परसे अुठ गया और अुस दिन सबेरेसे साँझ तक मन कुछ भी नहीं खाया। मैंने अुससे साफ़-साफ़ कह दिया है कि मैं कॉलेजमें पढ़ूँगा तब भी तुम जैसा तो हरगिज न बनूँगा।

मुझे लगा कि यह क्या बात है। अेक तरफ भाभी कहते हैं कि दत्तू अदाबद्ध है बिलकुल कट्टरपंथी है और दूसरी ओर पिताजी शंका करते हैं कि दत्तू नास्तिक होनेवाला है क्योंकि बड़े भाअी अैसे ही हैं। अब मुझे करना क्या चाहिये? मैंने जिद पकड़ ली। मैंने पिताजीको अनबनकर जवाब दिया, आज तो मैं भोजन करूँगा ही नहीं फिर चाहे जो भी हो।'

पिताजी भी बहुत नाराज हुअे। वे भी महादेवके अवतार ही थे। बिगड़े तो अच्छा प्रसाद देते। अुन्होंने बायें हाथसे मेरी भुजा पकड़ी और दाहिने हाथसे कसकर जाँघ पर चार तमाचे लगाये। हर तमाचेकी चार अँगुलीके हिसाबसे सोलह अँगुलियाँ जाँघ पर अुभर आयीं।

अुपवासके दिन पेट भरकर मार खाने पर अुपवास नहीं टूटता यह धर्मशास्त्रकी सहूलियत कितनी अच्छी है! मैंने मार खायी, लेकिन आखिर तक भोजन तो किया ही नहीं। जितनी श्रद्धा थी अुतना रोया और फिर चुप होकर देवघरमें नामस्मरण करने बैठा। जाँघ तो गरमागरम हो गयी थी। घरके कुछ लोग वैजनाथकी यात्राको गये थे। मुझे कोअी नहीं ले गया, जिसलिअे भिन्ना तो रहा ही था। अितनेमें चार बजे। अब मेरी दूसरी परीक्षा शुरू हुअी। माँके मनमें आया कि बच्चेको अुपवास करना हो तो भले करे लेकिन अुपवासके दिन जो जो चीजें खायी जाती हैं वे सब चीजें खाये तो अच्छा हो, नहीं तो छोटी अुम्रमें पित्त बढ़ जायेगा और दूसरे दिन यह बीमार पड़ेगा। माँने आलू भूँगफली खजूर और साबूदानेके तरह तरहके पदार्थ तैयार किये और मुझे खानेको बुलाया। मेरा विचार निराहार रहनेका था। तीर्थकी पाँच-दस बूँदोंके सिवा तो पानी भी नहीं पीना था। जब अुपवास ही करना है, तो महादेव प्रसन्न हों अैसा ही करना चाहिये। मैंने कुछ भी खानेसे अिनकार किया।

मैं अितनी जिद करूँगा, यह तो किसीको खयाल तक न था। फिर पिताजी तक फरियाद गयी। अुन्होंने कहा, तुझे शिवरात्रिका व्रत करनेकी अिजाजत है लेकिन ये फलाहारकी चीजें तो खा ले।' अिस वक्त तो वकील या आर्बिट्री करने तककी मेरी नीयत नहीं थी। मैंने अपना मुँह ही सी लिया था। खाने या बोलनेके लिअे वह खुलता ही कैसे? मुँह खोले बगैर खायी जा सकनेवाली तो अेक ही चीज थी और वह पिताजीके हाथसे फिर पेट भरकर मार खायी। पिताजीने मानो निश्चय किया था कि अिसे तो खिलाकर ही छोडूँगा।

अिस वक्त सत्रेरेस भी ज्यादा मार पड़ी। अितनेमें बड़े भाअी आये। अुन्होंने मुझे पकड़कर जबरदस्ती मुँहमें दूध डाला। मैंने वह सब थूक दिया और शायद पेटमें कुछ चला गया हो अिस शकासे कै कर दिया। फिर तो मैं भी बिगड़ गया। जो भी सामने आता अुसका डटकर मुकाबला करने लगा। अितनेमें महादेवको मुझ पर दया आयी और अुन्होंने मेरे मामाको हमारे यहाँ भेज दिया। मामाने सारी घटना देख ली, जान ली। अुन्होंने मेरा पक्ष लिया और पिताजीके सामने व्यावहारिक दृष्टि रखी 'जाने दीजिये अिसे। अिस समय लगभग शामके पाँच तो बजनेवाले ही हैं। अब ज्यादासे ज्यादा तीन घण्टे अिसे और निकालने पड़ेंगे। फिर तो यह सो जायेगा। अुसके बाद मेरी माँकी ओर मुड़ कर कहने लगे गोंदू अिसे सबेरे पाँच बजे जगाकर, नहला-धुला कर भोजन कराओ तो काम हो गया। किसीकी धार्मिक भावनामें बाधक न बनना ही अच्छा है। जब अितनी श्रद्धासे अुपवास कर रहा है तो यह बीमार पड़ ही नहीं सकता और यदि पड़ा भी तो सहन कर लेगा।'

आखिरमें मेरी बात पूरी होकर रही। पिताजीने मुझसे कहा 'चल देवघरमें! वहाँ कुलदेवताके सामने खड़े होकर कबूल कर कि मैं कॉलेजमें जाकर चाहे जितना नास्तिक हो जाअूँ फिर भी महाशिवरात्रिका व्रत नहीं छोड़ूँगा।' मैंने राजी-खुशीसे अिसके लिअे स्वीकृति दे दी। और तबसे आज तक बराबर महाशिवरात्रिका अुपवास करता आया हूँ। अेक ही बार तिथिका ध्यान न रहनेसे गफ़लत हुअी थी। अुसका प्रायश्चित्त मैंने दूसरे दिन किया। फिर भी अुस प्रमादका दुःख अभी तक बना हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि महादेव अिस त्रुटिके लिअे मुझे क्षमा करेंगे। पिताजीके गुजर जानेके बाद ही यह गफ़लत हुअी थी, अिसलिअे अुनसे तो माफ़ी माँगी ही कैसे जा सकती थी।

२८

रामाकी धाखी

रामा हमारे बड़े मामाका लड़का था। शातारास जब हम शाहपुर आते तो रामासे मुलाकात होती।

रामाने पढ़ना कब छोड़ दिया यह तो मुझे मालूम नहीं। वह शायद ही कभी घरम रहता। अुसका अपना अेक अखाड़ा था। ब्राह्मण लड़के अुसमें कसरत करने और कुश्ती सीखनेके लिअ आते थे। स्वाभाविक ही अखाड़ेवाले लड़कोंमें से ही अुसके सब दोस्त थे। पिता-पुत्रकी मुश्किलसे बनती। घरमें न रहनेका यह भी अेक कारण हो सकता था। सबके भोजन कर चुकनेके बाद रामा घरमें आता और अकेला खाना खाकर पिछले दरवाजेसे चलता बनता।

अुसकी मित्र-मंडलीने अेक बार सभाजी 'का नाटक खेला था। जिससे वह शाहपुरमें प्रसिद्ध हो गया था। लेकिन अुसके पिताको अुससे बहुत ही बुरा लगा था। वह जितना होशियार कुश्तीमें था अुतना ही बातोंमें था। जिसलिअ अपने घरके सिवा जहाँ भी जाता वहाँ अुसका स्वागत होता। रामाकी बातें मुझे बहुत अच्छी लगती। लेकिन बातें करते समय जब वह पालथी मारकर बैठता तब अुस सारे समय अपना घुटना हिलानेकी जो आदत थी वह मुझे बिलकुल पसंद नहीं थी।

अेक दिन रामा न जाने कहाँसे गिलहरीका अेक बच्चा पकड़ लाया। फिर तो क्या! सारे दिन अुसे अुस गिलहरीका ही ध्यान रहता। जहाँ जाता वह बच्चा अुसके साथ ही रहता। अेक दिन शामको वह गिलहरीको लेकर हमारे घर आया। सभी अुससे पूछने लगे — 'रामा, तेरी धाखी कहाँ है?' शाहपुरकी ओर गिलहरीको धाखी कहते हैं।

रामा गर्वसे फूलकर सबको अपनी चाभी बतलाने लगा। अितनेमें अुसके मनमें यह विसा बनकी अिच्छा हुअी कि यदि चाभी हाथसे छूट जाय तो वह खुद ही अुसे आसानीसे पकड़ सकता है। अतः हम सबको वह घरके पिछवाड़ेके आँगनमें ले गया। हम सात-आठ व्यक्ति होंगे। जैसे मदारी अपने खेलके लिअे पर्याप्त जगह कर लेनेकी खातिर तमाशबीन लोगोंकी भीड़को पीछे हटाता है और अपने आसपास खुला गोल मैदान तैयार कर लेता है, अुसी प्रकार रामाने हम सबको पीछे हटाया और धीरेसे अपना चाभीका बच्चा जमीन पर रख दिया। दो दिनकी रामाकी हरकतोंसे बेचारा बच्चा घबड़ा-सा गया था, अतः खुला हो जाने पर भी अुसे विश्वास नहीं होता था कि वह खुला हो गया है। बेचारा अिधर-अुधर टुकुर-टुकुर देखने लगा। हम भी सब अपना ध्यान आँखोंमें अिकट्ठा करके यह देखने लगे कि बच्चा अब किस दिशामें दौड़ता है।

अितनेमें जैसी रेशमके नये कपड़ेकी आवाज होती है वैसी कुछ आवाज हमें सुनाअी दी और स प से अेक चील हमारे घेरेके बीचसे चाभीको अुठा ले गयी!

यह सब अितना अचानक और क्षणभरमें हो गया कि क्या हो रहा है अुसकी कल्पना तक हमें न आयी। हम बच्चेको छुड़ानेके लिअे आगे बढ़े तब तक तो चील आकाशमें अूँची अुड़ चुकी थी। बच्चेकी अेक ही करुण चीत्कार सुनाअी दी। और वह अुबलते हुअे पानीकी तरह कानकी राह बहकर मेरे हृदय तक पहुँच गयी। चील अुड़ते अुड़ते अपनी चोंच और पंजेसे बच्चेको बार-बार ज्यादा मज़बूतीसे पकड़नेका प्रयत्न करती थी। हम अरेरे! कहते अुसके पहले तो चील अेक नारियलके पेड़ पर जाकर बैठ गयी और हम सबके देखते-देखते अुसने अुस बच्चेकी बोटी-बोटी नोचकर अुसे पेटमें अुतार लिया।

रामाका चेहरा तो आश्चर्य और अुद्वेगसे बिलकुल फक पड़ गया था। चेहरेके अुस धुँधलेपनके कारण अुसके बड़े बड़े दाँत ज्यादा सफेद दिखाओी देने लगे थे। अुसकी चकित आँखें और दाँत अभी भी मेरी दृष्टिके सामने अुस दिन जितने ही प्रत्यक्ष हैं। हम सब अवाक होकर अेक दूसरेकी ओर देख रहे थे। आश्चर्यका असर अभी भी हम परसे अुतरा नहीं था। हरअेकको यही लग रहा था कि वह खुद सबसे ज्यादा गुनहगार है। किसी पर नाराज हो सकनेकी गुंजाअिश होती तो रामा अुसके दाँत ही तोड़ देता। लेकिन अिस वक्त तो हम सब असहाय थे। यह कैसे हो गया यही विचार हरअेकके मनमें चल रहा था। अरे, अेक क्षण पहले तो वह बच्चा हमारा था। कितने आनन्दके साथ हम अुससे खेल रहे थे। यह कैसे हुआ? क्या अब अिसका कोअी अिलाज ही नहीं? नहीं बिलकुल नहीं। 'औीश्वरके राज्यमें अैसा क्यों होता होगा? नहीं अैसा होना ही न चाहिये था। यह तो असह्य होने पर भी बिना सहन किये चल ही नहीं सकता। आह हम जितने सब थे कोअी भी कुछ न कर सका! हमसे कुछ भी न बन पाया और बच्चेको सबके देखते राक्षस मौतके मुँहमें जाना पड़ा। आखिरी क्षणमें बच्चेको कैसा लगा होगा? चीलने अुसका पेट फाड़ा अुस वक्त अुसे कितनी वेदना हुअी होगी? मेरी दशा तो अैसी हो गयी मानो मेरा ही पेट कोअी चीर रहा हो! किस कुमुहूर्तमें रामाको अुस बच्चेको पकड़नेकी दुर्बुद्धि सूझी होगी? क्या चीलके खानेके लिअे ही जिमन अुस बच्चेको यहाँ तक लाकर अुसे सौंप दिया? अपनी माँके पेटके नीचे बैठ कर जो बच्चा अपनको गरमा लेता, वह आज चीलके पेटमें बैठ गया! गरीब प्राणियोंके बच्चोंको पकड़ना महापाप है। मैं तो किसी भी समय अैसी नीच करतूत नहीं करूँगा।

हरअेक व्यक्ति अपनी-अपनी जगह पर खंभेकी तरह खड़ा ही रहा। न कोअी बोलता था न हिलता था। आखिर रामाने ही

गहरी साँस छोड़ी और दबी हुअी आवाजसे कहा, 'जो होना था सो हो गया चलो अब।'

जिसके प्रति हृदयमें कुछ भी कोमल भावना हो असे प्राणीकी मौत देखनेका मेरा यह पहला ही प्रसंग था। जो अभी था' वह अेक ही क्षणमें कैसे नहीं था हो जाता है, यह सवाल अितनी चोटके साथ हृदयमें अंकित हो गया कि अुसका असर बहुत ही लम्बे समय तक बना रहा। अभी भी जब-जब वह प्रसंग याद आता है वहीकी वही स्थिति आपस हो जाती है।

वेदान्तकी तटस्थ दृष्टिसे मुझे यह भी विचार करना चाहिये कि चीलको जब वह कोमल बच्चा खानेको मिला तब अुसे कितना आनन्द हुआ होगा! क्या मीठे फल खाते वक्त मुझे मजा नहीं आता? लेकिन रामाकी चापींके संबंधमें तो मेरा यह प्रथम घाव था वह किसी भी तरह नहीं भरता और चीलके सुखका, अुसके क्षुधा-निवारणका खयाल जरा भी प्रत्यक्ष नहीं होता।

२६

बाजोंका अिलाज

सहालगके दिन थे। दोपहरको और रातको, सवेरे और शाम समय-असमयका विचार किये बिना बाजोंका शोर मचा रहता था। मामू और मैं मकानके बाहरवाले कमरेमें सोते थे। बाजोंसे रातकी मीठी नींद अुचट जाती अिसलिअे बाजेवालों पर हमें बहुत गुस्सा आता। ये लोग दिनमें विवाह कर लें तो अिनका क्या बिगड़ता है? ये क्या निशाचर हैं जो रातमें विवाह करने जाते हैं? यों कहकर हम अपना गुस्सा प्रकट करते।

अितनेमें हमारे पड़ोसमें ही अेक विवाहका प्रसंग आया। रास्ते पर मंडप बनाया गया। बाजेवालोंको लाया गया। अुन

लोगोंको अपने सेठके घर बैठनेकी जगह नहीं मिली। जिसलिये अुन चार-पाँच धादनियोंने हमारे बरामदेमें अड्डा जमाया। जरा-सी भी फुरसत मिलती तो वे अपनी कसरत शुरू करते 'पों पों पी पी पा पी, तड़म, तड़म, तड़म!' भाभूका स्वभाव कुछ गुस्सैल था। भेड़ियेकी तरह वह अपने कमरेके बाहर आकर कहने लगा 'हरामखोरो, चल जाओ यहाँसे।' बाजेवालोंने अनजान बनकर जवाब दिया, 'गालियाँ क्यों देते हो भाभी? हम आपके घरवालोंसे जिजाजत लेकर ही यहाँ बैठे हैं।' जब घरके बड़े-बूढ़ोंने आज्ञा दे दी तो फिर हम बालकोंकी क्या चलती? बेचारा भाभू अपना-सा मुँह लेकर कमरेमें चला गया और भुसन सटसे दरवाजा बन्द कर दिया।

जितनेमें मेरे अुपजाअू दिमागमें अेक जिलाज आया। अुस समय मैं संस्कृत तो नहीं सीख पाया था लेकिन बाबाने कभी सुभाषित मुझे याद करवा दिये थे। मैंने कहा 'बुद्धिर्यस्य बलम् तस्य।' बाजेवालोंका गुस्सा मुझ पर निकालते हुअे भाभूने पूछा, 'तू क्या बात कर रहा है रे?' मैंने कहा 'बाजेका बजना मैं अभी बन्द कर देता हूँ।' और मैं घरके अंदर चला गया।

कच्चे आमोंके दिन थे। मैं घरमें से अेक सुन्दर बड़ा-सा हरा हरा आम ले आया और बाजेवाले जहाँ पी—पी—पों—पोंकी कसरत कर रहे थे वहाँ अुनके सामने अनजान भावसे जा बैठा और अुनसे मीठी मीठी बातें करने लगा। अुनका ध्यान जरा मेरी तरफ हुआ तो मैंने कचड़-कचड़ आम खाना शुरू किया। खट्टे आमोंकी आवाज और अुनकी खट्टी बू नाक-कानमें घुस जानेके बाद यह तो हो ही कैसे सकता था कि जिन्द्रियाँ अपना स्वभाव न बतलातीं? बाजा बजानेवालोंके मुँहमें पानी भर आया और शहनाजीकी जीभमें वह अुतर गया। ताड़पत्रकी लम्बी-लम्बी कमचियोंको जिकट्ठा बाँधकर शहनाजीके लिअे अुनकी चपटी जीभ बनायी जाती है। हम अुसे पी-पी कहते।

अिस पीमीमें थूक घुसते ही बाजकी आवाज बन्द हो गयी। मैं अपनी हँसी दबा न सका, अिसलिअे अुठकर घरमें भाग गया। बाजेवालोंके पास कुञ्जीके गुमकेकी तरह दूसरी दो-तीन पीपियाँ शहनाओके साथ लटकती रहती हैं। अुस बाजवालने दूसरी पीम बैठाना शुरू किया। वह भी थूकम भीग गयी। तीसरी निकाली। अितनेमें हाथमें थाड़ा ममक लेकर म फिर अुनके सामने खाने बैठा। आम खाता जाता और ओठोंसे चुस्कियाँ लेता जाता। अिससे बाज बन्द हो गये। अब नाराज होनेकी बारी बाजेवालोंकी थी। बड़ी-बड़ी आँखें निकालते हुअ वे वहाँसे चलते बने। मेरा दोष तो वे निकालते ही कस?

* * *

अिसी अरसकी मेरी अेक दूसरी बहादुरी याद आती है। लेकिन अिस युक्तिका आचार्य मैं न था। और न मन अिसका प्रयोग ही किया था।

हमारे यहाँ कभी-कभी नन्दी बैल आते हैं। वैसे नन्दी बस मैंने अन्यत्र नहीं देखे हैं। कओी प्रतिष्ठित भिखारी अपना ही अेक बढ़िया बैल रखते हैं अुसको अच्छी तरह सजाते हैं अुसके सींगोंमें छोटी छोटी घंटियाँ और लम्ब लम्ब फुँन्ने बाँधत ह अुसकी पीठ पर रंग बिरंगे कपड़े ओढ़ात हे दो सींगोके बीच माथ पर हल्दी और कुकुम डालकर महादेवजी या अम्बाजीकी चाँदी या पीतलके पत्तरकी मूर्ति लटकती रखते हैं और दरवाज पर आकर घर-मालिकको आशीर्वाद देते हैं। बैल तालीम पाया हुआ रहता है अिसलिअे जब अुसे कोओी सवाल पूछा जाता है तो वह अपने मालिकके अिशारेके मुताबिक हाँ या ना का भाव बतानेके लिअे सिर हिलाता है। कभी मालिक जमीन पर सो जाता है और बल अपन चारों पैर अुसके पेट पर जमा कर खड़ा रहता है। देखनेको अिकट्ठा हुअ तमाशबीन लोग दयासे द्रवीभूत होकर पसे दे देत हैं। अिन भिखारियोंके पास अक विशिष्ट

प्रकारकी ढोलक होती है। मुड़ी हुआी बेंतकी छड़ी जब ढोलकके चमड़े पर रगड़ी जाती है, तो अुसमें से ड्रॉ, ड्रॉ ड्रॉ, गुज गुज, गुम की आवाज निकलती है।

अेक बार हमारी गलीमें अेक मन्दी बैल आया और ढोलक बजने लगी। हमने अुससे लाख कहा कि तुम यहाँ मत आओ मगर अुसने अेक न मानी और ढोलक बजाता ही रहा। यह देखकर पड़ोसके अेक लड़केसे मैंने कहा अिस कर्कश आवाजको हम बातकी बातमें बन्द कर सकते हैं। मैंने अुसके कानमें अपना मंत्र कह दिया। मजी रोजके आनन्दसे अुसकी आँखें खिल गयीं। वह दौड़ता हुआ घरमें गया। अब खासा मजा देखनेको मिलेगा, अिस अपेक्षासे मैं दूर जाकर देखनेके लिअे तैयार हुआ। मेरे मित्रने घरसे अेक चीथड़ा लेकर अूपरके तेलमें डुबाया और अुसको चुपचाप हाथमें छिपाये वह ढोलकवालेके नजदीक गया और मौका देखकर धप्से वह चीथड़ा ढोलकके चमड़ पर फेंक मारा। ढोलककी अेक ओरकी आवाज बठ गयी छड़ीकी कँपकँपी बन्द हो गयी भिखारी बिगड़ा और बेंतकी छड़ी लेकर अुस लड़केको मारने दौड़ा। लड़का पहलेसे ही सावधान था। अुसने घरमें घुस कर दरवाजा बन्द किया और खिड़की खोलकर कहने लगा कैसी बनी! कैसी बनी! लेते जाओ!'

अिस अजीब युक्तिकी खोज मैंने नहीं की थी, मैंने तो वह पूनामें सुनी थी और अिस तरह अुसका प्रयोग किया।

३०

श्रावणी सोमवार

हम ठहरे महादेवके अुपासक। घरकी पूजामें अनेक मूर्तियाँ थीं। अुनके अलावा शिवजीका लिंग, विष्णुका शालिग्राम, गणपतिका लाल पाषाण, सूर्यकी सूर्यकान्त-मणि और देवीका चमकता हुआ सुवर्णमुखी धातुका टुकड़ा — अैसी अैसी बहुतेरी चीजें रहतीं। लेकिन पूजाके प्रमुख स्थान पर महादेवके बजाय अेक नारियल ही रखा रहता था। हम नारियलका रोजाना अभिषेक करते, अुस पर चन्दन अक्षत और फूल चढ़ाते, भोग लगाते, आरती अुतारते और प्रार्थना करते। श्रावण महीनेमें पहले सोमवारको पुराना नारियल बदलकर नया नारियल रखा जाता। जैसे सरकारी कर्मचारियोंके तबादलेके समय आनेवाले और जानेवाले दोनों कर्मचारियोंका अेक साथ सत्कार किया जाता है, वैसे ही अुस सोमवारको दोनों नारियलोंका अेक साथ अभिषेक होता। अुसके बाद पूजाका नया नारियल मुख्य स्थान पर विराजमान होता और पुराना अेक तरफ बैठकर पूजा ग्रहण करता। दूसरे दिन पुराने नारियलको फोड़कर अुसके खोपरेका प्रसाद घरमें सबको बाँटा जाता। मैं कॉलेजमें पढ़ता था तब भी मुझे डाकके जरिये वह प्रसाद मिलता था।

पूजाका नारियल अेक साल तक रखा जाता, अिसलिअे बहुत ही सावधानीसे परिपक्व नारियल देखकर पसंद किया जाता था। वर्षके अन्तमें अुसका खोपरा अच्छा निकलता तो वह कुलदेवताकी कृपा मानी जाती। यदि खोपरा खराब निकलता अथवा सड़ जाता, तो वह कुलदेवताकी अकृपाका चिह्न समझा जाता।

अिस सारी विधिके कारण हमारे कुलधर्मके अनुसार श्रावणी सोमवार ही हमें नये वर्षके समान जान पड़ता। अुस दिन सारे दिनका अुपवास तो रहता ही। और लगभग सारे दिन रुद्राभिषेक, पूजा आदि चलता रहता। पिताजीको देवपूजा वैश्वदेव रुद्र सौर, गणपति अथर्वशीर्ष वगैरा सब मुखाग्र था। घरमें पुरोहित यदि समयसे नहीं आता तो वे खुद ही पूजा कर लेते थे। फिर पुरोहितका काम सिर्फ दक्षिणा ले जाना ही रहता। कुलदेवताके प्रति पिताजीकी जो निष्ठा और नम्रता थी वह बचपनमें तो मुझे सहज और स्वाभाविक जैसी लगती थी। आज जब विचार करता हूं तो पता चलता है कि अुनके जैसी निष्ठा मैंने बहुत ही कम लोगोंमें देखी है। और अिसलिअे मैं कह सकता हूं कि वह असाधारण थी।

हमारे यहांकी दूसरी अेक प्रथा मैंने आज तक दूसरे किसी कुटुम्बमें नहीं देखी। श्रावणी सोमवारके दिन सबेरे अुठकर नहा-धोकर और सन्ध्या-वन्दनसे निबटकर पिताजी देवघरमें आ बैठते। फिर पूजा शुरू करनेसे पहले अेक बढ़िया कागज लेकर, अुसे चन्दन-कुंकुम लगा कर अुस पर कुलदेवताके नाम अेक पत्र लिखते। पत्रमें प्रारंभिक बिरुदावलीके शब्द अितने अधिक होते कि कागजका आधा हिस्सा अिन अुपाधियोंके शब्दोंसे ही भर जाता था। फिर पिछले वर्षकी कुटुम्बकी सब हालतका वर्णन किया जाता कि 'आपने अिस वर्ष अितनी समृद्धि दी घरमें अमुक बालकोंका जन्म हुआ, फलां बातें हुअीं अमुक रीतिसे अुत्कर्ष हुआ वगैरा। फिर वर्षभरकी बीमारी चिन्ताके कारण वगैरा सब गिनाकर हम अज्ञान हैं आपकी लीला' समझ नहीं सकते आपने जो भी कुछ किया अुसे श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर लेना ही हमारा धर्म है 'आदि बातें आतीं। अिसके बाद अगले वर्षके लिअे जो भी अच्छा होती वह लिखी जाती। अुस अभिलाषामें मांगी हुअी चीजें मामूली ही रहतीं 'सबको दीर्घायु आरोग्य और सन्मति मिले, कोअी दुःखी न रहे, सबको

सुख संतोष प्राप्त हो। अिसके बाद सामाजिक सुख-दुःखकी बातें आतीं जिनमें खासकर अकाल महँगाअी महामारी वगैराका ही अुल्लेख रहता। अिसमें भी सबको सुख-संतोष मिले यही माँगा जाता। आखिरमें 'आपका दासानुदास सेवक' आदि लिखकर हस्ताक्षर किये जाते। पूजाके बाद यह पत्र कुलदेवताके चरणोंमें रखा जाता।

हमारे घरमें अैसे पत्र लिखनेकी प्रथा है अिसकी जानकारी मुझे तब हुअी जब मैं पूजाके कार्यमें पिताजीकी मदद करने लगा। यह पत्र पिताजी छिपाकर रखते थे अैसी बात नहीं थी। लेकिन अुन्हें किसीको खास तौरसे सुनाते भी नहीं देखा था। अैसे कभी पुराने कागजोंको मैंने अुनकी पटीमें पड़े हुअे देखा था। अुनमें से जितने मिले अुतने मैंने अिकट्ठे भी करके रखे थे। बादमें जब मैं अुग्र राजनीतिमें हिस्सा लेने लगा तब मेरे अेक मदीजेने मेरे बहुत-से कागजात जला डाले। अुन्हींके साथ ये प्रार्थनापत्र भी जल गये।

जिस वर्ष मुझे अिन पत्रोंका पता चला अुसी वर्ष पिताजी जब लिखने बैठ थे मैं वहाँ गया और अुनसे पढ़नेके लिअे वह पत्र मैंने माँगा। अुस अधूरे पत्रको ही मेरे हाथमें देकर अुन्होंने मुझसे कहा 'अिसमें और कुछ बढ़ाने जैसा तुझे लगता हो तो मुझसे कहना।' मैंने पत्र पढ़ लिया। अुससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। अिसमें और कुछ क्या जोड़ा जा सकता है अिस पर विचार करने लगा। अुसी अरसेमें हिन्दुस्तानकी सरहद पर अफ्रीदी लोगोंके साथ युद्ध चल रहा था। हिन्दुस्तान और अफगानिस्तानके बीचके मुल्कमें रहनेवाले अेक मुसलमान कबीलेका नाम अफ्रीदी है। अखबारोंमें पढ़ा था कि वे लोग बड़ी कुशलताके साथ अंग्रेजोंसे लड़ रहे हैं। मैंने पिताजीसे कहा हम भगवानसे प्रार्थना करें कि अंग्रेजोंकी हार हो और अफ्रीदी लोग जीत जायें। अुन्होंने मेरी बात सुन ली और कुछ वाक्य लिखकर पत्र पूरा किया।

दूसरे या तीसरे दिन मन बहु पत्र लेकर पढ़ा। अुसम हार जीतका अुल्लेख तक न था। अितना ही था कि सरहद पर जो लड़ाओ चल रही है और मनुष्य-संहार हो रहा है वहाँ दोनों पक्षोंको सन्मति प्राप्त हो। लड़ाओ शांत हो और सब सुखी हों। मुझे यह नरम माँग जरा भी पसन्द न आयी। मनमें यह भी विचार आया कि पिताजी सरकारकी नौकरी करते हैं अिसलिअे अुनके मनमें अिस सरकारके प्रति कुछ पक्षपात होना ही चाहिये। विरोध करनेकी तो मेरी हिम्मत नहीं हुआी। मैंने अितना ही पूछा कि अैसा क्यों लिखा? पिताजीने कहा 'भगवान्‌से तो यही माँगा जा सकता है। किसीका बुरा हम क्यों चाहें? जिसके कर्म बुरे होंगे वह अुसका फल भुगतेगा। हम तो यही माँग सकते हैं कि सब सुखी रहें। अिसीमें हमारा कल्याण है।'

पिताजीकी अिस बात पर म बहुत सोचता रहा।

३१
अँगुलियाँ चटकायीं!

छुटपनमें अँगुलियाँ चटकानेका आनन्द किसने नहीं लिया होगा? लेकिन मुझ बचपनमें अँगुलियाँ चटकाना नहीं आता था। हर अँगुलीको जोरसे पकड़ कर खींचता फिर भी आवाज न निकलती। गोंदूको अिस बातका पता चल गया अिसलिअे जब-जब मुझे चिढ़ानेका मन होता तब-तब वह कहता 'तुझे अँगुली चटकाना नहीं आता है?' पाठशालाके दो-चार दोस्तोंके बीच में बैठा होता और गोंदू यों कहता, तो जिन्दा गड़ी जानेका दुःख होता। मैं अुससे कहता 'यह देख, मुझे भी अँगुलियाँ चटकाना आता है।' अितना कहकर अेक हाथकी मुट्ठीमें दबायी हुआी दूसरे हाथकी अँगुली पकड़कर खींचता और चमड़ीके घर्षणसे सू क सी आवाज होती। लेकिन गोंदू

कहता, 'ना-ना, यह कोओी चटखन नहीं है चटकनकी आवाज तो हड्डीमें से आती है।'

कभी बार यों फजीहत होनसे मैंने निश्चय किया कि अिस कलामें असाधारण प्रवीणता प्राप्त किये बिना अब नहीं चल सकता। रोज-रोज यह अपमान कौन सहे?

शाहपुरमें अेक नाअी था। वह अपना पेशा नहीं करता था, क्योंकि वह पागल हो गया था। अुसे मनुष्यके शरीरके चाहे जिस अंगको पकड़ कर चटकानेकी कला मालूम थी। वह हमें रास्ते पर दिखाअी देता तो हम अुसे खानेका लालच देकर घरमें बुलाते और कहते कि हमारा शरीर चटका। वह चोटी पकड़कर खींचता तो अुसकी जड़में आवाज होती, कान खींचता तो कानमें आवाज होती। अिसी तरह नाक दाढ़ी सिर, हर जगह चटकनकी आवाज होती। खेल पूरा हो जाने पर हम माँसे माँगकर अुसे कुछ खानेको दे देते।

अेक दिन माँने कहा 'यह नाअी बड़ा मांत्रिक था। अिसने अेक भूतको वशमें कर लिया था। अुस वक्त अिसकी शान देखने लायक थी। कहते हैं कि अिसके घरमें तेलका दीया था। तेलकी जगह अुसमें यह पानी ही डालता फिर भी वह जलता था। अिसने जो मंत्र-साधना की थी अुसका फल अिसे बारह वर्ष तक मिला। फिर अकाअेक यह पागल हो गया और अिसका सारा वैभव चला गया। अब यह भीख माँगता फिरता है। अिसकी मन्त्र-साधना गन्दी थी। बारह वर्ष तक वह भूत अिसके कहनेके मुताबिक करता रहा। बारह वर्षके बाद अुसी भूतने अिसका सत्यानाश कर दिया। जैसा करे वैसा भरे।

मैंने निश्चय किया कि अँगुलियाँ चटकाना तो अुस नाअी जैसा ही आना चाहिये। दिन रात अुसीका ध्यान रहता। करीब पन्द्रह दिनकी कड़ी मेहनतके बाद मेरी छिगुनी चटकी। अुस दिन मेरे आनन्दकी सीमा

न रही। मैंने दुगनी ताकतसे मेहनत करना शुरू किया। भिस तरह करते करते हर अँगुली तीन तीन जगहसे चटकने लगी। कुछ ही दिनोंमें मने खोज की कि अँगूठेमें भी तीन गाँठें हैं। तीसरी गाँठ बिलकुल हाथके जोड़के पास होती है। अुस गाँठको भी चटकानेका प्रयत्न किया। यानी अब हर हाथमें पन्द्रह चटकन तक पहुँच गया।

लेकिन भितनेसे भी मुझे संतोष न हुआ। हर अँगुलीकी दो गाँठोंको मैंने तीन-तीन तरहसे चटकानेकी कोशिश की। अुसमें भी सफल हुआ। फिर आयी कलाजीकी बारी। वह भी काबूमें आ गयी। मेरी जीत बढ़ने लगी। दोनों कन्धे भी बसमें आये। अुन्हें भी मैंने चटका लिया। फिर बारी आयी गरदनकी। वह भी तीन तरहसे चटकने लगी पीठकी ओर और दाहिनी-बायीं ओर। फिर कान पकड़े। अुनके मूलस्थान भी बोलने लगे। फिर अुतरा कमर पर। पसली मरोड़नेसे कमर दो ओरसे आवाज करने लगी। घुटनोंको वश करनेमें बहुत कठिनाभी पड़ी। वह आवाज तो करता था, लेकिन अुसके मनमें आता तभी। कभी किसीके सामने प्रदर्शन करने जायें तो वह दगा दे सकता था। फिर टखनोंकी कसरत शुरू हुआी। अुन्होंने भी आवाज की। पैरकी अँगुलियाँ तो भिसके पहले ही बोलने लगी थीं।

अब शरीरका कोभी प्रदेश बाद न था। कोहनी तो कभी बोली ही नहीं। भिसलिभे मैंने अुसको छोड़ दिया था। अेक दिन नींदमें से अुठकर जँभाभी ले रहा था कि मुझे खयाल आया कि मुँहका निचला जबड़ा भी बोल सकता है। लेकिन मुँहकी यह हरकत मुझे खुदको भी पसन्द नहीं थी, भिसलिभे अेक-दो बार जबड़ा बजानेका प्रयत्न करके फिर वह छोड़ दिया।

यों मैंने शरीर पर विजय प्राप्त की। मेरे पराक्रमको देखकर सभी चकित हो गये। लेकिन भितनेसे मेरी तसल्ली नहीं हुआी

थी। मैं आगे बढ़ता ही गया। हाथकी अँगुलियाँ तो अितनी वशमें हो गयी थीं कि जब कहो तब और जितनी बार कहो अुतनी बार चटकती थीं। कोओी यदि मेरा अँगूठेका नाखून पकड़ लेता तो मैं अुसे वही अेक-दो चटकन सुना देता था।

अितनी विजय मिलने पर भी मुझे यह चीज खलती थी कि चटकनोंमें अेक हाथको दूसरेकी मदद लेनी पड़ती है। यह द्वैत किस कामका? फिर तो मुझी हाथके अँगूठेसे मैं अुसकी दूसरी अँगुलियाँ चटकाने लगा। मुझे लगा कि अब हम अिस प्रकारके शिखर पर पहुँच गये। परन्तु नहीं! अभी अेक कदम बाकी था। दो अँगुलियोंके स्पर्शके बिना, बिना किसी दबावके अपने आप ही आवाज निकलनी चाहिये। हमारा शरीर तो कल्पवृक्ष है। जो भी कल्पना करें वह सफल होनी ही चाहिये। कुछ ही दिनोंमें मैं हर अँगूठेको तनिक फैलाकर आवाज निकालने लग गया। जब मैंने यह स्वयम् आवाज सुनी तभी मेरी विजिगीषा तृप्त हुओी।

लेकिन हाय अिस निकम्मी कलाकी साधनामें मुझे बहुत बड़ी कुरबानी देनी पड़ी। शरीरके सारे जोड़ ढीले पड़ गये। हाथके पंजेमें तो बिलकुल ताक़त न रही। यदि मैं कोओी चीज जोरसे पकडूं तो छोटा-सा बालक भी मुझसे वह छीन सकता है।

पाठशालामें मुझे फुटबालका खेलनेका शौक था। मेरे दुबले शरीरका खयाल करके कहा जा सकता है कि मैं फुटबाल अच्छा खेलता था। खेलकी कुशलताकी अपेक्षा मुझमें अुत्साह ज्यादा था। हाथ-पैर टूट जायें तो परवाह नहीं लेकिन सामनेवालेको धमकाये बिना नहीं छोड़ता। जहाँ धमाचौकड़ी मची हो, वहाँ तो अपने राम जरूर घुस जाते। मेरी कक्षामें मेरा क़द सबसे अूँचा था अिसलिये अकसर मेरे क़द और मेरे अुत्साहकी क़द्र करके मुझे दलमें लक्ष्यपाल (गोल-कीपर) बनाया जाता। फुटबालमें लक्ष्यपाल तो सर्वतंत्र-स्वतंत्र होता है। वह हाथका भी अुपयोग कर सकता है पैर और सिरका अुपयोग तो

करता ही है। मैं लक्ष्यपाल बनता तो मेरा पक्ष निश्चिन्त हो जाता। लेकिन अुन लोगोंको क्या पता कि मैं चटकानेकी कला सिद्ध करनेमें जुटा हुआ था?

अेक दिन मैं लक्ष्यपाल था। अूपरसे फूटबाल आयी। लक्ष्यवेध (गोल) होनेका सबको पूरा विश्वास था। लेकिन अितनेमें मैं जोरसे अुछला और मैंने दोनों हथेलियोंसे गेंदको रोका। चारों ओर मेरा जय-जयकार होने लगा। लेकिन अितनेमें मैंने देखा कि गेंदके वेगको रोकनेकी शक्ति मेरी हथेलीमें बाकी नहीं थी। कमजोर हाथोंसे गेंद खिसकी और अुसने लक्ष्यवेध (गोल) कर दिया। अेक ही क्षणमें जय-जयकारकी जगह मुझ पर धिक्कार बरसने लगा। यह क्यों हुआ अिसका किसीको पता न चला। खेलते समय ध्यान देनेमें या अुत्साहमें मैं किसीसे कम न था। आज क्या हुआ? मित्र आकर मेरा हाथ देखने लगे। अुस वक्त मैं कुछ नहीं बोला, लेकिन मनमें समझ गया कि अँगुलियाँ चटकानेकी कला बहुत महँगी पड़ी है!

अुसी क्षण मैंने अुस कलाका त्याग करनेका निश्चय किया। लेकिन अब यह कला मुझे त्यागनेको तैयार न हुअी। बाबा कंबल छोड़नेको तैयार हुआ पर कम्बल बाबाको कैसे छोड़ता?' अँगुलियाँ चटकानेकी वह घातकी आदत मुझमें अब भी मौजूद है, यद्यपि अुसकी हरकतें आज तो हाथोंके पर्वों तक ही सीमित हैं। कअी बार मैंने प्रयत्न किया कि मैं अिस आदतसे छुटकारा पाअूँ, लेकिन जैसे आँखकी पलकें अपने आप हिलती रहती हैं वैसे ही दोनों हाथ अपनी हलचल चालू ही रखते हैं चटका ही करते हैं और मुझे अुसका पता तक नहीं चलता। मुझे लगता है कि मेरे हाथको कोअी गंभीर रोग हो जाता, तो भी मेरा अितना नुकसान न होता!

विजिगीषा — जीतनेकी विजयी होनेकी महत्वाकांक्षा अच्छी वस्तु है, अुत्साह और टेक मानव-जीवनका तेज है लेकिन यदि

बिना विचारे जिनका प्रयोग किया जाय, तो अुसस सदा ही पछताना पड़ता है और पछताने पर भी कुछ हाथ नहीं आता। जिद पकड़ कर कभी बार मैंने अपना नुकसान किया है। सबसे आगे जानेका मोह शायद ही कभी मुझे हुआ है। लेकिन जब कभी हुआ है तब अुसने मुझ किसी तरह अ घा बना दिया है।

३२

बुरे सस्कार

शाहपुरके अक कोनेमें होस्सूर नामक गांव है। शाहपुर और होस्सूरके बीच अेक सतका भी अन्तर नहीं है। दोनों गांवोंके घर बिल्कुल पास पास हैं। लेकिन अुस वक्त शाहपुर दक्षी राज्यमें था और होस्सूर अंग्रेजी सल्तनतके मातहत था। होस्सूर कन्नड़ नाम है और अुसका अर्थ होता है नया गांव लेकिन वहाँ भी पाठशाला तो मराठी ही है।

न जाने क्यों मुझ अेक वक्त होस्सूरकी मराठी पाठशालामें भरती किया गया था। शाहपुरमें पाठशाला तो थी पर होस्सूरकी पाठशाला हमें नजदीक पड़ती थी। लेकिन मैं सोचता हूँ कि मुझ वहाँ भरती करनेका कारण यह नहीं था। ब्रिटिश राज्यमें जो सिसान लोकल फण्ड देते थे अुन्हें पाठशालाकी फीस बराय नाम ही देनी पड़ती थी। शाहपुरकी पाठशालामें पूरी फीस देनी पड़ती थी, होस्सूरमें लगभग मुफ्त ही पढ़नेको मिलता था। अिसीलिये मुझे ब्रिटिश पाठशालामें भेजा गया था!

मेरी पढ़ाओकी तरफ घरमें किसीका भी ध्यान नहीं था। फिर मेरा अपना ध्यान तो होता ही कैसे? होस्सूरकी पाठशालामें हमारे हेडमास्टर महीनों तक छुट्टी पर रहते थे। अुनके सहायक तो थे

ही नहीं। अब रोजाना चपरासी आकर पाठशाला खोलता, और अिधर-अुधर थोड़ी झाड़ू लगा देता। फिर लड़के अपनी-अपनी कक्षामें बैठ जाते। कोअी नकशा खोलता, तो कोअी कविता गाता। दस बजते ही लड़कोंमें घंटी बजानेकी धमाचौकड़ी मचती। अेक बड़ा लड़का बहुत ही दुष्ट था। छोटे लड़के अूंची अंगद छलांग मारकर घंटी बजाते और घंटीमें से निकलते हुअे नादका दीर्घ अनुरणन सुननेके लिअे खड़े रहते तो वह तुरन्त ही वहाँ आकर हाथसे घंटी पकड़ लेता और नादका वध कर देता। अिससे लड़कोंने अुसका नाम 'घंटा-नाद-विध्वंसन' रखा था।

यह लड़का और तरहसे भी खराब था। हररोज नअी-नअी गन्दी पुस्तकें न जाने कहाँसे ले आता। फिर अूंची कक्षाके लड़के अुसके आसपास बैठकर अुनका पारायण करते। मैं भी अुसी कक्षामें पढ़ता था। मेरी कक्षामें मैं सबसे छोटा था। अिसलिअे अुस गन्दे पारायणका ब्रह्माक्षर भी मैं नहीं समझ पाता था। मुझे बिलकुल अनभ्यस्त देखकर दूसरे लड़के मुझे अपने बीच नहीं बैठने देते। मेरे प्रति तिरस्कार तो नहीं था, लेकिन मैं अुस बारेमें अनजान हूँ और मेरे अुस अनजानपनको बिगाड़नेका पाप हम न करें यों मान कर 'घंटा-नाद-विध्वंसन' मुझे दूर रखता होगा असा मेरा खयाल है। अुसके अिस सद्भावके लिअे मुझे अवश्य अुसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये। अुस कक्षामें चलनेवाली वार्तोंको मैं समझता न था। मुझे अुनमें मजा भी न आता था, फिर भी अुन लोगोंकी कुछ न कुछ बातें मेरे कानमें जरूर घुस जाती थीं।

बाल-मानसका यह स्वभाव है कि जिस बातको वह नहीं समझता अुसे अेक कोनेमें अिकट्ठा करके रखता है और मन जब फुरसत पाता है तो अुसका रहस्य समझनेका प्रयत्न करता है। मेरे बारेमें भी असा ही हुआ। चित्तमें अनेक बेवकूफी-भरे तर्क-वितर्क

चलते और मनको गन्दा करते । जिस प्रकार होस्पुरकी पाठशालामें नहीं किन्तु मुस पाठशालाके कारण मेरा बहुत ही नुकसान हुआ।

आखिर हेडमास्टर आये । भूगोलमें मेरी प्रगतिका देखकर वे मुझ पर खुश हो गये। गणित और मराठी काव्य मुनके प्रिय विषय! वे जितने विद्वान थे मुससे ज्यादा घमंडी थे। वर्गमें भी बीच-बीचमें कोमी न कोमी मुनसे मिलनेको आता ही रहता। फिर मुनकी बातें चलतीं और हम सुनते रहते । मुनके अपने मनमें मुनके दिमागकी कीमत असाधारण थी । अेक दिन अपने अेक दोस्तसे कहने लगे, 'मेरा गणिती दिमाग मैं क्षुद्र काममें नहीं खर्च करता । बाजारमें बनिये या कुन्बीसे जब मैं कोमी चीज खरीदता हूँ और वह मुझसे हिसाब करनेको कहता है तो मैं मुससे कह देता हूँ कि 'तू ही अपना हिसाब कर ले और जितने पैसे लेने हों मुतने लेकर बाकी पैसे मुझ दे दे। बनियाशाही हिसाबमें मैं अपने गणिती दिमागका मुपयोग नहीं किया करता।

जिस बातको सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। अब तक मैं यह मानता था कि गणितमें होशियार मनुष्य कठिनसे कठिन सवाल भी आसानी कर सकता है। मुसे हिसाबकी चिढ़ नहीं होती मुलटे मुसमें असे मजा ही आता है। सामान्य हिसाबमें भी मेरा काम त्रैराशिकके बिना नहीं चलता था जिसलिये मैं मानता था कि मेरा दिमाग गणिती नहीं है। लेकिन जब हमारे गणिती हेडमास्टरकी राय सुनी तो मनमें नया (?) ही खयाल पैदा हुआ कि अपना ज्ञान हर घड़ी बरतनेकी चीज नहीं होती, दिमागका मुपयोग करनेसे वह खर्च हो जाता है। मुफलिस लोग भले ही तुच्छ बातोंमें अपना दिमाग खर्च करें। प्रतिष्ठित गणिती तो जबरदस्त युद्धका प्रसंग आये तभी अपने ज्ञानकी तलवार म्यानसे बाहर निकालता है।

अेक दूकानदारके बारेमें मैंने अैसी ही बात सुनी थी। वह अैसा आदमी दूकानमें आँखें मूँदकर बैठता था। कोमी ग्राहक आता,

तभी अपनी आँखें खोलता। किसीने मुझसे मिसका कारण पूछा तो जवाब मिला—'आँखोंका नूर मुफ्त क्यों खोयें?'

जिस गणिती हुकमास्टरकी कल्पनामें समाय हुओ विचारदोषको खोजनेमें मुझे बहुत समय न लगा। लेकिन मुसकी बाकी हुजी वह वृत्ति निकाल फेंकनेमें बेहद मेहनत करनी पड़ी। अभी भी वह निकल गयी है यह मैं विश्वासके साथ नहीं कह सकता।

३३

मैं बड़ा कब हुआ?

अेक दिन गवसू नामक अेक मुसलमान मावी हमारे यहाँ आया। मुसने अपनी छोटी-सी जमीन रेहन रखकर मेरे पिताजीसे सौ-सवासौ रुपये मुधार लिये थे। मुसका ब्याज बढ़ रहा था, फिर भी आज वह नया कर्ज लेने आया था। वह बड़ा ही आलसी आदमी था। कोमी काम-धंधा नहीं करता था। मिधर-मुधर कुछ बागबानियाँ करके पेट भरता था। लेकिन जब आयसे खर्च बढ़ गया, जिसलिमे फिरसे कर्ज लेनेकी आवश्यकता हुअी। जिस नये कर्जके लिअ वह अपना घर रेहन रखनेको तयार था।

आम तौर पर पैसेका लेन-देन घरके बड़े लोग अपनी मिच्छाके मुताबिक ही करते हैं। छोटे लड़कोंसे मुसमें पूछना ही क्या होता है? लेकिन मुस दिन न जाने क्यों पिताजीने मुझसे पूछा 'दत्तू, यह गवसू और सौ रुपये माँग रहा है और मुसके लिअ अपना घर रेहन रखना चाहता है। क्या हम मिसे कर्ज दे दें?' मैं आश्चर्यचकित हो गया। किसीको पैसे मुधार देने जैसी महत्त्वपूर्ण बातमें पिताजी कभी मेरी सलाह भी लेंगे, मिसकी मुझे कल्पना तक नहीं थी। मुझे लगा कि अब मैं बड़ा हुआ क्योंकि कौटुम्बिक राज्यमें मुझे मत देनेका

अधिकार मिला! अधिकार मिलनेका मुझे जो आनन्द हुआ, अुसे मैं छिपा न सका। साथ ही साथ मुझे यह भी भान हुआ कि वह आनन्द मेरे चेहरे पर स्पष्ट दिखायी देता होगा। यह भान होते ही मैं शरमाया। शरमकी छटा मुँह पर आ गयी है अिसका भी मुझे भान हुआ। अिसलिअे मैं और भी परेशान हुआ। आखिर हिम्मत करके मनमें सोचा कि जब मैं बड़ा हो ही गया हूँ तब मुझे गंभीर बनना चाहिये। सलाह देनेके प्रसंग तो अिसके बाद हमेशा आते ही रहेंगे, अतः अिस नये अधिकारके लिअे मैं योग्य हूँ, अितनी स्वामाविकता मुझे अपनी मुखमुद्रा पर रखनी चाहिये और यह भी दिखा देना चाहिये कि बड़ी अुम्रके लोगों जैसी पुख्ता सलाह भी मैं दे सकता हूँ।

अिस प्रकार मनमें सोच विचार करके मैंने विवेकपूर्वक कहा, 'पैसेके व्यवहारमें मैं क्या जानूँ? फिर भी मुझे लगता है कि अिस आदमीको हमें पैसे नहीं देने चाहिये। मैं अिसके यहाँ अनेक बार हो आया हूँ। अिसके घरमें बूढ़ी माँ है, स्त्री है और बाल-बच्चे हैं। गवसू तो सारा दिन मारा-मारा फिरता है। घरकी औरतें बेचारी सूतकी कुकड़ियाँ भरनेका काम करती हैं, सवेरेसे शाम तक अटेरन घुमाती हैं, तब कहीं मुश्किलसे गुजर-बसर करने जितना पैसा मिलता है। गवसू अपना लिया हुआ कर्ज अदा नहीं कर सकेगा। आखिर तो हमें अिसका घर ही जब्त करना पड़ेगा, तब अिसके बाल-बच्चे कहाँ जायेंगे?'

मैंने मनमें माना कि मैंने पुख्ता सलाह दी है। पिताजीने भी अुस आदमीसे कहा, 'गवसू, दत्तू भैया जो कह रहे हैं वह सच है।' गवसू मेरी ओर बड़े हुअ रोषसे देखने लगा। अिससे मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मैं दरअसल बड़ा हो गया हूँ। गवसू मेरे सामने कुछ बोल नहीं सकता था। थोड़ी देर तक हमने और चर्चा करके तय किया कि गवसूके घरके पास जो जमीन है अुसे पुराने

कर्जमें से लिया जाय और अुसके लिये पचास रुपये ज्यादा देकर अुसकी वह जमीन खरीद ली जाय तथा घर रेहन रखकर अुस पर पचास रुपये दिये जायें जिससे अुस पर ब्याजका बोझ ज्यादा न पड़े।

मेरी अिस व्यवस्थामें महाजनीका व्यवहार-ज्ञान तो था ही, लेकिन अुसकी जो जमीन हमने ली थी वह अितनी छोटी थी कि बाजारमें अुसकी क़ीमत पचास रुपयसे अधिक नहीं थी। रास्तेके किनारे होनेसे अगर वहाँ पर दूकानके लायक छोटा-सा मकान बना कर किराये पर दिया जाय तो गवसूको दिये हुअे कर्जके सूद जितना किराया मिल सकेगा, अिस हिसाबसे मैंने यह सुझाव पेश किया था। अिसमें मैंने अुस कुटुंबका हित ही देखा था।

अुन पचास रुपयोंका भी ब्याज अुसने कभी नहीं दिया। तब मेरे बड़े भाअीने अुस पर मुकदमा दायर किया। मुकदमेका समन्स गवसूकी माँको देना था जिसके लिये नाजिरके साथ मुझे गवसूके घर जाना पड़ा। अिस घरमें यों ही क्षेम-कुशलकी बातें करनेके लिये मैं कभी बार गया था लेकिन अब अुसी घरमें नाजिरको लेकर शत्रुके समान प्रवेश करनेमें मुझे बहुत ही शरम मालूम हुअी। गवसूकी माँके सामने मैं आँख तक न अुठा सका। लेकिन घरके स्वराज्यमें मिले हुअे अधिकारके साथ अैसा गन्दा काम करनेका भार भी मुझ पर आ पड़ा था और अुसे वफ़ादारीके साथ अदा करने जितना मैं बड़ा हो गया था। कोर्टमें गवसूने कबूल किया कि अुसने हमसे पैसे लिये हैं और ब्याज बिलकुल नहीं दिया है। अब तो अुसका घर जब्त करके नीलाम करनेकी बात रही थी। यह विचार मेरे लिये असह्य हो गया। मैंने मुन्सिफ़से कहा मैं नहीं चाहता कि अिस ग़रीबका घर नीलाम हो। आप अिसकी किस्त बाँध दीजिये। कोर्टने फैसला किया कि पचास रुपये और अुनका अुस दिन तकका ब्याज जब तक चुक न जाय, गवसूको तीन रुपये महीनेकी किस्त देनी होगी अुसमें यदि

अेक महीनेकी भी भूल होगी तो घर जब्त कर लिया जायगा। मैंने पत्र लिखकर पिताजीको सारा हाल बताया। अुनका जवाब आया, 'तूने ठीक किया।' मेरे अपनी जिम्मेदारी पर किये हुअ कामके लिअे पिताजीकी मजूरी मिल गयी जिससे मुझे विश्वास हो गया कि अब मैं अवश्य ही बड़ा हो गया हूँ।

अुस वक्त शायद मैं तेरह-चौदह वर्षका था। गवमूने लगभग अेक वर्ष तक हर माह तीन रुपये दिये। फिर किसी महीनमें वह अेक रुपया लाता तो किसी महीनेमें आठ ही आने लेकर आता। आखिर अूब कर मने अुससे कहा, 'बस हो गया अब मत आना। घरके बच्चोंको अिन पैसोंसे घी-दूध खिलाना।' अदालतमें मुकदमा लेकर जानेका यह मेरा पहला और अंतिम अवसर था। अिसके बाद मैं कभी अदालतमें नहीं गया।

३४

पचरंगी तोता

केशू अपने बचपनमें बार-बार बीमार पड़ता। अुसे मृगी रोगकी व्यथा थी। जरा नाराज होता तो बेसुध हो जाता और अेकदम अुसके मुँहसे फेन निकलने लगता। अिसस अुसकी तबियतके साथ अुसका मिजाज भी सँभालना पड़ता था। अिससे वह बड़ा तुनक-मिजाज बन गया था। वह जो माँगता वह अुसे मिलना ही चाहिये। अुसके खिलाफ़ कोअी बोल न सकता था। अुसकी अिच्छाअें हमेशा पूरी की जातीं। फिर भी वह सदा असंतुष्ट ही रहता था। अुसका जितना लाड लड़ाया जाता अुतनी अुसकी अपेक्षाअें बढ़ती ही जाती थीं।

गोंदू केशूसे छोटा था। केशूकी बीमारीके कारण गोंदूकी ओर बहुत कम ध्यान दिया गया था। फिर गोंदूके दुर्भाग्यसे अुसके जन्मके

डेढ़ वर्ष बाद ही मेरा जन्म हुआ था। जिसलिअे स्वाभाविक रूपसे ही सबकी ममता मेरी ओर झुक गयी। केशू बीमार था और मैं बच्चा। दोनोंके बीच गोंदूके लिअे बहुत ही सँकड़ी जगह बची।

अक वक्त पिताजी केशूको साथ लेकर गोवा गये थे। गोवामें पोर्तुगीजोंका राज है। वहाँसे लौटते समय केशूने अक पचरंगी तोता देखा। अुसने जिद पकड़ी कि मैं यह तोता जरूर लूँगा। भक्कानें जबसे घरमें से तोतेको निकाल दिया था तबसे घरमें तोता लानेकी किसीकी अिच्छा न होती थी। विष्णू यदि तोता माँगता, तो कोअी अुसे वह न दिलाता लेकिन केशूकी बात अलग थी। पिताजीने तोता खरीदा। गोवाकी सीमामेंसे यदि तोता बाहर जाता है तो अुस पर कर देना पड़ता है। (स्वतंत्र तोते पर कर नहीं लगता, बन्दी बनकर जानेवाले तोते पर ही कर लगता है!) तोतका रेलवे किराया भी लगभग मनुष्यके किराये जितना ही होता है।

अिस तरह बड़े ठाटबाटसे तोता घर आया। केशू सारे दिन तोतेको लेकर खेलता और अुसीकी बातें सुनता। तोतेके गलेमें काली लकीरका अेक घेरा था। अुसे हम कंठी कहते। अुस कंठीसे यह तोता कितना सुन्दर दिखाअी देता था! केशूने अुसे विठू विठ (विट्ठल विट्ठल) बोलना सिखाया था। अुसे खिलाने-पिलानेका काम मुझे सौंपा गया था। हर रोज बाजार जाकर मैं अुसके लिअे केले लाता। बीच-बीचमें अुसे हरी मिरचियाँ भी खिलाता। सारी हरी मिरचियाँ तो तोतेके लिअे मानो बढ़िया भोज है! अपनी लाल-लाल चोंचमें हरी मिर्चको पकड़कर तोता जब अपनी जीभसे अुसका स्वाद चखता तो वह दृश्य देखनेमें मुझे बड़ा मजा आता। घीकुवार या ग्वारपाठेकी गिरी भी अुसे बहुत भाती थी। जिसलिअे कहींसे ग्वारपाठा लाकर, अुसके काँटे निकालकर और टुकड़े करके तोतको देना भी मेरा ही काम था। सुबह-शाम अुसका पिंजरा भी धोना पड़ता। पिंजरेमें पानीकी कटोरी हमेशा भरी रहती। मैं रातको सोते

समय चनेकी दाल पानीमें भिगोकर रखता और सुबह होते ही वह तोतेको नाश्तेमें दे देता। पिंजरेमें अगर मैं अपनी अँगुली डालता तो तोता अुसे प्यारसे अपनी चोंचमें पकड़ता लेकिन कभी काटता नहीं था। गोंदूकी अैसी हिम्मत न होती थी। अेक दिन तोतेकी पूंछ पिंजरेसे बाहर आ गअी थी। गोंदूको मौका मिल गया। अुसने जोरसे यह पूंछ पकड़कर खींची। तोतेने चिल्लाकर कुहराम मचाया। हम सब घटनास्थल पर दौड़े। केशूने गुस्सेमें गोंदूकी चोटी पकड़ी और अितने जोरसे खींची कि गोंदूको भी तोतेका ही अनुकरण करना पड़ा।

तोतेकी सारी सेवा-टहल मुझीको करनी पड़ती लेकिन तोता तो केशूका ही माना जाता था। मेरे नामसे घरमें अेक बिल्ली हमेशा रहती। गोंदूके मनमें आया कि अपना भी कोअी जानवर हो तो अच्छा। नारायण मामाके यहां अेक कुतिया थी। अुसका नाम था टॉमी। 'टॉमी' शब्द अिकारान्त होनेसे मामाने समझा कि वह स्त्रीलिंग ही होगा। मामाको जितनी ही अंग्रेजी आती थी। लेकिन कुत्तेका नाम अंग्रेजी रखें तभी हम पढ़े-लिखे माने जायें न? गोंदू टॉमीको ले आया और मांसे बोला : मेरी टॉमीको कुछ खानेको दो। मांने कहा 'पथरीमें छाछ है वह अपनी कुतियाको पिला दे।' गोंदूने वह सारा बरतन ही कुतियाके सामने रख दिया। अुसमें मक्खनका गोला तैर रहा था वह भी टॉमी निगल गयी। मामीने यह देखा तो घरके सब लोगोंसे कह दिया। मक्खन गया और पत्थरका बरतन भी कुतियाने भ्रष्ट कर दिया। सबने गोंदूको आड़े हाथों लिया। पथरी अेक खास किस्मके पत्थरका बरतन होता है। अुसमें दाल भी पकायी जा सकती है। चूल्हेसे नीचे अुतार दें तो भी पन्द्रह-बीस मिनट तक अुसमें दाल अुबला करती है। यह बरतन जितना अधिक पुराना हो अुतना अधिक अच्छा माना जाता है। गोंदूकी मूर्खताके कारण अितना अच्छा बरतन बेकार हो गया। अिससे

घरके सब लोग भले ही गोंद्रू पर नाराज हुये हों लेकिन टॉमी तो गोंद्रू पर बहुत खुश हुयी। और क्यों न होती? मुझे तो 'प्रथम ग्रासे नवनीतप्राप्ति' हुयी।

रातके आठ बजे होंगे। दीवानखानेमें कोयी नहीं था। घरके सब बड़े लोग बाहर घूमने गये थे। स्त्रियाँ रसोयी पकानेमें लगी थीं। भाभी रसोयीघरमें भोजनके लिये थाली-कटोरी लगा रही थी। स्थान-धर्मके अनुसार टॉमी आने-जानेके रास्तेमें सो रही थी और बड़े भायी घरमें नहीं थे, असलिये मैं अुनकी अनुपस्थितिसे लाभ अुठाकर अुनके कमरेसे 'मोचनगड़' नामक अुपन्यास लेकर पढ़ रहा था। अुपन्यासका नायक (जिसका नाम शायद गणपतराव था) अेक क़िलेमें क़ैदी होकर पड़ा था। छूटनेका कोयी रास्ता न मिलनेसे वह बेंतकी छड़ोंवाला अेक बड़ा छाता हाथमें लेकर अुसके सहारे क़िलेके नीचे कूदनेवाला था। मेरा चित्त अुसके साथ सहानुभूतिसे अेकाग्र हो गया था। साँस रुक गयी थी। अितनेमें तोतेकी चीख़ सुनायी दी। रात होते ही तोता सो जाता था। अतः अुसकी चीख़ सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। अुपन्यासकी अुत्तेजना तो थी ही। असलिये ज्यों ही चौंककर मैंने पिंजरेकी ओर देखा तो कितना भीषण दृश्य वहाँ अुपस्थित था! दरवाजेसे खूँटी पर और खूँटी परसे छतसे टँगे हुअे पिंजरे पर कूदकर बिल्ली तोतेका ब्याहू करनेकी तैयारीमें थी। डरके मारे तोतेके होश-हवास गुम हो गये थे और बिल्लीका पंजा पिंजरेमें घुस चुका था। मैं शूरवीरकी तरह दौड़ा और हाथकी अेक ही चपेटसे बिल्लीको नीचे गिरा दिया। न जाने अुस दिन कौनसा मनहूस मुहूर्त था! बिल्ली जो गिरी तो टॉमी पर। सोयी हुयी टॉमीको पता न चला कि क्या हुआ है। यह घरकी ही बिल्ली है, अितना पहचाननेका भान टॉमीको न रहा। अुसने बिल्लीको अपने पंजेका मजा चखा ही दिया। यदि मैं टॉमीको जोरसे लात न मारता, तो अुस वक्त मेरी बिल्ली मर ही जाती क्योंकि टॉमीने

बिल्लीकी गर्दन लगभग दाँतोंमें पकड़ ही ली थी। तोते पर हमला करनेवाली बिल्लीके प्रति मेरा रोष अेक ही क्षणमें दयामें परिवर्तित हो गया तोतेके बदले बिल्ली दयाका पात्र बनी, और बिल्ली परका गुस्सा कूदकर टॉमी पर सवार हुआ। मैंने टॉमीको दो लातें जमा दीं।

अितनेमें बाहरसे गोंदू वापस आया। अुसे यहाँका हाल क्या मालूम? अुसने तो केवल टॉमीको लात मारते मुझे देखा था। फिर पूछना ही क्या? मेरी कुतियाको क्यों मारता है? अैसा कहते हुअे अुसने मेरे गाल पर दो तमाचे जड़ दिये। अुस कुमुहूर्तका असर शायद अितनेसे ही खतम होनेवाला नहीं था। अतः अुसी क्षण बाजारसे केशू भी आ पहुँचा। *केशूका मैं लाड़ला ठहरा! अिसलिअे* अुसने मेरा पक्ष लिया। क्या हो रहा है यह पूछनेकी प्रस्तावनाके तौर पर अुसने गोंदूकी पीठमें अेक घूँसा लगाया। हमारा शोरगुल सुनकर घरके सब लोग अिकट्ठा हो गये। अुस परिस्थितिमें औरोंकी अपेक्षा मैं ही वहाँ सर्वज्ञ था। अतः मेरा ही दिमाग ठिकाने था। खाये हुअे तमाचे भूलकर मैंने हँसते-हँसते सारा माजरा ब्यौरेवार सबको कह सुनाया और जब देखा कि सब लोग अुसकी चर्चा करनेमें मग्न हो गये हैं तो अुस मौकेसे लाभ अुठाकर मैं चुपचाप 'मोचनगढ़' अुपन्यास भाभीसाहबके कमरेमें रख आया!

३५

छोटा होनेसे!

ठेठ बचपनसे केशूका मेरे प्रति विशेष पक्षपात था। अिससे वह मुझ पर कुछ-कुछ अभिभावकत्व भी जताता था। अुसे सन्तोष हो अितनी परस्तिश मुझे करनी चाहिये वह कहे सो काम करना चाहिये, अुसे जो पसन्द हो वही मुझे भी पसन्द होना चाहिये, अुसकी जिससे दुश्मनी हो अुसकी निन्दा मुझे करनी चाहिये दुश्मनकी गुप्त बातें चाहे जहाँसे प्राप्त करके अुसको बतानी चाहियें। फिर यदि केशू मुझे पीटे तो अितना ही नहीं कि मैं अुससे झगड़ा न करूँ, बल्कि मेरे पिटते समय अगर कोअी दया करके मुझे छुड़ाने आ जाय, तो अुससे मुझे कह देना चाहिये कि, "केशू मुझे भले ही पीटे तुम्हें बीचमें पड़नेकी कोअी ज़रूरत नहीं है!"—अैसे अैसे अनेक काम मुझे करने पड़ते। और य सब मैं अेक तरहकी राजी-खुशीसे करता। सेनापतिके कठोर हुक्मका पालन करनेमें अेक सैनिकको जो कर्तव्य पालनका सन्तोष मिलता है वैसा सन्तोष मैंने आत्मसात् कर लिया था। मैंने तो अितना अद्भुत और आदर्श अनुयायीपन ग्रहण कर लिया था कि केशूमें जब सदाचारका अुबाल अुठता तो मैं मर्यादानिष्ठ वैष्णव बन जाता जब शृंगारयुक्त पद गानेकी धुन अुस पर सवार होती तब मैं भी रसिक बन जाता जब अिसके कारण अुसे पश्चात्ताप होता तो मैं भी अुसी क्षण पश्चात्ताप करने लगता। अिस प्रकारके अपूर्व आदर्श और अनुयायीपनकी मैंने अपनेको आदत डाली थी। अुसमें से जितना हिस्सा अच्छा था वह अब भी मुझमें मौजूद है और शायद अुसका कुछ बुरा असर भी मुझमें रह गया होगा।

अिस प्रकारकी साधनाका अेक परिणाम तो मैं आज स्पष्ट देखता हूँ कि जब कोअी व्यक्ति मुझसे बातें करता है, तो मैं तुरन्त ही अुसके प्रति समभाव धारण करके अुसकी बातको अच्छी तरह समझ लेता हूँ। अितना ही नहीं कि मैं अुसकी मनोवृत्तिको समझ सकता हूँ, बल्कि अुस वृत्तिको बहुत कुछ अपनेमें महसूस भी कर सकता हूँ। अिससे हरअेक पक्षका पहलू और अुसकी खूबी सामान्य लोगोंकी अपेक्षा मेरी समझमें जल्दी आती है। नतीजा यह है कि जब तक मैं अपने मनमें किसीके प्रति प्रयत्नपूर्वक गुस्सा पैदा नहीं कर लेता तब तक वह (गुस्सा) मेरे मनमें नहीं आता।

मैं जैसे-जैसे केथूका आदर्श अनुयायी बनता गया वैसे-वैसे अुसकी तानाशाही भी बढ़ती गयी। प्रेम तो स्वभावसे ही हुक्म चलानेवाला होता है। अुसमें फिर यथेच्छसि तथा कुरु वृत्तिवाला मुझ जैसा अनुयायी मिले तो तानाशाहीको दूसरा कौनसा पोषण चाहिये? अिस प्रकार मैं अपने अनुभवसे सीख गया हूँ कि जालिम यदि जालिम बनता है तो अुसका कारण गुलामकी गुलामी वृत्ति ही है। अेक अगर नरम रहता है तो दूसरा गरम क्यों न बन जाय?

अपने अिस बचपनके अनुभवके कारण मुझे किसी पर हुकूमत चलाना जरा भी अच्छा नहीं लगता। दूसरेके विकासके लिअे मैं हमेशा अपने आपको दबाता रहता हूँ। मेरे अिस स्वभावके कारण कअी लोग अपनी मर्यादाका लाँघकर मेरे सिर पर सवार हो जाते हैं। जब तक मुझसे बर्दाश्त होता है, मैं अुनको वैसा करने भी देता हूँ लेकिन आगे चलकर जब झगड़ा होनेकी नौबत आती है तो सबको ताज्जुब होता है। दुनिया दो ही वृत्तियाँ जानती है — दूसरों पर सवार होना या दूसरोंको अपने अूपर सवार होने देना। या तो डरकर दूसरेको अपनेसे अूँचा समझना या स्वयं हाकिम बनकर दूसरेको तुच्छदास नीचा समझना। समान भावसे सबका समान समझने और अपनी मर्यादाका पालन करनेकी कला बहुत ही कम लोगोंमें पाअी

आती है। जहाँ मिले वहाँ नाजायज फायदा ुठाना और जहाँ अपना बस न चले वहाँ नरम बनकर दूसरेके वशमें हो जाना यही नियम सर्वत्र दिखाजी देता है। Looking up और Looking down यानी भय या आदरसे दब जाना अथवा अधिकारमद या घमंडसे दूसरोंको दबा देना—ये दो ही तरीके सर्वत्र दिखाजी देते हैं। Looking level यानी समानताकी वृत्तिसे केवल सहज संबंध रखनेका तरीका बहुत ही कम पाया जाता है।

मेरी सौम्यताके कारण लोग जब मुझ पर हावी होने लगते हैं, तब या तो मुझे अपना बढ़ाया हुआ संबंध धीरे-धीरे कम करना पड़ता है या बिलकुल तोड़ देना पड़ता है। अैसा करनेसे प्रेमकी स्थिरता नहीं रहती और जिसका मुझे बहुत दुःख होता है। खुद होकर किसीके साथ संबंध प्रस्थापित न किया जाय लेकिन अगर अेक बार संबंध प्रस्थापित हो गया तो वह सारी जिन्दगी तक बराबर टिकना चाहिये यह मेरा खास आदर्श है। किसी कारण जब जिस आदर्शका पालन करना असंभव हो जाता है या ुसमें खींचातानी होने लगती है तो मुझे अत्यंत दुःख होता है असह्य वेदना होती है। लेकिन मैं दुनियाके स्वभावको कैसे बदल सकता हूँ? अैसी परिस्थिति पैदा होनेमें जिस हद तक मेरा संकोचशील स्वभाव जिम्मेदार हो ुस हद तक मुझे अपनेमें सुधार करना चाहिये। मनुष्यको अैसा लगता है कि वह बहुत प्रयत्नशील है लेकिन स्वभावको बदल डालना सचमुच ही बहुत कठिन है। खैर!

भेदाकी जितनी गुलामी करनेके बाद मुझे ुसके खिलाफ सविनय विद्रोह करना पड़ा। [ुस समय गांधीजी या ुनके तत्त्वज्ञानकी जानकारी मुझे कहाँसे होती?]

। माँकी सिखा तो यह थी कि जिस तरह लक्ष्मणने रामचंद्रजीकी सेवा की थी ुस तरह हमें अपने बड़े भाजियोंकी सेवा करनी चाहिये।

हमसे अुम्रमें जो भी बड़े हों वे सब हमारे गुरुजन हैं। हमें अुनके वशवर्ती रहना चाहिये। हमें अैसा कुछ भी करना या बोलना नहीं चाहिये, जिससे अुनका अपमान हो। माँका यह अुपदेश मेरे मन पर अच्छी तरह अंकित हो गया था। अतः अब मेरे मनमें विद्रोहका खयाल पैदा हुआ तो मैं अिसी बातका विचार करने लगा कि सविनय विद्रोह कैसे किया जाय जिससे केशूका अपमान भी न हो और अुसे यह भी मालूम हो जाय कि अुसकी आज्ञा मुझे मञ्जूर नहीं है। अतः अब केशू मुझे कोअी हुक्म देता और वह मुझे पसन्द न होता, तो अत्यन्त नम्रतासे मैं अुससे कह देता कि देखो केशू तुम्हारा कहना म हमेशा मानता हूँ लेकिन यह बात मुझसे नहीं होगी। केशूकी अवज्ञा हमारे घरमें कोअी भी नहीं करता था अिसलिअे मेरे लाख समझाने पर भी अुसको तो मेरे जवाबमें अपनी मानहानि ही महसूस होती। अतः वह नाराज होकर मुझे पीट देता। कभी-कभी वह मेरे गालमें अैसी चुटकी काटता कि खून ही निकल आता। कभी वह मुझे भूखे रहनेकी सजा फ़रमाता। धिक्कारना और तिरस्कार करना तो साधारण बात थी। मैं यह सब सह लेता और दूसरे ही क्षण यदि वह कोअी मामूली काम करनेको कहता तो अुसे दूने अुत्साहसे कर डालता। केशूका सिर हमेशा दर्द करता था। गुस्सेमें आकर मुझे वह पीटता और अपने बिस्तर पर जाकर लेटता तो तुरन्त ही म अुसका सिर दबाने जाता। केशूका स्वभाव महादेव जैसा शीघ्रकोपी किन्तु आशुतोष था, अुसमें विवेक तो नाममात्रको भी नहीं था। अिसलिअे बार-बार यही नाटक होता रहता।

अन्तमें मेरी सहनशीलताकी विजय हुअी। मुझे अपनी स्वतन्त्रता मिल गयी। अिसका दूसरा भी अेक कारण था। बचपनमें घरके सब लोग मुझे बिलकुल बुद्धू समझते थे। वास्तवमें अिसमें मेरा कोअी क़सूर नहीं था। मैं किसीके सामने अपनी बुद्धिमत्ताका प्रदर्शन नहीं करता था और मेरी तरफ ध्यान देनेकी बात भी किसीको नहीं सूझी

रटनेकी पद्धतिमें अुसको बहुत ही विश्वास था, लेकिन मुझे कविताको छोड़ और कोअी चीज रटना बिलकुल पसन्द न था। स्कूलमें तो आज सबक देते और कल तक वह तैयार हो जाता तो काफी था। लेकिन केशूको जल्दीसे आम पकाने थे। अुसने कहा, 'ये शब्द अभी मेरे सामने ही रट डाल।' मुझे वह क्योंकर पसन्द आता? जिस तरह कछुआ अपने पैर और सिर अपने अन्दर खींच लेता है अुस तरह मैंने अपना चित्त अन्दर खींच लिया और मनमें कहा 'ले अब मुझसे जो लेना हो सो ले! मैं भी देखता हूं कि तेरी कहां तक चलती है।' अंग्रेजी वर्णमालाके छब्बीस अक्षर तो मुझे आते ही थे क्योंकि मराठी वर्णमालाकी पुस्तकमें अंग्रेजीके अक्षर भी छपे हुअे रहते थे। अतः भाषांतर पाठमालाके पहले ही पाठका पहला शब्द लेकर मैं रटने बैठ गया

अेस् आअि टी सिट्, म्हणजे बसणें (यानी बैठना)
अेस् आअि टी, सिट् म्हणजे बसणें
अेस आअि टी सिट् म्हणजे, बसणें

कुछ समय बीतनेके बाद केशूने पूछा "सिट् यानी क्या?" मुझे जवाब कहांसे आता? केशूको गुस्सा आया। कहने लगा "यह अेक ही शब्द पच्चीस बार रट डाल।" दाहिने हाथकी अंगुलियां पकड़कर मैं गिनता जाता और रटता जाता

अेस् आअि टी सिट्, म्हणजे बसणें
अेस् आअि टी सिट् म्हणजे बसणें
अेस् आअि टी सिट् म्हणजे बसणें

पच्चीस दफा रट लिया। केशूने फिर पूछा "सिट् यानी क्या?" मैं तो पहले जितना ही मासूम था। जवाब क्योंकर देता? मेरी जांघमें अेक चुटकी काटकर केशूने कहा "अब सौ बार रट!" सौ बार गिननेके लिअे तो दोनों हाथोंकी अंगुलियोंका अिस्तेमाल

करना चाहिये। अतः मूर्तिकी तरह दोनों हाथ घुटनों पर रखकर मैं गिन-गिनकर रटने लगा

> अेस् आअि टी, सिट्, म्हणजे बसणें
> अेस् आअि टी सिट् म्हणजे बसणें
> अेस् आअि टी, सिट् म्हणजे बसणें

सौ बार रट लिया। केशूने पूछा सिट् यानी क्या?' अबकी बार मैं लाचार हो गया। मुंहसे बरबस निकल ही गया 'बसणें'। तो केशूको कुछ आशा बंधी और अुसने पूछा सिटका स्पेलिंग (हिज्जे) क्या?' अैसी अुलटी छलांग क्या बिना ध्यानके मारी जा सकती थी? मैं शून्य दृष्टिसे अुसकी ओर देखता ही रहा। अिस बार केशूने बहुत सब्र किया, पीटनेके बदले अुसने मुझे सोचनेका मौका दिया और कहा, देख सिट् शब्दका अुच्चारण किन-किन अक्षरोंको मिलानेसे होता है? सिट् शब्दमें कौन-कौनसे अुच्चारण समाये हुअे हैं?

मुझे दिमागका अुपयोग तो करना ही न था। ओंठ हिलाअूंगा, मुंहसे आवाज निकालूंगा, और बहुत हुआ तो अंगुलियां चलाअूंगा, बस अितनी ही मेरी तैयारी थी। विचार करनेकी बात तो मने अपने अिकरारमें कहां शामिल की थी? मैं शून्य दृष्टिसे देखता ही रहा। मेरी अुस दृष्टिमें न था डर, न था अुद्वेग और न थी शर्म। खेदका भी नाम न था। वह तो वेदान्तियोंके परब्रह्म जैसी निराकार निर्गुण, निश्चल निर्विकारी शून्य दृष्टि थी। पत्थरकी मूर्तिमें अैसी दृष्टि सहन हो सकती है, लेकिन जिन्दा मनुष्यमें क्या वह सहन होती? केशू अेक क्षण तक तो झेंप गया लेकिन दूसरे ही क्षण अुबल पड़ा। अुसने मेरा सिर पकड़कर नीचे झुकाया और दूसरे हाथसे पीठ पर कितने ही मुक्के लगाये। क्रोधकी भाप क्रियाके द्वारा निकल जानेके बाद अब मुंहसे निकलने लगी 'रडघा म्हारडघा (मनहूस बैल!)

तू क्या पढ़ेगा? तू तो निरा लट्ठ बैल है। अिस तरह बहुत कुछ बकता रहा। लेकिन मुझे कहाँ अिसकी परवाह थी? आखिरकार केशूने कहा 'अब तीन सौ बार रट।"

मेरी मशीन फिर चलने लगी

अेस् आअि टी सिट्, म्हणजे बसणें
अेस् आअि टी सिट्, म्हणजे बसणें —

अिस बार मैंने अपने मंत्रमें अेक सुधार किया। मैंने सोचा, कितनी दफ़ा रटा है यह अँगुलियों पर गिना ही क्यों जाय? केशूके धीरजकी अपेक्षा मेरा धीरज अधिक था। अतः जब तक वह न टोके तब तक रटते रहनेका मैंने तै कर लिया।

अेस् आअि टी सिट् म्हणजे बसणें
अेस् आअि टी सिट्, म्हणजे बसणें —

अब तो मेरे लिअे पुस्तककी तरफ़ देखना भी ज़रूरी न था। चाहे जिधर देखता मनमें चाहे जो सोचने लगता, सागरकी लहरोंका गीत सुनाअी दे रहा था अुसे ध्यानपूर्वक सुनता पाससे बिल्ली गुज़रती तो अुस पर पेन्सिल फेंकता। सिर्फ़ मुँह चलता रहा कि बस बाकी तो अपने राम बिलकुल स्वतंत्र थे। यह स्थिति तो बड़ी सुविधाजनक थी। आँखोंकी पलकें हिलती हैं, नाकसे साँस चलती है शरीरमें खून बहता है, वैसे ही मुँह भी चलता रहे तो क्या हर्ज है?

अेस् आअि टी सिट् म्हणजे बसणें
अेस् आअि टी सिट्, म्हणजे बसणें —

अिस तरह न जाने कितना समय बीत गया। आखिर केशूने फिर कहा 'बोल! मैंने तुरन्त ही कह सुनाया 'अेस् आअि टी, सिट् म्हणजे बसणें। मुझे यदि कोअी नींदमें भी बोलनेको कहता तो भी मैं बोल देता जितना वह पक्का हो गया था। मुट्ठी मोड़नेसे

जैसे हथेलीमें वहीकी वही सिलवटें पड़ती हैं, वैसी ही मेरी जबान और ओठोंको आदत पड़ गयी थी। लेकिन बदकिस्मती केशूकी, कि अुसने मुझे फिर अुलटा सवाल पूछा, 'बैठनेके लिअे कौनसा शब्द है?' जब दिमागके सभी खिड़की-दरवाजे बन्द रखे हों, तो अैसे अटपटे सवालोंका जवाब कहांसे निकलता? केशू अेकदम निराश हो गया। मैंने ठंडे दिलसे पूछा 'और रट डालूं?' मैंने मान लिया था कि अब तो बेहिसाब पिटाओी होगी और सारे शरीरकी चमड़ी जहरकी तरह हरी हो जायगी। अुस मारके स्वागतकी मने तैयारी भी पूरी की थी — आंखें मूंद लीं छाती पेटमें दबा ली, सिर कंधोंके अन्दर घुसेड़ लिया। हां विलम्ब करनेसे क्या लाभ? जो कुछ होना है सो झट हो जाय तो अच्छा ही है!

लेकिन दुनियामें कभी बार कुछ अनपेक्षित घटनायें हो जाती हैं। चिढ़, निराशा और क्रोधका ज्वार अितना बढ़ गया कि केशू अन्धा होनेके बदले अेकदम शान्त हो गया। वह बोला (और अुसकी आवाजमें कतअी क्रोध या जोर न था) 'अच्छा, तू जा सकता है।' मैं भी अिस तरह शान्तिसे अुठा जैसे कुछ हुआ ही न हो, और झटसे पीठ फेरकर चलता बना।

अुस दिनसे केशूने मेरे सामने अंग्रेजीका नाम न लिया। आगे चलकर कओी साल बाद अुसने अेक दिन रातको, जब मैं सो गया था मेरी मेज पर मेरा लिखा हुआ अेक सुन्दर अंग्रेजी निबन्ध देखा तो अुसने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी। दूसरे दिन स्टेशन पर जाकर व्हीलर कम्पनीकी स्टॉलसे स्कॉटकी 'मार्मियन' खरीदकर अुसने मुझे भेंट की। आज भी वह पुस्तक मेरे पास है और जब-जब अुस पर नजर पड़ती है तब-तब मुझे अपने बचपनके वे दिन याद आ जाते हैं। 'मार्मियन' से कओी अच्छी-अच्छी पंक्तियाँ याद करके मैंने केशूको सुनायी थीं।

३७

देशभक्तिकी झलक

देशभक्तिकी तथा श्री शिवाजी महाराजकी बातें मैंने पहले-पहल पूनामें सुनी थीं। अुस वक्त मैं मराठी दूसरी कक्षामें पढ़ता था। पूनामें हमारे घरके पास ही बाबा देशपांडे नामक अेक पुलिस हवलदार रहते थे। हमारे यहाँ वे अक्सर आया करते थे। अुनकी स्त्री भी हमारी माँ और भाभीसे मिलने आती थी। बहुत भली औरत थी। बाबा हमारे यहाँ आकर केशूको गोंदूको और मुझे अपने पास बैठाकर अैतिहासिक कहानियाँ सुनाया करते। देशभक्ति मनुष्यका पहला कर्तव्य है, देश पर मर मिटनेको हमें तैयार रहना चाहिये आदि बातें हमें समझाते। यही बाबा देशपांडे आगे चलकर बम्बओ प्रान्तके सी० आअि० डी० विभागके मशहूर अधिकारी बने। महाराष्ट्रके क्रान्तिकारी आन्दोलनकी जड़ खोज निकालनेमें अिन देशपांडे महाशयका हिस्सा कुछ कम नहीं था। अैसे व्यक्तिके मुँहसे देशभक्तिके शब्द पहले-पहल मेरे कानमें पड़े, यह कितना अजीब था!

पूनासे शाहपुर आनेके बाद हमने जीवनियों तथा अुपन्यासोंमें शिवाजी महाराजका अधिक अितिहास पढ़ा। फिर तो शामको घूमने जाते तब वहाँकी गुम्मटकी टेकरी पर शिवाजी और अफ़ज़लखाँकी लड़ाअी खेलते। गुम्मटकी टेकरी पर पत्थरकी खदानें खोदी गयी थीं। अुनमें से पत्थर लेकर हम अेक-दूसरे पर फेंकते, लेकिन काफ़ी दूरी पर खड़े रहते थे अिसलिअे किसीको पत्थर लगता न था।

यह तो तबकी बात है जब मैं मराठी चौथी कक्षामें पढ़ता था। हम अंग्रेजी पहलीमें गये तब हमारी देशभक्तिने भाषणोंका रूप लिया। घरके पाखानेमें जहाँ घरके कोअी अन्य लोग नहीं आते थे

हम तीन चार मित्र अिकट्ठे होते और बारी-बारीसे भाषण देते। भाषणोंमें शिवाजी महाराजकी स्तुति और अंग्रेजों तथा नये जमानेको गालियाँ देना जितनी ही बातें रहती थीं। अंग्रेजोंके खिलाफ़ लड़ना चाहिये अितना तो हमारा निश्चय हो चुका था लेकिन अुसके लिअे शरीर मजबूत होना चाहिये। अतः हमने कसरत और कुश्ती शुरू की। हमारे मंडलमें रागू नामका अेक लड़का था। वह अुम्रमें मुझसे छोटा था फिर भी कुश्तीमें मुझे सदा हराता अितना ही नहीं बल्कि मुझे पीटता और सताता भी था। हारनेके बाद केशूकी झिड़कियाँ भी सुननी पड़तीं। अतः मैंने कुश्ती लड़ना छोड़ दिया और अुस मंडलको भी छोड़ दिया। हर रोजका अपमान कौन बर्दाश्त करे?

३८

खूनकी खबरें

शाहपुरकी अंग्रेजी पाठशालामें मैं पढ़ रहा था। शायद दूसरी कक्षामें था। मेरे पैरमें फोड़ा हुआ था। अिसलिअे हररोज लँगड़ाता-लँगड़ाता स्कूल जाता था। रास्तेमें अेक ठठेरा मुझ यों स्कूल जाते देख मुझ पर तरस खाता। कभी-कभी मेरी स्कूल-विद्यार्थी तारीफ़ भी करता। अतः अुस आदमीके प्रति मेरे मनमें कुछ सद्भाव पैदा हो गया था। अगर मुझे बरतन खरीदने होते तो मैं अुसीकी दूकानसे खरीदता।

अेक दिन अुसकी दूकानके खम्भे पर 'केसरी-आदा पत्रक' शीर्षकसे छपा हुआ अखबारका अेक छोटा-सा टुकड़ा चिपकाया हुआ मैंने देखा। चलते चलते मैं देख रहा था कि यह क्या है, अितनेमें ठठेरेने मुझे बुलाया और कहा 'देखो बेटा यह पढ़ो तो सही! कैसा गजब है! न जाने अिस देशमें क्या होनेवाला है!'

पढ़ने पर पता चला कि महारानी विक्टोरियाकी डायमंड ज्युबिलीके दिन रातके वक्त पूनामें दो गोरोंका खून हुआ था। डायमंड ज्युबिलीके

सार्वजनिक अुत्सवमें हमारी पाठशालाकी ओरसे हमने अेक-दो पद गाये थे। लेकिन पूनाका गायन तो और ही किस्मका निकला! पूनामें जब पहले-पहल प्लेग (ताअून) शुरू हुआ तो घबरायी हुअी सरकारने शहरमें फ़ौजी बन्दोबस्त कर दिया था। लोग बहुत परेशान हुअे। अुनको लगा कि प्लेग तो सहन किया जा सकता है, लेकिन यह सरकारी बन्दोबस्त किसी भी तरह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। अिसी कारण प्लेग-अधिकारीकी हत्या हुअी थी। लोग कहने लगे हो न हो यह किसी देशभक्तका काम है। बादमें तो लोकमान्य तिलक महाराजको सरकारने कारा वासकी सजा दी। सरदार नातू बंधुओंको राजबन्दियोंकी हैसियतसे बेलगांवमें लाकर रखा। गांवके लोग कहते, तिलक तो शिवाजीके अवतार हैं। शिवाजीके चार साथी थे तानाजी कंक तानाजी मालुसरे और अन्य दो। ये नातू बंधु अुन्हीं साथियोंके अवतार हैं।' दूसरे दो साथियोंके कौनसे नाम हमने निश्चित किये थे सो आज याद नहीं। सरकारकी तरह हमारे बाल-मनमें तो यही बात पक्की हो गयी थी कि तिलक महाराजकी प्रेरणासे ही ये हत्यायें हुअी हैं। लोगोंका दुख दूर करनेकी खातिर अपनी जान पर खेलनेकी प्रेरणा लोकमान्यके सिवा भला और किससे मिल सकती थी? अिसके लिअे हमारे पास कोअी सबूत नहीं था, पर कल्पना करनेके लिअे सबूतकी जरूरत भाड़ ही होती है? देश-हितका जो भी काम होता अुसका संबंध, बिना किसी सबूतके तिलक महाराजके साथ जोड़ना हम जैसोंको सहज ही अच्छा लगता था।

थोड़े दिनों बाद अण्णा पूनासे आया। अुसने तो कुछ और ही बात बतायी। अुसने कहा रैंड साहब अस्पतालमें मरे, अुसके पहले वे होशमें आये थे और अुन्होंने कभी बातें बतलायी थीं। अुन्होंने अपने क़ातिलको देखा था। अुनका खून करनेवाला आदमी कोअी गोरा ही था। किसी मेमके मामलेमें अुन दोनोंके बीच झगड़ा हुआ था और अुसीके कारण यह खून हुआ है। अिस खूनकी तहक़ीक़ात करनेवाले पुलिस साहबको

यह सब मालूम है लेकिन अुसने सब मामला 'हश्‌' (hush up) कर दिया है—दबा दिया है।'

फिर तो पूनासे रोजाना नयी-नयी खबरें आतीं। खबरोंके दो प्रवाह थे —अेक तो अखबारों द्वारा आनेवाली और दूसरी पूनासे आनेवाले मुसाफिरों द्वारा मिलनेवाली। यह तो साफ़ ही था कि लोग खानगी खबरों पर ज्यादा यक़ीन करते थे। यह बड़े मार्केकी बात थी कि लोग जो बातें करते वे अेक-दूसरेके कानोंमें। लेकिन अुस समय सभी लोग अेक-दूसरेके विश्वासपात्र थे।

फिर खबर आयी कि सरकारके गुप्तचर (सी० आअि० डी०) हर शहरमें घूम रहे हैं। फिर क्या था? हर अपरिचित व्यक्तिके बारेमें यह शक होने लगा कि वह सरकारका जासूस है। अिसी बीच लिंगायत लोगोंके दो जंगम साधु शाहपुर आये और दोनों हाथोंमें दो घंटियाँ लेकर अुन्हें बजाते हुअे शहरमें घूमने लगे। लोगोंने सोचा ये जरूर गुप्तचर ही होंगे। किसीने कहा कि अुनकी गेरुमी कफ़नीके अन्दर जासूसका तमगा भी किसीने देखा है। स्कूलके लड़कोंने यह बात सुनी तो अेक दिन गलीमें अुन बेचारे साधुओं पर काफ़ी मार पड़ी।

आगे चलकर सभी अफ़वाहें खतम हो गयीं और चाफकर भाअियोंके नाम रैंड और आयर्स्टके खूनके साथ जोड़े गये।

अिन दो हत्याओंके कारण कअी भारतीयोंको फाँसी पर लटकाया गया और कअियोंको कड़ी सजायें दी गयीं। खूनियोंकी खोज निकालनेमें सरकारकी मदद करनेवाले द्रविड़ नामक भाअियोंको जानसे मार डाला गया। अुनकी हत्या करनेवाले भी पकड़ गये और अुन्हें सजायें हुअीं। अिस षड्यंत्रमें हिस्सा लेनेवाला अेक आदमी अपनी सजा काटनेके बाद पुलिसके महकमेमें भरती हो गया। अिस तरह अिस मामलेने बहुत तूल पकड़ा था। अिस अरसेमें सरकारने अखबारों पर बहुत ही कड़ी पाबन्दियाँ लगायी थीं।

अेक क़ीमती सबक़ सिखाया था। मनुष्य चाहे जितना क्षुद्र हुआ हो, फिर भी अुसे जितना तो भान रहता ही है कि अुसका अपना काम हीन है। विष्णु मेरे पास ही बैठा था, लेकिन दुश्मनके साथ कैसे बोला जा सकता था? मैंने काग़ज़के टुकड़े पर अेक वाक्य लिखा 'मेरी ग़लती हुअी', और वह अुसकी गोदमें फेंका। जिससे वह खुश हो गया और हम फिर मित्र बन गये।

अुस लड़केके साथ लगभग चार महीने तक मेरी दोस्ती रही होगी। फिर तो मैं पिताजीके साथ सावंतवाड़ी चला गया। यह लड़का खराब है जितना तो मैं पहलेसे जानता था। अुसे मेरा सहारा चाहिये, यह देखकर ही मैंने अुसे अपने साथ दोस्ती करनेका मौक़ा दिया था। फिर भी अुसकी छूत मुझे किसी तरह न लगी। अुसके मुँहसे मैंने गंदी-से-गंदी बातें सुनी थीं। लेकिन चूँकि मैं अुसको अच्छी तरह जानता था, जिसलिये अुस वक्त मुझ पर अुनका कुछ भी असर नहीं हुआ। मगर यदि मैं कह सकता कि आगे चलकर अुन बातोंके स्मरणसे मेरी कल्पनाशक्ति जरा भी गन्दी नहीं हुअी तो कितना अच्छा होता!

दोस्त बननेकी कोशिशमें अुसने दुश्मनका काम किया। अुसने मेरे दिमाग़में जो गन्दगी भर दी अुसे धो डालनेके लिअे मुझे बरसों तक मेहनत करनी पड़ी। सुनी हुअी बातें अेक कानसे घुसकर दूसरेसे नहीं निकल जातीं। हमेशा प्यासा रहनेवाला दिमाग़का जिगर सभी बातोंको सोख लेता है। शिलालेख मिट सकते हैं, लेकिन स्मरण-लेख नहीं मिट सकते।

कबीरने अेक जगह कहा है मन गया तो जाने दो मत जाने दो शरीर। यानी जब तक हाथसे तीर नहीं छूटा है तब तक वह क्या नुक़सान कर सकता है? जिस सिद्धान्त पर भरोसा करके मैंने जीवनमें अपना बहुत नुक़सान कर लिया है। बहुतोंका यही अनुभव होगा। वास्तवमें जिसका सँभालना चाहिये वह तो मन ही है।

४०

अंग्रेजी वाचन

अेक दिन मेरे मनमें आया कि चाँदनीमें मनुष्यको पढ़ना आना ही चाहिये। जितनी मजेदार चाँदनी छिटकी होती है अुसमें पढ़ा क्यों नहीं जा सकता? अतः अेक कुर्सी लेकर मैं आँगनमें बैठा और अपनी लाँगमैनकी दूसरी रीडर पढ़ने लगा। अंग्रेजी दूसरी कक्षामें गये मुझे अभी बहुत दिन नहीं हुअे थे। मेरे दो-तीन पाठ ही हुअे थे। माँने पूछा 'बेटा दीयेके बिना रातमें क्या पढ़ रहा है?' मैंने जवाब दिया 'अपनी अंग्रेजी पुस्तक।'

बँगलेके मुसलमान माली नन्नूकी स्त्री माँके पास कुछ माँगने आयी थी। अुसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अितना छोटा लड़का और अंग्रेजी पढ़ता है! वह दौड़ती हुअी गयी और आसपासके कुछ लोगोंको यह अद्भुत दृश्य देखनेके लिअे बुला लायी।

यह बात तबकी है जब हम सावनूरमें थे। सावनूर हुबलीकी ओर अेक छोटा-सा देशी राज्य था। अुसका राजा मुसलमान था। यावल्गी स्टेशनसे सावनूर जाते हैं। वहाँकी भाषा कन्नड़ है। पिताजी काफ़ी कन्नड़ जानते थे। माँ भी थोड़ा-बहुत समझ सकती थी। लेकिन मेरे लिअे तो वह जानवरोंकी भाषासे ज़रा भी भिन्न न थी। घरमें नौकर मुसल्मान थे अतः मेरा काम अच्छी तरह चल जाता था। लेकिन बरतन कपड़े सब मुसल्मानके हाथों धुले हुअे होनेसे माँको वे फिरसे धो लेने पड़ते। अिस काममें मैं माँकी काफ़ी मदद करता। यहाँकी मुसलमानी भाषा हिन्दी मराठी और कन्नड़ शब्दोंका विकृत मिश्रण होता है। अुर्दू शब्द अुसमें सिर्फ़ बीस प्रतिशत होंगे और अुनका अुच्चारण सुनकर तो अुन पर तरस ही आता है। आखिर हमें अेक लिंगायत नौकर मिला, जो हिन्दी

योल सकता था। वह अपने देहाती ढंगसे सुबह-शाम खूब गाता। अुसके मुँहसे सुने हुअे पदोंकी कुछ पंक्तियाँ अभी भी मुझे याद हैं।

बापू आप्पा अंग्रेजी पढ़ते हैं, यह देखनेके लिअे कभी लोग जमा हो गये। लेकिन चाँदनीमें अक्षर साफ़ दिखाओ नहीं दे रहे थे। पहला पाठ तो कंठस्थ था अिसलिअे मैं वह धड़ल्लेके साथ पढ़ गया। श्रोताओंके आश्चर्यकी सीमा न रही। दूसरे पाठमें हमारी गाड़ी कुछ धीमी पड़ी। आँखों पर जोर पड़नेसे (जी हाँ, घबड़ाहटसे नहीं!) अुनमें पानी आने लगा। माँने कहा भला चाँदनीकी रोशनीमें भी कहीं पढ़ा जाता है? रख दे वह किताब और चल खाना खाने।'

सभा विसर्जित हुअी और मुझे लगा कि चलो छूट गये। अिसके बाद जब तक हम सावन्तूरमें रहे, मैंने दिनमें या रातको फिर कभी हाथमें पुस्तक नहीं ली।

४१

हिम्मतकी दीक्षा

सावन्तूरकी ही बात है। हमारे घरके आसपास अिमलीके बहुत-से पेड़ थे। अिमली अच्छी तरह पक चुकी थी। मुझे अिमलीका शर्बत बहुत भाता था अिसलिअे माँने मुझसे कहा "दत्तू पिछवाड़े जो अिमलीका पेड़ है अुस पर बड़ी अच्छी अिमलियाँ पकी हैं, चल तुझे बतलाअूँ। अूपर चढ़कर थोड़ी नीचे गिरा दे तो गरमीके समय अुनका अच्छा शर्बत बन सकेगा।

मैं पेड़ पर चढ़ा। कुछ अिमलियाँ नीचे गिरायीं। लेकिन अच्छी पकी हुअी और मोटी-मोटी अिमलियाँ तो टहनियोंके सिरों पर ही होती हैं। मैंने हाथ बढ़ाये, खूब हिम्मत की, लेकिन अिमलियों तक मेरा हाथ न पहुँच पाया। माँको मुझ पर गुस्सा आया। वह बोली 'निरा डरपोक लड़का है! देखो तो, जिसके हाथ-पाँव

कैसे काँप रहे हैं! क्या यह सहिजनका पेड़ है जो टूट जायगा? अिमलीकी टहनी पतली हो तो भी टूटती नहीं है। अब अिस क्या कहूँ? निडर होकर आगे बढ़, नहीं तो खाली हाथ नीचे आ जा! अरी दैया अितना भी अिस लड़केसे नहीं होता! मेरी आँखोंमें अँधेरा छाने लगा — डरसे नहीं बल्कि शर्मसे।

कुछ लड़के जब शरारत करके अपनी जान खतरेमें डालते हैं तब माँ-बाप (और खासकर माँ) डरकर अुन्हें रोकना चाहते हैं, शरीरकी हिफ़ाज़त करनेकी ताकीद करते हैं और बच्चोंकी लापरवाहीसे नाराज हो अुठते हैं — यह सनातन नियम है। लेकिन जवानोंको तो यही शोभा देता है। अिसके बदले मेरा डरपोकपन मेरी माँको असह्य हो गया और अुसने मुझे बहुत झिड़का। मुझे लगा कि अिससे तो मैं यहीं मर जाअूँ तो अच्छा।

फिर तो मैं किस तरह आगे बढ़ा और अेक टहनीके बिलकुल सिरे पर पहुँचकर वहाँकी अिमलियाँ कैसे तोड़ लाया, अिसका मुझे कुछ भी ध्यान न रहा। यदि मैं कहूँ कि अुस दिनसे मैंने अिस तरहका डर छोड़ ही दिया तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आज जब मुझसे लड़के पूछते हैं कि 'अितना स्वार्थ-त्याग कैसे किया जा सकता है? हमारी 'करियर' बरबाद हो जायगी अुसका क्या? तब मैं अुनसे कहता हूँ तुम जैसे जवानोंको बहुत आगे बढ़नेसे हम बूढ़े लोग लगाम खींचकर रोकें यह करनेको कहें तो वह बात शोभा दे सकती है। लेकिन तुमको आगे बढ़ानेके लिअे हम अपने हाथोंमें चाबुक लें तो वह तुमको शोभा नहीं देता।

जब-जब मैं अिस वाक्यका अुच्चारण करता हूँ तब-तब शाहनूरका वह अिमलीका पेड़ और अुसके नीचे खड़ी हुअी मेरी माँकी मूर्ति मेरी आँखोंके सामने खड़ी हो जाती है।

४२

पनचाड़ी

साबनूरमें हम लगभग अेक महीना रहे होंगे। अेक दिन सबेरे मुझे जल्दी जगाकर पिताजी अपने साथ घूमने ले गये। कहाँ जाना है, जिसका मुझे कोअी पता न था। दो चार और आदमी साथमें थे। हम खूब चले। अन्तमें आम रास्ता खतम हुआ तो हम खेतोंमें से चलने लगे और देखते-देखते अेक सुन्दर बगीचेमें पहुँच गये। जहाँ देखता वहाँ नीबूके पेड़ दिखाअी देते। सब पेड़कि पत्ते आम तौर पर हरे होते हैं, लेकिन नीबूके पत्तोंकि रंगकी खूबी कुछ और ही होती है। सोनेके पास सिर्फ रंग ही होता है जब कि नीबूके जिन चमकीले पत्तोंके पास रंगके साथ खुशबू भी होती है। फिर नीबू भी कितने बड़े बड़े! मुसरो पहले तो मैंने केवल गोल नीबू ही देखे थे, लेकिन यहाँके नीबू लम्ब गोल थे। मैंने पिताजीसे कहा "देखिये वह नीबू कितना बड़ा और सुनहला हुआ है!" मेरे मुँहसे यह वाक्य निकला ही था कि तुरन्त वह नीबू मेरे हाथमें आ पड़ा। शिष्टाचारकी खातिर मैंने मालीसे कहा, 'तुम लोगोंकी मेहनतका फल म मुफ्तमें क्यों ले लूँ?" तो हमारे साथके मलर्कने कहा, "यह वाड़ी सरकारी है। जिसे देखनेके लिये ही आप लोगोको विशेष निमंत्रण देकर यहाँ बुलाया गया है।" फिर तो क्या? मरी नीयत बिगड़ गयी। कोअी अच्छा फल दिखाअी देता ती मैं झट उसे तोड़ लेता था अुसमें मुँह लगाता।

पास ही अेक खेतमें लौकीकी बेली थी। बेलीका मण्डप काफ़ी अूँचा था और अुसमें तीन लौकियाँ अूपरसे जमीन तक लटक रही थीं। अुतनी बड़ी और लम्बी लौकियाँ अुससे पहले मैंने कभी नहीं देखी थीं और अुसके बाद भी देखनेको नहीं मिलीं। मैंने कहा, "जिनमें से

अेक हमारे घर भेज दो, मेरी मांको यह बतलाना है।" माली बड़ा भुलबुला था। वह बोला, सरकार अपने हाथसे ही तोड़ लीजिये न!" और अुसने मेरे हाथमें हँसिया दे दिया। मैं अपने पैरोंकी अँगुलियों पर खड़ा हुआ। बायें हाथसे लोकीका सहारा लिया लेकिन हँसिया डंठल तक थोड़े ही पहुँचनेवाला था! यह देखकर सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े।

हम कुछ आगे बढ़े। यहाँ नारियलके पेड़ थे। अुन परसे कुछ डाब (कच्चे नारियल) तुड़वाकर हमने अुनका पानी पीया और अन्दरसे पतला मक्खन जैसा खोपरा (गरी) निकालकर भी खाया। कहते हैं कि नारियलका केवल पानी ही नहीं पीना चाहिये अुसके साथ कुछ गरी भी अवश्य खानी चाहिये। लेकिन वह गरी अितनी मीठी थी कि अुसके खानेके लिये किसी नियम या आग्रहकी जरूरत ही नहीं थी।

हम अेक घंटेसे भी ज्यादा देर तक घूमे होंगे। चारों तरफ सुंदर हरियाली फैली हुअी थी। जैसे-जैसे धूप चढ़ती गयी, यहाँकी छायाकी मीठी ठंडक ज्यादा आनंद देने लगी। मैं मजेसे घूम रहा था कि अितनेमें बहुत दूर तक फैली हुअी मंडप जैसी अेक झोंपड़ी दिखायी दी। मैंने पूछा, अैसी विचित्र और ठिंगनी झोंपड़ी क्यों बनायी है? आदमियोंकी बात तो दूर रही, अिसमें तो ढोर भी आरामसे खड़े नहीं रह सकेंगे। पिताजीने कहा पगले यह कोअी झोंपड़ी नहीं है अिसे नागरबेलीका मंडप कहते हैं। अन्दर जाकर देख तो तुझे खानेके कोमल पान दिखायी देंगे। ये पान धूप नहीं सह सकते, अिसलिये अैसा मंडप बनाना पड़ता है।

मैं अन्दर जानेके लिये अधीर हो अुठा लेकिन अन्दर जानेका दरवाजा दिखायी नहीं दे रहा था। बहुत दूर जाने पर आखिर दरवाजा मिल गया। बछड़ेकी तरह मैं अन्दर घुसा। ओहो! कैसा मजेदार दृश्य था! दूर तक फैली हुअी लम्बे बाँसोंके खंभोंकी कतारें किसी

अिधर अुधरकी गप्पें शुरू कीं। जनाबकी जबानमें अितनी मिठास थी कि वे घंटा भर बैठ रहे तो भी न अुन्हें समयका पता चला और न हमें ही। फिर अुन्होंने दवाअी देनेका विचार किया। अँगरखेकी कटकटी हुअी थैली जैसी लम्बी जेबमें से अेक शीशी निकाली। अुस अेक ही शीशीमें अनेक तरहकी गोलियाँ थीं। हकीम साहबने शीशीकी सारी गोलियाँ बायें हाथकी हथेली पर अुड़ेल लीं और अेक अेक गोली दाहिने हाथकी अँगुलियोंमें लेकर सोचने लगे। दो अँगुलियोंमें गोलीको घुमाते जाते और सोचते जाते। अन्तमें कुछ निर्णय करके अुन्होंने अेक गोली मेरे हाथमें दी। लेकिन मैं अुसे मुँहमें डालता अुससे पहले ही अुन्होंने अपना विचार बदल दिया और कहने लगे, 'ठहरो आज यह नहीं चाहिये। कलसे यह दूँगा। आज दूसरी देता हूँ।"

फिर अुनकी अँगुलियोंमें अलग अलग गोलियाँ फिरने लगीं। आखिर अेक गोली निश्चित हुअी और अुसे मैं निगल गया। विलायती दवाओंकी अपेक्षा हमारा देशी वैद्यक अच्छा है। अिसमें पथ्यसे अवश्य रहना पड़ता है लेकिन देशी दवाअियाँ स्वादिष्ट और रुचिकर होती हैं।

दूसरे दिन अुसी वक्त हकीम साहब फिर आये। मैं तो बिस्तरमें लेटे लेटे अुनकी राह ही देख रहा था। अपने स्वभावके मुताबिक वे हर रोज अंदर आते ही क्यों छोटे महाराज! कहकर मेरी तबीयतका हाल पूछते पथ्यकी सूचनायें दे देते और फिर बातोंमें लग जाते। पिताजीको रामायणकी अपेक्षा श्रवणभक्ति विशेष प्रिय थी। हकीम साहबकी हिन्दुस्तानी भाषा बिलकुल ही आसान थी। अुसमें कन्नड़की अपेक्षा मराठीके शब्द ही ज्यादा रहते। अतः अुनकी बातोंमें मुझे बहुत मजा आता। किसी दिन किसी मशहूर डाकूकी बातें करते तो कभी देश-देशान्तरका अपना अनुभव बयान करते।

अेक दिन मैंने अुन्हें सरकारी बगीचेमें देखी हुअी लौकीकी बात बतायी। हकीम साहब तुरन्त ही बोल अुठे, अरे, अुसमें तुमने कौन-सी

बड़ी चीज़ देख ली ? मैंने अेक जगह देखा था कि मालीने लौकीकी बेलको मंडप पर चढ़ानेके बदले ज़मीन पर ही फैलाया है। अुसकी अेक लौकी जैसे बढ़ने लगी वैसे ही अुसने अुसके आगे ज़मीन पर अेक कील गाड़ दी। लौकी कुछ टेढ़ी होकर बायीं ओर बढ़ने लगी। अुस दिशामें अुसे कुछ बढ़ने देनेके बाद अुसने फिर वहाँ अेक कील ठोंकी, जिससे वह फिर दाहिनी ओर मुड़ी। अिस तरह मालीने कभी बार कीलें गाड़कर अुस लौकीको साँपकी चालकी तरह चक्करदार शक्ल दी। अुस समय अुस दस हाथ लम्बी लौकीको देखनेका मज़ा कुछ और ही था।"

अकबर और बीरबलके किस्सोंका तो हकीम साहबके पास बड़ा भारी खज़ाना ही था। बीरबलने अेक बेलीसे लटकते हुअे छोटे-से कद्दूके नीचे अेक छोटे-से मुँहवाला बड़ा मटका लटकाया और कद्दूको मटकेके अन्दर बढ़ने दिया। जब मटका कद्दूसे बिलकुल भर गया तो अूपरसे डंठल काटकर अुसने वह कद्दू बादशाहके पास भेंटके तौर पर भेज दिया और यह कहला भेजा कि, आप अपने बुद्धिमान दरबारियोंसे पूछिये कि यह कद्दू अिस मटकेमें कैसे भर दिया गया होगा और मटकेको बगैर फोड़े अन्दरका कद्दू कैसे बाहर निकाला जा सकता है ? अैसी अैसी कभी कहानियाँ मने हकीम साहबसे सुनी।

यह कहना मुश्किल है कि मैं हकीम साहबकी दवासे चंगा हुआ या अुनकी बातोंसे। अितना सही है कि अुनके किस्सों-कहानियोंके कारण जल्दी चंगे होनेकी मुझे परवाह नहीं रही। बल्कि यह डर लगा रहता था कि चंगा हो जाअूँगा तो हकीम साहबका आना बन्द हो जायगा और फिर अिन दिलचस्प कहानियोंका अकाल पड़ जायगा।

हकीम साहब अपनी विद्यामें बहुत प्रवीण थे। मेरी माँ हमारे सगे-संबन्धियोंमें से कअियोंकी बीमारियोंका वर्णन करके हकीम साहबसे अुनकी दवा पूछती। गैरहाज़िर रोगियोंके सामान्य वर्णनसे भी हकीम साहब अंदाजसे छोटी-मोटी बातें बता सकते थे। अेक बार अुन्होंने पूछा

अिधर अुधरकी गप्पें शुरू कीं। अनायकी बयानमें अितनी मिठास थी कि वे घंटा भर बैठ रहे तो भी न अुन्हें समयका पता चला और न हमें ही। फिर अुन्होंने दवाअी देनेका विचार किया। अंगरखेकी लटकती हुअी थैली जैसी लम्बी जेबमें से अेक शीशी निकाली। अुस अेक ही शीशीमें अनेक तरहकी गोलियाँ थीं। हकीम साहबने शीशीकी सारी गोलियाँ बायें हाथकी हथेली पर अुंडेल लीं और अेक अेक गोली दाहिने हाथकी अँगुलियोंमें लेकर सोचने लगे। दो अँगुलियोंमें गोलीको घुमाते जाते और सोचते जाते। अन्तमें कुछ निर्णय करके अुन्होंने अेक गोली मेरे हाथमें दी। लेकिन मैं अुसे मुँहमें डालता अुससे पहले ही अुन्होंने अपना विचार बदल दिया और कहने लगे "ठहरो, आज यह नहीं चाहिये। कलसे यह दूँगा। आज दूसरी देता हूँ।"

फिर अुनकी अँगुलियोंमें अलग अलग गोलियाँ फिरने लगीं। आखिर अेक गोली निश्चित हुअी और अुसे मैं निगल गया। विलायती दवाओंकी अपेक्षा हमारा देशी वैद्यक अच्छा है। अिसमें पथ्यसे अवश्य रहना पड़ता है, लेकिन देशी दवाअियाँ स्वादिष्ट और रुचिकर होती हैं।

दूसरे दिन अुसी वक्त हकीम साहब फिर आये। मैं तो बिस्तरमें लेटे लेटे अुनकी राह ही देख रहा था। अपने स्वभावके मुताबिक वे हर रोज अंदर आते ही 'क्यों छोटे महाराज!' कहकर मेरी तबीयतका हाल पूछते, पथ्यकी सूचनायें दे देते और फिर बातोंमें लग जाते। पिताजीको रामायणकी अपेक्षा श्रवणभक्ति विशेष प्रिय थी। हकीम साहबकी हिन्दुस्तानी भाषा बिलकुल ही आसान थी। अुसमें कन्नड़की अपेक्षा मराठीके शब्द ही ज्यादा रहते। अतः अुनकी बातोंमें मुझे बहुत मजा आता। किसी दिन किसी मशहूर डाकूकी बातें करते, तो कभी देश-देशान्तरका अपना अनुभव बयान करते।

अेक दिन मैंने अुन्हें सरकारी बगीचेमें देखी हुअी सौंफीकी बात बतायी। हकीम साहब तुरन्त ही बोल अुठे, "अरे, अुसमें तुमने कौन-सी

बड़ी चीज देख ली ? मैंने अेक जगह देखा था कि मालीने लौकीकी बेलीको मंडप पर चढ़ानेके बदले जमीन पर ही फैलाया है। अुसकी अक लौकी जैसे बढ़ने लगी वैसे ही अुसने अुसके आगे जमीन पर अेक कील गाड़ दी। लौकी कुछ टेढ़ी होकर बायीं ओर बढ़ने लगी। अुस दिशामें अुसे कुछ बढ़ने देनेके बाद अुसने फिर वहाँ अेक कील ठोंकी जिससे वह फिर दाहिनी ओर मुड़ी। अिस तरह मालीने कभी बार कीलें गाड़कर अुस लौकीको साँपकी चालकी तरह चक्करदार शक्ल दी। अुस समय अुस दस हाथ लम्बी लौकीको देखनेका मजा कुछ और ही था।

अकबर और बीरबलके किस्सोंका तो हकीम साहबके पास बड़ा भारी खजाना ही था। बीरबलने अेक बेलीसे लटकते हुअे छोटे-से कद्दूके नीचे अेक छोटे-से मुँहवाला बड़ा मटका लटकाया और कद्दूको मटकेके अन्दर बढ़ने दिया। जब मटका कद्दूसे बिलकुल भर गया तो अूपरसे डंठल काटकर अुसने वह कद्दू बादशाहके पास भेंटके तौर पर भेज दिया और यह कहला भेजा कि, आप अपने बुद्धिमान दरबारियोंसे पूछिये कि यह कद्दू अिस मटकेमें कैसे भर दिया गया होगा और मटकेको बगैर फोड़े अन्दरका कद्दू कैसे बाहर निकाला जा सकता है ?" अैसी अैसी कभी कहानियाँ मैंने हकीम साहबसे सुनीं।

यह कहना मुश्किल है कि मैं हकीम साहबकी दवासे चंगा हुआ था अुनकी बातोंसे। अितना सही है कि अुनके किस्सों-कहानियोंके कारण जल्दी चंगे होनेकी मुझे परवाह नहीं रही। बल्कि यह डर लगा रहता था कि चंगा हो जाअूँगा तो हकीम साहबका आना बन्द हो जायगा और फिर अिन दिलचस्प कहानियोंका अकाल पड़ जायगा।

हकीम साहब अपनी विद्यामें बहुत प्रवीण थे। मेरी माँ हमारे सगे-संबंधियोंमें से बच्चियोंकी बीमारियोंका वर्णन करके हकीम साहबसे अुनकी दवा पूछती। गैरहाजिर रोगियोंके सामान्य वर्णनसे भी हकीम साहब अंदाजसे छोटी-मोटी बातें बता सकते थ। अेक बार अुन्होंने पूछा,

"क्या वह साहब ठिगने और फुसफुसे हैं?" माँने कहा, "जी हाँ।" हकीम साहबने फिर पूछा 'क्या अुन्हें पहले कभी फलाँ बीमारी हुअी थी?' माँने कहा, 'जी हाँ, यह भी सही है।' अुनका यह अद्भुत सामर्थ्य देखकर हम दंग रह जाते।

हकीम साहब सिर्फ नाड़ी-परीक्षामें ही प्रवीण नहीं थे, बल्कि मनुष्य-स्वभावकी भी अच्छी परख अुन्हें थी। जब मैं अकेला होता तो वे अेक ढंगकी बातें करते, पिताजी पास होते तब दूसरा ही रंग जमाते, और फुरसत पाकर जब माँ मुझनेको आ बैठती तब तो दूसरी बातें छोड़कर माँसे मेरे बचपनकी बातें ही पूछते रहते। कहाँ तो अैसे हमारे जीवनस्पर्शी वैद्य-हकीम और कहाँ आजके पेशेवर डॉक्टर! ये डॉक्टर पहले तो *विज़िटिंग फ़ीस लिये बगैर कहीं जायेंगे नहीं*, और अपने धंधेके अलावा दूसरी कोअी बात मुँहसे निकालेंगे नहीं। लेकिन अिसमें अुनका भी क्या दोष है? अेक-अेक डॉक्टरके पीछे हर रोज़ सैकड़ों बीमारोंकी फौज लग जाय तब बेचारे डॉक्टर क्या करें? पुराने ज़मानेमें लोगोंको बार-बार बीमार पड़नेकी आदत नहीं थी और बीमार पड़ें तो झट अच्छे होनेकी जल्दी भी नहीं होती थी।

आखिर मैं चंगा हो गया। मेरा बुखार चला गया। बादमें हकीम साहब मेरे लिअे रोज़ाना अेक किस्मका मुरब्बा केलेके पत्तेमें बाँधकर ले आते। हर रोज़की खुराक रोज़ाना लाते और पास बैठकर बड़े प्यारसे खिलाते। पहले दिन तो मेरे मनमें शक हुआ कि मुसलमानके हाथका मुरब्बा कैसे खाया जाय? मैंने आहिस्तासे माँसे पूछा तो माँने कहा "दवाओंकी चर्चा नहीं करनी चाहिये।" पिताजीने भी कहा,

औषधं जाह्नवीतोयं
वैद्यो नारायणो हरिः।

दवाको गंगाजलके समान पवित्र मानना चाहिये और वैद्यका वचन तो मानो स्वयं भगवानकी वाणी है। बादमें कभी लोगोंके मुँहसे

मैंने अिसी श्लोकका अिससे अुलटा अर्थ सुना कि बीमार पड़ें तब और कोअी दवा लेनेकी जरूरत नहीं है, गंगाजल ही हमारी सच्ची दवा है और सबको स्वास्थ्य प्रदान करनेवाला वैद्य परमेश्वर तो हमारे हृदयमें ही रहता है।

हकीम साहब कहने लगे ओहो, छोटे महाराज आपको धर्मकी बातने रोक दिया? अिसमें कोअी गोश्त-वोश्त नहीं है। कअी हिन्दू घरोंमें मेरा आना-जाना है। आप लोगोंके रस्मोरिवाजोंसे मैं अच्छी तरह वाकिफ़ हूँ। हमारी यूनानी चिकित्सामें हर तरहकी दवाअियाँ हैं। लेकिन आपके हिन्दू आयुर्वेदमें भी कहाँ मांसका प्रयोग नहीं करते?

बस फिर तो अेक लम्बा क़िस्सा शुरू हो गया। वे कहने लगे, अेक बार मैं मुसाफिरी कर रहा था। चलते चलते रास्तेमें अेक गाँव आया। वहाँ मैंने देखा कि अेक जगह बहुतसे लोग जमा हो गये हैं और हू-हा चल रही है। पास जाकर देखा तो बहुतसे लोग अेक आदमीको खूब पीट रहे थे। पूछने पर लोगोंने बताया कि, 'अिसे भूत लगा है और हम अिसका भूत अुतार रहे हैं।' मैं तुरन्त समझ गया कि भूत-भूत कुछ नहीं अुस आदमीको अेक खास रोग हो गया है। तमाशबीन लोगोंको दूर हटाकर मैं आगे बढ़ा और बोला, अरे बेवकूफ़ो तुम भूत नहीं निकाल रहे हो बल्कि अिस ग़रीबकी जान ले रहे हो। अिसे तो बड़ा खतरनाक रोग हो गया है। अिसी क्षण यदि खरगोशका खून मिल जाय तो यह आदमी ठीक हो सकता है वरना यह शाम तक मर जायगा। तुमने अिसे पीट पीटकर अधमरा तो कर ही डाला है। लोग कहने लगे यहाँ खरगोशका खून कहाँसे मिले?' मैंने कहा तब तो अिस आदमीके बचनेकी कोअी अुम्मीद नहीं। और मैं वहाँसे चल दिया। लेकिन खुदाका करिश्मा देखो कि अचानक सामनेसे अेक पारधी आया। अुसके हाथमें मैंने ताज़ा मारा हुआ खरगोश देखा। मैंने खुश होकर कहा मिहर खुदाकी!

अब तुम्हारा आदमी बच गया समझो।' मैंने तुरन्त अपने बक्सेसे दवा निकाली और खरगोशके खूनमें तैयार करके अुस आदमीको पिलायी। फिर तो वह आदमी अच्छा हो गया।"

खरगोशके खूनकी बात सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। लेकिन माँने कहा "अिसमें आश्चर्यकी कोअी बात नहीं। अपने गाँवमें भी अेक आदमीके पास खरगोश और कबूतरके खूनमें डुबाकर सुखाये हुअे रूमाल हैं।"

चिकित्सामें कौन-सी चीज काममें आती है और कौन-सी नहीं यह कहना मुश्किल है। कभी रोगोंमें खटमलको दूधमें घोलकर पिलाया जाता है तो अेक रोगमें बिल्लीकी विष्ठा भी दी जाती है। अिसीलिअे तो हमारे पूर्वजोंने कह रखा है

अमंत्रम् अक्षरम् नास्ति।
नास्ति मूलम् अनौषधम्॥

फिर तो भाँति भाँतिकी वनस्पतियोंके गुणधर्मके बारेमें चर्चा चली। वनस्पतिकी चर्चामें नीमका जिक्र आये बिना भला कैसे रह सकता है? माँने कहा 'नीमके पत्ते पीसकर अुनमें पानीकी अेक बूँद भी डाले बिना यदि अुनका रस निकाला जाय तो वैसे तोलाभर रससे मरा हुआ आदमी भी जिन्दा हो सकता है। अिस पर पिताजी हँसकर बोले "पानी डाले बगैर नीमके पत्तोंमें से अेक बूँद भी रस नहीं निकल सकता अिसीसे शायद किसीने यह माहात्म्य गढ़ डाला है। हकीम साहब कहने लगे "जो हो लेकिन यदि आपको कोअी पुराना नीमका वृक्ष दिखायी दे, तो आप अुसके आसपास घूमकर देखिये। कभी कभी अुसका तना अपने आप फटता है और अुसमें से गोंदके जैसा रस निकलता है। अैसा रस अगर मिल जाय तो आप तुरन्त अुसे खा लें। अुस ताजे गोंदमें अद्भुत शक्ति होती है। अुससे अनेक रोग ठीक हो जाते हैं। कभी सांपके पैर

हमेशा फटते हैं। वे लोग अगर अुस रसको चाटें तो अुनकी यह शिकायत दूर हो जायगी। नीमके पेड़ पर अगर मधुमक्खियाँ अपना छत्ता बनायें, तो अुस छत्तेका शहद भी विशेष गुणकारी होता है।"

कुछ ही दिनों बाद हमारे बँगलेके सामने अेक नीमके दरख्त पर मुझे अेक छोटा-सा मधुमक्खियोंका छत्ता दिखाअी दिया। पासके कुअें पर क़ैदी आकर मोटसे पानी खींच रहे थे। अुनसे कहकर मने यह छत्ता अुतरवाया और वह शहद अेक सुन्दर पतली शीशीमें भरकर रखा। थोड़े दिनोंमें अुस शहदमें अुम्दा दानेदार शक्कर बनने लगी। अुसका रंग पीलापन लिये हुअे सफ़ेद था। अितने बढ़िया शहदकी शक्कर अेक साथ खा जानेका मेरा मन न हुआ। अत: मैंने वह अेक-दो बार ही चखी होगी। अितनेमें अेक दिन वह शीशी मेरे हाथसे छूटकर फूट गअी। बोतलमें बचे हुअे शहदके अन्दर काँचकी किरचियाँ होंगी अिस डरसे मैंने वह सारा शहद फिंकवा दिया।

आखिर पिताजीका सावनूरका काम खतम हुआ। सावनूर छोड़नेका वक्त आया। पिताजीने क्लर्ककी मारफ़त हकीम साहबसे अुनकी फीस पुछवाअी। पिताजी चाहते थे कि हकीम साहबको अुनकी हमेशाकी फीससे कुछ ज्यादा पैसा देकर अुन्हें खुश किया जाय। लेकिन हकीम साहबने कहा ʻमुझे आपसे पैसे नहीं चाहिये मगर आपकी यह घड़ी यादगारके तौर पर दे दीजिये।' घड़ीकी क़ीमत कुछ ज्यादा नहीं थी। तीस-पैंतीस रुपये होगी। पर पिताजीने अुसे देनेसे अिन्कार किया। वे बोले 'आप दूसरा जो भी माँगें मैं दे दूँगा।' पिताजीने अुन्हें चालीस रुपये लेनेको कहा। दूसरी घड़ी मँगवाकर देनेकी भी बात कही लेकिन हकीम साहब किसी भी तरह राजी न हुअे। अुन्होंने कहा, ʻमुझे कहाँ पैसेकी पड़ी है? मुझ तो आपके अिस्तेमालमें आनेवाली घड़ी ही चाहिये।ʼ पिताजीने घड़ी देनेसे क्यों अिन्कार किया यह मेरी समझमें न आया और न

भुन्हें पूछनेका ही सवाल भाया। आखिर व अपनी ही जिद पर अड़े रहे और दीवानसाहबकी मार्फत हकीम साहबको कुछ रकम लेनेके लिये भुन्होंने मजबूर किया।

भुस घड़ीके साथ पिताजीका कोभी खास सम्बन्ध या भावना होगी अैसी कल्पना मैंने की। पिताजीकी मृत्युके बाद वह घड़ी मेरे पास आयी। कभी बरस तक वह मेरे पास रही। बादमें जब मैं काश्मीरमें घूम रहा था, तब श्रीनगरमें अेक साधुने मुझसे वह घड़ी माँगी लेकिन मैंने भी जिदके साथ भुसे देनेसे भिन्कार किया। मैं साबरमती आश्रममें पहुँचा तब तक वह घड़ी मेरे पास थी। वह न तो कभी बीमार हुआी और न ही भुसने कभी गलत समय दिखाया। बादमें मद्रासकी तरफके अेक मित्रने कुछ रोजके लिये वह मुझसे माँगी और कहीं खो दी। जब तक वह घड़ी मेरे पास थी तब तक मुझे कभी बार हकीम साहबका स्मरण हो आता। आज भी भितना दुःख तो है ही कि हकीम साहबको वह घड़ी नहीं दी गयी अैसे दिलदार आदमीको हमने नाराज किया यह कुछ अच्छा नहीं हुआ।

४४

दीनपरस्त कुतिया

नन्हू मालीकी अेक काली कुतिया थी। शिकार करनेमें वह अपना सानी नहीं रखती थी। बकरियों और भेड़ोंको देखती तो फौरन अुन पर टूट पड़ती। कभी कभी कोअी मेमना या खरगोश मारकर खाती। अुस दिन नन्हूके यहाँ होली या दीवालीकी तरह खुशियाँ मनायी जाती। सावनूरमें हम शहरसे बाहर डाक बेंगलेमें रहते थे, अिसलिअे वहाँ मुझे अेक भी बिल्ली नहीं मिली। अतः अुस कुतियाको ही जिसका नाम काली था मने अपनाया। मैं हर रोज़ अुसे पेटभर खिलाता और अुसके साथ खेलता रहता। कालीका मज़हब शायद अिस्लाम था। गुरुवारके दिन वह बिलकुल नहीं खाती थी। पहले गुरुवारको मुझे लगा कि काली बीमार होगी अिसलिअे नहीं खा रही है। लेकिन आसपासके लोगोंने बताया कि मुझे कुछ भी नहीं हुआ है वह बृहस्पतके दिन रोज़ा रखती है। बचपनमें हमारा मन बहुत छान बीन करनेवाला नहीं होता। चाहे जो बात हम श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर लेते हैं, अितना ही नहीं बल्कि हमें अद्‌भुत रस अितना प्रिय होता है कि असी कोअी अजीब बात सुनते हैं तो वह सच्ची ही होगी अैसा माननेकी तरफ हमारे दिलका रुझान होता है। फिर भी कालीकी यह बात मुझे असंभव-जैसी लगी कि अुस जानवरको ठीक गुरुवारका पता कैसे चलता होगा? अतः मैंने अुस पर कड़ी निगरानी रखी।

दूसरे गुरुवारको मने दूधमें आटा गुंथवाकर अेक बढ़िया रोटी बनवायी और अुस पर घी चुपड़ा। (मैं तो कालीको पूड़ी ही खिलाने वाला था लेकिन माँने कहा 'कुत्तोंको तली हुअी चीज नहीं

खिलायी जाती, अुससे कुत्ते या तो पागल हो जाते हैं या बीमार पड़ते हैं।") अतः मैंने वह विचार छोड़ दिया। मैंने वह रोटी काली को दी। रोटीकी खुशबू बहुत अच्छी आ रही थी, जिसलिअे अुसे खा लेनेको कालीका मन ललचा रहा था। वह रोटीका टुकड़ा मुंहमें लेती और फिर छोड़ देती। अिस प्रकार अुसने कभी बार किया, लेकिन अुपवास नहीं तोड़ा। शामको चार बजे अुसे बहुत भूखी देख कर मैंने फिर वही प्रयोग किया। अेक पूरी रोटी अुसके सामने रख दी। कालीको अिस बार नयी तरकीब सूझी। अुसने वह रोटी मुंहमें पकड़ी और कुछ दूर जाकर अगले पैरोंसे जमीन खोदकर अुसमें वह रोटी गाड़ दी अेवं अुसी पर अपना आसन जमा दिया। दूसरे दिन सवेरे जल्दीसे अुठकर मैं कालीको देखने गया। वह भी अुसी वक्त जगी थी। अुसने जमीन खोदी और देखते-देखते अुस रोटीसे अुपवासका पारण किया।

अगले दो गुरुवारोंको भी मुझे यही अनुभव हुआ।

अुसके बाद बहुत वर्षोंके पश्चात् मेरे पिताजीको दूसरी बार सावनूर जाना पड़ा। अिस बार मैं नहीं गया था। वहांसे अुन्होंने पहले ही पत्रमें मुझे लिखा था कि कालीका कार्यक्रम बदस्तूर जारी है। बादमें पत्र आया कि काली किसी दुर्घटनासे मर गयी जब कि वह शिकारके लिअे गयी हुअी थी।

कालीको गुरुवारकी दीक्षा किसने दी होगी? क्या वह पूर्व जन्मका कोअी संस्कार होगा? लेकिन अिस तरहकी कल्पनायें करना मेरा काम नहीं है।

४५

भाषांतर-पाठमाला

सावंतवाड़ीमें जब हम गर्वबळकरके यहाँ किरायेके मकानमें रहते थे तब खग्रास सूर्यग्रहण हुआ था। क़रीब दस-ग्यारह बजे होंगे। चारों तरफ बिलकुल अंधेरा छा गया। आसमानमें अेक-दो ग्रह भी दिखाओ देने लगे। कौओे वगैरा पक्षी घबड़ाकर शोर मचाने लगे। हम लोग कांचके टुकड़ों पर दीपककी कालिख लगाकर अुसमें से सूर्यका लाल बिंब देखने लगे। अुस वक्त मैंने अेक मजेदार खोज की। ग्रहण जैसे-जैसे बढ़ता गया वैसे-वैसे हवामें कुछ अैसा परिवर्तन हो गया कि मृगजलकी पतली लहरें छोटी-छोटी जल-लहरोंकी तरह आकाशमें दिखाओ देने लगीं। मुझे शक हुआ कि शायद मेरी आँखोंको धोखा हो रहा हो अिसलिओे मैंने आसपासके सब लोगोंको यह दृश्य बतलाया। फिर जमीनकी तरफ देखा तो जैसे धुओंकी परछाओं जमीन पर दौड़ती है वैसी छायाकी पतली लहरें जमीन पर दौड़ती हुओी दिखाओ दीं। अिसका कारण क्या होगा यह अभी तक मेरी समझमें नहीं आया है। अुसके बाद फिर कभी वैसा खग्रास ग्रहण दिखाओ नहीं दिया जिससे अुस अनुभवकी जाँच करनेका मौक़ा नहीं मिला। लेकिन अुस अनुभवकी छाप दिमाग़ पर आज भी स्पष्ट है।

यह सूर्यग्रहण तो अेक दिनका था — अेक दिन क्या बल्कि आधे घण्टेका भी नहीं होगा पर दूसरे अेक ग्रहणने मुझे महीनों सताया। केशूकी अुस भाषान्तर-पाठमालाको मैंने अुस वक्त तो सत्या ग्रह करके टाल दिया था, लेकिन वह मुझे छोड़नेवाली नहीं थी। अिस बार अण्णाने सोचा कि दत्तू और गोंदू सारा दिन आवारागर्दी

हैं। अण्णाने अिसका अेक अुपाय ढूंढ़ निकाला। अुन्होंने अुस दिन पुराने शब्द भी पूछे। अिससे मेरी पोल खुल गयी। अिस दिनके शब्द अुस दिन तो बराबर आ जाते थे, लेकिन आज अुनमें से अेक भी नहीं आया।

दूसरे दिन मैंने निश्चय किया कि अब चालाकी करनेसे काम नहीं चलेगा। प्रामाणिकता ही सबसे अच्छी चालाकी है। अुस दिन मैं अण्णाके साथ ही जीमकर अुठा और दीवानखानेमें जाकर मैंने अुनसे कहा आज मेरे शब्द कच्चे हैं। मुझे कुछ समय दे दीजिये तो मैं अच्छी तरह याद कर लूं। तब तक आप नाना (गोंदू)का पाठ ले लें। हमारी अिस बातचीतका पता गोंदूको कहांसे होता? दत्तू अच्छी तरह चंगुलमें फँसा है अैसा समझकर वह कुछ लापरवाहीके साथ मीठसे अूपर दीवानखानेमें आया। लेकिन जब अण्णाने अुसीको पाठके लिअे आनेको कहा तो वह भौंचक्का रह गया। यह कैसे हुआ? किस युक्तिसे मैं छूट गया यह अुसकी समझमें किसी तरह भी न आया। वह कभी अण्णाकी तरफ देखता तो कभी मेरी तरफ। मैं तो सिर झुकाकर मुस्कुराता हुआ अपने शब्द रटने लगा।

अिसके बाद अण्णाने हम दोनोंको साथ बिठाकर रोजाना शुरूसे लेकर अुस दिन तकके सभी शब्द पूछनेका नियम बनाया। कभी अेक पाठसे शब्द पूछते तो कभी दूसरे ही पाठसे। अिस दैनिक परीक्षासे बिना विशेष मेहनतके मुझे सारे शब्द याद हो गये। हाँ चार-पाँच दुष्ट शब्द बहुत सताते रहे, मगर अुनके लिअे अण्णाने मुझे मारना छोड़ दिया। आगे चलकर अुन्होंने अचूक वे ही चार-पाँच शब्द पूछना शुरू किया, तो अन्तमें अुन शब्दोंने हार मान ली और मेरा अध्ययन निष्कंटक हो गया।

अिस सारी घटनामें आश्चर्यकी बात तो यह है कि मुझे अितनी युक्तियां सूझीं लेकिन दोपहरके वक्त घंटा-आध घंटा बैठकर बाकायदा पढ़ाओी करनेका सीधा रास्ता न तो मुझे सूझा और न पसन्द ही आया।

४६

टिड्डी दल

'अितने भिखारियोंका यह टिड्डी-दल न जाने कहाँसे फट पड़ा है। हमें अितने वर्ष हो गये, मगर अितनी भुखमरी कभी नहीं देखी।' हमारे घरकी बूढ़ी नौकरानी हर रोज यही कहती। और सचमुच रोजाना सवेरे सात बजेसे दोपहरके बारह बजे तक न जाने कैसे कैसे भिखारियोंकी भीड़ लग जाती थी। वे लोग तरह-तरहकी आवाजें निकालकर या गाना गाकर भीख माँगते फिरते। किसीके हाथमें अून कातनेकी तकली चलती, तो कभी भिखारिनें हाथसे खजूरीके पत्तोंसे चटाअियोंकी पट्टियाँ बुनती जातीं और भीख माँगती जातीं। कुछ भिखारिनें अपने सिर पर टोकरीमें सूखी डोरा और काँचके मनके बचनेके लिये जातीं। अुनकी बिक्री भी चलती रहती और साथ-साथ भीख भी माँगतीं। मेरे सामानमें से कुछ खरीदो और कुछ भिक्षा भी दो, अिस तरह अुनकी माँग होती।

कभी भिखारिनें अिस तरहके खुशामदके गीत गातीं

ताअी बाअीचे डोळे
लोण्याचे गोळे

[अर्थात् बहनजीकी आँखें मक्खनके गोले जैसी हैं।]

कभी भिखारिनें तो राधाबाअी, रुक्माबाअी गोपकाबाअी आदि स्त्रियोंके जितने भी नाम हो सकते हैं अुतने सब सम्बोधनके रूपमें बोलकर खानेको माँगती। कभी पुरुषोंके गलेमें लोहेकी अेक लम्बी साँकल और लकड़ीका अेक बालिश्त लम्बा हल टँगा रहता। वे कहते अकालमें हम खेतके मालिकका लगान अदा न कर सके

जिसलिअे भीख माँगकर अब मुझे पूरा कर रहे हैं। अब तक हजार पूरे हुअे हैं अब आठ सौ रुपये ही बाकी हैं। अगर हर घरसे हमें कुछ न कुछ मिल जाय तो हम जल्दी मुक्त हो जायेंगे।'

पहले तो मुझे जिन लोगों पर बहुत तरस आता। मैं सबको मुट्ठी-मुट्ठी चावल देता। कभी लोगोंको दाल-भात वगैरा भी खानेको देता। अुनके हावभावके साथ गाये हुअे गीतोंका अनुकरण करते हुअे मुझे अुनकी कभी पंक्तियाँ कंठस्थ हो गयी थीं। अुनमें से कुछ तो आज भी याद हैं। लोकगीतोंकी दृष्टिसे आज मैं अुनकी तरफ देख सकता हूँ

सोनार बापूजी बापूजी
मथ का घडवली घडवली
पायां घडवली घडवली
पायाचा जोड जोड
पायाला भाला फोड फोड।

दूसरा गीत कोंकणी है

माल्यान् माल्यान् माल्यान् मोगरो
फुललो मोगरा माल्यान् गो
चावधि चोके छाडके मुने
दावान् मोगरो माल्यान् गो।'

फिर तो हर रोज वही लोग बार-बार आने लगे। मैं अूब गया। मेरी सहानुभूति सूख गयी। मुझे यकीन हो गया कि ये लोग भुखमरीकी वजहसे भीख नहीं माँगते बल्कि भीख माँगना जिनका धन्धा ही हो गया है। कभी लोगोंसे मैं अदालतकी जिरहकी तरह अुलटे-सीधे सवाल पूछने लगा। वे हमेशा झूठ बोलते। हर रोज कुछ नया ही क़िस्सा गढ़ डालते। बच्चियोंसे मैंने पूछा "लेकिन

परसोंके दिन तो तुमने कुछ और ही क़िस्सा बतलाया था न? ' ये बेशर्मीसे कह देते 'नहीं जी, तुम्हें धोखा हो रहा है। हम तो आज पहली ही बार अिस शहरमें आये हैं।'

अब मेरे सबने जवाब दे दिया। मैं अुन लोगोंको भगाने लगा। अुन्हें आँगनमें क़दम ही न रखने देता। शुरू शुरूमें वे लोग मेरी तारीफ़ करते मुझे भोले शिवजीका अवतार कहते। लेकिन अब वे पहले तो गिड़गिड़ाने लगे और बादमें बुड़बुड़ाने लगे। यहाँ तक कि अन्तमें वे गालियों पर भी अुतर आये। मैं बहुत गुस्सा हो गया। अब मैं हमेशा बेंतकी अक छड़ी अपने पास रखता और कोअी भिखारी आँगनमें आता तो अुसे मारने दौड़ता। यह देखकर अड़ोस पड़ोसके लोग हँसने लगे।

कभी कभी रमा मामी बचा-खुचा भात अिन भिखारियोंको देनेके लिअे बाहर आतीं तो वे दौड़ पड़ते। मैं कुत्तेकी तरह अुन पर झपट पड़ता और मामीसे कहता "लाओ वह भात मैं कुत्तोंको खिला देता हूँ। अिन निठल्ले लोगोंको तो कुछ भी नहीं देना चाहिये। ये सरासर झूठ बोलते हैं।

गोंदू कहता कोअी किसीको दान देता हो तो हमें अुसमें बाधा नहीं डालनी चाहिये अिससे पाप लगता है।

हमको भले ही पाप लग जाय। मगर देखूँ तो सही कि अिन भिखारियोंको तुम कैसे खानेको देते हो! ' मैं चिढ़के साथ कहता।

' सभी मुझे समझानेकी चेष्टा करने लगे। अन्तमें मकानके मालिकने मुझसे कहा तुम अपने दरवाज़े पर आनेवालोंको भले ही रोको लेकिन हमारे दरवाज़े पर आकर कोअी भीख माँगे तो क्या अुसमें भी तुम्हें आपत्ति है? शर्म और क्रोधके मारे मैं लाल-पीला हो गया। मैंने छड़ी फेंक दी और चुपचाप अपने कमरेमें चला गया। फिर तो बारह बजेसे पहले मैंने घरसे बाहर निकलना ही छोड़ दिया।

लगभग पंद्रह दिनमें भिखारियोंकी यह बाढ़ कुछ कम हो गयी। अितनेमें कहींसे बड़ी-बड़ी लाल-पीली टिड्डियाँ आ गयीं। अितनी टिड्डियाँ अितनी टिड्डियाँ कि सारा आकाश भर गया। आसमानसे अैसी आवाज सुनाओी पड़ती मानो बिजलीका कारखाना चल रहा हो। अुन टिड्डियोंने सारी साग-सब्जी खा डाली, पेड़ोंके पत्ते चट कर दिये। य टिड्डियाँ भी कोअी मामूली कीड़े थे? जी नहीं वे तो मानो आग ही थीं। वे खाती जातीं और लेंडियाँ/डालती जातीं। सबेरेसे शाम तक खाती रहती फिर भी अुनका पेट नहीं भरता। लोग बेचारे क्या करते? लम्बे लम्बे बाँस लेकर अुन्हें पेड़ों परसे हटानेका प्रयत्न करते। टिनके डिब्बे बजा-बजाकर अुन्हें भगानेकी कोशिश करते। लेकिन टिड्डियाँ किसी तरह कम न होतीं। रास्तेसे चलना भी दूभर हो गया। वे तो भर्ररर्रसे आतीं और कमीजकी आस्तीनोंमें भी घुस जातीं। जरा गर्दन झुकाकर नीचे देखने लगते तो कोट और कमीजके गरेबानोंमें घुसकर पीठ तक पहुँच जातीं। फिर तो रास्ते पर ही कोट अुतार कर अन्दरकी टिड्डियोंको बाहर निकालना पड़ता। अितनमें दूसरी टिड्डियोंके अंदर घुस जानेका अंदेशा बना ही रहता। शाम होने पर अुनके पंख भारी हो जाते और वे कहीं बैठ जातीं।

अब लोगोंने अेक तरकीब निकाली। खेतों और बाड़ियोंके पास वे अेक लम्बी खाओी खोद देते और रात पड़ने पर अुसमें घास जलाते। आगकी लपटें देखकर टिड्डियाँ अुधर दौड़ जातीं और अुसमें कूद कूदकर मर जातीं। यह देखकर देहातके छोटे लड़कोंको अेक नयी ही बात सूझी। वे टिड्डियोंको पकड़कर अुनके पैर तोड़ डालते और फिर अुन्हें भूनकर खा जाते। यह दृश्य देखकर हमें बड़ी घिन आती। लेकिन अुन दिनों गरीब लोगोंने अपने-अपने घरोंमें टिड्डियोंके बोरेके बोरे भरकर रख लिये!

टिड्डियोंका हमला अब नारियलके पेड़ों पर शुरू हुआ। अुनकी लम्बी-लम्बी शाही पत्तियाँ अेक दिनमें ही खतम होने लगीं। आठ-दस दिनके अन्दर नारियलके पेड़ तारके खम्भोंकी तरह ठूंठ दिखाअी देने लगे। अुस दृश्यको देखकर तो रोना ही आता था। किसान और बागबान बड़े चिन्तित हो गये। वे कहते 'किसी साल वर्षा नहीं होती, तो अेक वर्षका ही अकाल भुगतना पड़ता है लेकिन हमारे तो नारियलके पेड़ ही साफ़ हो गये। अब दस बरस तक आमदनीका नाम न रहा।' रास्ते पर देखो या आँगनमें, खतोंमें देखो या बाड़ियोंमें जमीन पर टिड्डियोंकी लेंडियाँ ही लेंडियाँ बिछी हुअी दिखाअी देतीं। किसीने कहा 'अिन लेंडियोंका खाद बहुत क़ीमती होता है।' यह सुनकर अेक बुढ़िया बिगड़कर बोली 'जले तेरा मुँह! खेतके जैसे पेड़ जल गये और तू कहता है कि यह खाद क़ीमती होता है। यह खाद तू अपने ही खेतमें डालकर देख, बोया हुआ अनाज भी जलकर राख हो जायगा। यह खाद नहीं, आग है।'

अभी भी टिड्डियोंकी पलटनें अेकके बाद अेक आ ही रही थीं। मीलों तक टिड्डियोंके बादल छाये हुअे थे। सबकी सब अेक ही दिशामें अुड़ रही थी — मानो किसीका हुक्म ही लेकर आयी हों।

हर चीज़का अन्त तो होता ही है। अुसी प्रकार टिड्डियोंके अिस संकटका भी अन्त अपने आप हो गया। वे जैसे आयी थीं वैसे ही चली गयीं।

अतिवृष्टिर् अनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः।
प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः॥
[स्वचक्रं परचक्रं वा सप्तता ईतयः स्मृताः॥]

शेरकी मौसी

सामान्य लड़कोंकी अपेक्षा मेरा पशु-पक्षियोंके प्रति विशेष प्रेम था। कुत्ते बिल्लियाँ, गोरैयाँ कौवे बछड़े खरगोश गिलहरियाँ तोते आदि सभी प्राणी मेरा समय ले लेते थे। भरकी भैंसकी सेवा टहल करना मेरे ही जिम्मे होता। बैलोंकी गर्दनमें खुजलाना और अनके सींगोंके बीचकी जगह साफ़ करना भी मेरा ही काम था। यह कहना कठिन है कि मैं बागोंमें फूल चुनने जाता था या तितलियाँ देखने।

पर मेरा सबसे प्रिय जानवर तो बिल्ली था। बिल्लियाँ अपने मालिककी खुशामद करती हैं, लेकिन कभी स्वाभिमानको नहीं खोतीं। आप कुत्तेको अनार्य बना हुआ पायेंगे, लेकिन बिल्ली तो हमेशा अपनी संस्कृति और शानको सँभालकर ही रहती है। किसी दिन पीनेका दूध थोड़ा कम होता तो असमें से भी अपनी बिल्लीको पिलाये बिना स्वयं पीना मुझे अच्छा नहीं लगता था। बचपनमें मैंने काफ़ी मुसाफ़िरी की है। जहाँ जाता वहाँ आठ-दस दिनके अन्दर आसपास कितनी बिल्लियाँ हैं, किस-किसकी हैं, अिसका ठीक-ठीक पता मैं लगा लेता। बिल्लियोंके प्रति मेरा यह पक्षपात अकान्तिक या अिकतरफा न था। जहाँ जाकर रहता, वहाँकी बिल्लियोंको मेरे राग और द्वेष दोनोंका अनुभव लेना पड़ता। बिल्लीको कैसे घेरना चाहिये असे कैसे पीटना चाहिये किसी गड्ढेमें काँटे डालकर तथा अुस पर कागज़ या पतला कपड़ा बिछाकर बिल्लीको गड्ढेमें कैसे गिराना चाहिये आदि सारी कलाओंमें मैं पारंगत था।

यदि मैं न जानता कि बिल्लीको जानसे मार डालनेसे बारह ब्राह्मणोंकी हत्याका पाप लगता है, तो मेरे हाथों बिल्लियोंकी हत्या भी हो जाती। मैंने देखा था कि बिल्लीकी पूँछ पर पापकी बारह काली पट्टियाँ होती हैं। अतः ब्राह्मणोंकी हत्याकी बात झूठी है, ऐसा समझनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं थी।

मैं कारवारमें था तब मैंने अेक छोटा-सा बिल्ला पाला था। वह बहुत खूबसूरत था। अुसका नाम अुसी प्रदेशके प्रचलित नामोंमें से होना चाहिये अिस दृष्टिसे मैंने अुसका नाम व्यंकटेश रखा था। वह मेरे साथ क़रीब अेक साल रहा होगा। आखिर अेक छछूँदरने अुसे मार डाला। मुझे तो बिल्लीके बिना चैन न आता था। अतः मैंने सारा कारवार शहर खोज डाला। जब कोअी सुन्दर बिल्ली दिखाअी देती तो वह जिस घरमें जाती अुसके मालिकसे मैं अुसे माँगता। लेकिन अिस तरह बिल्ली थोड़े ही मिला करती है? बड़े लोग शरीफ़ाना ढंगसे कहते कि अिस बिल्लीको हमारी आदत हो गयी है वह तुम्हारे यहाँ नहीं रहेगी। लेकिन कुछ लोग हमारा अपमान करके हमें निकाल देते। आखिर केशू, गोंदू और मैं अेक घरके आसपास पहरा लगाकर बैठे और मौक़ा पाते ही राक्षस-पद्धतिसे अेक बिल्लीको भगा लाये।

बिल्लीको पकड़ना कोअी अैसा-वैसा काम नहीं है। अुसके नाखूनों और दाँतों पर अभी हथियारबन्दीका क़ानून लागू नहीं हुआ है। पहले तो बिल्लीका पकड़में आना ही मुश्किल है। आप अुसे पकड़िये तो तुरन्त ही वह गुर्रर म्यायूँ करके काटेगी या नाखूनोंसे नोच डालेगी। हम लोग अपने साथ अेक बोरा रखते थे। तीनों तीन तरफ़ खड़े हो जाते। बिल्ली कुछ पास आ जाती तो अुस पर झपटकर अुसकी गर्दन पकड़ लेते। बिल्लीकी गर्दनकी चमड़ी पकड़कर अूपर अुठानेसे अुसे तकलीफ़ नहीं होती और वह बिलकुल क़ाबूमें आ जाती है। अुसकी गर्दनकी चमड़ी यदि आपके

हाथमें हो तो आप अपनेको बिलकुल सुरक्षित समझिये। वहाँ तक न अुसके दाँत पहुँच पाते हैं न नाखून ही। हाँ, पिछले पैरोंको अूपर अुठाकर वह नाखून मारनेकी कोशिश अवश्य करती है, सारे शरीरको सभी दिशाओंमें मरोड़कर छूट निकलनेकी चेष्टा भी कर देखती है। नया आदमी हो तो नाखूनोंके हमलेके डरसे वह बिल्लीको छोड़ देता है और अेक बार छूट जाने पर बिल्लीवाली कभी हाथ नहीं आ सकती।

हम बिल्लीको पकड़ते तो अेक हाथसे अुसकी गर्दन और दूसरेसे अुसके पिछले पैर अच्छी तरह पकड़ रखते। फिर झटसे अुसे बोरेमें डालकर तुरन्त ही बोरेका मुँह बन्द कर देते। बिल्ली जिस तरह अन्दर बन्द हो जाती तो वह तुरन्त ही बंगाली ढंगसे आन्दोलन शुरू करती। खूब शोर मचाती, और अैसा दिखावा करती मानो बोरेको फाड़ ही डालेगी। बिल्लीको पकड़ते वक्त कभी बार मेरे हाथ-पैर खूनसे लथपथ हो गये हैं। लेकिन जिस बिल्लीको पकड़नेका मैं निश्चय करता अुसे किसी भी हालतमें हाथसे जाने न देता।

बिल्लीको घर ले जानेके बाद हमारा सबसे पहला काम यह होता कि हम अुसे भरपेट खिलाते और अुसके नाक-कानको घरके चूल्हे पर रगड़ते। जिसमें मान्यता यह थी कि अैसा करनेसे बिल्ली अुस चूल्हेको छोड़कर कहीं नहीं जाती वहीं रहती है और आग ठंडी हो जाने पर रातको अुसी चूल्हेमें सो जाती है। कारण चाहे जो हो लेकिन हमारी बिल्लियाँ हमेशा हमारे चूल्हेमें ही सोती थीं।

अेक दिन मैंने अेक बिलकुल सफ़ेद बिल्ली देखी। अुसकी पूँछ पर काली पट्टियाँ भी नहीं थीं। हमको लगा कि अैसी निष्पाप बिल्ली हमारे यहाँ अवश्य होनी चाहिये। जिस औरतकी वह बिल्ली थी अुससे माँगना संभव न था। अतः तीन-चार दिनकी तपस्याके बाद हमने अुस बिल्ली पर [illegible] किया। अुसे घर लानेके बाद

अुसके रहनेके लिअे अेक लकड़ीकी बड़ी पेटीका घर बनवाया। अुसके सोनेके लिये गद्दी तयार की। बढ़ओीके पास जाकर अुस पेटीमें छोटी छोटी खिड़कियाँ बनवायीं। अुसमें लाल हरे और पीले काँचके टुकड़े जड़ाये जिससे हर खिड़कीमें से वह बिल्ली अलग-अलग रंगकी दिखाओी देती। बिल्लीको भी अपना नया घर खूब पसन्द आया। लेकिन वह तो दिन-ब-दिन सूखने लगी। जब हम अुसे लाये थे तो वह अच्छी मोटी-ताज़ी थी लेकिन अब अुसकी हड्डियाँ अुभर आयीं। यह देखकर माँने कहा "अे पागलो, जिसे जहाँसे लाये हो वहीं रख आओ वरना नाहक अिसकी हत्याका पाप तुम्हें लगेगा। यह तो मछली खानेकी आदी है। हमारा दूध-भात अिसके कामका नहीं।

अितनी सुन्दर और अितनी बहादुरीसे लायी हुअी बिल्लीको छोड़ देनेकी हमारी हिम्मत न हुअी। अतः हमने अपने घरके बरतन माँजनेवाली महरीसे कहा "हम तुमको रोज़ाना अेक पैसा देंगे। तुम हर रोज़ अपने घरसे मछली लाकर अिस बिल्लीको खिलाती जाओ।" बस मछलीकी खुराक मिलते ही वह बिल्ली पहले जैसी ही हृष्ट-पुष्ट हो गयी और हम भी प्रसन्न हुअे। लेकिन थोड़े ही दिनोंमें यह बात पिताजीके कानों तक पहुँची। वे नाराज़ होकर कहने लगे "अिन लड़कोंको क्या कहें? बिल्लीके पीछे पागल हो गये हैं और ब्राह्मणके घरमें बिल्लीको मछली खिलाते हैं!" पिताजीके सामने हमारी अेक न चल सकती थी। अिसलिअे हम चुपचाप बिल्लीको अुसके असली घरके पास छोड़ आये। फिर तो अुसका सूना-सूना लकड़ीका घर देखकर हमारा दिल बहुत अुदास हो जाता।

वह बिल्ली गयी तो हम दूसरी ले आये। भोजनके समय सहजनकी फलियाँ चबाकर अुनकी जो सीठी थालीके पास डाली जाती अुसे ही वह आ-आकर खाती। माँ कहने लगी, "यह भी अिसके मांसाहारका ही लक्षण है।' लेकिन हमने माँसे साफ़ कह दिया "चाहे जो हो,

अिस बिल्लीको तो हम ज़रूर रखेंगे। देखो तो, कितनी सुन्दर है!' माँने अिजाजत दे दी। लेकिन अिस बिल्लीका अन्न-जल हमारे यहाँ नहीं था। थोड़े ही दिनोंमें वह बीमार पड़ी और मर गयी। अुसके अन्तकालकी यातनाओंको देखकर मेरे मन पर बड़ा असर हुआ। अिससे पहले मैंने आदमियों और पशुओंकी लाशें देखी थीं लेकिन किसी भी प्राणीको मरते हुअे नहीं देखा था।

कारवारसे हम कुछ दिनोंके लिअे फिर सावंतवाड़ी गये थे। वहाँ भी अेक बिल्ली हर रोज़ हमारे यहाँ आती। हमारा भोजन देरीसे होता या जल्दी, वह हमारे जीमनके अैन वक्त पर ज़रूर हाज़िर हो जाती। मैं अुसे पेट भरकर दूध-भात खिलाता। घरके लोगोंको लगा कि दत्तूका बिल्लियोंका शौक़ बहुत ही बढ़ गया है अिसका कुछ अिलाज करना चाहिये। अतः विष्णु या अण्णाने अुस बिल्लीका नाम दत्तूची बायको (दत्तूकी पत्नी) रख दिया। जहाँ वह घरमें आती कि सभी कहते, 'देखो दत्तूकी पत्नी आ गयी।' मैं अुसे खिलाने लगता तो कहते 'देखो कितने प्रेमसे अपनी जोरूको खिलाता है।' मैं झेंपने लगा। सीधी नज़रसे बिल्लीकी ओर देखता तक नहीं। देखता भी तो तिरछी नज़रसे सबकी आँखें बचाकर। बेचारी बिल्लीको अिसका क्या पता? वह तो भोजनके समय मेरे पास आकर बैठती — जी हाँ बिलकुल पास बैठती सामने भी नहीं! यदि मैं अुसे वक्त पर भात न देता तो वह मेरे मुँहकी तरफ देखकर गर्दन मटकाते हुअे म्याअूँ-म्याअूँ करती। लोग अिसका भी मज़ाक अुड़ाने लगे। अतः मैं बिल्लीकी ओर देखे बिना ही अुसके सामने थोड़ा-सा भात डाल देता। लोग अिसका भी मज़ाक अुड़ाते। अगर मैं कुछ भी न देता तो बिल्ली हैरान करती अुसका भी मज़ाक अुड़ाया जाता। मैंने बिल्लीको मार भगानेका प्रयत्न किया लेकिन अुसमें असफल रहा। सच कहा जाय तो अुसे मार भगानेको मेरा मन ही न होता था।

कअी दिनों तक अिस परेशानीको बर्दाश्त करके अन्तमें मैंने निश्चय कर लिया कि लोग चाहे जो कहें शरणमें आये हुअे को मरणके मुँहमें नहीं छोड़ा जा सकता। फिर अिसमें बेचारी बिल्लीका क्या गुनाह है? और मैंने सारी शर्म-हया छोड़ दी। अेक दिन सबके सामने मैंने कह दिया हाँ हाँ! बिल्ली मेरी पत्नी है! मैं अुसे जरूर खिलाअूँगा रोजाना खिलाअूँगा, प्रेम और प्यारसे खिलाअूँगा। अब भी कुछ कहना बाकी है? आ बिल्ली आ! बैठ मेरे पास! अितना कहकर मैं बिल्लीकी पीठ पर हाथ फेरने लगा।

आदमी जब बिगड़ जाता है नाराज होता है तब सभी अुससे डरने लगते हैं। अुस दिनसे किसीने मेरा या बिल्लीका नाम नहीं लिया!

४८

सरो पाक

बड़ी अुम्रमें अपनी हिमालय-यात्रामें जमनोत्री जाते हुअे धरासूसे आगे अेक दिन दोपहरके समय मैं अेक अैसे अजीबोगरीब जंगलमें पहुँच गया था जहाँ आसपास कहीं आबादी न होने पर भी मुझे अैसा लगा था कि यही मेरा घर है मानो अिस जन्ममें या पूर्व जन्ममें मैं यहाँ बहुत काल तक रहा हूँ। अिस अद्भुत अनुभव या भावनाका कारण खोजनेका मैंने बहुत प्रयत्न किया है लेकिन अभी तक कोअी कारण या सम्बन्ध ध्यानमें नहीं आया है। मनमें अेक शंका जरूर अुठती है कि बचपनमें कारवारके पास मैंने सरोका जो अुपवन देखा था अुसके प्रति सुप्त मनमें कुछ-न-कुछ समानताका भाव अुत्पन्न हो गया होगा। लेकिन निश्चित रूपसे कुछ भी नहीं

वह कहाँ तक बढ़ेगा जिसका कोअी अंदाजा नहीं था। हम बड़े चकराये। मामू मेरी ओर देखता और में मामूकी ओर। कहाँ अस्त होनेवाले सूर्यका मुँह देखनेका आनन्द और कहाँ हम दोनोंके परेशान चेहरोंको देखनेकी विचित्रता! बहुत सोच-विचारके बाद हमने तय किया कि जिस रास्तेसे हम आये हैं अुससे तो अब जाया नहीं जा सकता। अतः नदीके किनारे किनारे चलना चाहिये, फिर जो कुछ भी होना हो सो होगा। नदीका पानी भी ज्वारके कारण बढ़ रहा था क्योंकि वह खाड़ी थी। लेकिन समुद्रके किनारे पानी सीधा हमारे शरीर पर अुड़ता था अुससे यह कुछ अच्छा था। पत्थरसे ओंट भली अिस न्यायसे हमने यही रास्ता पसन्द किया और नदीके किनारे-किनारे बहुत दूर तक चले। जैसे-जैसे हम अन्दर गये वैसे-वैसे दाहिनी तरफ़का वह सरोका जंगल घना होता गया। प्रकाशके बढ़नेकी तो संभावना थी ही नहीं।

सन्ध्याकालका घुमता हुआ प्रकाश गमगीन और गंभीर होता है। अुसमें सभी गूढ़ भाव जाग्रत होते हैं। अिसीलिअे प्राचीन ऋषियोंने विधान बनाया होगा कि शामके समय कामसे मुक्त होकर ध्यान चिन्तनमें मग्न होना चाहिये। संध्या-समयकी गंभीरता मध्यरात्रिकी गंभीरतासे भी अधिक गहरी होती है क्योंकि संध्याकालका अँधेरा वर्धमान होता है जब कि मध्यरात्रिके समय वह स्थिर हुआ होता है।

आगे चलकर दाहिनी ओर अेक पगडंडी दिखाओी दी। अुस पगडंडीसे आखिर कारवार पहुँच जायेंगे अिस बारेमें शंका नहीं थी। लेकिन वह जंगलके आरपार जायगी ही अिसका विश्वास किसे था? और सरोके अुस जंगलमें से अँधेरेमें रास्ता ढूँढ भी कैसे करते? मेरी हिम्मत नहीं चली। मैंने मामूसे कहा मुझे अिस रास्तेसे नहीं जाना है। हम किसी तरह किनारे-किनारे ही चलें चलें। कहीं-न-कहीं झोंपड़ी या घर मिल जायगा तो हम अुसीमें रात बितायेंगे। फिर सबेरेकी बात सबेरे। मामू कहने लगा, 'तू नहीं जानता यहू

यदि हम घर न पहुँचे तो घरवाले कितने फ़िक्रमंद हो जायेंगे! सब हमें खोजन निकल पड़ेंगे और सारी रात भटकते फिरेंगे। अुन्हें शायद अैसा भी लगेगा कि हम समुद्रमें डूब गये होंगे। अतः कुछ भी हो, वापस तो जाना ही चाहिये। मामूली बात सच थी। आखिर हमने हिम्मत बाँधी और अुस बीहड़ वनमें प्रवेश किया।

वहाँ पर सरोके अलावा कसम खानेको भी दूसरा पेड़ नहीं था। अपने सूखी जैसे लम्बे-लम्बे पत्तोंसे ये पेड़ सू सू सू की लम्बी आवाज़ दिन रात निकाला ही करते हैं। हम नंगे पैर चल रहे थे — या दौड़ रहे थे कहना भी अनुचित न होगा। रास्ते पर हर तरफ़ सरोके कँटीले फल बिखरे पड़े थे। बढ़ता हुआ अंधकार साँय साँय करती हुआी हवाकी भयानक आवाज़ कँटीले फलोंवाला रास्ता और घर पर क्या हो रहा होगा अिसकी चिन्ता — अिन सबके बीच हम बढ़े चले। हमने आधा रास्ता तै किया होगा कि बिलकुल अँधेरा छा गया। हम परेशान थे लेकिन हममें से कोअी घबड़ाया हुआ न था। अैसे प्रसंगोंमें साहसका जो अद्भुत काव्य भरा होता है अुसका रसास्वादन न कर सकें अितने अरसिक हम नहीं थे। हमने दूनी तेज़ीसे क़दम अुठाये और आखिर सही सलामत म्युनिसिपल हदमें पहुँच गये।

अब कोअी दिक़्क़त नहीं थी। लेकिन रास्ते परकी म्युनिसिपैलिटीकी लालटेनें मानों आँखोंमें चुभने लगीं। अैसा लगने लगा कि ये न होतीं तो अच्छा होता। पर पहुँचे तो वहाँ सभी हमारी राह देख रहे थे। भोजन ठंडा हो गया था। लेकिन हमें खोजनेके लिअे अब तक कोअी बाहर नहीं गया था। हम चोरकी तरह अन्दर जाकर चुपचाप हाथ-पैर धोकर भोजन करने बैठ गये।

यह तो अब याद नहीं कि अुस रात जंगलके सपने देखे या नहीं!

४९

गणित-बुद्धि

पढ़ाओीके सभी विषयोंमें गणित कुछ खास बातोंमें सबसे भिन्न रहता है। हाओीस्कूल-कॉलिजमें मेरा गणित पहले नंबरका माना जाता था। अिस विषयके साथ मेरा प्रथम परिचय कैसे हुआ, अुसका स्मरण आज भी ताजा और स्पष्ट है।

सातारामें जब मैं मदरसे जाने लगा तब सिर्फ़ सौ तक गिनती लिखनेका ही काम था। पहाड़े मैं कब सीखा जिसकी मुझे याद नहीं। लेकिन अितना याद है कि स्कूलमें रोजाना शामको छुट्टी होनेसे पहले हम सब लड़के जोर-जोरसे पहाड़े बोलते। जब स्कूल न रहता तब शामको या खानेसे पहले मुझे पिताजीके सामने बैठकर पहाड़े बोलने पड़ते थे। कभी बार पहाड़े बोलते-बोलते ही मुझे नींद आती और मुँहके शब्द मुँहमें ही रह जाते। लेकिन अंक और पहाड़ोंको तो गणित नहीं कहा जा सकता।

मेरे गणितका प्रारंभ कारवारकी मराठी पाठशालामें हुआ। सखाराम मास्टर नामक अेक असुस्कारी अहंमन्य और आलसी बनिया हमें पढ़ाता था। वह खुद कुछ नहीं पढ़ाता था। तिमाप्पा नामक अेक होशियार लड़का हमारी क्लासमें था वही हमें जोड़ सिखाता था। गणितकी बुद्धि मुझमें अुस वक्त तक पैदा ही नहीं हुआी थी। अिसलिअे क्लासमें पढ़ाया जानेवाला कुछ भी मेरी समझमें नहीं आता था। हम सब लड़के अेक कतारमें खड़े हो जाते। मास्टर साहब या तिमाप्पा दो तीन या चार जितनी भी संख्यायें लिखाते, हम लिख लेते। फिर जब हुक्म छूटता कि, 'बस अब अिनका जोड़ लगाओ।' तब मैं सारी संख्याओंके नीचे अेक आड़ी लकीर खींचकर

अुसके नीचे जो भी और जितने भी अंक मनमें आते लिख डालता। मेरे पास गिनती करनेका झगड़ा ही न था। अतः भूले-चूके भी जोड़ सही आनेकी गुंजाअिश न रहती। बेचारा तिमाप्पा मेरी गल्ती खोजकर मुझे बतलाने लगता लेकिन जहाँ गिनती ही न की गयी हो वहाँ गल्ती भी कहाँसे मिले?

तिमाप्पा अपनी शक्तिके मुताबिक मुझे सवाल समझानेका प्रयत्न करता लेकिन मेरे दिमागमें गणितकी खिड़की ही नहीं बनी थी जो खुल जाती। अैसी हालतमें वह भी क्या करता और मैं भी क्या करता?

फिर भी अुसने हिम्मत नहीं छोड़ी। मैं जब सवाल हल (?) करने लगता तब तिमाप्पा आकर मेरे पीछे खड़ा हो जाता। अुसे सबसे पहले यह पता चला कि मैं जोड़ लगाते समय दाहिनी ओरसे बाअीं ओर जानेके बजाय सीधा बाअीं ओरसे दाहिनी ओर आँकड़े लिख डालता हूँ। अुसने कहा, यों नहीं। जोड़ लगाते समय दाहिनी ओरसे बाअीं ओर जाना चाहिये। दूसरे सवालमें मैंने अिसके अनुसार सुधार किया। मैं अंक दाहिनी ओरसे बाअीं ओर लिखने लगा। अुसमें अपने रामका क्या बिगड़ता था? चाहे जैसे अंक ही तो लिख डालने थे! अिस काममें तो मैं आसानीसे सव्यसाची बन गया!

लेकिन अिससे तो झंझट और भी बढ़ गयी। मैं कोअी अंक लिखता तो तिमाप्पा मुझसे पूछता "यह कहाँसे लाया? मुझे गिनकर बता तो!" मुसीबत आ पड़ने पर मनुष्यको युक्ति सूझ ही जाती है। मैंने तिमाप्पासे कहा "तू मेरे पीछे खड़ा रहकर मुझ पर निगरानी रखता है अिसलिअे मैं घबड़ा जाता हूँ और गिनती नहीं कर पाता।" यह अिलाज रामबाण सिद्ध हुआ। अुसने मेरा नाम लेना छोड़ दिया।

क्या बीत रही होगी, जिसकी मुझे कल्पना थी। अतः मैंने मुझकी तरफ़ देखा तक नहीं और मनमें निश्चय किया कि आअिंदा पाठशालामें रोजाना देरसे आअूँगा। मेरे लिअे वैसा करना बिलकुल कठिन नहीं था। अुसके कारण अेकाध घंटा खड़ा रहना पड़े सो भी आखिरी नंबर तो मिल ही जायगा। फिर मैं अेक भी सवालका जवाब नहीं दूँगा। जिससे किसीके हाथों तमाचा भी नहीं खाना पड़ेगा और न किसीको मारना ही पड़ेगा। न यकीनके साथ नहीं कह सकता कि अिस निश्चयको मैं अंत तक निभा सका हूँगा। लेकिन अिसमें कोअी शक नहीं कि गोंदूका अपमान करनेकी नौबत फिर मुझ पर कभी नहीं आयी।

मुझमें गणित-बुद्धि अंग्रेजीकी पहली कक्षामें जाग्रत हुअी। हमारे अेक जोशी मास्टर थे। हम अुन्हें बाकसकर या अैसे ही किसी नामसे पहचानते थे। लेकिन वे अपने दस्तखत करते वक्त जोशी ही लिखते थे। अुन्होंने हमें त्रैराशिकका रहस्य अच्छी तरह समझाया। अुन्होंने बताया कि गणित तो दुनियाका रोजमर्राका मामूली व्यवहार है। अिस व्यवहारको हम समझ गये कि फिर तो सब त्रैराशिक ही है। अिसी कक्षामें मेरी गणितकी नींव पक्की हुअी। गणितका स्वरूप मेरे ध्यानमें आ गया और तबसे सवाल हल करनेमें मिलनेवाले गणितानंदका रंग मैं चखने लगा। मेरे सारे सवाल सही निकलने लगे। मुझमें आत्मविश्वास पैदा हो गया और तबसे मैं क्लासके दूसरे पिछड़े हुअे लड़कोंको गणित सीखने और सवाल हल करनेमें मदद करने लगा। फ़ुरसतके वक्त क्लासके लड़कोंको केवल शौकके तौर पर गणित पढ़ानेका मेरा यह काम कॉलेजमें अिन्टरकी परीक्षा तक चलता रहा। अुसके बाद गणितसे मेरा सम्बन्ध छूट गया।

५०

भाअूका अुपदेश

अंग्रेजी दूसरी कक्षामें मै पोरबन्दरके हिन्दू स्कूलमें था। वहाँ हमारे मुसलमान शिक्षक दूसरी कक्षामें ही गणितका विषय अंग्रेजीमें पढ़ाते थे। मेरी समझमें कुछ भी नहीं आता था क्योंकि मेरे लिअे वह ढंग बिलकुल ही नया था। दूसरे लड़कोंने भाषा समझे बगैर सवालका अर्थ अनुमानसे समझ लेनेकी कला प्राप्त कर ली थी। मेरा गणित अच्छा था। लेकिन भाषा समझमें न आनेके कारण मैं अपंग-सा बन गया था। हम लड़के जब घर पर सवाल छुड़ाने बैठते, तो मैं अुनसे सवालका अर्थ समझ लेता, और फिर अुन्हींको सवाल समझा देता।

स्कूलमें दाखिल हुअे कुछ ही दिन बीते होंगे कि हमारी सत्रान्त (terminal) परीक्षा आयी। मुझे आशा थी कि मैं गणितमें पहला रहूँगा। लेकिन हुआ अुससे अुलटा। गणितमें मुझे सात या दस ही नंबर मिले। दूसरे लड़कोंके परचे मैंने देखे। कअी लड़कोंके अुत्तर गलत थे लेकिन सवालकी रीति सही थी जिसलिअे शिक्षकने अुन्हें आधा सही मानकर कुछ नम्बर दिये थे। यह देखकर मुझे आशा हुअी कि मुझे भी अैसे नम्बर मिलेंगे। नापास होनेका आघात तो था ही लेकिन निराशामें भी आशा तो मनुष्यको आखिर तक रहती ही है। मैं शिक्षकके पास गया। रोआँ-सा तो हो ही गया था। मैंने अुनसे कहा, आपने कितने ही लड़कोंको आधे सही सवालोंके नम्बर दिये हैं। मुझे भी अैसे नम्बर मिल सकते हैं। शिक्षक मेरी बात ठीक तरहसे न समझ पाये। वे नाराज होकर कहने लगे मेरे निर्णय पर तुझे आपत्ति है? मुझ पर पक्षपातका आरोप रखता है? मैं तेरा

५१

जगन्नाथ बावा

जगन्नाथ बावा पुराने जमानेके संस्कारी हरिदासों (कथावाचकों) के अच्छे प्रतिनिधि थे। महाराष्ट्रमें हरिदास समाज-सेवकोंका अेक विशेष वर्ग है। मनोरंजन धर्म-प्रवचन कथा-प्रसंग और संगीत आदि तत्त्वोंका लोकभोग्य संमिश्रण करनेवाले हरिदासोंके अिस प्रयोगको महाराष्ट्रमें कीर्तन कहते हैं। ये कीर्तन सुननेके लिअे लोग हमेशा ही बड़ी संख्यामें अुपस्थित रहते आये हैं। रातको जल्दी भोजन करके लोग कीर्तन सुनने मंदिरोंमें जाते हैं। कीर्तनके पूर्वरंगमें किसी धार्मिक सिद्धान्तका प्रमाणसहित किन्तु दिलचस्प विवरण होता है। अुत्तररंगमें अुसी सिद्धान्तको स्पष्ट करनेवाला कोअी पौराणिक आख्यान रसयुक्त वाणी और काव्यमय पद्यगीतोंके साथ कहा जाता है। कभी वार्तालापकी वर्णनात्मक शैली आती है, कभी संभाषणोंका अभिनय शुरू हो जाता है कभी कुशल वार्तालाप और युक्तियाँ छिड़ती हैं तथा चतुराअी अेवं हास्यरसकी झड़ी लग जाती है तो कभी करुणाके अविरुद्ध प्रवाहमें सारी सभा सराबोर होकर रोने लगती है। यह कीर्तन-संस्था लोकशिक्षणका क़ीमती कार्य बहुत अच्छी तरह करती थी। यों जनताको रातके फ़ुरसतके समय काव्य-शास्त्र-विनोदके साथ धर्मबोधकी क़ीमती शिक्षा सहज ही मिल जाती थी। अुसमें बाजारूपनका-सा दोष नहीं था सो बात नहीं, लेकिन संस्कारिता अधिक थी। पुराणिककी कथाकी अपेक्षा हरिदासका कीर्तन ज्यादा लोकप्रिय था। अनपढ़ स्त्रियोंके लिअे तो यह बड़ी दावतका काम करता था। अैसे अुदाहरण भी हैं जिनमें भावुक किन्तु क्षीणबुद्धि बहनें धर्मचिन्तनमें अिन हरिदासोंके पीछे पागल हो गयी हैं।

कारवारमें जगन्नाथ बाबा हमारे पड़ोसमें आकर रहे थे। पूरा अेक महीना रहे होंगे। अुनका रहन-सहन और बर्ताव अत्यन्त ही निर्मल था असी मुझ पर छाप है। हमारे यहाँ आकर वे घंटों बिताते। ब्युत्पत्तिशास्त्रमें वे अपना सानी नहीं रखते थे। अुस समय मैं अंग्रेजी दूसरीमें था। हमारा गणित चलता रहता। जगन्नाथ बाबाको गणितका बड़ा शौक था। अेक दिन अेक सवालमें मुझे अुलझा हुआ देखकर अुन्हें जोश आया और अुन्होंने मेरा पीछा पकड़ा। सवेरे, दोपहरको शामको जब भी मुझे फ़ुरसत होती वे मुझे पकड़कर बैठाते और गणितके तरह-तरहके सवाल समझाते नअी-नअी रीतियाँ बतलाते। अुस वक्त म गणितमें कुछ ज्यादा होशियार माना जाता था। अिसी कारण जगन्नाथ बाबाने मुझ पकड लिया होगा। घड़ीकी सूअियाँ आमने सामने कब आती हैं आमने सामन दौड़नवाली रेल गाड़ियोंके सवाल कैसे हल करने चाहियें अिधर चरागाहकी घास बढ़ती जाय और अुधर गायें चरती रहें तो अुसका हिसाब कैसे करना चाहिये, विद्यार्थियोंकी यादवाश्तके समान टूटे-फूटे हौजका पानी कितन समयमें भर जायेगा या बह जायेगा यह कैसे खोज निकालें यादि बातें अुन्होंने मुझे बतायीं। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि अेक वर्षका गणित अुन्होंने अेक महीनेमें ही पूरा कर दिया। मुझे भी अुनके तरीक़ेमें अितना मजा आने लगा कि दूसरे दिनसे ही अुनके हाथसे छूटनेका प्रयत्न मैंने छोड़ दिया। गणिती विचार किस प्रकार किया जाना चाहिये अिसकी कुंजी अुन्होंने मुझे दे दी। मसलन् सवालमें कितनी चीजें दी हुअी हैं और कौन-कौनसी खोज निकालनी हैं अिसका पृथक्करण करना अुन्होंने मुझे सिखाया और दी हुअी चीजों परसे अज्ञात जवाबका अन्दाजा कैसे लगाया जाय अिसका रहस्य ही मानो अुन्होंने मुझमें अुंडेल दिया। यह बात मेरी समझमें आ गयी कि गणितका हर सवाल मानो अेक सीढ़ी है, जिसे हम स्वयं ही बनाते हैं और अुस पर चढ़कर हम जवाब तक पहुँच जाते हैं।

रातको चीम लेनके बाद पेट पर हाथ फेरते हुअ और 'हौशियारी' करके ज़ोरसे डकारते हुअे वे हमारे यहाँ आसन जमाते और मोरोपंतकी आर्या छेड़ देते। मोरोपन्तकी आर्या कभी-कभी तो मराठी प्रत्ययोंवाला संस्कृत काव्य ही होता है। अिन आर्याओंका जिसने काफ़ी अध्ययन किया है, अुसे बिना पढ़े ही संस्कृतका बहुत कुछ ज्ञान हो जाता है। महाराष्ट्रमें संस्कृतका अभ्यास जितना ज्यादा है अुसका कारण यह है कि वहाँ पर पुराने मराठी कवियोंका अध्ययन रसपूर्वक अेवं व्युत्पत्ति-सहित चलता आया है।

जगन्नाथ बाबा अितिहास-भूगोलकी भी काफ़ी जानकारी रखते थे। पतले कागज़ोंके पतंग और दीवालीके आकास-दीये वग़ैरा बनाना भी अुन्हें ख़ूब आता था। जिससे लड़कोंकी टोली अुन्हें सदा घेरे रहती थी। लेकिन आजकलके कुछ शिक्षकोंकी तरह वे बेढंगे या विद्यार्थियोंके पीछे दीवाने बने हुअे नहीं थे। कोअी विद्यार्थी बहुत चिकनी चुपड़ी बातें करने लगता, तो वह अुनसे बर्दाश्त न होता। कोअी भावुक लड़का बहुत पास आकर बैठता या गले पड़ता, तो अुसे तमाचा ही मिलता। कोअी लड़का ज़रा भी बनने-ठननेका प्रयत्न करता, तो दूसरे बालकोंके सामने अुसकी फ़ीजीहत होती। अेक लड़का बेहद नज़ाकत-पसन्द था। जब मामूली टीका टिप्पणीका अुस पर कोअी असर न हुआ तो चिढ़कर बाबा बोले "अरे, कोअी बाज़ार जाकर दो पैसेकी चूड़ियाँ तो ले आओ। जिस लड़केको पहनानी चाहिये। मगरी तो जिसकी बहन जिसे मुफ़्त दे देगी!"

अैसे शिक्षक आजकल दिखाओ नहीं देते। बाबा कहा करते, 'शिक्षकोंका मर्दाना स्वभाव ही विद्यार्थियोंके चारित्र्यका बीमा है।"

अेक दिन मैंने स्कूलमें हरि मास्टर साहबको जगन्नाथ बाबाकी संस्कारिताकी बात कही। मुझे लगा कि हरि मास्टरको अुसमें कोअी ख़ास बात नहीं मालूम हुअी। लेकिन थोड़े ही दिनोंमें जब हमारे

स्कूलमें रविवारकी शामको जगन्नाथ बाबाका कीर्तन होनेकी बात जाहिर हुओी, तब मुझे बहुत आनन्द हुआ। कारवारके हिन्दू समाजके सभी प्रतिष्ठित सज्जन और सरकारी अफ़सर अुस दिन कीर्तनमें आये थे। जगन्नाथ बाबाने सादी सफ़ेद धोती अुस पर रामदासी पंथकी भगवी कफनी और सिर पर भगवा साफा — यह पोशाक पहनी थी। घण्टों तक अुनका कीर्तन अस्खलित वाणीमें चलता रहा। अुसके पूर्वरंगकी अेक ही बात अब मुझे याद है। षड्रिपुओंका आकर्षण कितना खतरनाक होता है और अुससे सच्चा सुख तो मिलता ही नहीं, जिसका विवेचन करते हुअे जब कामविकारका ज़िक्र आया तब वे कहने लगे 'बिलकुल सूखी हुओी निर्मांस हड्डीको चबाते-चबाते अपने ही दाँतोंसे निकलनेवाले खूनको चाटकर खुश होनेवाले कुत्तेमें और कामी मनुष्यमें ज़रा भी अंतर नहीं है।

जगन्नाथ बाबा कहाँसे आये थे कहाँके रहनेवाले थे और कहाँ गये जिसका मुझे कुछ भी पता नहीं। अुनके पढ़ाये हुअे सवालोंको भी अब मैं भूल गया हूँ। लेकिन गणितमें दिलचस्पी पैदा करनेवाले चार व्यक्तियोंमें अुनका स्थान हमेशा रहा है। अुनकी याद करायी हुओी आर्यायें भी अब मैं भूल गया हूँ। लेकिन यह कुत्तेका दृष्टान्त मुझे आज भी याद है और वह आज भी अुपयुक्त है।

५२

कपाल-युद्ध

शरीरसे मैं बचपनसे दुर्बल था। घरेलू मामलोंमें तो सविनय आज्ञाभंग करके मैं अपने व्यक्तित्वकी रक्षा कर लेता था लेकिन पाठ-शालामें यह बात कैसे चलती? अतः कभी बार खेल-कवायदों, जलसों, और सैर-सफ़र जैसे सामुदायिक कार्यक्रमोंसे म खिसक जाता या अनुपस्थित रहता। अिस प्रकार जीवनको सकुचित करके ही म अपने स्कूलके दिनोंको अपन लिअे सुखपूर्ण बना सका था। लेकिन फिर भी कभी-कभी बड़ी आफत आ पड़ती। अिसके लिअे, अैसी ही अेक आपत्तिके समय मैंने अेक खास खोज किया था जो मेरे लिअे चार पाँच भिन्न-भिन्न प्रसगों पर सकटनिवारक साबित हुआ।

देवीदास पै मेरा जानी दोस्त था। हम दोनों सरकारी अधि-कारियोंके लड़के थ और दोनों मामूली भी। अिसीलिअे शायद हमारी दोस्ती हो गयी थी। अेक दिन बरसातमें समुद्रमें बड़ा तूफ़ान अुठा था। बड़ी-बड़ी लहरें रास्तेके बाँध पर आकर टकरातीं और वापस लौटतीं। ये लौटती हुअी लहरें आनेवाली लहरसे टकरातीं। लेकिन चूँकि वे समानान्तर नहीं बल्कि कुछ तिरछी होतीं अिसलिअे आमने सामनेकी लहरोंकी कॅची बन जाती। और अुन दोनोंके मिलापसे फव्वारेकी तरह मजेदार मोटी धारा आकाशमें अुछलती और अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक दौड़ जाती। जिसने यह शोभा देखी हो वही अिसका आनन्द समझ सकता है।

सॉय-सॉय हवा चल रही थी। बरसातकी झड़ी लगी हुअी थी और हम दोनों भीग हुअे कपड़ोंसे अुस शोभाको देख रहे थे। अिस हालतमें न जाने कितना समय बीता होगा। लेकिन आखिर अिस

डरसे कि घरके लोग नाराज होंगे, हमने होशमें आकर लौटनेका अिरादा किया। अितनेमें न जाने क्यों, हम दोनों लड़ पड़े। लड़ते-लड़ते हम दोनों (अितनी बारिशके होते हुअे भी) गर्म हो गये। देवीदास मेरी नसको बराबर जानता था। अुसन मेरे अेक-दो घूँसे खाये कि तुरन्त ही जोरसे मेरी दोनों कलाअियाँ पकड़ लीं। मेरी सारी कमजोरी कलाअियोंमें ही थी। मैंने बहुत अुखाड़-पछाड़ की, फिर भी मेरे हाथ छूटते न थे और अिसलिअे अुसे पीटनका मौका मुझे नहीं मिल रहा था। हम दोनोंकी अुम्र वैसे तो समान थी लेकिन वह ताक़तवर, मोटाताजा और मजबूत था। अुसके आगे मेरा कुछ न चलता था। शर्मके मारे मेरा गुस्सा और भी भड़क अुठा।

अितनेमें मुझे अेक तरकीब सूझी और सूझते ही मैंन अुस पर अमल कर दिया। धड़ामसे मैंने अपना सिर अुसकी कनपटी पर हथौड़ेकी तरह दे मारा। बेचारा अेकदम लालसुर्ख हो गया। अुसे यह भी खयाल न रहा कि अुसके हाथोंकी पकड़ कब छूट गयी और वह जमीन पर गिर गया।

हमारा झगड़ा मामूली ही था और हमारा क्रोध भी क्षणिक ही था। अुसे नीचे गिरा हुआ देखकर मुझे दुःख हुआ। मैंने हाथ पकड़कर अुसे अुठाया अुसके कपड़ों पर लगा हुआ कीचड़ झटक दिया और दोनों पहले जैसे ही दोस्त बनकर घर आये। रास्तेमें देवीदास कहने लगा — मुझे पता न था कि तू अितना जल्लाद होगा। मैंने कहा — अुस बातको तू अब भूल जा। मुझे कहाँ पता था कि कनपटी पर अितनी जोरसे चोट लगती है?

अिसी शस्त्रका प्रयोग मैंन बादमें दो बार शाहपुरमें किया था। अेक बार तो अेक अत्यन्त प्रेमी मित्रके आग्रहसे छूटनेके लिअे। और दूसरी बार शाहपुरकी पाठशालाके अखाड़में अेक कसरतबाज लड़केने मेरे सामने मुँहसे कोअी गन्दी बात निकाली थी तब अुसे सजा देनेके लिअे। दूसरी बार विरोधी भी काफ़ी मजबूत था। अुसे अितना

प्रतिग्रह तो खोजते रहते हैं, लेकिन प्रतिष्ठाका दान करनेकी नीयत अनुनमें नहीं होती।

हिन्दू स्कूलकी तालीमके कारण हम सब विद्यार्थी भावनाकी कसौटीसे ही अेक-दूसरेको जाँचते। सुब्बराव दिवेकर नामक अेक लड़का था। अुसके पिता मेरे पिताके मातहत क्लर्क थे। शुरू-शुरूमें सुब्बराव मेरी कुछ ज्यादा खिदमत करता था। लेकिन जैसे हमारा परिचय बढ़ा, मैंने देखा कि अभ्यासकी नियमितता स्कूलमें समय पर आनेका आग्रह, सबके साथ मिल-जुलकर रहनेकी कला और आम सहानुभूति आदि बातोंमें वह मुझसे बढ़कर था। अतः आगे चलकर मैं ही अुसका अधिक आदर करने लगा।

अिस दृष्टिसे बाळिगा भी अच्छे लड़कोंमें गिना जाता था। यात्रा पर निकलनेसे अेक दिन पहले बाळिगा आकर मुझसे कहने लगा, "क्या आज शामको तू मेरे साथ घूमने चलेगा?" यह सवाल अुसने अितनी नम्रतासे पूछा, मानो अुसके मनमें यह डर हो कि मैं अुसके साथ जानेसे अिनकार कर दूँगा। मुझे देवीदासके साथ बहुत बातें करनी थीं। अतः अुसके साथ घूमने जानेको मैं आतुर था, अिसलिअे बाळिगाको तो मैं अिनकार ही कर देता। लेकिन अुसकी आवाजमें अितना प्यार भरा हुआ था कि मेरी ना कहनेकी हिम्मत ही न हो सकी।

शामको हम समुद्र-किनारे बहुत दूर तक घूमने गये। वहाँ बैठकर कितनी ही बातें कीं। फिर बाळिगाने धीरेसे जेबमें से अेक बड़ा दोना निकाला। अुसमें गर्म-गर्म जलेबियाँ थीं। दोनें पर दूसरा दोना ढँककर अुसे स्वच्छ रूमालमें लपेटकर अुसने जलेबीको गर्म रखा था। मैं कुछ भी बोलता, अुससे पहले ही बाळिगाने कहा "चुप, बोले मत। तू ना कह ही नहीं सकता। यह तो सब खाना ही पड़ेगा। मैं तेरी अेक न सुनूँगा। मेरे गलेकी सौगन्ध है जो ना कहा तो।" समुद्रमें नहाते समय जैसे अेकके पीछे अेक आनेवाली लहरोंसे हमारा

दम घुटने लगता है, वैसा ही मेरा भी हाल हुआ। मैंने अेक जलेबी हाथमें ली और कहा — अच्छा, तू भी खा और मैं भी खाअूं।' लेकिन वह थोड़े ही माननेवाला था। कहने लगा — 'यह सब तुझीको खाना होगा। मैंने भी जिद पकड़ी कि यदि तू नहीं खायेगा तो मैं भी नहीं खाअूंगा। हम दोनों जिद्दी ठहरे। लेकिन आखिर मैं हारा। बाळिगाने खुद तो आधी जलेबी खायी और शेष सबका भार मेरे सिर — अथवा गले — आ पड़ा।

खाते खाते मैंने अुससे पूछा 'दूकानमें से तेरे घरवालोंने तुझे अितनी जलेबी कैसे दान दी? तू पूछकर तो लाया है न?' दूसरा कोअी मौका होता तो वह अैसे सवालको अपना अपमान समझता और काफ़ी नाराज होता। लेकिन आज तो अुसके मनमें अैसी कोअी बात नहीं आ सकती थी। अुसने अितना ही कहा 'अरे, यह क्या पूछता है? दूकानमें जाकर मैं खुद अपने हाथसे ये बनाकर लाया हूँ। जितनी देर मैं खाता रहा बाळिगा मेरी ओर टुकुर-टुकुर देखता रहा। मानो मैं ही अुसकी आँखोंसे खानेकी जलेबी था!

घर आकर मैंने माँसे कह दिया कि किस तरहसे मेरे मित्रने मुझे जलेबी खिलायी है, तो माँ बोली "हाँ अैसा ही होता है। कृष्ण और सुदामाके बीच भी अैसा ही स्नेह था। हम बड़े हो जायें, तो भी हमें अपने बचपनके मित्रोंको भूलना न चाहिये समझा न?

रातको फिर बाळिगा मुझसे मिलने आया। मैंने अुसे दीवालीके लिअे बनायी हुअी रंगीन कन्दील भेंट की। हम हमेशाके लिअे कारवार छोड़कर जानेवाले थे। कारवारमें पाँच-छः वर्ष रहनेके कारण घरमें बेहद सामान जमा हो गया था। अुसमें से कुछ तो हमने बेच दिया और कुछ मित्रोंके यहाँ भेज दिया। मेरे प्रति बाळिगाके प्रेमकी बात सुनकर माँके मनमें अुसके प्रति वात्सल्य पैदा हुआ था। अिसलिअे जो चीज बाळिगाके कामकी मालूम होती, वह माँ अुसे दे देती।

बाळिगाका भोजनालय हमारे घरसे ज्यादा दूर न था। वह दौड़ता हुआ आकर दी हुयी चीज़ घर रख आता और फिर मुझसे बातें करने लग जाता। जब दो-तीन बार ऐसा हुआ तो उसके घरवालोंको शक हुआ कि कहीं यह ये चीज़ें बगैर पूछे तो नहीं ला रहा है। असलिये उनके घरका अेक आदमी हमारे यहाँ पूछने आया। बेचारे बाळिगा पर अेक ही दिनमें अिस प्रकार नाहक दो बार चोरीका झूठा अिल्ज़ाम लगा। मोले प्रेमकी यह क़द्र! अिस घटनाको लगभग ५० साल हो गये हैं, लेकिन बाळिगाका वह भोला प्रेम आज भी मेरे मनमें ताज़ा है।

५४

मीठी नींद

मैं सुबहकी मीठी नींदके घूँट पीता हुआ बिस्तरमें पड़ा था। घरके और सब लोग तो कभीके उठकर प्रातर्विधिसे निवट चुके थे। न जाने कब माँ और मेरे बड़े भाभी बाबा मेरे बिस्तर पर आकर बैठ गये। आधी नींदमें मुझे ज़रा भी खयाल न था कि कितने बजे हैं मैं कबसे सो रहा हूँ, मेरा सिर और पैर किस दिशामें हैं बाहर रोशनी है या अँधेरा। बस मेरे आसपास केवल मीठी नींदका आनन्द और ओढ़ी हुयी रज़ाओीकी गर्मी ही थी। अितनेमें माँ और बाबाकी बातचीत मेरे कानोंमें पड़ी।

"काय रे बाबा तुला काय वाटतें? हा दत्तू कांहीं शिकतोय का?"*

---

* क्यों रे बाबा, तेरा क्या खयाल है? यह दत्तू कुछ पढ़ता है या नहीं?

प्रश्न सुनते ही मेरे कान खड़े हो गये। अपने बारेमें जहाँ कुछ बात होती है वहाँ ध्यान तो जाता ही है। अुसी क्षण मैंने विचार किया कि अगर मैं कुछ हरकत करूँगा तो संभाषणका तार टूट जायेगा। मैं सो रहा हूँ अैसा मानकर ही यह बातचीत चल रही थी। बस मैं बिलकुल निश्चेष्ट पड़ा रहा, अितना ही नहीं, कुछ प्रयत्न करके यह भी सावधानी रखी कि साँसमें किसी तरहका परिवर्तन न होने पाये।

बाबाने जवाब दिया हाँ अिसकी शक्तिके मुताबिक पढ़ता अवश्य है।'

माँको अिसनेसे ही सन्तोष न हुआ। कहने लगी मैं अिसके हाथमें पुस्तक तो कभी देखती ही नहीं। सारा दिन फालतू बातोंमें गँवाता फिरता है। अेक दिन भी अैसा याद नहीं आता, जब यह समय पर पाठशाला गया हो और रातको पहाड़े बोलते-बोलते ही सो जाता है। अिसका क्या होगा? अिसकी जबानमें विद्या लगगी या नहीं?'

मेरी पढ़ाअीका अिस प्रकारका वर्णन तो मैं दिन रात सुनता ही था। जो कोअी भी मुझ पर नाराज होता वह अिसने दोषोंकी नामावली तो कहता ही। पढ़ाअीके बारेमें यदि कोअी नाराज न होता, तो वह अकेला गोंदू था क्योंकि वह अिन बातोंमें मुझसे भी बढ़कर था। अिससे माँके अिस सवालमें न तो मुझे कुछ नयापन लगा और न बुरा ही। मैं हूँ ही अैसा! काले आदमीको यदि कोअी काला कहे, तो वह नाराज क्यों हो? मुझे तनिक भी बुरा न लगा। मेरा सारा ध्यान तो बाबा क्या कहता है अुसी ओर लगा था।

बाबाने कहा माँ तू व्यर्थ चिन्ता करती है। दत्तूकी बुद्धि अच्छी है। वह कोअी जड़ नहीं है। जब पढ़ता है तो ध्यान देकर पढ़ता है। शरीरसे कमजोर है अिसलिअे दूसरे लड़कोंकी तरह लगातार घंटों तक नहीं पढ़ सकता। लेकिन अुसमें कुछ हर्ज नहीं। जब मैं अिसे समझाता हूँ तब झट समझ लेता है। तू अिसकी कुछ भी फिकर मत कर।"

माँ कहने लगी "तू जितना मक्कीम विश्वास है, तब तो मुझे कोभी चिन्ता नहीं। पढ़ाओीके मामलोंमें मैं क्या जानूँ? मैं तो जितना ही चाहती हूँ कि यह निरा पशु न रह जाय। जब हम नहीं रहेंगे, तब तुम सब बड़े हो गये होंगे। मेरा दत्तू सबमें छोटा है। पढ़ा-लिखा न होगा तो जिसकी बड़ी दुर्गति होगी। यह बड़ा होकर कमान-खाने लगे तब तक मेरी जीनेकी जिच्छा अवश्य है। दत्तूको जब मैं अच्छी तरह जमा हुआ देखूँगी तब सुखसे आँखें मूँद लूँगी।'

जिस बातचीतको सुनते समय मेरे बालहृदयमें क्या चल रहा होगा जिसकी कल्पना न तो माँको थी और न बड़े भाओीको ही। मेरे प्रति प्रेम और आस्था रखकर मेरे बारेमें की जानेवाली यह पहली ही बातचीत मैंने सुनी थी। डूबते हुओे मनुष्यको जब कोभी बचाकर जीवन-दान देता है तब मुझको जैसा हर्ष होता है, वैसा ही हर्ष बड़े भाओीके शब्द सुनकर मुझे हुआ। मेरी आचारावर्तक माँको कितनी चिन्ता होती है यह भी मुझे पहले-पहल ही मालूम हुआ। लेकिन अुसका मुझ पर अुस वक्त ज्यादा असर नहीं हुआ, और जो हुआ वह भी अधिक समय तक नहीं टिका। लेकिन बड़े भाओीके शब्दोंका असर तो स्थायी बना रहा।

बाबाकी पिताकी कसौटी बहुत ही सख्त थी। 'बाबा' की कहनेकी अपेक्षा 'अुस जमानेकी' कहना अधिक ठीक होगा। हमारे सामने हमारी तारीफ़ करना मानो महापाप था। सारे बुजुर्गोंका यह अेकमात्र कार्य होता कि वे हमारे दोषोंकी तरफ़ हमारा ध्यान आकर्षित करें। अुनमें भी बाबा तो मानो मूर्तिमन्त कर्तव्यबुद्धि थे। क़दम-क़दम पर हमें टोकते क़दम-क़दम पर नाराज़ होते और नाराज़ भी जुबानकी अपेक्षा छड़ीके द्वारा ही अधिक होते। मारके डरसे मैं भाग रहा हूँ और बाबा छड़ी लेकर मेरे पीछे दौड़ रहे हैं — अैसी दौड़के दो चार दृश्य अभी भी मेरी दृष्टिके सामने मौजूद हैं। दौड़ते वक्त हम दोनोंके बीचका अन्तर घटता है या बढ़ता है यह देखनेके लिये

में कभी बार पीछे नजर फेंकता। यदि अुस वक्त कोअी रसिक काव्यज्ञ खड़ा होता, तो अुसे कालिदासका ग्रीवाभंगाभिराम वाला श्लोक निश्चय ही याद आ जाता।

जिस तरहकी दौड़में कभी तो हम दोनोंके बीचका अन्तर घट जाता और कभी में सटक भी जाता। कभी-कभी किसी चीजसे ठोकर खाकर मैं गिर जाता और बाबाके हाथ पड़ जाता। फिर तो मुझे घंटों तक अुनके कमरेका क़ैदी बनकर रहना पड़ता। लेकिन जीवनकी दौड़में हम दोनोंके बीचका अन्तर दिन प्रतिदिन घटता ही गया। यहाँ तक कि कभी-कभी मं ही बाबाका परामर्शदाता बन जाता। हम दोनोंकी अुम्रके फ़र्कको देखकर अपरिचित लोग हमें पिता-पुत्र समझते और दरअसल बाबाका प्रेम पिताके प्रेमके समान ही था। आगे चल कर जैसे-जैसे मैं अुम्रमें और विचारमें बढ़ता गया वैसे-वैसे मैं बाबाके लिअे अुनके कोमल हृदयके भावों आशा-निराशाओं चिन्ताओं और महत्त्वाकांक्षाओंको प्रकट करनेका अेकमात्र स्थान बन गया। फिर तो हमारे सम्बन्धकी मिठास मामी-भाजीके रिश्तेके अलावा मित्रताकी भी बन गयी। जिस मिठासका बीज अुस दिन मीठी नींदके समय सुने हुअे बाबाके वचनोंमें ही था क्योंकि अुस दिन मुझे सचमुच 'श्रुतं श्रोतव्यम्' का अनुभव हुआ।

अभी अभी अेक मित्रसे सुना कि लोग औरोंकी त्रुटियाँ निकालने और अिलजाम लगानेमें अितने अुदार होते हैं, लेकिन अुचित अवसर पर किसीकी स्तुति करनेमें वे अितने कंजूस क्यों होते हैं? अेक विदेशी लेखकने कहा है कि "किसीकी स्तुति करनेसे सुननवालोंमें खराबी पैदा हो जाती है, अिसलिअे किसीकी स्तुति नहीं करनी चाहिये — यह समझना वैसा ही है जैसा कि किसीका कर्ज अिस डरसे अदा न करना कि वह अुस पैसेका ग़लत अिस्तेमाल करेगा।"

अिस सवालका फ़ैसला कौन करे?

५५

मेरी योग्यता

स्कूल जानेवाले सभी विद्यार्थी वर्गमें प्रश्न पूछनेकी अेक रीतिसे बराबर परिचित होते हैं। सभी विद्यार्थियोंको क्रमसे बैठाया जाता है। फिर शिक्षक पहले क्रमांकसे प्रश्न पूछना शुरू करते हैं। पहला विद्यार्थी यदि प्रश्नका अुत्तर न दे सके, तो वही प्रश्न दूसरेको पूछा जाता है। दूसरा भी अुसका जवाब न दे सके तो तीसरेको। अिस तरह शिक्षक जल्दी-जल्दी हरअेकको वही सवाल पूछते हुअे आगे बढ़ते हैं। जिसका अुत्तर सही निकलता है वह अपनी जगह परसे अुठकर सभी हारे हुअे विद्यार्थियोंसे अूपर पहले नंबर पर आ बैठता है। फिर अुसके बादके नम्बरवाले विद्यार्थीसे दूसरा कोअी प्रश्न पूछा जाता है। विजयी विद्यार्थी हारे हुअे सभी विद्यार्थियोंसे अूपर आ बैठे' यह अिस तरीकेका सर्वसाधारण नियम है। यह सही है कि अिस तरीकेसे सारे विद्यार्थी जागरूक रहते हैं लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि अिस तरीकेसे विद्यार्थियोंकी सच्ची परीक्षा होती ही है। अेक घण्टे तक अिस प्रकार प्रश्न पूछनेके बाद विद्यार्थियोंको जो क्रमांक मिलते हैं वे कोअी अुनके अभ्यास या योग्यताके द्योतक नहीं होते। यह तो अेक प्रकारकी लॉटरी है। यदि शिक्षक पक्षपाती हो और विद्यार्थियोंको अच्छी तरह पहचानता हो तो वह चाहे जिस विद्यार्थीको अपनी अिच्छाके अनुसार चाहे जो स्थान दिला सकता है।

प्रश्नोंकी यह लॉटरी मानव-समाजके विशाल जीवनका अेक प्रतिबिम्ब ही होता है। अिसमें सभी विद्यार्थी जाग्रत रहते हैं। चूंकि वे जानते हैं कि अुत्तर देनेमें ज्यादा समय नहीं मिलेगा, अिसलिअे वे क्षीप्रमति बनते हैं और शिक्षकका भी बहुतसा समय बच जाता

है। फिर जिससे शिक्षक और विद्यार्थियोंमें आलस्य आनकी भी कम संभावना रहती है। आज मुझे यह पद्धति मंजूर नहीं है क्योंकि जिसमें अनकों दोष है। लेकिन छुटपनमें हमें यह तरीका बहुत ही अच्छा लगता था। जिसमें यह मजा तो है ही कि देखते-देखते कोअी विद्यार्थी रंकसे राजा बन जाता है और राजासे रंक बननेके लिअे भुसे तैयार रहना पड़ता है। लेकिन साथ ही भुम्र तपश्चर्या करन वाले प्रत्येक व्यक्तिसे डरते रहनवाले स्वर्गाधिपति अिन्द्रकी तरह हमेशा सबसे डरते रहना पड़ता है क्योंकि वर्गमें भुससे भूंचा स्थान दूसरे किसीका नहीं होता जिसलिअे भुसे भूपर चढ़नका आनन्द तो मिल ही नहीं सकता। भुसके सामन तो नीचे भुतरनका ही सवाल रहता है। जिसमें खुद भुसे भले ही कोअी आनन्द न आता हो लेकिन भुसे सदा अपने स्थानकी रक्षाके लिअ चिन्तित देखकर अन्य विद्यार्थियोंको तो अवश्य ही मजा आता है।

दूसरेकी फजीहतसे आनन्द प्राप्त करनेकी रजोगुणी वृत्तिवाले व्यक्तियोंको यह तरीका भले ही पसन्द आये लेकिन यह बात शायद भुस वक्तके शिक्षाशास्त्रियोंके ध्यानमें नहीं आयी थी कि जिसमें नीति-शिक्षाका नाश है।

अेक दिन हमारे वर्गमें अैसे ही प्रश्नोत्तर चल रहे थे। मैं अपने रोजानाके नियमके मुताबिक स्कूलमें देरसे गया था और जिसलिअे अधिकारके साथ आखिरी नंबर पर बैठा था। वहांसे देखते-देखते म बीच तक तो पहुंच गया। जितनमें वामन गुरुजीने पहले नम्बरके विद्यार्थीसे अेक कठिन प्रश्न पूछा। भुन्होंने पहलेसे मान लिया था कि जिसका जवाब किसीको नहीं आयेगा। जिसलिअे वे सभी विद्यार्थियोंसे झट झट पूछते चले गये। मने बीचमें जवाब तो दे दिया लेकिन भुस तरफ भुनका ध्यान ही नहीं गया। मुझे विश्वास था कि मेरा भुत्तर सही है। लेकिन भुनकी अँगुली तो तेजीसे आखिर तक घूम गयी। अिस तरीकेमें जब कोअी भी जवाब नहीं दे पाता, तब खुद शिक्षक

अपने सवालका जवाब बतला देते हैं। अिसलिये मास्टर साहबने जवाब कह दिया। मुझे सुननेके बाद मुझसे कैसे चुप बैठा जाता? मैंने खड़े होकर कहा — सर, यह अुत्तर तो मैंने दिया था। मास्टर साहबको मेरी बातका विश्वास नहीं हुआ और अपना अविश्वास अुन्होंने अपनी आँखों द्वारा जाहिर भी किया। मैंने फिर जोर देकर कहा, 'मैं सच कहता हूँ सर, मैंने यही जवाब दिया था। अब तो मास्टर साहबके सामने महान् धर्म-संकट आ खड़ा हुआ। अपने कान सच्चे हैं या सामनेका यह लड़का सच बोल रहा है? अुनकी अिस दिक्कतको मैं महसूस कर रहा था। लेकिन मैं भी नाहक हार कैसे स्वीकार करता? मैं तो अपनी जगह पर ज्योंका त्यों खड़ा रहा। मास्टर साहब कुछ गुस्सा भी हुअे। अपनी कुर्सीसे अुठकर वे मेरे पास आये और दोनों हाथोंसे मेरे कंधे पकड़कर मुझे ले जाकर पहले नंबर पर बैठाते हुअे सख्त आवाजमें बोले 'ले बैठ यहाँ।' मैं बैठ तो गया लेकिन अुनका यह व्यवहार देखकर बहुत बेचैन हो गया। बार-बार सारे विद्यार्थी मास्टर साहबकी तरफ और मेरी तरफ टकटकी लगाये देख रहे थे। यह भी अेक देखने जैसा दृश्य हो गया। मैं अितना परेशान हो गया कि समझमें न आता था कि क्या किया जाय। अैसा कुछ होगा अिसकी कल्पना यदि मुझे पहलेसे होती, तो मैं अिस झंझटमें पड़ता ही नहीं। पहले नम्बरका अितना मोह तो मुझे कभी था ही नहीं। कौन जाने मेरी अिस परेशानीका मास्टर साहबके दिल पर क्या असर पड़ा। अुन्होंने फिर मुझसे पूछा—'Do you think you deserve the first place? (क्या तू मानता है कि तू पहले नंबरके योग्य है?)

अेक तो शिक्षककी नाराजी और अविश्वासके कारण मैं परेशान था ही मैं तो सोच रहा था कि अिस सारी झंझटकी अपेक्षा यह अच्छा है कि भाड़में जाय वह पहला नम्बर! अुस पर मास्टर साहबके अिस प्रश्नने घाव किया। अपनी योग्यताका अुच्चारण अपने मुँहसे

करना हमारे हिन्दू सदाचारके विरुद्ध है। जो यह कहता है कि मैं सर्वोत्तम हूँ, मैं सुयोग्य हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, वह कुलीन नहीं माना जाता। अितना शील मैं बचपनसे सीख चुका था। अतः मास्टर साहबके प्रश्नके जवाबमें मेरे मुँहसे तुरन्त ही 'हाँ' कैसे निकल सकता था? शरमके मारे मेरा मुँह लाल-सुर्ख हो गया। मैंने महसूस किया कि मेरे कान भी गरम हो गये हैं। सारे विद्यार्थी भी यह सुननेको अुत्सुक थे कि मैं क्या कहता हूँ। मेरी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। 'हाँ' कहता हूँ तो अशिष्टता होती है और अितने सब नाटकके बाद 'ना' तो कह ही कैसे सकता था? फिर मैं यह भी देख रहा था कि जवाब देनेमें जितनी देर हो रही है अुतना मेरे प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है। आखिर मैंने पूरी हिम्मतके साथ आवश्यकतासे अधिक जोर देकर कहा— Yes I do (जी हाँ मैं अवश्य योग्य हूँ।) मास्टर साहब अेकदम चुप हो गये और अुन्होंने अिस तरह पढ़ाअी शुरू कर दी मानो कुछ हुआ ही न हो। लेकिन जो वातावरण अेक बार अितना दूषित हो गया था, वह अिस तरह थोड़े ही साफ़ हो सकता था? वह सारा दिन अिसी बेचैनीमें बीत गया। अुसके बाद मास्टर साहबने या किसी दूसरेने अिस प्रसंगका तनिक भी अुल्लेख नहीं किया। सबको लगा होगा कि अैसे नाजुक प्रश्नको न छेड़ना ही अच्छा है। अथवा हो सकता है कि सब अुसे भूल भी गये हों। लेकिन मैं अुसे कैसे भूलता?

बचपनमें और बड़े होने पर भी अैसे कभी प्रसंग आते हैं। बचपनकी मुख्य कठिनाअी यह होती है कि अुस वक्त भावनाअें कोमल और अुत्कट होती हैं लेकिन अनुपातमें परिस्थितिका पृथक्करण करनेकी शक्ति या भाषा हमारे पास नहीं होती। बड़े लोग तो अपना बचपन भूल जाते हैं और बालकोंके बारेमें मानते हैं कि वे आखिर तो बालक ही हैं, अुनके जीवनको अितना महत्त्व देनेकी क्या आवश्यकता है? हो सकता है कि यह सब अनिवार्य हो। लेकिन अुससे बालजीवन तो सरल

अपने सवालका जवाब बतला देते हैं। अिसलिअ मास्टर साहबने जवाब कह दिया। मुझे सुननेके बाद मुझसे कैसे चुप बैठा जाता? मैंने खड़े होकर कहा — सर, यह श्रुत्तर तो मैंने दिया था। मास्टर साहबको मेरी बातका विश्वास नहीं हुआ और अपना अविश्वास श्रुन्होंने अपनी आँखों द्वारा जाहिर भी किया। मैंने फिर जोर देकर कहा, 'मैं सच कहता हूँ सर, मैंने यही जवाब दिया था। अब तो मास्टर साहबके सामने महान् धर्म-संकट आ खड़ा हुआ। अपने कान सच्चे हैं या सामनेका यह लड़का सच बोल रहा है? श्रुनकी थिस दिक्कतको मैं महसूस कर रहा था। लेकिन मैं भी नाहक हार कैसे स्वीकार करता? मैं तो अपनी जगह पर ज्योंका त्यों खड़ा रहा। मास्टर साहब कुछ गुस्सा भी हुअे। अपनी कुर्सीसे श्रुठकर वे मेरे पास आये और दोनों हाथोंसे मेरे कंधे पकड़कर मुझे ले जाकर पहले नंबर पर बैठाते हुअे सख्त आवाजमें बोले 'ले बैठ यहाँ।' मैं बैठ तो गया लेकिन श्रुनका यह व्यवहार देखकर बहुत बेचैन हो गया। बार-बार सारे विद्यार्थी मास्टर साहबकी तरफ और मेरी तरफ टकटकी लगाये देख रहे थे। यह भी अेक देखने जैसा दृश्य ही गया। मैं अितना परेशान हो गया कि समझमें न आता था कि क्या किया जाय। असा कुछ होगा जिसकी कल्पना यदि मुझे पहलेसे होती तो मैं अिस झंझटमें पड़ता ही नहीं। पहले नम्बरका अितना मोह तो मुझे कभी था ही नहीं। कौन जाने मेरी अिस परेशानीका मास्टर साहबके दिल पर क्या असर पड़ा। श्रुन्होंने फिर मुझसे पूछा— Do you think you deserve the first place?' (क्या तू मानता है कि तू पहले नंबरके योग्य है?)

अेक तो शिक्षककी नाराजी और अविश्वासके कारण मैं परेशान था ही मैं तो सोच रहा था कि अिस सारी झंझटकी अपेक्षा यह अच्छा है कि भाड़में जाय यह पहला नम्बर! अुस पर मास्टर साहबके अिस प्रश्नने घाव किया। अपनी योग्यताका श्रुच्चारण अपने मुँहसे

करना हमारे हिन्दू सदाचारके विरुद्ध है। जो यह कहता है कि 'मैं सर्वोत्तम हूँ, मैं सुयोग्य हूँ, म बुद्धिमान हूँ' वह कुलीन नहीं माना जाता। अितना शील मैं बचपनसे सीख चुका था। अतः मास्टर साहबके प्रश्नके जवाबमें मेरे मुँहसे तुरन्त ही 'हाँ' कैसे निकल सकता था? शरमके मारे मेरा मुँह लाल-सुर्ख हो गया। मैंने महसूस किया कि मेरे कान भी गरम हो गये ह। सारे विद्यार्थी भी यह सुननको अुत्सुक थे कि मै क्या कहता हूँ। मेरी आँखोंके सामने अंधकार छा गया। 'हाँ' कहता हूँ तो अशिष्टता होती है, और अितने सब नाटकके बाद 'ना' तो कह ही कैसे सकता था? फिर मैं यह भी देख रहा था कि जवाब देनेमें जितनी देर हो रही है अुतना मेरे प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है। आखिर मने पूरी हिम्मतके साथ आवश्यकतासे अधिक जोर देकर कहा—'Yes I do (जी हाँ मैं अवश्य योग्य हूँ।) मास्टर साहब अेकदम चुप हो गये, और अुन्होंने अिस तरह पढ़ाअी शुरू कर दी मानो कुछ हुआ ही न हो। लेकिन जो वातावरण अेक बार अितना दूषित हो गया था, वह अिस तरह थोड़े ही साफ़ हो सकता था? वह सारा दिन अिसी बेचैनीमें बीत गया। अुसके बाद मास्टर साहबने या किसी दूसरेने अिस प्रसंगका तनिक भी अुल्लेख नहीं किया। सबको लगा होगा कि अैसे नाजुक प्रश्नको न छेड़ना ही अच्छा है। अथवा हो सकता है कि सब अुसे भूल भी गये हों। लेकिन मैं अुसे कैसे भूलता?

बचपनमें और बड़े होने पर भी अैसे कभी प्रसंग आते हैं। बचपनकी मुख्य कठिनाअी यह होती है कि अुस वक्त भावनाअें कोमल और अुत्कट होती हैं लेकिन अनुपातमें परिस्थितिका पृथक्करण करनकी शक्ति या भाषा हमारे पास नहीं होती। बड़े लोग तो अपना बचपन भूल जाते हैं और बालकोंके बारेमें मानते ह कि वे आखिर तो बालक ही ह, अुनके जीवनको अितना महत्त्व देनेकी क्या आवश्यकता है? हो सकता है कि यह सब अनिवार्य हो। लेकिन अुससे बाल्जीवन तो सरल

नहीं बन पाता। बचपनमें लड़कोंको जो भला या बुरा, मीठा या कड़ुआ अनुभव आता है, अुसीसे अुनके स्वभावको खास आकार प्राप्त होता है और अुसीमें से चरित्रका निर्माण हुआ करता है। बड़े व्यक्तियोंके ध्यानमें यह बात शायद ही आती है कि बच्चोंके स्वभाव-निर्माणके लिअे बहुत बड़ी हद तक वे ही जिम्मेदार होते हैं। अच्छा हुआ कि अुपरोक्त प्रसंगमें मेरे शिक्षक संस्कारी और धीरजवान थे। शकका फ़ायदा अभि युक्तको देनेकी अुदारता अुनमें थी। यदि अुनकी जगह कोअी सामान्य शिक्षक होता और वह मुझे झूठा और बदमाश ठहराकर सजा देता, मुझे धिक्कारता तो अुस सबका मुझ पर न जाने क्या असर पड़ता! मनुष्य-स्वभावके बारेमें मेरे मनमें कुछ न कुछ नास्तिकता अवश्य पैदा हो जाती। वामन गुरुजी मेरे साथ ही नहीं, बल्कि सभी विद्यार्थियोंके साथ बहुत अच्छी तरह पेश आते थे। अिसलिअे अुनके प्रति मेरे मनमें हमेशा पूज्यभाव रहता था। लेकिन अुस दिनके अुनके बर्तावका मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ा। अुपरोक्त प्रसंगके समय, काफ़ी संशय ग्रस्त होते हुअे भी अुन्होंने मेरे प्रति जो अुदारता बतलायी और मेरी बाल-आत्माकी जो कद्र की अुससे मैं अुनका भक्त बन गया। अुन्होंने नीति-शिक्षाके कअी सबक हमें सिखाये होंगे लेकिन यह सबक सबसे निराला था। चरित्रगठनमें अैसे सबकोंका ही गहरा और चिरस्थायी परिणाम होता है।

T

५६

शनिवारकी तोप

कारवारका बंदरगाह दोनों ओर फैले हुओ पहाड़के बीचमें है। अिसलिओ बाहरसे आनेवाले जहाज किनारे परसे अच्छी तरह दिखाओ नहीं देते। अिस असुविधाको दूर करनेके लिअे वहाँसे कओ मील दूर देवगड़के प्रकाश-स्तंभ पर अेक झंडा लगाया जाता। दूरबीनसे यह झंडा दिखाओ देते ही कारवारके डाकखानेके पास अेक टीले पर वैसा ही झंडा चढ़ा दिया जाता। अिस झंडेको देखनेके बाद ही लोग घरसे बन्दरगाहको रवाना होते। कभी-कभी तो हम लोग झंडा देखनेके बाद खाना खाने बैठते और भोजन समाप्त करके समय पर बन्दरगाह पहुँच जाते। जहाज बन्दरगाहसे दूर खड़ा रहता और लोग किश्तियोंमें बैठकर वहाँ तक पहुँच जाते। जब दरियामें बड़ा तूफान होनेवाला होता तब अिन दोनों प्रकाश-स्तंभों पर अेक खास किस्मके काले झंडे चढ़ाये जाते। जहाजके आगमनकी सूचना देनेवाला झंडा लाल कपड़ेका होता। तूफ़ानकी अित्तला देनेवाले झंडे गोल तिकानिया या चौकोर पिटारेके समान होते थे। मेरा खयाल है कि लकड़ीके विभिन्न आकारोंके चौखटों पर बाँसके टट्टर बिठाकर अुन पर डामरोल लगाकर ये पिटारे बनाये जाते थे। अुनकी शक्लें तिकोनी, चौकोर या हंडियोंकी तरह गोल रहती थीं। हर शक्ल तूफ़ानकी हालतकी द्योतक होगी। ये पोले पिटारे जब आसमानमें लटकने लगते तो सब तरफ़से अेकसे ही लगते थे। अिनकी वजहसे किश्तियों और जहाजोंको समय पर अित्तला मिल जाती थी।

शहरके पासके झंडेवालेके पास अेक मज़बदार दूरबीन थी क्योंकि मुसे हमेशा ही देवगढ़के प्रकाश-स्तम्भ पर नज़र रखनी पड़ती थी। मुसी आदमीको हर शनिवारको दोपहरके ठीक बारह बजे अेक तोप छोड़नेका काम सौंपा गया था। कारवारमें मुस सारे स्थानको ही झंडा कहते थे।

अेक शनिवारको हम वह स्थान देखने गये। झंडेका दफ्तर जिस चट्टान पर है वह चट्टान समुद्रमें काफ़ी दूर तक चली गयी थी, जिसलिये मुसके आसपास रेतका किनारा नहीं था। लहरें सीधी चट्टानसे टकरातीं और पानीका फेन तथा छींटे बहुत ही मूपर तक मुड़ते। झंडेवाला अेक बूढ़ा मुसलमान था। मुसलमान व्यक्तियोंमें अपनी प्रतिष्ठाका खयाल बहुत रहता है। हम जैसे लड़के जब वहाँ जाते तो वह बन्दर-मुड़की दिखाये बिना नहीं रहता था। हम भी मुसकी जिस सलामीके लिये तैयार थे। अलबत्ता सवाल-जवाबकी परिचय-विधि पूरी हो जानेके बाद हमने मुससे कहा, हमें देवगढ़का प्रकाश-स्तम्भ दूरबीनमें से देखना है। ज़रा देखने दीजिये न मियाँ साहब! मुसने बंगलेकी अलमारीमें से दूरबीन निकाली और बोला, नीचे आओ, मैं बतलाता हूँ।" बंगलेके नीचे तोपके पास ही हमारे सीनेके बराबर मूँचा खंभा था। मुस पर चिकने पत्थरका फ़र्श था, जिसके बीचोंबीच दक्षिणोत्तर दिशामें अेक रेखा खोदी हुअी थी। फ़र्शके चारों ओर अेक-अेक बालिश्त मूँचे चार खंभे खड़े करके मुन पर हलकी छप्परके समान टिनकी अेक चद्दर बिठायी गयी थी। लेकिन मुस फ़र्शमें तनिक भी ढाल न था वह बिलकुल समतल था — मानो पानीके स्तर पर बिठाया गया हो। मुसने मुस फ़र्श पर दूरबीन रख दी और हमसे देखनेको कहा।

दोपहरका समय होनेसे समुद्रकी लहरें खूब चमक रही थीं। दूरके देवगढ़ पर जब झंडा चढ़ जाता, तो मामूली आँखोंसे बहुत

कम लोग अुसे देख पाते थे। मुझे जिस बात पर बड़ा गर्व था कि मेरी काकदृष्टि मुझे देख सकती थी। अुस दिन दूरबीनमें सारा देवगढ़ अुस परका प्रकाश-स्तम्भ अेवं झंडा सब कुछ स्पष्ट और पास आया हुआ दिखाओी देने लगा। प्रकाश-स्तंभका स्वरूप सबसे पहले किसने निश्चित किया होगा? शतरंजके प्यादेकी तरह वह कितना आकर्षक दिखाओी देता है! नीचेकी तरफ चौड़ा और अूपर पतला।

दूरबीनको अिधर-अुधर घुमाकर मैंने मच्छिंन्दर गड़ आदि आसपासके दूसरे पहाड़ भी देख लिये। दूर क्षितिज परसे गुजरती हुअी कअी छोटी-छोटी नावें दखीं। अुनके सफ़ेद बादबानोंको देखकर मुर्गाबियोंकी याद आ गयी। समुद्र शान्त होता है तब भी लहरोंका तालबद्ध नृत्य तो चलता ही रहता है। पाँच-छः मीलका समुद्रका विस्तार दृष्टिके सामने हो, तब पासकी लहरें बड़ी दिखाओी देती हैं और जैसे-जैसे हमारी नजर दूर तक पहुँचती है वैसे-वैसे वे छोटी होती दिखाओी देती हैं। अैसा दृश्य किसको मोहित नहीं करेगा? दूरबीनमें यही दृश्य और भी स्पष्ट व सुंदर दिखाओी देता है। अतः दिल पर अुसकी छाप बहुत अच्छी पड़ती है।

यह सब देखकर तृप्त हो जानेके बाद मेरा ध्यान फर्श परके छोटेसे छप्परकी ओर गया। मैंने अफ़सरसे पूछा क्या यह छप्पर अिसलिअे बनाया है कि धूपसे यह फर्श गरम न हो जाय? या दूरबीन पर धूप न आये अिसलिअे यह अिन्तजाम किया गया है?

अभी यह नहीं बताअूँगा। तुम्हें दूरबीनमें से जितना देखना हो अुतना अेक साथ देख लो फिर दूसरी बात। दूरबीनको अेक बार अन्दर रखनेके बाद फिर नहीं निकालूँगा।

अुसकी सूचनाका आदर करनेके लिअे मैं दूरबीनमें से फिर देखने लगा। पहले देवगढ़ देख लिया। फिर मच्छिंदर गढ़ और अुसके बाद काली नदीके मुहाने परका घरोंका अुपवन — सब कुछ

कि यदि जिस समय जिसकी पीठके पास लकड़ीका पटिया रखा जाय तो अुसे भी यह काट सकती है।

धनुके दरबारमें जैसे बृहस्पतिकी भी अक्ल काम नहीं आती अुसी प्रकार पानीके बाहर मछलीका जोर नहीं चलता। मछली तड़फड़ायी पानीकी तरफ़ जानेकी चेष्टा की दो चार हिचकियाँ लीं और सचेतन रूप छोड़कर अुसने मनुष्यके आहारका रूप धारण कर लिया। मैं चिन्तामग्न होकर अुसकी तरफ़ देखता ही रहा। अितनेमें मेरा साथी कहने लगा चलो तोप छूटनेका समय हो गया होगा।

हम दौड़ते-दौड़ते अूपर गये। वहाँ तोप छोड़नेकी तैयारी हो रही थी। अेक लम्बे बाँसमें बहुत-सा टूटा हुआ सूत बाँधा गया था। अुस कूँची (ब्रश) को थोड़ा-सा गीला करके अंदवालेने तोपको स्नान कराया। फिर दो सेर बारूद भरी हुआी अेक पूरी थैली तोपके मुँहमें ठूँस दी। अिसके बाद अुसने फटे हुअे कागज़ोंका अेक बड़ा-सा गोला बाँसकी मददसे ठोंक-पीटकर बैठा दिया। अिसमें अुसे बहुत मेहनत करनी पड़ी। फिर अुसने अेक हाथ लम्बा सूआ लेकर तोपके पिछले छेदमें से भीतरकी थैलीमें छेद किया। फिर दाहिने हाथमें महीन बारूद लेकर अुस छेदमें डाल दी। यह बारूद अंदरकी थैलीकी बारूद तक जा पहुँची और तोपका सूराख भर गया। तब वह हाथमें अेक जलता हुआ पलीता लेकर तैयार हुआ।

फिर वह मुझसे बोला "अब अिधर आ। तू पूछता था न कि फ़र्श परका यह छोटा-सा छप्पर किस लिअे बनाया गया है? देख अुसके बीचोंबीच अेक छेद है। अुसमें से सूर्यकी अेक किरण नीचेके फ़र्श पर पड़ती है। अुस फ़र्श पर अुत्तर-दक्षिण अेक रेखा खींची हुअी है। सूर्यकी किरण जब अुस रेखा परसे गुज़रती है अुस वक्त कारवारके बारह बजते हैं और यही जाहिर करनेके लिअे मैं तोप दागता हूँ।"

यह सब देखकर मुझे बहुत ही मजा आया। मनमें सोचा कि यह फर्श समतल रखा गया है यह तो ठीक है, लेकिन अूपरकी टिनकी चद्दर तो छप्परकी तरह ढलवाँ बिठायी गयी है। क्या अिससे बारह बजनेका समय निश्चित करनेमें कभी भूल नहीं होती होगी? फिर विचार आया कि शायद अूपर पानी जमकर टिनकी चद्दरमें जंग न लग जाय अिसीलिअे वह अैसी बिठायी गयी होगी।

अितनमें झंडेवालेने कहा, "अब देखना यह किरण रेखाके पास आ रही है ठीक बारह बजनका समय हो गया ह। मैंने कहा, "हाँ हाँ सुमुहूर्त सावधान!

झंडवालेने लम्बी लकड़ीके सिरे पर पलीता बाँध रखा था और वह फर्श परकी सूर्यकी किरणकी ओर देख रहा था। अब क्या होगा कैसी आवाज होगी, जिसकी कल्पना करता हुआ मैं खड़ा रहा। अितनेमें तोपकी अेक तरफ़ पिरामिडके आकारमें जमाये हुअे तोपके गोलोंके ढेरकी ओर मेरी नजर गयी। शत्रुका जहाज आने पर तोपके मुँहमें अिन्हीं गोलोंको भरकर तोप दागते होंगे। फिर जहाजकी अेक तरफ़का भाग फूट जाता होगा और अन्दर पानी घुस जानेस जहाज डूब जाता होगा। मैं अैसी कल्पना कर ही रहा था कि अितनमें झंडवालेका पलीता तोपके सूराख तक पहुँच गया। वहाँकी बारूद भकभक करने लगी। अितनेमें तोपने मुँहसे अेकदम फाड्-ड से अितने जोरका धड़ाका हुआ कि मेरे कान बहरे हो गये सीना धड़कने लगा। मैं कहाँ हूँ अिसका भान भी अुस क्षणके लिअे नहीं रहा। आँखोंके सामने धुअेंका बादल छा गया। तोपमें ठूँसे हुअे कागजोंकी धज्जियाँ कहाँ और कैसी अुड़ गयीं अिसका पता भी न चला। सिर्फ़ बारूदकी बू नाकमें घुस गयी। तोपका धड़ाका अितने नजदीकसे कभी सुना न था और अुस वक्त जो अनुभव हुआ वह अितना आकस्मिक और क्षणिक था कि

मेरे अुस अनुभवका पृथक्करण करनेका विचार भी बादमें ही मनमें पैदा हुआ।

लेकिन अुसी क्षण, मानो धड़ाकेके दूसरे ही क्षण, अेकदम पीछेके पहाड़ोंमें से बादलोंकी गड़गड़ाहट जैसी कड़ड-कड़ड़ प्रतिध्वनि सुनाअी पड़ने लगी। मानो सभी पहाड़ियाँ यह देखनेके लिअे दौड़ी चली आ रही हों कि क्या मुत्पात मचा है। आवाज अितने जोरकी हुअी थी कि आसपासके नारियलके पेड़ भी काँपने लगे थे। तोपकी आवाजकी अपेक्षा वह पहाड़ोंकी प्रतिध्वनि मुझे ज्यादा अद्‌भुत और आकर्षक लगी थी। मेरी साँस रुक गयी थी। बिना किसी कारणके परेशान होकर मैं चारों ओर टुकुर-टुकुर देखने लगा। प्रतिध्वनि समुद्र परके विस्तीर्ण आकाशमें लीन हो गयी। फिर भी मेरे कानमें तो वह गूँजती ही रही। आज भी अुसका स्मरण करते ही वह वंसीकी तरह सुनाअी पड़ती है।

मैंने समुद्रकी ओर नीचे झुक कर देखा तो लहरें हँसते हुअे कह रही थीं 'अरे देखता क्या है? कहाँ है वह तोपकी आवाज? जो हुआ सो हुआ। असलमें कुछ हुआ ही नहीं। दुनिया जैसी थी वैसी ही है, और वैसी ही रहनेवाली है।'

लेकिन लहरोंका सत्य तो मेरा सत्य नहीं था!

५७
अिन्साफका अत्याचार

अब चूंकि ज्यादा किराया मिलने लगा था, अिसलिअे रामजी सेठने अपनी बखार (कोठी)के चार हिस्से कर दिये थे। अेक हिस्सेमें कुप्पीकर तहसीलदार रहते थे। दूसरे हिस्सेमें हम थे। हमसे पहले अुस हिस्सेमें साठे नामके अेक ओवरसियर रहते थे। अुन्होंने बाहरके बरामदेमें बांसकी चटाअियोंसे अेक बहुत ही बढ़िया कमरा बना लिया था। अुसका दरवाजा दो खिड़कियां वगैरा सब सुन्दर था। अिन्जीनियरके हाथकी बनी हुअी चीज! फिर पूछना ही क्या? अुस कमरेमें हम पढ़नेको बैठते। बापासे कोअी मिलने आते, तो वे भी हमारे कमरेमें ही बैठना पसन्द करते। मुझे तो अुस कमरेका अितना मोह था कि मैं रातको सोता भी वहीं था। अिस प्रकार घरके बाहर सोनेसे मैं सवेरे साढ़े चार बजे अुठ सकता था यह भी अेक बड़ा लाभ था।

हमारे पड़ोसके लड़के बाहरके बरामदेमें खेलते-कूदते और शोर मचाते थे। वह हमें बिलकुल अच्छा न लगता था। लेकिन अुसे सहन करनेमें हमें असुविधा नहीं होती क्योंकि हम भी जब चर्चा करने बैठते तो सारी बखार गूंज अुठती थी। शान्तिका आधुनिक शौक हमने अुस वक्त नहीं सीखा था।

लेकिन जब पड़ोसके लड़के अपने-बरामदेमें से दौड़ते हुअे हमारी चटाअीकी दीवार पर जोरसे हाथ मारते तब मेरा धैर्य टूट जाता। अुन शैतानोंको मैंने कअी बार मना किया अुन पर नाराज भी हुआ लेकिन अुसका अुन पर कुछ भी असर न हुआ। लड़कोंके अुत्पातोंसे बांसका टट्टर दब गया और अुसका आकार चोकोर तवेकी

तरह हो गया। दीवारकी शोभा भी चली गयी और चटाओी अंदर दब जानेसे कमरेकी अतनी जगह कम हो गयी। मैंने चटाओीको अन्दरसे दबाकर बाहरका हिस्सा फुलाया। लेकिन असे तो अुलटा ही परिणाम निकला। बालकोंका अुस पर हाथ मारनेका शौक और बढ़ गया। वे बाहरसे कसकर हाथ मारते तो चटाओी फिर अन्दरके भागमें फूल जाती।

अब क्या किया जाय? मैंने जाकर बालकोंकी माँसे शिकायत की। वे लोग कोंकणी भाषा बोलते थे और मेरी भाषा मराठी थी, जिससे समझनेकी कठिनाओी तो थी ही। लेकिन असलमें वे लोग अितने लापरवाह थे कि अुन्होंने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया। 'होगा! होगा! देखा जायगा!' कहकर अुन्होंने मुझे टाल दिया।

मुझे बहुत गुस्सा आया। बालकोंका अुत्पात कम नहीं होता था। आखिर हारकर मैंने अेक आसुरी अुपाय आजमानेका निश्चय किया। अिसी अरसेमें गोंदूको लकड़ीमें तरह तरहके अक्षर खोदनेका बहुत ही शौक चर्राया था। जिसके लिअे वह सूअे जैसा अेक औजार कहींसे लाया था। फ़ौलादकी अेक तिकोनी या चौकोर सलाओीको घिसकर अुसकी धारको बहुत ही तेज बनाया गया था। मैंने वह औजार हाथमें लिया और अन्दरकी तरफ़से अुसकी नोकको चटाओीमें से घुसेड़कर मैं तैयार खड़ा रहा। हमेशाकी तरह पड़ोसका शरारती लड़का दौड़ता हुआ आया और अुसने जोरसे दोनों हथेलियाँ चटाओी पर दे मारीं। अुसने जितने जोरसे मारा था अुतने ही जोरसे मेरे अुस औजारकी नोक अुसकी हथेलीमें घुस गयी! लड़का अेकदम चीख पड़ा। अुसके हाथसे खूनकी धारा बहने लगी। अितनी तो मेरी अपेक्षा थी ही कि लड़केके हाथमें सूअेकी नोक तनिक चुभेगी और वह चिल्लायेगा। मैं आनन्दके साथ अुस मौक़ेकी प्रतीक्षा भी कर रहा था। लेकिन लड़केको मेरी अपेक्षासे ज्यादा चोट आयी, अतः वह चीख

मेरे चिढ़े हुअे हृदयको शान्ति देनेके बजाय अुस औज़ारकी तरह मेरे हृदयमें घुस गयी। मुझे तो अैसा लग रहा था मानो मेरे हृदय पर कोअी पत्थर आ लगा हो। मैंने वह औज़ार मेज़के नीचे छिपा दिया और क्या होता है अिसका अिन्तज़ार करने लगा।

लड़केकी चीख सुनकर अुसकी माँ दौड़ती हुअी आयी। अुनके घरका रसोअिया भी आया। मैं सोच रहा था कि अब ये लोग मेरे साथ लड़ने आयेंगे। लेकिन अुन्हें लड़केके घावकी मरहमपट्टी करनेकी गड़बड़ीमें लड़नेकी बात सूझ ही कैसे पड़ती? अुनकी बातें मैं सुन रहा था। अुसमें क्रोध या चिढ़ नहीं बल्कि केवल दुःख ही था। यह सब मेरी अपेक्षासे बिलकुल विपरीत था जिससे मेरा जी बहुत कसमसाया। मैं झेंप गया। वे लोग अगर मुझसे लड़ने आते तो मुझे यह कहकर लड़नेकी हिम्मत आती कि 'न्यायका पक्ष मेरा है।' पर अुन्होंने तो मेरा नाम तक नहीं लिया। अिसलिअे मुझे यही न सूझता था कि अब कौनसी वृत्ति धारण करनी चाहिये। अिन्साफ़को अपने हाथमें लेकर मैं बदला लेने गया। लेकिन क्रोधसे अंधा बना हुआ मनुष्य जब अिन्साफ़ करने जाता है, तो अत्याचार ही कर बैठता है। अपने अिस कृत्यके सामने अब खुद मुझ ही लड़कोंका अुत्पात हेच-सा मालूम होने लगा। अपनी ही दृष्टिमें मैं गुनहगार साबित हो गया।

लड़का रो रहा था। रसोअिया अुसके हाथ पर पानी डाल रहा था। मेरे मनमें आया देखूँ तो सही कि लड़केको कितना लगा है। सीधे अुनके बरामदेमें जानेकी तो हिम्मत थी ही नहीं अिसलिये टेबल पर चढ़कर हमारी चटाअीकी दीवारके अूपरसे चोरकी तरह देखने लगा। वास्तवमें मुझे अिस प्रकार देखनेकी कोअी आवश्यकता नहीं थी। लेकिन मुझसे रहा न गया। अूपर चढ़कर देख ही रहा था कि दुर्भाग्यसे लड़केकी माँकी नज़र मुझ पर पड़ी। अुस समय माँने मुझे कुछ गालियाँ दी होतीं या कोअी शाप दे दिया

होता, तो अुसका भी मैं स्वागत करता। लेकिन अुसकी आँखोंमें केवल अुद्वेग ही था। अुसने सिर्फ़ अितना ही कहा कि, देख, यह तूने क्या किया! माँके ये शब्द किसी तेज शस्त्रकी तरह मेरे हृदयमें घुस गये। मेरा मुँह अुतर गया। मैं बोला तो सही कि 'मैंने कुछ नहीं किया', लेकिन मेरी आवाज ही कह रही थी कि मेरे शब्दोंका कोअी अर्थ नहीं है।

बेचारी माँको अितना अधिक दुःख हो गया था कि अुसने घरके अन्य लोगोंको यह बात कभी नहीं बतायी। अति दुःख और अति अुद्वेगसे वह शान्त ही रही। लेकिन अुसने मेरी शान्तिको बिलकुल नष्ट कर दिया। कअी दिनों तक मन अपने पड़ोसियोंसे मुँह छिपाया। जब भी मैं अुस लड़केकी माँको सामनेसे आते देखता, तो सिर नीचा करके वहाँसे खिसक जाता। लड़कोंका अूधम तो बन्द हुआ लेकिन वह जीत मुझे बहुत ही महँगी पड़ी।

कअी दिन बीत गये। अुन लोगोंकी भाषा मैं ज्यादा समझने लगा। परिचय बढ़ने पर मैं अुनमें घुलमिल गया। अितना ही नहीं, बल्कि अुस लड़केको भी खेलाने लगा। लेकिन न तो अुसकी माँने कभी यह बात छेड़ी, और न मैंने ही कभी अुसका अुल्लेख किया। वह लड़का तो अपना दुःख भूल गया होगा, पर मैं अपनी अुस दिनकी दुष्टताके विषादको अभी तक नहीं भूल पाया हूँ।

५८

हिन्दू स्कूलमें

नीति या सदाचारके बारेमें मुझे सबसे पहले प्रत्यक्ष भान करानेवाले थे मेरे बड़े भाभी बाबा। धर्मनिष्ठाकी कल्पना पिताजी अेवं माताजीके आचरणसे मेरे मन पर अच्छी तरह अंकित हो गयी लेकिन योग्य समय पर नीति और धर्मके तात्त्विक स्वरूप अव गंभीरताको हृदय पर अंकित करानवाले तो मेरे पूज्य शिक्षक वामनराव दुभाषी ही कहे जा सकते हैं।

कारवारमें अुन्होंने हिन्दू स्कूल नामकी अेक खानगी संस्था खोली थी। अुसमें शुरुआतमें अंग्रेजीकी प्राथमिक तीन कक्षाअें ही थीं। अुसमें तीन शिक्षक काम करते थे। महाराष्ट्रमें हम शिक्षकोंको अुनके अुपनामसे ही पहचानते हैं। आश्रम जैसी संस्थाओंमें या शिक्षकोंके साथ विद्यार्थियोंका निकटका सम्बन्ध हो तो अण्णा नाना तात्या, काका वगैरा रिश्तेका सम्बन्ध बतानवाले नामोंसे शिक्षकोंको पुकारा जाता है। मसलन् प्रोफेसर विजापुरकरको अण्णा' प्रोफेसर ओकको नाना' और श्री नारायण शास्त्री मराठेको मामा कहा जाता था। लेकिन कारवारमें तो विद्यार्थी शिक्षकोंको अुनके नामसे ही संबोधित करते। हिन्दू स्कूल में तीन शिक्षक थे वामन मास्टर, हरि मास्टर और विट्ठल मास्टर। अिनमें विट्ठल मास्टर बहुत प्रभावशाली शिक्षक न थ। लेकिन खेल-कूदमें हमारे साथ खूब घुल-मिल जाते थे। अिससे वे काफ़ी विद्यार्थी प्रिय बन गये थे।

मेरा सबसे प्रथम परिचय हरि मास्टरसे हुआ। क्योंकि वे अंग्रेजीकी दूसरी कक्षाको पढ़ाते थ। मराठी चौथी और अंग्रेजी पहली

जिन दो कक्षाओंमें मैने अपने गणित विषयको काफ़ी सुधार लिया था। लेकिन यहाँ तो गणित अंग्रेजीमें करना पड़ता था। दूसरी कक्षाके विद्यार्थियोंको गणितकी पढ़ाओी अंग्रेजीमें करनी पड़े यह अत्याचार है, अैसा अुस वक्त नहीं माना जाता था। पहले-पहल गणितका घण्टा आते ही मैं घबड़ा जाता। हरि मास्टर स्वभावसे रजोगुणी थे। छोटी सी बात पर नाराज हो जाते और मामूली हालतमें भी थक कर लेते, हालाँकि अुन्हें विद्यार्थियोंमें बहुत दिलचस्पी थी। अुन्हें व्याख्यान देनेका शौक़ भी बहुत था और कुछ न कुछ काम हाथमें होता तभी अुन्हें शान्ति मिलती। थोड़ेमें कहें तो अशान्तिकी शान्तिके वे शौक़ीन थे।

लड़कोंकी अंग्रेजी भाषा अच्छी कर देना अुस वक्त अुत्तम शिक्षाकी कसौटी मानी जाती थी और नैतिक शिक्षण देनेमें शिक्षकोंको आत्मसन्तोष मिलता था। मुझे याद है कि हरि मास्टरकी कक्षामें हमने बहुतसी आसान अंग्रेजी कविताअें याद की थीं, और जब तीसरी कक्षामें गये तो खानगी तौर पर पढ़ाओी करके अुन्होंने 'लेडी ऑफ दि लेक' काव्यकी लगभग दो सौ पंक्तियाँ हमसे याद करा ली थीं। हिन्दू स्कूलमें डेढ़ साल तक रहनेके बाद मेरी अंग्रेजी भाषाकी बुनियाद अितनी पक्की हो गयी कि मैट्रिक तक अंग्रेजीमें मैं हमेशा अव्वल रहता। आगे चलकर अंग्रेजीकी पाँचवीं कक्षामें मैंने अंग्रेजीका व्याकरण तथा वाक्यपृथक्करण आदि सारे सीख लिये। बस अितना ही अध्ययन मैंने किया था। कॉलेजमें भी अंग्रेजीमें मुझे बहुत नम्बर मिलते। लेकिन सौभाग्यसे मुझे भाषाकी अपेक्षा ज्ञानमें अधिक दिलचस्पी थी, जिसलिये मैंने किसी भी भाषामें प्रवीण बननेकी चेष्टा नहीं की। अुस अुस भाषाके सबसे कठिन ग्रन्थ भी मेरी समझमें अच्छी तरह आ जायें भाषा और अर्थकी खूबियाँ झटसे मालूम हो जायें तथा अपने विचारोंको आसान भाषामें प्रकट करनेकी क्षमता अपनेमें हो जिससे अधिक महत्वाकांक्षाने मुझे कभी स्पर्श नहीं किया।

हरि मास्टरको नास सूँघनेकी लत थी। अिस बातका अुन्हें अपने मनमें बुरा लगता और वे विमुग्ध भावसे वर्गमें कहते भी कि यह बहुत खराब व्यसन है। मैंने बहुत कोशिश की, मगर यह नहीं छूटता। अपने भोले स्वभावके अनुसार मैं अुनकी बात सच मानता। फिर भी अुस वक्त मुझे अपने दिलमें अैसा ही लगता था कि नासके प्रति अिनके मनमें सच्ची नफ़रत नहीं है। ये अंतःकरणसे मानते होंगे कि यह अेक व्यसन है बुरी चीज़ है अितना सत्यतः स्वीकार करना और अपनी अशक्तिका खुले दिलसे अिकरार करना काफ़ी है — असी अस्पष्ट छाप अुस वक्तके मेरे बालमानस पर भी पड़े बिना नहीं रही।

अुस ज़मानेके कोंकणके फैशनके मुताबिक़ हरि मास्टरकी चोटीका घेरा बहुत बड़ा था। अुनके बाल भी बहुत लम्बे थे। कक्षामें वे ज्यादातर खुले सिर ही बैठते। जब वे पढ़ानेमें मशगूल हो जाते तब अनजानमें अुनका हाथ अकाअक लम्बा बाल पकड़कर नीचेकी ओर लाता और फिर बीच तथा अँगलियोंके बीच बालकी मददसे गजग्राह (रस्साकशी) चलने लगता। चूँकि मुझ पर बचपनसे घरका यह संस्कार जम गया था कि बाल मुँहमें डालना गन्दा काम है अिसलिअे हरि मास्टरकी यह लत मुझे बड़ी घिनौनी लगती और अुसके कारण कक्षामें मेरी अेकाग्रतामें भी बाधा पड़ जाती। मैं लगभग छः माह अुनके पास पढ़ता रहा। लेकिन हर रोज देखते रहने पर भी मेरी यह घिन ज़रा भी कम नहीं हुअी।

हरि मास्टर पढ़ानेमें तो कुशल थे। अंग्रेज़ीके शुद्ध अुच्चारणकी ओर वे खास ध्यान देते थे। यद्यपि वे स्वयं संस्कृत नहीं जानते थे फिर भी अुन्होंने हमसे कुछ संस्कृतके सुभाषित कंठस्थ करा लिये थे। भाषान्तरकी ओर भी अुनका खास ध्यान रहता था। अुनकी जन्मभाषा कोंकणी थी, अिसलिअे अुन्हें मराठी भाषा अच्छी तरह नहीं आती थी। हमारी कक्षामें शुद्ध मराठी जाननेवाला मैं अकेला

नाराज हो अुठता। लेकिन मेरा क्रोध थोड़ी देरके लिअे ही रहता। मनमें किसी तरहका कीना नहीं रहता। अितना ही नहीं बल्कि यदि वह लड़का कभी गुनहगार बनकर मेरी अदालतके समक्ष हाजिर होता तो अपनी न्यायपरायणता सिद्ध करनेके लिअे मैं जान-बूझकर अुसकी ओर ही ज्यादा झुकता। अिससे मेरी प्रतिष्ठा तो बढ़ी लेकिन स्वाभाविकता चली गयी — और यह नुकसान कोअी मामूली नहीं था।

५९
वामन मास्टर

हिन्दू स्कूलमें जब मैं दूसरीसे तीसरी कक्षामें गया तब वामन मास्टरके साथ मेरा अधिक परिचय हुआ। अुनका असर तो मुझ पर अुससे पहले ही पड़ना शुरू हो गया था। हर रविवारको वामन मास्टर और हरि मास्टर मिलकर अेक धार्मिक शिक्षाका वर्ग चलाते थे। अुसमें सरकारी हाअीस्कूलके विद्यार्थी भी शामिल होते। अुसमें किसी न किसी नैतिक या धार्मिक विषय पर प्रवचन होता। आगे चलकर अुन्होंने हरिश्चन्द्राख्यान शुरू किया। ओवी* पढ़ते जाते और अुसका अर्थ बतलाते जाते। हरि मास्टरका बोलने और अर्थ करनेका ढंग बहुत ही सुन्दर था। लेकिन वामन मास्टरमें लगन और गंभीरता अधिक थी। अुनमें यह भाव स्पष्ट दिखाअी देता था कि जीवन जैसे पवित्र विषय पर वे बोल रहे हैं। लेकिन फिर भी अुनके प्रवचनमें कृत्रिमता छू तक न जाती थी। मैं जैसे-जैसे अुनके प्रवचन सुनता गया, वैसे-वैसे मुझे विश्वास होता गया कि ये मामूली मास्टर नहीं बल्कि कोअी चरित्रसंपन्न भव्य पुरुष हैं, और अनजानमें मैं अुनका भक्त बनने लगा।

* दोहे जैसा अेक मराठी छंद।

वामन मास्टरको अपनी वासरी (डायरी) लिखनेकी आदत थी। अुन्होंने किताबकी तरह अेक मोटीसी कापी बनवा ली थी। अुसमें रोजाना लिखा ही करते लिखा ही करते। लेकिन वह सब अंग्रेजीमें लिखा होता। वे हर रोज वर्गमें अपनी वासरी ले आते, और जब हम सवाल हल करने लगते अुस वक्त वे अुसमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते। बालोचित जिज्ञासासे यदि कभी हम अुसे हाथमें लेकर अुसके पन्नों पर नजर डालते तो वे न तो नाराज होते और न रोकते ही। मुझे जहाँ तक याद है मैंने अेक ही दफ़ा अुस डायरीको हाथमें लिया था। मैंने अुसका जो पन्ना खोला था अुसमें ग्रहणका चित्र था और ग्रहणके बारेमें ही कुछ लिखा था।

वामन मास्टर अंग्रेजी भाषा बहुत ही अच्छी तरह पढ़ाते थे। अुनके साथ कविता पढ़नमें भी हमें खूब आनन्द आता था। हमारे यहाँ तीसरी न्यू रॉयल रीडर चलती थी। अुसमें दूसरा ही पाठ माताके वात्सल्य पर लिखी हुअी कविताका था। अेक दिन वामन मास्टर क्लासमें आये। अुनके हाथमें पुस्तक नहीं थी। कुर्सी पर बैठनेके बजाय वे कमरेमें चक्कर लगाने लगे और अचानक अुन्होंने अेक सुंदर वर्णन शुरू किया।

अेक घना जंगल है लगातार वर्षा हो रही है वर्षाके साथ हिम भी गिर रहा है। असे समय पर अेक स्त्री अपने बच्चेको छातीसे लगाये जल्दी-जल्दी जंगलमें से जा रही है। आहिस्ता-आहिस्ता अँधेरा बढ़ चला है। बरफ़ भी ज्यादा गिरने लगी है। चलना दूभर हो गया है। अब क्या किया जाय? रात कैसे बीतेगी?

'जाड़ा बढ़ता ही जा रहा था। माँको डर लगा कि बच्चेसे अितनी ठंडक बर्दाश्त नहीं होगी। अितनेमें अुसे अेक तरकीब सूझी। अुसने अपने मनमें कोअी निश्चय किया और झटसे अपना बड़ा लबादा (ओवर कोट) अुतारकर अुसमें बच्चेको लपेट लिया। फिर अुसने जमीन पर बैठकर बच्चेको गोदमें लिया और अुस पर हिम-वर्षा न

हो जिसलिओ अुस पर अपनी पीठकी कमान बना दी। बस! जो होना था सो हो गया। सुबह कोअी मुसाफ़िर अुस रास्तेसे निकला, तो अुसने देखा कि बरफ़के नीचे कोअी कपड़ा दब गया है। अब अुसने बरफ़ खोदकर देखा। माताकी लाशको दूर हटाते ही गर्म लबादेमें छिपटे हुअे बालकने रोशनी देखी और वह मुस्करा अुठा।"

बामन मास्टरने अैसा काव्यमय और अंतःकरणको पिघलानेवाला दृश्य हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया कि हममें से हरअेकका हृदय द्रवीभूत हो अुठा। और फिर तो हमारी साँस भी रुक गयी। जितना होनेके बाद अुन्होंने हमारी समझमें आये अैसी अत्यन्त सरल अंग्रेज़ीमें यही कहानी कह सुनायी। अुसमें जो दो-चार नये शब्द आये, अुनका अर्थ अुसी वक्त बता दिया। जितना हो जानेके बाद वे कुर्सी पर बैठ गये और बोले 'चलो अब हम अपना पाठ शुरू करें।" नये पाठमें क्या है यह देखनेकी तकलीफ़ हमने अुठायी ही नहीं थी। कविताके पाठको छोड़ देना मानो आम रिवाज था। लेकिन बामन मास्टरने तो A Mother s Love (माँका प्यार) नामक पाठ ही शुरू कर दिया। वे कविता पढ़ने लगे, तो वह हमें बिलकुल ही आसान जान पड़ी। देखते-देखते हम अुस कविताके प्रवाह पर तैरने और बहने लगे। और जब बीचमें ही

"Oh God!" She cried in accents wild,
"If I must perish, save my child'

ये पंक्तियाँ आयीं तब तो सारा वर्ग करुण-रसमें सराबोर हो गया। किसीको जिसका भान ही न रहा कि यह वर्ग चल रहा है और हम पढ़ रहे हैं!

जिसी प्रकार 'The Blind Boy नामक कविता भी अुन्होंने हमें अनुरूप पद्धतिसे पढ़ाअी थी। अंग्रेज़ी पढ़नेका अुनका ढंग जितना स्पष्ट, सरल प्रभावपूर्ण अेवं भाववाही था कि बीचमें कुछ शब्द न मालूम हों, तो भी निश्चित अर्थ मनमें अंकित हो ही जाता।

भितना होने पर भी भुनके वाचनमें कोभी नाटकीय हावभाव नहीं रहते थे।

कविता या अन्य पाठ पढ़ाते समय वे हमें भुनके अन्दरकी नीतिका बोध भी समझा देते थे। आजकलके शिक्षकों और साहित्य सेवकोंमें नीति-बोधको प्रकट करनेके प्रति कुछ अरुचि-सी दिखाओी देती है। आजकी सार्वत्रिक मान्यता तो यह है कि प्रत्यक्ष बोध नीरस अेवं परिणाम-हीन वस्तु है। अेक विदेशी साहित्यकारने कहा है कि लेसन बोधगर्भ हो तो कोभी हर्ज नहीं, लेकिन लेखक पालीका काम करनेकी झंझटमें न पड़े। साहित्यकी दृष्टिसे यह कलाबोध यथोचित है। लेकिन साहित्यके प्राथमिक पाठ पढ़ानेवाले शिक्षक अगर यह काम न करें, तो साहित्य अेवं नीति दोनोंका दम घुटने लगेगा।

आजकलके शिक्षक नीति-चर्चासे घबड़ा जाते हैं, जिसका कारण मेरे खयालसे बोध देनेवालोंकी निष्ठाका छिछलापन है। वामन मास्टरके नैतिक भुत्साह अेवं लगनका हम पर अैसा प्रभाव पड़ा कि हममें सतयुगके क्षात्र धुरंधरों (Knights)के समान भुत्साह अेवं पुरुषार्थका सोता फूट निकला।

अेक दिन निचली कक्षाका अेक लड़का किसी कारणसे हमारी कक्षामें आया। वह बिल्कुल देहाती था। भुसके कपड़े बिल्कुल बेढंगे थे। भुसने बगैर कुरतेके ही कोट पहन रखा था और भुस कोटके अन्दर भुसका सीना समा नहीं रहा था जिससे भुसके बटन भी खुले थे। भुसकी वह शकल-सूरत देखकर हमको बड़ी हँसी आयी लेकिन भुस लड़केको मानो जिसकी कोभी परवाह ही नहीं थी। वह प्रसन्नतापूर्वक हँसते-हँसते ही हमारी कक्षामें आया। वामन मास्टरने भुसे कोटका बटन लगानेको कहा। मास्टर साहबकी बात रखनेके लिये भुसने बटन लगानेकी कुछ चेष्टा की। लेकिन वह जानता ही था कि चाहे जितना प्रयत्न किया जाय, बटन काजो तक नहीं पहुँचेंगे। यह देखकर हम सब हँसने लगे।

काम पूरा करके जब लड़का लौट गया, तो वामन मास्टरने हम सबको फटकारते हुअे कहा, 'अुस लड़केकी तन्दुरुस्ती कैसी थी यह देखा तुमने? कैसा हट्टा-कट्टा लड़का है! क्या अुसके जैसा निर्दोष और आरोग्यवान तथा मुछ्छड़े हुअे मुखवाला तुममें कोअी है? अुसके अुस खुले सीनेको देखकर तो हरअेकको अीर्ष्या होनी चाहिये। यही भावना मनमें पैदा होनी चाहिये कि हमारा सीना भी अैसा हो। घरमें वह सख्त मेहनत करता होगा और गरीबीका अेव सादा जीवन बिताता होगा। कैसी मासूम हँसी वह हँस रहा था! अुस लड़केके मनमें तो आज भी सतयुग ही चल रहा है। आरोग्य और शक्ति घी-दूध या बादाम-पिस्तेमें नहीं, बल्कि अैसे शुद्ध स्वतंत्र परिश्रमी अेवं मुक्त जीवनमें ही है।" हमें वस्तुका सच्चा महत्त्व जाननेकी नअी दृष्टि मिली।

हमारी क्लासमें हम तीन-चार विद्यार्थी सरकारी अधिकारियोंके लड़के थे। पढ़ने-लिखनेमें भी हम तीनों विशेष होशियार थे। अिस तरह बुद्धिमत्ता और सामाजिक प्रतिष्ठामें श्रेष्ठ होनेसे हममें अनजानमें और अस्पष्ट रूपसे अैसा कुछ भाव पैदा हो गया था कि हमीं सबसे अच्छे हैं यद्यपि यह भाव जितना स्पष्ट नहीं था कि हममें अहंकार पैदा होता क्योंकि आखिर हम अनजान तो थे ही। फिर सबके साथ हम समानताका ही व्यवहार करते थे। लेकिन आज जब अेक शिष्टाचार शून्य बिलकुल देहाती लड़का हमसे श्रेष्ठ साबित हुआ, तब अच्छे-बुरेकी अेक नअी ही कसौटी हमारे हाथमें आयी। हमने 'डेमॉक्रेसी'-का पाठ सीखा।

६०

सिंहनाद

"कअी वर्ष हो गये हम अपने कुलदेवताके दर्शनको नहीं गये। कितनी ही मानतायें पूरी करना बाकी है। अगर हम अैसे ही बैठे रहे तो क्या कुलस्वामीका कोप नहीं होगा? अिस प्रकार माँको पिताजीसे कहते हुअे मैंने कअी बार सुना था और हर बार पिताजी कहते कि, क्या करें? छुट्टी ही नहीं मिलती। छुट्टी मिली कि तुरन्त ही घाटाखालीं जायेंगे।" घाटाखालीं यानी घाटके नीचे, कोंकणमें। वहाँ गोवामें हमारे कुलदेवता मंगेशका पवित्र स्थान है। [मुझे लगता है कि मंगलेश से मंगेश शब्द बना होगा या शायद महान् गिरीश से मंगेश बना होगा।]

गोवामें जब पोर्तुगीज लोगोंका राज कायम हुआ तो धर्मके नाम पर बेहद जुल्म ढाया जाता था। अुन धर्मांध अीसाअियोंने असंख्य ब्राह्मणों और दीगर हिन्दुओंको अीसाअी बना दिया। मंदिरोंको तोड़कर या भ्रष्ट करके गिरजाघर बनवाये। गोवाकी पुरानी बस्तीमें गिरजा घरके सिवा दूसरा कोअी मन्दिर रह ही नहीं सकता था और यदि कोअी बनाता तो वह गुनहगार माना जाता था। धार्मिक जुलूस तो निकाले ही नहीं जा सकते थे। अैसे अैसे कानून बनाये गये थे। अुनमें से बहुतेरे तो अभी-अभी तक अमलमें लाये जाते थे। आगे चलकर जब पुर्तगालमें राज्यक्रान्ति हुअी और जनतंत्र कायम हुआ तबसे धार्मिक जुल्म और मुसीबतें बन्द हुअीं। मौजूदा सरकार धर्मशून्य बुद्धिवादी है। अुसकी दृष्टिमें सभी धर्म वहमके स्वरूप

है। सभी धर्मोंके प्रति वहाँकी सरकार आज तो समान रूपसे अपेक्षा भाव रखती है।*

धार्मिक जुल्मोंके अुस ज़मानेमें हमारी जातिके कुछ गोमंतकीय मराठोंने सोचा कि ये औसाओ हमें तो भ्रष्ट करके ही छोड़ेंगे, लेकिन कुलदेवताकी मूर्तिको हरगिज़ भ्रष्ट नहीं होने देना चाहिये। अतः रात ही रातमें अुन्होंने मंदिरसे कुलदेवताको निकाला और पुरानी बस्तीकी सीमाओंसे बाहर अुनकी स्थापना की। यह नया स्थान आज मंगेशीके नामसे प्रसिद्ध है। महादेवको तो ये लोग बचा सके लेकिन भगवानको बचानेवाले वे खुद नहीं बच सके। ज़मीन-जायदाद, सगे-संबंधी सबको छोड़कर वे कहाँ जाते? जिससे अुन्होंने लाचारीसे तथा अूपरसे दिखने औसाओ धर्मका स्वीकार किया हर अितवारको नियमित रूपसे चर्चमें जाने लगे लेकिन घर पर तो सोमवार अेकादशी शिवरात्रि आदि सभी व्रतोत्सव बाक़ायदा करते रहते। हाँ अितनी सावधानी अवश्य रखते कि पादरियोंको अिसका पता न चलने पाये। लड़कियोंकी शादियाँ करनी होतीं तो वे भी अपनी जातिमें से औसाओ बन हुओ लोगोंके गोत्र वगैरा देखकर ही की जातीं।

आखिरकार सन् १८९९ में हम मंगेशी गये। कोंकण और गोवाके कभी मन्दिर अमुक जातिके अथवा अमुक कुटुम्बके ही होते हैं यानी अुस कुटुम्बके लोग ही वहाँ पूजा और सेवा करने जाते हैं। अिस मंदिरोंकी आय बहुत होती है और आयकी व्यवस्था अुन अुन जातियोंके पंचोंके हाथमें ही रहती है। गोवामें हमारी जातिके अैसे पाँच-छः मंदिर अलग अलग जगहों पर हैं। हम मंगेशी जाकर लगभग अेक महीना रहे। यह स्थान बड़ा रमणीय है। चारों ओर अूँची

---

* यह हालत तबकी है जब स्मरणयात्रा पहले-पहल गुजरातीमें लिखी गयी थी। आज तो यह हालत भी बदल गयी है और गोवामें अशिष्ट साम्राज्यशाहीका बोलबाला है।

अूँची पहाड़ियाँ हैं और जगह-जगह नारियल सुपारी तथा काजूके पेड़ है। खेती ज्यादातर चावलकी ही होती है। केलेके पेड़ और अरबी तो हर घरके आँगनमें होनी ही चाहिये। जगलमें जहाँ देखें वहाँ पिटकुलीके लाल सुन्दर किन्तु ग़रीब फूल नजर आते हैं। जब हम लोग वहाँ जाते हैं तब अपने पुरोहितोंके बड़े बड़े घरोंमें ही ठहरते है। मगेशीमें हमें लघुरुद्र महारुद्र वगैरा कभी अभिषेक करवाने थे।

मगेशीका मंदिर देखने लायक है। अुसमें मंदिर मस्जिद और चर्च तीनोंकी शोभा त्रिकुटी हो गयी है। और मंदिरका वैभव तो छोटे-से देशी राज्य जैसा है। मन्दिरके सामने मीनार जैसी अेक अूँची दीपमाला और अुसके अन्दरसे अूपर जानेकी सीढ़ियाँ है। रोजाना रातको दीपमालाके शिखर पर प्रकाश-स्तम्भकी तरह अेक बड़ा-सा दीपक जलता रहता है जिससे अँधेरी रातमें भी मुसाफ़िरोंको मालूम हो जाता है कि यहाँ मगेशीका मंदिर है। मंदिरके सामने चारों ओर घाट बनाया हुआ सुन्दर तालाब है। अुसे तालाब नहीं बल्कि आअीना ही कहना चाहिये जो अिस तरह गहराअीमें जड़ दिया गया है कि चारों ओरके नारियलके पेड़ अुसमें अपना चेहरा देख सकें। मंदिरके महाद्वार पर आठों पहर बाजे और शहनाअियाँ बजती है और पूजाके समय तो मंदिरके अन्दर भी नगाड़े बजते हैं। महादेवके दोनो ओर कभी नंदादीप हमेशा जला करते है और रह रहकर पुजारी तथा भक्तोंके मुँहसे शंभु महादेवकी जयध्वनि निकला करती है।

मेरी अुम्र छोटी होनेसे मुझे कोअी पूजामें यहाँ बैठने देता था। मैंने संकल्प किया कि मंगशी में हूँ तब तक महादेव पर रोजाना सौ घड़े पानीका अभिषेक करूँगा। कुअेंसे सौ घड़े पानी खींचना मेरी अुम्रमें कोअी आसान बात नहीं थी। लेकिन संकल्प किया सो किया। थोड़े दिन बाद मेरी कमरमें दर्द शुरू हुआ। बैठने और अुठनेके समय बड़ी पीड़ा होती। मैंने अेक तरकीब निकाली। मैं दीवालकी खूँटीमें अेक रस्सी बाँधी और अुसे पकड़कर अुठता और वैसे ही बैठता। फिर भी पानी

सींचना तो जारी ही रखा। वे दिन मेरी कर्मकाण्डी मुग्ध भक्तिके थे। सारा दिन और रातके भी कभी कष्ट में मन्दिरमें ही बिताता।

अेक दिन हमारे पुरोहित भिक्कम् भटजीने मुझसे कहा, अभिषेक चल रहा हो और यदि महादेवजी सेवासे प्रसन्न हो जायें, तो महादेवके लिंगमें से सिंहनाद सुनाओी पड़ता है।' मैंने कुतूहलके साथ पूछा सिंहनाद यानी क्या? भटजीने कहा, भौंरा गूँजता है या बड़े लट्टूके घूमनेसे जैसी आवाज निकलती है वैसी ही और गम्भीर घुट-ट ट-ट जैसी आवाज महादेवकी पिण्डी'में से निकलती है। पहले तो मुझे अुस पर विश्वास ही नहीं हुआ। कलियुगमें अैसी दैवी बात हो ही कैसे सकती है? लेकिन भटजीने कभी मिसालें देकर मुझे विश्वास दिलाया।

अुस दिन रातको मुझे नींद नहीं आयी। क्या सौ घड़े पानी डालनेके संकल्पसे महादेव मुझ पर प्रसन्न न होंगे? मैंने अैसे कितने पाप किये होंगे कि मेरी सेवा बिलकुल ही व्यर्थ जायगी? मैं कितनी बार झूठ बोला था, मैंने घरमें चोरी करके खाया था, जानवरों पंछियों और कीटाणुओंको तकलीफ दी थी, अुस सबको याद कर-करके मनमें मनमें महादेवसे क्षमा माँगना शुरू किया। अेक बार भी यदि मुझे सिंहनाद सुनाओी पड़ा तो मैं आमरण सेवा भक्त बनकर रहूँगा। अिसके बाद अेक भी अैसा कर्म नहीं करूँगा जो तुम्हें पसन्द न हो। मैं महादेवको वचन देने लगा। लेकिन फिर भी मनको किसी भी तरह विश्वास नहीं होता था कि मुझे सिंहनाद सुननेका सौभाग्य मिलेगा। अपनी भक्ति ही कमजोर है अपनी श्रद्धा ही कच्ची है। सिंहनाद सुनना ध्रुव प्रह्लाद या विजया जैसे किसी भाग्यवानके नसीबमें ही लिखा रहता है। अिस प्रकार विचार करके मैं अपने आपको निराशामें आश्वासन देता था। अिस प्रकार कभी दिन बीत गये।

अेक दिन मैं अपना सौवाँ घड़ा जलाधारीमें डालकर बाहर निकल ही रहा था कि मुझे घुट...ट...ट...की आवाज सुनाओी पड़ी।

पहले तो मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। मैंने माना कि 'मनीं वसे तें स्वप्नीं दिसे' (जो मनमें होता है वही स्वप्नमें दिखाओी देता है।) लेकिन यह भ्रम होता तो कितनी देर टिक सकता था? सिंहनाद बढ़ने लगा और स्पष्ट सुनाओी देने लगा। मैंने गोंदूको बुलाकर कहा 'नाना सुन मुझे सिंहनाद सुनाओी पड़ता है?' विस्मयसे आँखें फाड़कर वह खुले मुँह सुनता रहा। आखिर बोला, दत्तू, सचमुच तुम पर भगवान प्रसन्न हुअे है।

मैं धन्य-धन्य हो गया। मने सोचा छुटपनसें जो भक्ति की थी पूजा-सेवा की थी नामस्मरण किया था अुसका फल मुझे मिल गया! अब तो मैं सारी जिन्दगी औीश्वरकी सेवामें ही बिताअूँगा। आग लगे सारे दुन्यवी व्यवहारको। महादेव प्रसन्न हुअे! सिंहनाद सुनाओी पड़ा! अब अिससे ज्यादा और क्या चाहिये? औीश्वरका वरद हस्त मेरे सिर पर है।

भोजनके समय गोंदून सबको सिंहनादकी बात कह सुनायी। माँ बहुत खुश हुयी। पिताजी कुछ बोले तो नहीं लेकिन अुनका भी आनन्द स्पष्ट रूपसे दिखाओी पड़ता था। अुन्होंने वात्सल्ययुक्त दृष्टिसे मेरी ओर देखा। मैं तो विजयी मुद्रासे हरअेकके मुँहकी ओर देखने लगा और हरअेकसे मूक अभिनन्दनका कर अुगाहने लगा। अुस दिन रातको तथा दूसरे दिन सवेरे मैंने नामस्मरणका समय दूना कर दिया। आसपास सोये हुअे लोगोंकी नींदका तनिक भी खयाल किये बिना मैंने जोर-जोरसे धुन गाना शुरू कर दिया—

सांब सदाशिव सांब सदाशिव जय हर शंकर जय हर शंकर।

अिस तरह कितने ही दिन बीत गये। अिस बीच फिर दो बार सिंहनाद सुनाओी दिया। अगर मेरी यही स्थिति क़ायम रहती तो कितना अच्छा होता!

हमारे गोंदूमें बचपनसे ही प्रयोग करनेकी वैज्ञानिक दृष्टि कुछ विशेष थी। अनेक चीजें लेकर अुनको तोड़ने-जोड़नेमें वह हमेशा

मन रहता। किसीसे कुछ कहे बिना ही यह अुस सिंहनादका अुद्गम खोजने लगा। अुसने मन ही मन तय किया कि अिसमें कुछ न कुछ रहस्य अवश्य है। वह रोजाना गर्भागारमें आकर घण्टों तक वहाँकी अभिषेक-पूजा देखता रहता। अेक दिन वह मेरे पास आकर कहने लगा 'चलो, तुम्हें अेक मजेकी बात बतलाअूं।' मैं अुसके साथ मंदिरमें गया। मंगेशी महादेव कोअी हमेशाकी तरहका लिंग नहीं, बल्कि अेक पुराणप्रसिद्ध अूबड़-खाबड़ शिला है। प्राचीन कालमें अेक गाय अुस शिला पर आकर अपना दुग्धकी धारा छोड़कर अुसे पयस्नान कराती थी। तबसे अुस शिलाका माहात्म्य प्रकट हुआ। अुस शिला पर जहाँ जलाधारीमें से पानी गिरता कि शिला परके फूल अिधर-अुधर खिसक जाते। शिला अितनी अूबड़-खाबड़ है कि अुसमें कहीं-कहीं अेक-अेक बालिश्त गहरे गड्ढे भी हैं। शिलाके बालेमें से, जहाँसे पानी आ रहा था गोंडूने हाथ लगाकर अुस पानीको रोक दिया और दूसरे हाथसे जलाधारीको तनिक खींच लिया। पानीकी धारा ठीक अमुक स्थान पर ही गिरने लगी और तुरन्त सिंहनाद शुरू हुआ।

अुस ज्ञानानन्द हासके बदले बड़ा दुःख हुआ। मेरी अेक समूची सृष्टि नष्ट हो गयी। गोंडूने कहा 'आज सबेरे बहुतसा फूल वाक्य अिस शिरे पर अिकट्ठे हो गये और अुन्होंने पानीका प्रवाह रोक दिया। अुस समय जलाधारी मांके खा रही थी, तब भी मैंने सिंहनाद सुना। बराबर अुसी जगह पानीकी धार पड़ती तो आवाज होती। धार खिसक जाती तो आवाज बन्द हो जाती। यह बात समझमें आते ही मैंने अुसी वक्त अपना प्रयोग शुरू किया और अेक घण्टेके अन्दर ही सिंहनाद काबूमें आ गया। अब तू कहे तब और कहे' अुतनी देर तक मैं तुझे सिंहनाद सुना सकता हूँ।

गोंडूने हाथमें जलाधारी लेकर मैंने भी यह प्रयोग अनेक बार किया। हर बार सिंहनाद बराबर सुनाअी पड़ा। मनको विषाद ही

गया कि अिसमें दैवी चमत्कार नहीं बल्कि सृष्टिके मौलिक नियमोंका ही खेल है।

अिसका असर मेरे जीवन पर क्या हुआ, वह मैं यहाँ न लिखूं यही अच्छा है। कुछ साल पहले मेरे अेक बुजुर्ग मित्रने मेरी अिस बातको सुनकर कहा तुम्हारा यह अनुभव श्री दयानन्द सरस्वतीके अनुभव जैसा ही जान पड़ता है। अुनके मुँहसे दयानन्द सरस्वतीकी बात सुननेके बाद ही मने अुस सुधारक सन्यासीकी जीवनी पढ़ी। अिसमें क्या आश्चर्य कि अुनके प्रति मेरे मनमें सहानुभूति अेवं आदरभावका निर्माण हुआ हो!

६१

शिक्षकसे अीर्ष्या

छुटपनसे मुझ कॉपी (नकल) करनके बारेमें बहुत ही चिढ़ थी। दूसरे लडकेकी पट्टी या पुस्तकमें चोरीसे देखकर मन अुत्तर लिखा हो असी अेक भी घटना मेरे जीवनमें नहीं ह। परीक्षाके समय पासमें बैठ हुअे लड़केसे पूछना या अपने पास पुस्तक छिपाकर अुसमें से चोरीसे अुत्तर देख लेना कुरतेकी बाँह पर पेन्सिलसे अुपयुक्त जानकारी लिखकर परीक्षामें अुसका अुपयोग करना स्याहीचूसकी तह करके अुसके अंदर अितिहासके सन् लिख रखना पासमें बैठे हुअे लड़केसे कागजकी अदला-बदली करना वगैरा चौर्यशास्त्रके अनेकानेक प्रयोग अेवं तरकीबें तो म खूब जानता था, लेकिन अेक दिन भी मैंने अिनका प्रयोग नहीं किया। जिस जिस स्कूलमें मैं गया (और मने कोअी कम स्कूल नहीं देखे! किसी भी स्कूलमें मैंन लगातार अेक साल तक पढ़ाअी की ही नहीं!) अुस अुस स्कूलमें शिक्षकों और विद्यार्थियोंमें मेरी प्रामाणिकता पर किसीको शंका नहीं हुअी। शिक्षककी

गैरहाजिरीमें कक्षामें यदि कोभी बात होती और अुसकी शिकायत शिक्षक तक पहुँचती तो अुसमें दानों पक्षके विद्यार्थी मेरी गवाही लेनको शिक्षकोंसे कहते। कभी भार में गवाही देनसे ही अिनकार करता लेकिन जब कभी कहता सच ही कहता।

अेक बार कारवारमें मेरे अक निगरी दोस्तके बारेमें — बाळिगाके विषयमें — कुछ कहनेका मौका आया। हरि मास्टरने मुझसे ठीक मार्केकी बात पूछी। मुझे यह मोह हुआ कि अब मैं अपनी मान्यका अिस्तेमाल करके झूठ बोल दूं और अपने मित्रको बचा लूं। मनमें जवाबका वाक्य भी तैयार हो गया। हिम्मत करके जहाँ बोलना शुरू किया कि हिम्मतने जवाब दे दिया। अेकाध क्षण तो मनके साथ लड़ता रहा लेकिन फिर सच-सच ही कह दिया। अुसे मास्टर साहबकी अटपट आँखोंने मेरा सारा मनोमंथन देख लिया। व हँस पड़े। मेरा मानसिक अपराध खुल गया। मैं झेंपा। लेकिन आखिर मेरी भावनाकी कद्र करके शिक्षकने मेरे मित्रको बिलकुल मामूली सौम्य सजा दी। बादमें मुझे पता चला कि अिससे हरि मास्टरकी नजरमें मेरी साख गिरी नहीं बल्कि बढ़ी ही है।

नकल करनेमें पामरता है, हलकापन है, यह बात स्वभावसे ही मेरी रग रगमें समायी हुअी थी। लेकिन शुरू शुरू में मानता था कि नकल करनेके लिये अपनी कॉपी देनमें बहादुरी और दानशूरता है। और अिससे भी विशेष बात यह थी कि मुझे म परीक्षाके समय चौकीदारकी तरह कावदृष्टिसे घूमनवाले शिक्षकसे बदला लनेका अक अच्छा मौका मालूम था। लेकिन यह भी बहुत ही बचपनकी बात है। कुछ बड़ा होन पर मन अैसा करना भी छोड़ दिया। कोअी भी लड़का यदि मेरी कॉपी माँगता तो मैं बड़ी मधुरतासे अिनकार कर देता। जब कोअी बार-बार और आजिजीके साथ पीछे पड़ता तो मैं मुझे शिक्षकसे कह देनकी धमकी देता। लेकिन मुझे याद नहीं कि किस प्रकार मैंने कभी किसीका नाम शिक्षकको बतलाया हो। अैसे अवसरों

पर मेरे मनमें यही अक विचार आता कि विद्यार्थियोंका द्रोह करके शिक्षकोंकी मदद करना मुझे शोभा नहीं देगा।

लेकिन अक बार बड़ी चालाकीके साथ नकल करनके लिअे कॉपी देनेकी अेक घटना मुझे अच्छी तरह याद ह। अुन दिनों मैं शाहपुरके स्कूलमें अंग्रेजी दूसरी कक्षामें पढ़ता था। गोखले नामके अेक शिक्षक बी० अे० पास करके नये-नये हमारे स्कूलमें आये थे। अुनका फुटबालकी तरह गोल सिर, नींबू जसी कान्ति धूत आँखें ठिगना कद — सभी कुछ आकर्षक था। अुनके अंग्रेजीके अत्यन्त नखरेबाज अुच्चारण और लड़कोंके साथ शिष्टाचारसे पेश आना अुनकी विशेषता थी। 'अिंडिया' का अुच्चारण वे 'अिंडिय' करते। 'आयडिया' के बजाय वे 'आयडिय' कहते। वे बार-बार हँसते-हँसते लड़कोंसे कहते तुम लोगोंकी सभी चालाकियाँ मैं जानता हूँ। तुम मुझ धोखा नहीं दे सकते। अिस संबंधमें मैं भी तुममें से ही अक हूँ।

गोखले मास्टरके प्रति हम सबके मनमें सद्भाव तो था। मीठ स्वभावका शिक्षक हमेशा विद्यार्थियोंमें प्रिय होता ही ह। लेकिन वे हमसे धोखा नहीं खा सकते अिसका क्या अर्थ ? यह तो विद्यार्थियोंका सरासर अपमान ह! क्या हम अितने गये-गुजरे हो गय ? शिक्षकोंमें यदि अिस तरहके आत्मविश्वासको बढ़ने दिया गया तो वे देखते देखते हम पर हावी हो जायेंगे और फिर अुन्हींका राज्य बेखटके चलता रहेगा। अिस अिन मास्टरोंका तो मुकाबला करना ही होगा।

हमारी सत्रांत (छ माही) या वार्षिक परीक्षा चल रही थी। गोखले मास्टर भूगोलकी परीक्षा लेनेवाले थ। मुझे तो विश्वास था कि हमेशाकी तरह मुझे पचासमें से पचास नंबर मिलेंगे। लेकिन मैंने हृदयमें संकल्प किया कि आज गोखले मास्टरको धोखा अवश्य देना चाहिये। लिखित परीक्षाके प्रति शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनोंमें अरुचि होती ह लेकिन जबानी परीक्षामें सभीको अक-स कठिन सवाल नहीं पूछ

जा सकते। जिस असुविधाको दूर करनेके लिअे गोखले मास्टरने अेक युक्ति ढूंढ़ निकाली। अुन्होंने परीक्षा देनेवाले सभी विद्यार्थियोंको बाहर निकालकर अेक कमरेमें बैठनेको कहा और परीक्षाके कमरेमें अेक अेक विद्यार्थीको बुलाकर अुससे नियत प्रश्न पूछनेका अिन्तजाम किया। परीक्षाके कमरेसे लगा हुआ छोटा कमरा खाली रखा गया था। जब अेक लड़केकी परीक्षा शुरू हो जाती तब अुससे दूसरे नंबरका विद्यार्थी अुस छोटे कमरेमें जाकर बैठ जाता। पहले नंबरकी परीक्षा पूरी होते ही वह कमरेका दरवाजा खोलकर दूसरे नंबरवाले लड़केको बुलाता। दूसरे नंबरका लड़का अंदर जानेके पहले बाहरके कमरेमें बैठे हुअे तीसरे नंबरके लड़केको आवाज देकर बीचके कमरेमें बैठनेको कहता और फिर खुद कत्लखानेमें दाखिल होता। जिनकी परीक्षा हो जाती अुनको परीक्षाके कमरेमें ही अन्त तक बैठे रहना पड़ता। गोखले मास्टरके हाथमें अेक कागज था जिस पर पच्चीस सवाल लिखे हुअे थे। वे हरअेकको वे ही सवाल पूछते और नंबर देते जाते।

अैसे मजबूत क़िलेसे चोरी करके परीक्षाके सवाल बाहर लाना संभव नहीं था। वर्गके विद्यार्थी कहने लगे कि आज तो हम हार गये। मैंने कहा, क्या अिस तरह आसानीसे हाथ धोये जा सकते हैं? मैं अंदर जाते ही तुम्हें सवाल लिख भेजूंगा।" परीक्षाका कमरा दूसरी मंजिल पर था। मैंने अेक विद्यार्थीसे कहा, तू खिड़कीके नीचे जाकर बैठ। मैं अूपरसे प्रश्नोंका कागज नीचे फेंक दूंगा। तू झटसे वह लेकर चम्पत हो जाना। यदि तू तनिक भी वहाँ खड़ा रहा तो समझ लेना हम दोनोंकी शामत आ जायगी।

मेरी बारी आयी। मैंने जल्दी-जल्दी जवाब दिये और पचासमें से अड़तालीस नंबर पानेका संतोष लेकर शान्त कासमें डेस्कके पास जाकर बैठ गया। फिर जेबमें से तीन कागज निकाले। अेक कागज पर कुछ मराठी कविताअें लिखीं, दूसरे पर भूगोलके सवाल और तीसरे पर कुछ मजेदार चुटकुले। कविताका कागज तो डेस्क पर ही छोड़ दिया। भूगोलके

प्रश्नपत्रका मोड़कर अुसके अन्दर वो कंकर रखे और अुसे बिलकुल तैयार रखा। फिर चुटकुलेवाले कागजको फाड़कर अुसके दस-बारह छोटे छोटे टुकड़े किये। और फिर अुस ककरवाले कागजको तथा छोटे-छोटे टुकड़ोंको हाथमें लेकर सीधा खिड़की तक गया और खिड़कीसे बाहर फेंक दिया। यह तो संभव ही न था कि शिक्षकका ध्यान मेरी ओर न जाता। मैंने तो भोलपनसे खिड़की तक जाकर कागज फेंके थे। कंकरवाला कागज तो तुरन्त नीचे गिर गया गिरा काहेका? मेरे मित्रने अूपरसे ही अुसे रोक लिया था और फिर वह वहाँसे चम्पत हो गया था।

मेरी हिम्मत देखकर ही शायद शिक्षकको मुझ पर शक करना अच्छा न लगा होगा। अुनका अेक ही क्षण अनिश्चिततामें बीता और वे अुठे। दौड़ते हुअे खिड़कीके पास गये और देखने लगे। खिड़कीमें से कागजके टुकड़े अुड़ रहे थे। मुझसे पूछने लगे तुमने नीचे क्या फेंका? मैंने कहा बेकार कागजके टुकड़े। खिड़कीसे बाहर देखते हुअे अुन्होंने डेस्क पर रखा हुआ मेरा कागज मँगाकर देखा। अुस पर क्या था? अुस पर तो मराठी-कविताकी कुछ पंक्तियाँ लिखी हुअी थीं। अुसे देखकर अुनकी शंका दूर हो गयी। लेकिन फिर भी क्या औरंगजेब कभी किसी पर भरोसा करके चल सकता है? वे खुद खिड़कीमें खड़े रहे और कक्षाके मॉनिटरको नीचे भेजकर कागजके सारे टुकड़े चुन लानेको कहा। अुसे वे यह भी कहना न भूले थे कि दौड़ते हुअे जाओ और भागते हुअे आओ। क्योंकि यह डर था कि कहीं वह रास्तेमें प्रश्न न कह दे।

मॉनिटर गया। सभी टुकड़े चुन लाया। शिक्षकने बड़ी कोशिश करके सारे टुकड़ोंके आकार देख-देखकर अुन्हें मेज पर जमाया और पढ़कर देखा तो अुन पर चुटकुलोंके सिवा कुछ न था! वे मुझसे बोले फिर अिस तरह कागज मत फेंकना। देख कितना समय बेकार चला गया! मैंने भी समझदार बनकर कहा जी हाँ।

फिर तो आनेवाले सभी विद्यार्थियोंके अुत्तर सही निकलने लगे। शिक्षकको शक हुआ। वे अंदर आनेवाले हर नये विद्यार्थीसे पूछने लगा, 'क्यों भाभी तुम लोगोंको प्रश्नपत्र पहलेसे मालूम हो गया है क्या?' लेकिन अिसे कौन स्वीकार करता? आखिर अेक लड़का आया। वह हमारी कक्षामें सबसे मृदु लड़का था। अुसके तो अेक भी विषयमें अुत्तीर्ण होनेकी संभावना नही थी। अिसलिअे किसीने अुसे प्रश्न नहीं बताये थ। अपना अिस तरहका बहिष्कार अुसे बहुत अखरा था। जब शिक्षकने जब अुससे पूछा कि 'क्यों नारायण, क्या सवाल सबको मालूम हो गये हैं?' तो अुसने कहा 'जी हां।' अुसका जवाब सुनकर मैं तो अपनी जगह पर ही पानी-पानी हो गया। पैरमें पहने हुअे बूट भी भारी लगने लगे। छाती धड़कने लगी। अब तककी सारी साख धूलमें मिल जायेगी। गोखले मास्टर अकसर मेरे बड़े भाअीसे मिला-जुला करते थे। अिससे अब तो सिर्फ़ स्कूलमें ही नहीं घरमें भी आबरूका दिवाला निकल जायेगा। मुझे कहांसे यह दुर्बुद्धि सूझी! गया सब कुछ चला गया। अब तो कितनी भी सभ्यताअीसे बरताव करूं तो भी यह कलंकका टीका हमेशाके लिअे लगा ही रहेगा। अिस शिक्षकसे अीर्ष्या करनेकी बात मुझे कहांसे सूझी?

अीश्वरके घरका कायदा किसीकी समझमें नहीं आता। कभी कभी तो बहुतसे अपराध करने पर भी मनुष्यको सजा नहीं मिलती। अुसके अपराध बढ़ते ही जाते हैं और आखिरी घड़ीमें अुसे अपने सारे अपराधोंकी सजा अेक साथ भुगतनी पड़ती है। कभी कभी पहली बार ही अितनी सख्त सजा मिलती है कि वह फिरसे अपराध करना ही भूल जाता है। अिसे मैं अीश्वरकी कठोर कृपा कहता हूं। कभी-कभी मनुष्यके पश्चात्तापको ही काफ़ी सजा मानकर शायद अीश्वर अुसे बचा लेता होगा। यह अंतिम हालत सचमुच बड़ी कठिन होती है। अपने बचपनमें यदि मनुष्य अीश्वरकी दयाको पहचान ले तो फिर वह कभी गुनाह नहीं करेगा। लेकिन यदि बचपनमें वह अपने भाग्यकी महत्ता समझे

अथवा यह नतीजा निकाले कि कर्मफलका नियम धर्मकारोंके कहनेके मुताबिक अटल नहीं है, तो वह अधिकाधिक गड्ढेमें गिरता जायगा और अन्तमें अंधेरेमें डूब जायगा। ओश्वर चाहे जो नीति अख्तियार करे, फिर भी वह न्यायी है अिसीलिअे दयालु ह और सदाचारको प्यार करता ह। यदि अितनी बात हम ध्यानमें रखें और अिन्हीं विचारोंको दृढ़तापूर्वक पकड़े रहें तो ही हम अपराध करनेसे बच सकेंगे और हमारा सुधार होगा।

शिक्षकने पूछा प्रश्न कहाँसे फूटे? नारायणने कहा मॉनिटर पटवेकरने फलाँ लड़केको बताया फलाँ लड़केने फलाँ लड़केको बताया अिस प्रकार सारे प्रश्न सबको मालूम हो गये। लेकिन मुझे किसीने नही बताया सबने मेरा बहिष्कार किया ह।

'बात यह हुमी थी कि मॉनिटरने हर लड़केको परीक्षाके कमरेमें लेनके लिअे दरवाजा खोलते वक्त अेक-दो सवाल धीरेसे कह दिये थे और मीचेसे मेरे कागजके टुकड़े लाने जब वह गया था तब भी जाते-जाते अुसने अेक-दो सवाल लड़कोंको बता दिये थे। बस अुसकी अिस दुर्बुद्धिकी ढालके पीछे मैं बच गया। अिसका मतलब अितना ही था कि शिक्षकको मेरी चालाकीका पता न चला। वर्गमें किसीके साथ मेरी दुश्मनी नहीं थी अिसलिअे मेरा नाम बाहिर न हुआ।

वर्गके अन्य लड़के तो यह प्रसग भूल गये होंगे। लेकिन अुन अन्तिम चार-पाँच क्षणोंमें मैंने जिस मानसिक वेदनाका अनुभव किया था और अपने आपको जो अुपदेश दिया था वह मेरे जीवनके अेक क़ीमती प्रसंगके तौर पर मुझे याद रहेगा। मैं अुसे कभी नही भूल सकता।

मैंने जिसे प्रश्नोंका कागज़ पहुँचा दिया था वह अेक सूरतके व्यापारीका लड़का था। अुसने मुझे अुसकी लकड़ियोंके दोनों ओर लगाया जानवाला अेक बढ़िया मोटा गत्ता भेंटमें दिया था। कभी दिनों तक वह गत्ता मेरे पास था। जब जब अुसकी ओर मेरा ध्यान जाता तब तब मुझे अुल्लिखित सारी घटनाका स्मरण हो आता।

६२

नशीला वाचन

अरेबियन नाविट्स अथवा सहस्र रजनी चरित्र (आलिफ लैला) दुनियाके साहित्यकी अेक मशहूर चीज है। जिसने जिन अेक हजार अेक रातोंकी कहानियाँ न पढ़ी हों अैसा पढ़ा-लिखा आदमी शायद ही कोअी होगा। हरअेकके जीवनमें अेक अैसी अुम्र होती है जब अैसी काल्पनिक बातें पढ़नेका और अुनका चिन्तन करनेका बहुत शौक रहता है। जिस ग्रंथसे मेरा परिचय किस प्रकार हुआ अुसका स्मरण लिखने जैसा है।

मेरे बड़े भाअी पढ़नेके लिअे पूना गये थे। शायद अुसी जमानेमें प्रख्यात मराठी साहित्यिक विष्णुशास्त्री चिपळूणकरके पिता कृष्ण शास्त्रीने अरेबियन नाअिट्सका मराठी अनुवाद किया था। (या बड़े भाअीको पहले-पहल अुसके बारेमें अुसी वक्त मालूम हुआ होगा।) यह अनुवाद अनुवाद-कलाका अप्रतिम नमूना माना जाता है। वह अनुवाद जैसा कतअी नहीं लगता, और अुसकी भाषा अितनी सुंदर है कि यह पुस्तक मराठी भाषाका अेक आभूषण मानी जाती है।

बड़े भाअीके मनमें यह अभिलाषा पैदा हुअी कि यह पुस्तक अपने पास हो तो अच्छा रहे। लेकिन अितनी बड़ी पुस्तक खरीदनेके लिअे पैसे कहाँसे लायें? हर माह पिताजीके पाससे जो पैसे आते, अुनका तो पाअी-पाअीका हिसाब देना पड़ता। [यह भी अेक आश्चर्यकी बात है। आगे चलकर जब मैं पढ़नेके लिअे पूना गया तब किसी भी समय पिताजीने मुझसे हिसाब नहीं माँगा। मैं अपने आप ही हिसाब भेजता, तो अुसे भी वे नहीं देखते थे। अिसका कारण यह हो सकता है कि बड़े भाअीके विद्यार्थीकाल और मेरे

विद्यार्थीकालमें अेक पीढ़ीका अंतर पड़ गया था अुसका यह असर होगा या फिर बचपनसे मैं पिताजीके साथ रहकर अुनकी निगरानीमें जो घरका प्रबंध देखता था अुससे अुन्हें मेरी विवेक-बुद्धि पर विश्वास हो गया होगा कि कहाँ खर्च करना और कहाँ न करना यह अच्छी तरह जानता हूँ। मुझसे यदि वे बराबर हिसाब माँगते रहते, तो मुझे हिसाब लिखनेकी आदत पड़ जाती। हिसाब लिखनेकी आदतके अभावमें मैंने अपनी जिन्दगीके आर्थिक व्यवहारको बहुत ही संकुचित कर दिया। मैंने तो अपनी जिन्दगीके लिअे यही सिद्धान्त बना रखा है कि चाहे जो हो कितनी भी असुविधायें अुठानी पड़ें, लेकिन किसी भी हालतमें किसीसे अुधार पैसे नहीं लेने चाहियें कर्जेका तो नाम भी नहीं लेना चाहिये। कभी किसीको पैसे अुधार न दिये जायें और जब दिये जायें तो यही समझकर दिये जायें कि वे फिर वापस मिलनेवाले नहीं हैं। जिससे मुझे हमेशा संतोष ही रहा है। सार्वजनिक जीवनमें आनेके बाद भी मैंने कभी पैसेकी जिम्मेदारी अपने सिर नहीं ली। अैसा करनेसे संतोष तो मिला लेकिन मेरे जीवनका अेक महत्त्वपूर्ण अंग विकसित नहीं हो पाया। खैर!]

न जाने किस तरह लेकिन किसी न किसी तरह बड़े भाअीने (शायद किताबों और खान-पीनके खर्चमें काट-छाँट करके) यह पुस्तक खरीद ली। जो चीज बड़ी मुश्किलसे मिलती है अुसकी क़ीमत और अुसकी मिठास असाधारण होना स्वाभाविक है। हमारे घरमें और बड़े भाअीके मित्रोंमें बार-बार जिस अरेबियन नाअिट्सका जिक्र आता। मैं अुस वक्त भी बहुत छोटा था। मुझे तो अुस समय यही लगता था कि जैसे समुद्र-मन्थन करके देवताओंने अमृत प्राप्त किया था, वैसा ही कुछ असाधारण पराक्रम करके बड़े भाअीने यह किताब प्राप्त की है।

फिर मैं बड़ा हुआ। बड़े भाअीकी गिनती प्रौढ़ पुरुषोंमें होने लगी। अब वे समझ गये कि अरेबियन नाअिट्स अमृत नहीं बल्कि

अरेबियन नाअिटसकी कहानियाँ तो मैं भूल गया। लेकिन अुनके वाचनसे कल्पनामें विहार और विलास करनेकी गन्दी आदत बहुत लम्बे अरसे तक बनी रही। कल्पनाको जितनी जबरदस्त विकृत शिक्षा मिली थी कि अुसका असर सारे जीवन पर पड़ा। और वह बहुत ही बुरा था। यदि मैं अरेबियन नाअिट्स न पढ़ता तो मैं समझता हूँ कि मैं कल्पनाकी कितनी ही असुविधाओंसे बच जाता। दुःखमें सुख जितना ही है कि जिस पुस्तकका मैंने बचपनमें पढ़ा था जिसमें जिसका बहुत-सा शृंगार दिमागमें घुसनेके बदले सिरके अूपरसे गुजर गया।

बहुतेरे शिक्षक और माँ-बाप मानते हैं कि अरेबियन नाअिट्सका शृंगार ही अुसका सबसे भयानक पहलू है। मैं मानता हूँ कि अुस प्रकारका शृंगार तो जीवनको बिगाड़ता ही है लेकिन अुससे भी ज्यादा खतरनाक बात तो यह है कि अैसी पुस्तकें पढ़नेसे सत्पुरुष अेवं पुरुषार्थके प्रति मनुष्यकी श्रद्धा मन्द पड़ जाती है और अुसे दैव, दुर्घटना अेवं अद्भुत संयोग आदिका आश्रय लेनेकी आदत पड़ जाती है और अुसकी अभिरुचि भी विकृत बन जाती है। यह चीज मनुष्यको खतम ही कर देती है। जिससे मनुष्य निर्वीर्य दैववादी बन जाता है बिना योग्यताके बिना मेहनतके दुनियाके सारे अुपभोग प्राप्त करनेकी अिच्छा करने लगता है और मैंने देखा है कि कोअी-कोअी तो अुस प्रकारकी आशाओं पर भरोसा रखकर बैठ जाते हैं। दिमागकी कमजोरी और थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर थक जाना — जिसका पहला परिणाम है।

अिसके बाद मैंने फिर कभी अरेबियन नाअिट्स नहीं पढ़ी। अतः यह कहना कठिन है कि अुसके बारेमें मेरी क्या राय है। लेकिन अुस वक्तके वाचनसे मेरे दिल पर जो असर हुआ अुससे मैंने यही नतीजा निकाला कि अैसी पुस्तकें मनुष्य-जाति पर हमला करनेवाली प्लेग (ताअून) और अिन्फ्लुअेंजा जैसी छूतकी बीमारियाँ

है। घरकी वह पुस्तक आज यदि मेरे हाथ पड़े और वह वैसी ही हो जैसा कि मेरा खयाल है तो मैं असे जला ही दूं। लेकिन कौन जाने आज वह किसके हाथमें होगी। अैसा साहित्य सबके घासकी तरह जीनेकी जबरदस्त शक्ति रखता है। अच्छी-अच्छी पुस्तकें अलमारियों और पुस्तकालयोंमें धूल खाती पड़ी रहती हैं, लेकिन अैसी पुस्तकोंको अेक दिनकी भी फुरसत या छुट्टी नहीं मिलती होगी। जिस तरह रोगके कीटाणु सब जगह पहुँच जाते हैं असी तरह अैसा साहित्य समाजमें आसानीसे फैल जाता है। रसास्वादके दीवाने लोग असका प्रचार करते हैं और गैरजिम्मेदार अुन्मत्त साहित्यिक लोग अैसी किताबोंका बचाव भी करते हैं। सचमुच

'पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरां अुन्मत्तभूतं जगत्।

६३

धारवाड़की सब्जी-मंडी

कारवारमें रहकर मैं कन्नड़ भाषा कुछ-कुछ समझने लग गया था लेकिन वह तो ठहरी सभ्य पुस्तकी भाषा। वहाँ अंग्रेजी भाषाका अनुवाद मराठीमें भी कराया जाता और कन्नड़में भी। पाठ्य-पुस्तकें पढ़ाते समय लड़कोंकी समझमें अंग्रेजी मराठी या कन्नड़में भी किसी शब्दका अर्थ न आता तो शिक्षक कोंकणीका शब्द बताकर काम चला लेते। जिस तरह तीनों चारों भाषाओंके शब्दोंसे मेरा परिचय होने लगा। लेकिन कभी अैसा नहीं लगा कि अंग्रेजीके अलावा अन्य भाषाओंकी तरफ़ भी ध्यान देना चाहिये। चुनांचे अन्य भाषामें सीखनेका मौक़ा पाकर भी मैं अछूता ही रह गया।

जितनेमें हम धारवाड़ चले गये। वहाँ मुझे और मामूको रोजाना बाजार जाना पड़ता। शहरमें प्लेग शुरू हो जानेके कारण

जब शहरसे बाहर दूर झोंपड़ी बनाकर रहनेका निश्चय हुआ तो अुसमें मदद देनेके लिअे मेसगाँवसे विष्णु आया, लेकिन अुसीको प्लेग हुआ और वह चल बसा। अुसके बाद हमने किसी तरह झोंपड़ी बनायी और वहाँ रहने लगे। अब बाजार करनेके लिअ हम दोपहरको खाना खाकर जाते और रातको वापस आते। हमें अपनी आवश्यक चीजोंके कन्नड़ नाम कहाँ मालूम थे? अिससे सौदा करनेमें बड़ी कठिनाअी पड़ती। सारे बाजारमें अेक ही दूकानदार अैसा था, जो हमसे मराठीमें बोल सकता था। अतः हम पहले अुसके यहाँ जाकर अुससे पूछते कि, 'धनेकी दालको कन्नड़में क्या कहते हैं?' वह कहता 'कवली म्याळी'। बस 'कवली म्याळी कवली म्याळी' की रट लगाते हुअे हम सारा बाजार घूम डालते। जब तक अच्छा माल पसन्द करके खरीद न लेते तब तक खाये बिना ही कवली म्याळी हमारे मुँहमें भरी रहती।

फिर लौटकर अुस दूकान पर जाते और पूछते कि, 'मिर्चको कन्नड़में क्या कहते हैं?' वह कहता 'मेनशिनकाअी'। हम मेनशिनकाअीकी खोजमें निकलते। मेनशिनकाअी खरीदनेके पहले कभी बार छींकना पड़ता। कर्नाटकके लोग मिर्च खानेमें बड़े बहादुर होते हैं। यहाँ तक कि किसी किसीका तो अुपनाम भी मेनशिनकाअी होता है। फिर आती अच्छी नारियलकी। कन्नड़में अिसे कहते हैं तेंगिनकाअी। तेंगिनकाअीके बोझके साथ हम अिस शब्दको भी लेकर आगे बढ़ते।

संगीतमें जैसे गवैया चाहे जितना आलाप लेने पर भी ठीक समयसे सम पर आ जाता है, अुसी प्रकार हमें बार-बार अुस दूकानदारके पास जाना पड़ता था। अेक कागजके टुकड़े पर सारे नाम लिखकर याद कर लेनेका आसान रास्ता न जाने हमें क्यों नहीं सूझा। हम तो किसी अनपढ़ व्यक्तिकी तरह हर बार अुस जिन्दा कोषके पास जाते। वह भला आदमी भी कुछ मुस्कराकर हमारे पूछे हुअे प्रश्नका जवाब आहिस्तासे स्पष्ट अुच्चारणके साथ कह देता।

कभी-कभी साथमें यह भी बतला देता कि यदि काअी कहोगे तो कच्चा फल मिलेगा और हण्णु कहोगे तो पक्का मिलेगा।

सब्जी-मंडी जिस मकानसे बहुत दूर थी। वहाँ पर हमें अपनी ही अकल चलानी पड़ती। शाक बेचनवाली ज्यादातर तो स्त्रियाँ (कुँजड़िनें) ही होतीं। अुनके अुच्चारण बिलकुल देहाती होते। कअी बार सुनने पर भी शब्द समझमें न आता। बार-बार पूछते तो सारी औरतें मज़ाकिया तौर पर हँसने लगतीं। वे हँसतीं तो पके तरबूजेके काले बीजों जैसे अुनके दाँतोंको देखकर मुझे भी हँसी आ जाती। अिस अिलाकेमें अेक किस्मकी मिस्सी लगानकी प्रथा ह। सफ़ेद दाँत स्त्रियोंको शोभा नहीं देते। काली स्त्रियोंके रूपको कुंदकलीके समान दाँत कैसे फब सकते ह? नाखूनों पर महेंदी दाँतमें दाँतवण (अुस मिस्सीका वहाँका नाम) और गालों पर हल्दी यह कर्णाटककी रमणीकी खास शोभा ह। कोअी महिला जब किसीके यहाँ बैठने जाती है, तो हल्दीका चूर्ण अुसके सामन जरूर रखा जाता है। अुस चूर्णको वह दोनों हाथों पर चुपड़कर दोनों गालों पर मलती है। मुँहकी अुस सुवर्ण जैसी कान्तिकी वहाँ खूब तारीफ़ होती है।

कुँजड़िनोंके साथ सौदा तय करना हमारा सबसे मुश्किल काम होता। अेक बार मामू बदनीकाअी (कच्चा बैंगन) के बजाय बदनी हण्णु' (पक्का बैंगन) कह गया। सारा बाजार हँस पड़ा। मामू झेंपा और अुस झेंपकी परेशानीमें अुस औरतको बदनीकाअीके पैसे देना भूल गया। हम तो भूले ही लेकिन वह औरत भी हास्यरसके प्रवाहमें पैसे लेना भूल गयी। /

हम वहाँसे पासके दूसरे बाजारमें चले गये। वहाँ हम बल्ला' (गुड़) खरीद रहे थे। अितनमें अचानक वह औरत दौड़ती हुअी आयी। अुसन मामूकी धोती पकड़ी और कन्नड़में गाली देना शुरू किया। मामूका मिजाज भी तेज था। लेकिन वहाँ वह क्या करता? खैरियत यह थी कि हम अुन गालियोंका मतलब नहीं समझते थ!

यह औरत फ़ी मिनट दस सौ शब्दोंकी रफ़्तारसे गालियाँ दे रही थी और मामू मराठीमें पूछ रहा था, अरे, पर हुआ क्या? मुझे अिस बातका खयाल ही न था कि हमने पैसे नहीं दिये हैं। मामूकी अपेक्षा मुझे कन्नड़ ज़्यादा आती थी क्योंकि मैं कारवारमें ज़्यादा रहा था। मैंने मामूसे कहा, "यह बैंगनके पैसे माँगती है, मुझे दे दे।" मामू याद करने लगा कि अुसने पैसे दिये हैं या नहीं। मुझे अुस पर बहुत गुस्सा आया। अुधर बाज़ारमें हमारी अैसी बेअिज़्ज़ती हो रही है! लोग हमारी तरफ़ टकटकी लगाकर देख रहे हैं। यह दृश्य अेक क्षणके लिअे भी कैसे बरदाश्त किया जाय? मैंने मामूसे कहा, 'अभी तो अिसे पैसे दे दे, फिर भले ही हम पहले भी अिसे पैसे दे चुके हों।' लेकिन अैसे मामलोंमें मामूकी भावना कुछ बापरी थी या न्यायबुद्धि विशेष तीव्र थी। वह मेरी बात क्यों मानने लगा? वह तो याद करके हिसाब ही लगाता रहा। आखिर मैंने अुसकी जेबमें हाथ डाला और दस पैसे निकालकर अुस औरतके सामने फेंक दिये। हम दोनोंका छुटकारा हो गया।

लौटते समय हमारे बीच विवाद छिड़ा कि अैसे मौक़ों पर क्या करना चाहिये। मामूने कहा, 'यह दस पैसेका सवाल नहीं, सिद्धान्तका सवाल है। मान ले कि दस पैसेकी जगह सौ रुपयोंका सवाल होता, तो क्या तूने डरकर अिस तरह दे दिये होते?' मैंने कहा, 'जैसी परिस्थिति वैसा सिद्धान्त।' लेकिन मामू बोला, 'सिद्धान्त तो सिद्धान्त ही है। वहाँ रकमका सवाल नहीं रहता।' मैंने अुससे कहा, 'परिस्थितिसे अभिन्न परिस्थिति-निरपेक्ष नया सिद्धान्त हो ही नहीं सकता। सौ रुपयोंका सवाल होता है, तब हम आसानीसे नहीं भूलते, व्यवहारका कोअी न कोअी सबूत ज़रूर रहता है और अुस समय अैसी कुँजड़िनोंसे व्यवहार करनेका मौक़ा भी नहीं आता।' हमारा यह मतभेद और अिसकी चर्चा दस दिन तक चलती रही।

आज जैसे संक्षिप्त और स्पष्ट शब्दोंमें मन दोनों पक्षोंकी दलीलें पेश की हैं, वैसा भुस वक्त करनेकी शक्ति कहाँसे होती? हमारे सिद्धान्तोंमें भी दृढ़ता नहीं थी और भाषा भी स्पष्ट नहीं थी। हमें भिसका भी भान नहीं था कि हम परस्पर-विरुद्ध विचार पेश कर रहे हैं। सारा गड़बड़झाला था। अपनी बातको स्पष्ट करनेके लिअे कोअी दलील पेश करने जाते या अुपमा देते तो वही विवादका विषय बन जाती। अुसका खण्डन-मण्डन करने जाते तो अुसीमें से नया झगड़ा अुठ खड़ा होता। आगे जाकर हम यह भी भूल जाते कि किसने क्या कहा था। मैं भाअूसे कहता तूने यह कहा था। भाअू कहता नहीं मैंने अैसा कभी नहीं कहा। मैं कहता कहा था। वह कहता नहीं कहा।

हमारा यह वाग्युद्ध कअी दिनों तक चलता रहा। पिताजी भोजन करके दफ्तर चले जाते कि हमारे युद्धके नगाड़े बजने लगते। शाम तक चलता रहता। बीच बीचमें गोंदू भी हमारी चर्चामें भाग लेता लेकिन अुससे किसी भी अेक पक्षका समर्थन न होता और फिर हम दोनोंको मिलकर अुसे गुस्से सारी बातें समझानी पड़तीं। मुझे विश्वास है कि हमारा युद्ध बराबर शास्त्रोक्त अठारह दिन तक चलता। लेकिन हमें यों लड़ते देखकर माँको बहुत ही दुःख हुआ। हम किस लिअे लड़ते हैं भिसका खुद हमें ही खयाल नहीं था तो फिर वह माँको कहाँसे होता? हमें रोजाना जोर-जोरसे लड़ते देखकर माँ बड़ी चिंतित होती। जब अुससे यह दुःख बरदाश्त नहीं हुआ तो अुसने हमारे पास आकर अत्यन्त ही भरे हुअे गलेसे कहा अरे दत्तू केशू तुम्हें यह कैसी दुर्बुद्धि सूझी है। तुम अपने जन्ममें कभी नहीं लड़े। कोअी अच्छी चीज खानेको मिलती तो अपने मुँहमें डाला हुआ कौर भी बाहर निकाल कर तुम बाँटकर खाया करते थे। अब तुम्हीं भिस तरह लड़ते रहोगे तो मैं क्या करूँगी? कहाँ जाअूँगी? मैं आज शामको अुनसे सब बात कह दूँगी। अुसकी बात सुनकर हम दोनों हँस पड़े। भाअू कहने लगा,

माँ हम लड़ नहीं रहे है, हमारी तात्त्विक चर्चा चल रही है। हम द्वेषसे नहीं बोल रहे है, हमें तो तत्त्वोंका निर्णय करना है।

अिस स्पष्टीकरणसे माँको संतोष न हुआ। माँका वह रुद्र स्वर मेरे हृदयमें घुस गया था। मैंने माञूसे कहा, 'जा, तेरी सभी बातें सही हैं। मुझे चर्चा नहीं करनी है।' माञू मनमें समझ गया। लेकिन गोंदू अेकदम बोल अुठा 'कैसे हारा! कैसे हारा! मैं कह रहा था न?'

६४

गुप्त मंडली

डेढ़ वर्षके कारावासके बाद लोकमान्य तिलक महाराज जेलसे छूटे। चल जानेसे पहलेके हृष्ट-पुष्ट शरीरका फोटो और जेलसे छूटनेके बाद तुरन्त ही लिया हुआ निर्बल शरीरका फोटो अिस तरह तिलक महाराजकी दोनों तस्वीरें अेक साथ छापी गयी थीं। ये छपे हुअे चित्र घर घर चिपकाये गये। सब जगह आनन्द ही आनन्द हो गया। अुन दिनों हम मराठी मासिक 'बालबोध' पढ़ते थे। अुसमें तिलकजीके स्वागतके बारेमें जो लेख प्रकाशित हुआ था, अुसके प्रारम्भमें ही कवि मोरोपन्तकी आर्याकी यह पंक्ति शीर्षककी जगह छापी गयी थी

तेव्हां गंधर्वमुखीं जिकडे तिकडे हि तननम् तननम्।

अुस वक्त सचमुच सारे महाराष्ट्रमें बड़ा अुत्सव मनाया गया। जिस तरह आजकल बढ़ती हुआी आबादीके लिअे शहरके बाहर अुपनगर (मुफस्सल-अेक्स्टन्शन्स) बसाये जा रहे हैं अुसी तरह बेलगाँवके कुछ लोगोंने रेलवे लाअिनके पास नये मकान बनाये थे। अिस नयी बस्तीका 'प्रवेश-समारंभ' अिन्हीं अरसेमें हुआ। अिन लोगोंने

अिस बस्तीका नाम 'टिळकवाडी' (तिलकवाडी) रखा। लेकिन अिस बस्तीमें बहुत-से सरकारी नौकर रहनेवाले थे। वे लोग अिस राजद्रोही राष्ट्रपुरुषका नाम ले भी नहीं सकते थे और छोड़ भी नहीं सकते थ। अुन्होंने अिस बस्तीका नाम मन्तमें ठळकवाडी रखा। मनमें समझना टिळकवाडी और बाहर बोलते समय ठळकवाडी कहना! अगर कोअी अिस नय शब्दका मतलब पूछ बैठता तो कह देते कि शहरके ठळक —खास खास— लोग यहाँ रहते हैं अिसलिअे यह नाम दिया गया है। हृदयमें तो देशभक्ति रहे लेकिन बाहरसे राजनिष्ठा प्रतीत हो अिसलिअे अुस जमानेके य चतुर लोग अंदर देशी मिलके कपड़ेकी कमीज पहनते और अूपरसे विलायती सर्ज (कपड़े) का कोट पहनते। पासमें कोअी चुगलखोर नहीं ह अितना विश्वास कर लेनके बाद कोटके नीचे छिपी हुअी देशी कमीज दिखाकर अपने देशभक्त होनेका वे सबूत पेश करते। क्या हमारे धर्ममें नहीं कहा है कि मुक्त पुरुषको अन्तर्वोपो बहिर्जड़ की तरह बर्ताव करना चाहिये? आखिरकार येलगाँवकी अिस नयी बस्तीका नाम ठळकवाडी ही प्रचलित हुआ। मालूम होता ह भगवानको बुरा व्यवहार ही पसन्द आता है!

तिलकजीकी रिहाअीके अुत्सवके बाद हम तीनों भाअी देशका विचार करने लगे। तिलक जसे देशभक्तोंको सरकार जलमें रखती ह अिसका कारण यही है कि वे सुले आम भाषण देते हैं और अखबारोंमें लेख लिखते हैं। अत सभी काम यदि गुप्त रीतिसे किये जायँ तो सरकारको पता ही कैसे चल सकता ह? क्या शिवाजी महाराज कहीं भाषण करने गय थे? अत हम तीनोंने निर्णय किया कि अेक गुप्त मंडली बना ली जाय।

अिन्हीं दिनों हमारा घर पीछेकी आर बढ़ाया जा रहा था। अुसके लिअ नींव खोदते वक्त जमीनमें मय म्यानके अक तलवार मिली। अुस पर कुछ जंग चढ़ गया था और म्यान सड़ गयी थी। विष्णुन

राज-मजदूरोंसे यह बात गुप्त रखनेको कहकर अुस तलवारको छप्परमें छिपा दिया। हम तीनोंकी गुप्त मंडली स्थापित हो जानेके बाद हम अुस तलवारको निकालते अुस पर फूल चढ़ाते और फिर हाथमें लेकर चाहे जैसी घुमाते। तलवार धारदार नहीं थी, लेकिन मैं भी कोअी बड़ा नहीं था। मैंने जोशमें आकर अुस तलवारसे घरके खंभे पर दो-तीन वार किये थे। खम्भा यदि कट जाता, तब तो सारा छप्पर मेरे सिर पर गिर पड़ता। लेकिन खम्भा कोअी केलेका कच्चा पेड़ तो था नहीं और न मेरे हाथोंमें तानाजी मालुसरेके समान ताक़त ही थी। अिसलिअे मेरा वह प्रयोग बिलकुल सुरक्षित था। खंभेकी सूरत कुछ बिगड़ जरूर गयी लेकिन अिससे क्या? मेरी देशभक्तिके विकासके आगे खंभेकी शकल-सूरतकी क्या परवाह थी?

कअी साल तक वह तलवार हमारे घरमें रही। बादमें जब मैं राजनैतिक आन्दोलनोंमें भाग लेने लगा और हमने सुना कि पुलिसके आदमी हमारे घरकी खानातलाशी लेनेके लिअे आनेवाले हैं, तो पिताजी पर कोअी आफ़त न आये अिसलिअे मैंने अुस तलवारके टुकड़े कर दिये। लुहारसे मैंने अुन टुकड़ोंकी छुरियाँ बनवायीं और तलवारके दस्तेको शहरसे बाहर अेक छोटेसे पुलके नीचे फेंक आया। अुस दिन मुझे न खाना अच्छा लगा और न नींद ही आयी। पहलेसे ही हम निःशस्त्र हो गये हैं। अैसी हालतमें जो शस्त्र दैवयोगसे हाथ आया था अुसे भी मुझे अपने हाथों तोड़ना पड़ा यह बात मुझे बहुत अखरी। वास्तवमें हर साल दशहरेके दिन शस्त्रोंकी पूजा करते समय जिस हथियारका प्रयोग करना चाहिये अुसीका नाश करनेमें हम कुछ अधर्म कर रहे हैं अैसा मुझे अुस वक्त लगा। लेकिन दूसरा कोअी अिलाज ही न था। अुस समयका राजनैतिक वायुमंडल ही बिलकुल दूषित हो गया था।

मनुष्यकी हत्याके लिअे मनुष्य द्वारा बनाये गये शस्त्रको पवित्र माननेके लिअे आज मेरा मन तैयार नहीं होता लेकिन अुस वक्त मैंने तलवारको तोड़ दिया अिसकी बेचैनी आज भी मेरे दिलमें

मौजूद है। खैर! अपनी अुस गुप्त मंडलीमें हम किसी चौथे व्यक्तिको न खींच सके। हम यही सोचते रहते थे कि हमें जंगलमें जाकर तैयारी करनी चाहिये, फिर किलोंको जीतना चाहिये और वहाँ पर फ़ौज रखनी चाहिये। यह सब कैसे किया जा सकता है, अिसीकी चर्चा हम करते रहते।

६५

कुसस्कारोंका पाश

हिन्दू स्कूलका पवित्र वातावरण लेकर मैं धारवाड़ गया और वहाँसे बेलगाँवके पास शाहपुर आया था। मैं कक्षाके सभी लड़कोंसे अच्छा था। मुझे विसका मान भी था और अभिमान भी। कक्षामें खानगी वक्तमें मैं नीतिमय जीवनकी बातें करता। और वर्गके किसी भी विद्यार्थीमें असत्य, अश्लील भाषण या अन्याय देखता तो मुझे कठोर भाषामें अुसको मुँह पर ही धिक्कारता था।

अेक बार वर्गमें अेक लड़केके सामने ही मैंने अुसके बारेमें कहा यह लड़का कमीना है। सभी विद्यार्थी देखते ही रह गये। यह लड़का बहुत गुस्सा हुआ लेकिन अुसकी समझमें न आया कि क्या जवाब दिया जाय। कुछ ठहरकर वह बोला 'क्या मैंने तेरे बापका कुछ खाया है जो तू मेरे बारेमें अैसी राय जाहिर करता है? अगर मैं तेरा दर्जेका होता तो अपनी यह निन्दा मैंने बर्दाश्त की होती। लेकिन खामख्वाह अैसी बातें कौन सहन करेगा?' मैंने तो सोच रखा था कि वह मुझे मारने ही दौड़ेगा।

अुसके जवाबसे मैं होशमें आया। मैंने अुससे माफी माँगी और यह क़िस्सा वहीं खतम हो गया।

दिखाता लेकिन भीतर ही भीतर रसकी चुस्कियाँ लेने लगता। जिससे अेक तरफ़से प्रतिष्ठा भी सुरक्षित रहती और दूसरी तरफ़से विकृत मनको मनमाना रस भी मिलता। यह परिस्थिति मुझे बहुत ही सुविधाजनक जान पड़ी।

ठेठ बचपनमें समय-समय पर जो गन्दी बातें सुनी या पढ़ी थीं वे स्मरणमें रह गयी थीं। अुस वक्त अुनका हृदय पर कुछ असर नहीं हुआ था क्योंकि अुस वक्त मेरी अुम्र ही बहुत छोटी थी। गोवामें शिवराम नामका अेक युवक हमारे पड़ोसमें रहता था। अुसका परिचय तो अधिकसे अधिक पंद्रह दिनका ही था लेकिन अुतने समयमें अुसने समाजका वास्तविक चित्र दिखानेके लिअे कुछ गन्दी बातें विस्तारके साथ बतलायी थीं। अुसके बाद धारवाड़में अेक बगड़ विद्यार्थीने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजीमें वैसी ही कुछ बातें शास्त्रीय जानकारीके तौर पर कही थीं। अुसकी अुस शास्त्रीय जानकारीमें कल्पनाकी विकृति ही भरी हुआी थी। लेकिन मेरे दिमागमें तूफ़ान बरपा करनेके लिअे वह काफ़ी थी। हमेशा नीतिमत्ताका दिखावा करनेवाला मुझ जैसा लड़का किसीके साथ वैसी बातोंकी चर्चा भला कैसे कर सकता था? सही बातें जाननेके लिअे बुजुर्गोंके साथ चर्चा भी कैसे करता? अिसलिअे मैं मन ही मन अनेक तरहके विचार करके रहस्यको समझनेका प्रयत्न करता रहता। जहाँ प्रत्यक्ष जानकारी या अनुभव न होता वहाँ मन विविध कल्पना करने लगता है। फिर वे बातें अिहलोकके बारेमें हों या परलोकके बारेमें।

वर्गमें चलनेवाली अिन सारी बातोंसे मेरे कान और मेरा मन लबालब भर गये थे। अेकान्तमें मैं अिन्हीं बातों पर विचार करने लगा और धीरे धीरे विष-तन्त्र अिन्हीं चीजोंकी विचारधारा मनमें चलने लगी। बाहरसे अत्यन्त नीतिनिष्ठ और पवित्र माना जानेवाला मैं मनोराज्यमें विलासका नरक निर्माण करने लगा।

जैसे-जैसे मन ज्यादा गन्दा होता गया वैसे-वैसे मेरे बाह्य आचरणमें शिष्टाचार और साफ़-सुथरापन बढ़ने लगा। मुझमें दंभ नहीं था, किन्तु मिथ्याचार था। मेरा मनोराज्य मुख्यतः कुतूहलका था। अेक तरफ़ सारा रहस्य मालूम करनेकी अुत्कंठा थी तो दूसरी तरफ़ सचमुच सदाचारी होनेका आन्तरिक आग्रह था। अिन दोनोंके बीचका यह द्वंद्व था।

वर्गकी हालत सुधारनेके लिअ मैंने दि गुड कंपनी नामक अेक मंडलकी स्थापना की। अुसमें हम अनेक विषयोंकी चर्चा करते परोपकारकी योजनायें बनाते और आत्मोन्नतिका वायुमंडल पैदा करनेकी चेष्टा करते। कभी कभी हम अुसमें शिक्षकोंको भी बुलाते।

अंग्रेज़ीकी तीसरी रीडरमें मैंने कुछ नीतिवाक्य पढ़े थे। अुनमें से मुझे यह वाक्य विशेष पसन्द आया था Better be alone than in bad company (बुरी सोहबतकी बनिस्बत अकेला रहना अधिक अच्छा है।) मुझे मैंने जीवनमंत्रके तौर पर स्वीकार किया। अिसीमें से अुल्लिखित मंडलका नाम मुझे सूझा था। अिस मंडलके वातावरणसे मुझे बहुत लाभ हुआ। लेकिन जब मैं alone यानी अकेला होता, तब मेरा गन्दा मनोराज्य चलता ही रहता। यह कैसे संभव है, यह तो मनोविज्ञानका सवाल है। लेकिन अैसा हो सकता है यह तो मेरा निजी अनुभव ही कहता है।

यह प्रौढ़ विद्यार्थी कुछ ही दिनोंमें स्कूल छोड़कर घर बैठ गया और रिश्वत खानेके मार्ग खोजने लगा। अुसे पढ़ना तो था ही नहीं स्कूल छोड़ना ही था। लेकिन अेकाध बरस स्कूलमें बिता दिया जाये अिसी विचारसे यह स्कूलमें आया था। यदि अेक साल पहले ही अुसे स्कूल छोड़नेकी बात सूझती तो कितना अच्छा होता! मानो मेरे दुर्भाग्यने ही अुसे अेक सालके लिअे स्कूलमें रोक रखा था।

कानोंमें गन्दे विचार घुसेरना और मनमें जमा करना तो आसान बात है, लेकिन वहांसे अुन्हें निकालकर मनको धो-पोंछकर साफ़ करना आसान नहीं है। आगे चलकर यदि मुझे असाधारण परिस्थितिका लाभ न मिलता बार-बार यात्रा करनेसे विभिन्न अनुभव प्राप्त न हुअे होते दत्तभक्तिकी दीक्षा कॉलेजकी शिक्षा और शिक्षकके रूपमें जिम्मेदारी आदि बातोंकी सहायता मुझे न मिलती तो मैं नहीं समझता कि कुविचारोंके परिपोषणसे अपनेको बचा पाता।

जिन्हें पढ़ना नहीं है, जिनके मनमें शुभ संस्कारोंकी कद्र नहीं है समाजमें पागल कुत्तेकी तरह दुर्गुणोंको फैलानेमें जिन्हें शर्म नहीं आती अैसे लड़कोंको अीश्वर यदि स्कूलमें जानकी बुद्धि ही न दे तो कितना अच्छा हो! साथ ही क्या स्कूलोंकी भी यह जिम्मेदारी नहीं है कि वे अैसे निठल्ले और आवारा लड़कोंको स्कूलोंमें न रहने दें? स्कूलोंका यह कर्तव्य अवश्य है कि वे बिगड़े हुओंको सीधे रास्ते पर लायें लेकिन अैसा करनेके लिअे शिक्षकोंको चाहिये कि वे अैसे लड़कोंको खोज निकालें और अुनके हृदयमें प्रवेश करें। आरोग्य-मंदिरमें रखे जानेवाले बीमारोंकी तरह अैसे विद्यार्थियोंको हिफ़ाज़तसे रखना चाहिये। अुनकी छूतसे अनजान बालकोंको बचानेका यदि कोअी अुपाय न मिले तो भी अुसकी लाजमें तो शिक्षकोंको रहना ही चाहिये।

और आरोग्य-मंदिरमें तो अैसे ही लोगोंको रखा जाता है जिन्हें चंगा होनेकी अिच्छा होती है। जिन्हें सुधरना ही नहीं है, अुन्हें कोअी भी स्कूल कैसे सुधार सकता है?

६६

फोटोकी चोरी

बचपनमें छापाखानेमें से दो टाअिपोंकी चोरी करनेके बाद मैंने दिलमें निश्चय किया था कि आयंदा फिर कभी अैसा नहीं करूँगा। फिर भी चोरीकी खास अिच्छाके बिना भी मेरे हाथसे अेक बार चोरी हो ही गयी।

मुभोसमें हम सरकारी मेहमानके तौर पर रहते थे। हमें वहांके व्यकटेशके सरकारी मंदिरमें ठहराया गया था। हर रोज शामको अलग-अलग स्थानों पर हम घूमने जाते। अेक दिन हम खास तौरसे युरोपियन मेहमानोंके लिअे बनाया हुआ गेस्ट-हाअुस (मेहमान-घर) देखने गये। वहाँ देखने जैसा मजा क्या हो सकता था? बंगले जैसा बंगला था। टेबल-कुर्सी वगैरा बहुत-सा फर्निचर था। दीवारों पर कुछ चित्र टँगे थे, जिनमें सौंदर्य या कलाकी दृष्टिसे कुछ न था। भोजन करनेकी बड़ी मेज और बड़े-बड़े पंखे भी वहाँ थे। बंगलेके खानसामाने हमें बतलाया कि युरोपियन लोग किस तरहसे रहते हैं किस तरह कांटों-चम्मचोंसे खाना खाते हैं किस तरह नहाते हैं। मुझ तो वहाँ अेक बड़ी कुर्सी ही आकर्षक जान पड़ी जिसमें तीन व्यक्ति तीन दिशाओंमें मुँह करके बैठ सकते थे। अुसे हम तिकोना स्वस्तिक भी कहें तो अनुचित न होगा।

असलमें हम जो अुस बंगलेकी ओर जाते वह अुसके आसपासका बगीचा देखनेके लिअे ही जाते। वहाँ जुहीकी जितनी बेलें थीं कि मौन रोजाना वहाँसे फूल मँगवाकर घरके महादेवको अेक लाख फूल चढ़ाये। हर रोज सुबह घरमें फूल आ जाते तो अुन्हें गिननेमें मेरी

दो भाभियाँ मेरी स्त्री और मैं, हम सबका सारा वक्त चला जाता था।

अिस बँगलेके अेक छोटसे कमरेके कोनमें अेक छोटासा शेल्फ था। अुस पर अेक गोरी महिलाका नन्हा-सा फोटो रखा हुआ था। वह शायद अुस महिलाका होगा, जो कभी अुस बँगलेमें निवास कर गयी होगी। तस्वीरको देखनेसे अैसा लगता था कि वह महिला खूब मोटी होगी। अुसने अपने बालोंको अिस अजीब ढंगसे सँवारा था कि अुसे देखकर रंगमें भंग हो जाता। लेकिन फोटो खींचनकी कलाकी दृष्टिसे वह चित्र बहुत सुन्दर लगता था और मुझे तो अुस कलाकी खूबियाँ देखनेका बड़ा शौक़ था। पहले दिन अस्वीरको मैं अुसे बराबर नहीं देख सका था। लेकिन फिर भी वह आँखोंमें बस गया था।

दूसरी बार जब अुसी बँगलेकी ओर पिताजीके साथ घूमने गया तो मितनी बात दिमागमें रह गयी थी कि वह फोटो अच्छी तरह देखना है। मैं वहीं पर खड़ा होकर यदि देखता रहता तो पिताजीका ध्यान मेरी तरफ़ जाता और अुन्हें लगता कि अब ल्घु कितना अशिष्ट हो गया है कि मेरे सामने स्त्रीका सौंदर्य देखने लगा है। लेकिन मुझ तो फोटो परका 'री-टॅचिंग' देखना था और सीनसे अूपरके हिस्सेको क़ायम रखकर नीचेका भाग जो बादलकी आकृतिमें 'व्हाअिनेट' कर डाला था वह देखना था। न तो अुसे देखनका लोभ छूटता था और न पिताजीके सामने देखनेकी हिम्मत होती थी। मैंने वह फोटो अुठाकर हाथमें ले लिया — अिस आशासे कि बँगलेमें घूमते-फिरते देख लूँगा और बाहर निकलनके पहले खानसामाके हाथमें दे दूँगा। खानसामा चपरासी और सायबर बगैरा सभी पिताजीको खुश करनेमें मशगूल थ। लेकिन मैं पीछे न रह जाअूँ अिसकी फ़िक्र पिताजी रखते थे। अिससे न तो मुझे फोटो खींचनवालेकी कला जी भर कर देखनेका मौक़ा मिला और न मैं अुस फोटोको लौटानेका ही मौक़ा पा सका। वह

नालायक खानसामा यदि जरा भी पीछे रहता, तो मैं यह फोटो मुसे सौंप देता। लेकिन वह क्यों पीछे रहने लगा?

अब क्या किया जाय? पिताजी यदि मेरे हाथमें फोटो देख लें तब तो मारे ही गये समझो। तब तो वे मान ही लेंगे कि युरोपियन रमणीका चित्र देखकर अिसने हाथमें लिया है और अपने साथ लेकर घूम रहा है। क्या किया जाय अितना सोचनेके लिये भी वक्त न था। दुविधामें पड़े हुअे आदमीको जब अंतिम घड़ीमें कुछ निश्चय करना पड़ता है, तो वह अुल्टी ही बात करता है। मैंने वह फोटो अपनी जेबमें रख लिया और सामने आया हुआ प्रसंग टाल दिया। फोटो सीने पर की जेबमें था। सारे रास्तेमें वह मुझ मन भरके बोझके समान लगता रहा।

घर आने पर मनमें दूसरी चिन्ता पैदा हुआी। यदि वह खानसामा पिताजीके पास आकर फोटोके गुम होनेकी बात कहे तो? लेकिन मुझ अुस वक्त यह विचार नहीं आया कि अैसी छोटी-सी बातके लिये खानसामाकी पिताजी तक आनेकी हिम्मत नहीं हो सकती। आखिर चोर तो डरपोक होता ही है। बहुत सोच-विचारके बाद मैंने तय किया कि अब मैं अितने कीचड़में अुतर गया हूँ कि वापस आनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं है। अब तो बचा हुआ कीचड़ पार करके सामनेके किनारे पर जानेमें ही खैरियत है। चोरीके मालको ही नष्ट कर दिया जाय तो फिर कोअी चिन्ता नहीं। लेकिन फिर मनमें आया कि फोटो फाड़ डालूँ और यदि अुसका छोटा-सा टुकड़ा कहीं मिल गया तो? चूल्हेमें जलाने जाअूँ और अचानक माँ क्या है कहकर पूछ बैठे तो? फाड़कर यदि अुसके टुकड़े पाखानेमें फेंक दूँ और सवेरे भंगीका ध्यान अुस ओर जाय तो? हाँ बाहर दूर तक घूमने जाकर खेतोंमें टुकड़े गाड़ आअूँ तो काम बन सकता है। लेकिन जब घूमने जाना होता, अितना ही नहीं बल्कि घरके बाहर तनिक भी दूर जाना होता, तो कोअी-न-कोअी चपरासी

साथ लगा ही रहता था। रोज़ाना चपरासीके साथमें जानेवाला मैं यदि आज ही अकेला जाता तो भुससे भी किसीको शक हो सकता था।

अब अिस फोटोका क्या किया जाय? शेक्सपियरकी लेडी मैकबेथके हाथमें जैसे खूनके धब्बे लग गये थे और किसी तरह वे धुल नहीं सकते थे वैसी ही मेरी स्थिति हो गयी। यह फोटो अमर है या मरकर भी फिरसे जिन्दा होनेवाले रक्तबीज राक्षसकी तरह है अैसा मुझे लगने लगा। आखिर अेक रामबाण अुपाय सूझा। अुस फोटोको लेकर मैं पाखानेमें गया वहाँ अुसे पानीमें खूब भिगोया और फिर अुसके छोटे-छोटे टुकड़े करके हरअेक टुकड़ेको दोनों अँगुलियोंके बीच मलकर अुसकी लुगदी बनायी और जब वह सूखकर मूसा बन गया तब अुसे मिट्टीमें मिलाकर फेंक दिया।

वो रात मुझे नींद नहीं आयी। मनमें यही बात चक्कर लगाती रही कि मैं क्या करने गया था और क्या हो गया। फोटोका खातमा हो जाने पर मुझे लगा था कि अब मेरी चिन्ता भी खतम हो जायगी। लेकिन अुसका अितनेसे ही अन्त होनेवाला न था। फिरसे जब हम अुस गेस्ट-हाअुसकी ओर घूमने गये तो वह खानसामा मेरे साथ ही साथ घूमने लगा मेरा पीछा छोड़ता ही न था। मेरे गुनहगार मनने देख लिया कि खानसामाकी आँखोंमें आदर या खुशामद नहीं बल्कि पूरा शक था। मेरे मनमें आया कि अेक चोरी करके मैं अितना दीन हो गया हूँ कि अेक खानसामा भी मुझसे बड़ा आदमी बन गया है! यह मुझ पर निगरानी रखता है! मैं जल्दी-जल्दी बगीचेमें घूम आया। वहाँसे लौटते समय आखिर खानसामाने मुझसे कह ही दिया कि साहब हमारा अेक फोटो खो गया है। मेरी आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। क्या जवाब दिया जाय यह भी मुझे न सूझ पड़ा। मेरे मिजाजमें तो प्रतिष्ठाकी बातको आगे करना ही सम्भव था। मैं चिढ़कर अितना ही बोल पाया

कि अच्छा मैं पिताजीसे कहूँगा। मैं कह तो गया, लेकिन मेरी आवाजमें कोअी जान नहीं थी।

वापस लौटते समय अेक नया संकट खड़ा हुआ। साथके क्लर्क और चपरासीके सामने मैं बोल चुका था कि 'मैं पिताजीसे कहूँगा।' अब यदि नहीं कहता हूँ तो लोग समझेंगे कि दालमें काला जरूर है। अिससे मैंने हिम्मत करके पिताजीसे कह ही दिया कि खानसामा अैसा अैसा कहता है। पिताजीके स्वप्नमें भी यह बात नहीं आ सकती थी कि दत्तू फोटो चुरायेगा। पिताजीके पास अपने दो कैमेरे थे नानाके पास भी और तीन कैमेरे थे। घरमें फोटोका ढेर लगा था। अिसलिअे पिताजीने मेरा पक्ष लिया और आदमीको भेजकर खानसामाको बुलवाया। अुसे अच्छी तरह फटकारा और कहा कि मैं अभी दीवानसाहबको लिखकर तुम्हे बरतरफ करवाता हूँ। खानसामा डर गया। बड़ोंके आगे अुस बेचारे गरीबका क्या चल सकता था? अुसने मेरे पास आकर माफी माँगी। मेरा चेहरा पीला पड़ गया था। मैं स्वयं यह जानता था कि मेरा मुँह फक पड़ गया है। पिताजीने भी मेरी ओर देखा। अुन्हें लगा होगा कि बिना कारण अेक अदन व्यक्तिके द्वारा अपमानित होनेसे मेरा चेहरा अुतर गया है।

मैं अेक सरकारी अफ़सरका लड़का था और वह बेचारा खानसामा वहाँ राज्यके मेहमान-घरका मामूली नौकर था। लेकिन हृदयकी मानवताकी तराजूमें हम दोनों मनुष्य समान थे। मुझसे माफी माँगते समय भी खानसामाको विश्वास था कि यह गुनहगार है और मैं भी जानता था कि मुझे ही अुससे माफी माँगनी चाहिये। पिताजी यदि सचमुच दीवानसाहबको चिट्ठी लिख देते तो मेरे अपराधके कारण अुस बेचारेकी रोजी छिन जाती और अुसके बालबच्चे भूखों मरते। जब हम दोनोंकी आँखें चार हुअीं तब मेरी क्या दशा हुअी होगी अिसकी कल्पना निर्दोष हृदयको तो हो ही नहीं

सकती। मैंने जल्दीसे अुस मामलेको वहीं रफा-दफा करवा दिया। लेकिन फिर कभी मैं मेहमान-घरकी ओर घूमने नहीं गया।

अिस सारे मामलेमें यदि अक बार भी मुझमें सत्य कह देनेकी हिम्मत आ जाती तो कितना अच्छा होता! लेकिन वैसा न हो सका। आज अितने समय बाद अिन सारी बातोंका अिकरार करके कुछ सन्तोष प्राप्त कर रहा हूँ।

६७

अफसरका लड़का

हमारी खिदमतके लिअे आण्णू नामका अेक सिपाही दिया गया था। देशी राज्यमें जब कोअी ब्रिटिश सरकारका अधिकारी जाता तो अुसके दबदबेका पूछना ही क्या? मेरे पिताजीका स्वभाव बिलकुल सीधा-सादा था। अपना रोब या धाक जमाना अुनको बिलकुल पसन्द *न था और अिसकी अुन्हें आदत भी नहीं थी। लेकिन स्थान-माहात्म्य* थोड़े ही कम हो सकता था? आण्णू था तो रियासती पुलिसका आदमी लेकिन आज अुसे ब्रिटिश सिपाहीकी प्रतिष्ठा मिल गयी थी। वह चाहे जहाँ जाता और चाहे जिसे धमकाता। हमें अिसकी खबर तक न होती।

अेक बार हमारे यहाँ बारह ब्राह्मणोंकी समाराधना (भोज) थी। अतः हमने आण्णूको काफ़ी पैसे देकर साग-तरकारी लाने भेज दिया। अुसने लगभग अेक गाड़ीभर सब्जी लाकर घरमें डाल दी और बोला "यहाँ देहातमें साग-सब्जी बहुत सस्ती मिलती है।" मुझे अुसकी बात सच मालूम हुयी। बादमें जब हम वहाँसे विदा होने लगे, तो किसीने मुझसे कहा कि अुस दिन आण्णू आसपासके देहातोंमें जाकर सारी साग-सब्जी जबरदस्तीसे मुफ्तमें ही लाया था।

यह बात अितनी देरीसे मालूम हुअी थी कि अब अुसके सम्बन्धमें कुछ करना संभव नहीं था। बारह ब्राह्मणोंको पकवानोंका बढ़िया भोजन खिलाकर और यथेष्ट दक्षिणा देकर अगर कुछ पुण्य हमें मिला होगा तो वह अुस जुल्मसे खतम हो चुका होगा। (कहते हैं कि पुराने जमानेमें राजा लोग ब्राह्मणोंसे बड़े-बड़े यज्ञ करवाते थे तब भी अिसी तरह जुल्मोसितमसे यज्ञ अब समाराधनाकी सामग्री जुटाते थे।) अेक ब्राह्मणके साथ अिस विषयमें चर्चा करते समय अुसने मनुस्मृतिका अेक श्लोक कह सुनाया कि, 'ब्राह्मण जो कुछ खाता है वह सब अपना ही खाता है। सब कुछ ब्राह्मणका ही है। ब्राह्मण कठोर नहीं होता, अिसीलिअे अन्य लोगोंको खानेको मिलता है।' अुसकी यह बात सुनकर मैं अुसके आगे हाथ जोड़कर चुप रह गया।

अेक दिन आण्णू मेरे पास आकर कहने लगा, 'अप्पासाहब यहाँका पोस्टमास्टर बहुत ही मिजाजी है। मैं डाक लेने जाता हूँ तो मुझे जल्दी नहीं देता। अिस बातको तो छोड़िये लेकिन अुसका रहन-सहन भी बहुत खराब है। जातिसे 'कोमटी' जान पड़ता है। लेकिन अितना गन्दा रहता है कि अुसके पास खड़े होनेका भी मन नहीं करता। रहता है अेक मन्दिरमें लेकिन वहाँ मुर्गी मारकर खाता है और अण्डेके छिल्के जहाँ-तहाँ फेंक देता है। अिसे ठिकाने लगाना चाहिये। यदि आप थोड़ी-सी मदद दें तो हम अिसे सीधा कर देंगे।' आण्णूकी होशियारी पर मैं खुश था। वह जालिम भी है अिसका पता मुझे बहुत देरसे चला। अतः मैंने कहा 'अच्छी बात है।' फिर मैंने अेक-दो क्लर्कोंसे पूछकर अिस बारेमें यकीन कर लिया कि बात ठीक है। फिर कभी मैं और कभी आण्णू पोस्टमास्टरके बारेमें कुछ न कुछ शिकायत पिताजीसे करने लगे।

अेक दिन संयोगसे हमारी डाकके संबंधमें वह पोस्टमास्टर कुछ गलती कर गया। मैंने तुरन्त ही पिताजीसे कहलवाकर पोस्ट-मास्टरके नाम अेक सख्त पत्र लिखवाया। पोस्टमास्टर घबड़ाया।

डाकियेने तो आकर मुझे साष्टांग दण्डवत ही किया। छः फीट दो भिन्न अुंचे मूढ़े डाकियेको विन्ध्याद्रिके समान अब मैंने अपने सामने पड़ा हुआ देखा तो मेरा हृदय दयासे भर आया। फिर मुझे अुस पर तो घर-संधान करना ही न था। मुझे तो अुस पोस्टमास्टरसे मतलब था। मैंने अुससे साफ़ कह दिया कि गलती पोस्टमास्टरकी है। वह यहाँ आकर बातें करे तो कुछ सोच-विचार किया जा सकता है।

बेचारा पोस्टमास्टर आया। मैंने बात ही बातमें अुसे बतला दिया कि "पोस्टल सुपरिन्टेंडेन्ट नाडकर्णीसे मेरा अच्छा परिचय है।" फिर तो बेचारा हड़बड़ा गया। अुसके साथ दूसरा अेक क्लर्क और आया था। अुसने मेरी खुशामद करते हुअे कहा, "साहब चाहे जितने गरम हो गये हों फिर भी अुन्हें ठंडा करनेकी ताक़त अुनके लड़केमें होती ही है। आप अपने पिताजीको जरा समझा दें, तो अुनका गुस्सा अुतर जायगा।" मैंने तड़ाकसे कहा "मुझे क्या पड़ी है जो पिताजीसे अिनकी सिफ़ारिश करूँ? ये साहब तो मन्दिरमें रहकर मुर्गी मारकर खाते हैं। यह बोला लेकिन मैं कहता हूँ कि आयंदा अैसा नहीं होगा।' मुझे तो यही चाहिये था।

मैंने तुरन्त ही अन्दर जाकर पिताजीसे कहा, 'पोस्टमास्टर बाहर आया है। भला आदमी जान पड़ता है। अुसने अपनी ग़लती क़बूल कर ली है। मुर्गीकी बात तो पिताजी जानते ही न थे। वह तो हमारा आपसी षड्यंत्र था। पिताजी बाहर आये। पोस्टमास्टर कहने लगा हम तो आपके नौकर हैं। आप जो आज्ञा दें हमें मंजूर है।" पिताजीने सहज भावसे कहा "तुम्हारा महकमा अलग है, हमारा अलग है। हम थोड़े ही तुम्हारे वरिष्ठ अधिकारी हैं? हमारे लिअे तो अितना ही काफ़ी है कि डाकके बारेमें कोअी गड़बड़ी न होने पावे।" पोस्टमास्टर बेचारा खुश होकर घर चला गया।

मेरे बारेमें अुसने क्या खयाल किया होगा यह तो नहीं जानता। हो सकता है कि अुसने मेरे बारेमें कुछ भी खयाल न किया हो।

अुसके मनमें आया होगा कि दुनिया तो अिसी तरहसे चलती रहेगी नीति-अनीति कानून गुनाह यह तो बाहरी दिखावेकी मात्रा है। बल-वानोंके सामने झुकना और दुर्बल नाजुक लोगोंको चूसना ही जीवनका सच्चा शास्त्र है। मेरे विषयमें अुसने चाहे जो राय बना ली हो अुससे मेरा कुछ बनने-बिगड़नेवाला नहीं है। क्योंकि अितने वर्षोंमें अुसके साथ मेरा कोअी संबंध नहीं आया और न आयन्दा आनकी कोअी संभावना ही है। लेकिन जीवनके बारेमें अुसकी अिस धारणाको जमानेमें जिस हद तक मैं कारण हुआ अुस हद तक अुसे नास्तिक बनानेका पाप मैंने जरूर किया है। प्रतिष्ठा अधिकार अेवं मान-पहचानका डर दिखाना क्या मुर्गी और अंडे खानकी अपेक्षा कम हीन है?

६८

खच्चर-गाड़ी

मुधोलमें अकसर हम घुड़दौड़के मैदान (रेसकोर्स) की ओर घूमने जाते थे। अेक दिन हमें घूमने ले जानेके लिअे दरबारकी ओरसे खच्चरका ताँगा आया। खच्चर यानी आधा गधा! खच्चरके ताँगमें कैसे बैठा जाय? मैंने नाराज होकर कहा, अैसे ताँगेमें हमें नहीं बैठना है। अिसे वापस ले जाओ। बापूराव साहिबजरने मुझ समझाया कि, यहाँ ताँगोंमें खच्चर ही जोते जाते हैं। आप देखेंगे कि यहाँके खच्चरोंकी नसल बड़ी अुम्दा है। अभी हमारे राजासाहब भी कभी-कभी खच्चर-गाड़ीमें घूमने जाते हैं। अितना माहात्म्य सुननेके बाद मेरा मन अनुकूल हो गया। फौजमें तोपें खींचनके लिअ खच्चरोंको जोतते हुअे तो मैंने बलगाँवमें देखा था। अिसलिअे मैंने मान लिया कि खच्चर बिलकुल अस्पृश्य नहीं होते।

हम ताँगेमें बैठ और घुड़दौड़के मैदानकी ओर चले। लेकिन खच्चर किसी तरह चलते ही नहीं थे। ताँगेवाले और दो चपरासियोंकी सख्त मेहनतके बाद हम अेक घण्टेमें जैसे-तैसे घुड़दौड़के मैदान पर पहुँचे। मैं तो बिलकुल तंग आ गया था। मैदानके आसपास बहुतसे पेड़ोंकी ऊँची बाड़ थी। *अन्दर जानेके लिअे मुश्किलसे अेक गाड़ी जाने* जितना रास्ता था। अुस रास्तेमें भी बाड़की मेंड़ होनेके कारण अुस मेंड़ परसे ताँगा भीतर ले जाना पड़ा। यह सब देखकर मेरे मनमें आया कि हम किधर नाहक आ गये। अैसे रद्दी खच्चरोंके ताँगेमें घूमनेमें क्या मजा? मैंने बापूरावसे कहा, "आज मुहूर्त अच्छा नहीं जान पड़ता। ताँगेमें हर रोजके घोड़े आज क्यों नहीं जोते?" ताँगेवालेने कहा "घोड़े सरकारी कामके लिअे कहीं गये हैं अिससे प्रायवेट सेक्रेटरीने मुझसे ये खच्चर ले आनेको कहा।'

अन्दर जानेके बाद खच्चरोंने मुश्किलसे अेक बात पार किया होगा कि अुन्होंने निश्चय कर लिया कि चाहे जितनी मार पड़े लेकिन अब क़दम भी आगे नहीं रखेंगे। खच्चर अहिंसावादी तो थे नहीं। ताँगेवाला जैसे ही अुन्हें मारता, वैसे ही वे अपने पिछले पैर अुठाकर ताँगेको मारते। जिससे ताँगेकी अगली पटिया कुछ टूट भी गयी। अुसपर मैंने कहा, "चलो अब लौट चलें।" ताँगा घुमाया गया। खच्चरोंको मालूम हुआ कि अब घरकी ओर चलना है। फिर तो अुन्होंने जोशमें आकर अैसी अच्छी दौड़ लगायी कि बाड़का सुना हिस्सा भी अुन्हें दिखाओी न दिया। घुड़दौड़की लम्बी-चौड़ी गोल सड़क पर मोटरकी रफ्तारसे खच्चर दौड़ने लगे। दस मिनट हुअे। बीस मिनट हुअे। लेकिन ये तो गोल चक्कर के घेरेमें दौड़ते ही रहे। तूफानी लहरों पर जैसे जहाज डोलता है वैसे ही ताँगा डोल रहा था। मुझे अितना मजा आया कि हँसते-हँसते पेट दुखने लगा।

तक़रीबन बीस मिनट बाद अुन बेवक़ूफोंको खयाल हुआ कि कुछ गड़बड़ी हुअी है। दोनों खच्चर अेकदम रुक गये और अुन्होंने तड़ातड़

लातें मारना शुरू किया। आधी टूटी हुअी पटियाको अुन्होंने पूरा तोड़ दिया और कुछ सोचकर अचानक घूम गये। फिर अुन्हें लगा कि अब बराबर घर जायेंगे। बस, फिर दौड़ शुरू हुअी। यह अुल्टी परिक्रमा भी क़रीब बीस मिनट तक चलती रही। फिर तो अुन्होंने यह नियम ही बना लिया —दौड़ते रुकते लातें फटकारते, घूम जाते और फिर दौड़ते। अँधेरा होनेको आया। दोनों खच्चर पसीनेसे तरबतर हो गये। हम भी हँस-हँस कर अधमरे हो गये।

आखिर बाड़के अुस खुले हिस्सेके पास आते ही ताँगेवालेने खच्चरोंकी रफ्तार कम कर दी और धीरेसे अुन्हें बाहर निकाला। फिर तो खच्चर अितने तेज दौड़े कि सात मिनटमें अुन्होंने हमें घर पहुँचा दिया। रास्तेमें कोअी दुर्घटना न हो अिसलिअे चिल्लाते-चिल्लाते ताँगेवालेका गला सूख गया।

मैंने ताँगेवालेसे कहा कल अिन्हीं खच्चरोंको लाना। अब घोड़ोंकी कोअी जरूरत नहीं है। सरकारी कारखानेमें ताँगेकी मरम्मत तो हो ही जायगी। बापूरावने आगे कहा चमड़ेकी कुछ पट्टियाँ भी साथमें लाना ताकि खच्चर यदि लगाम तोड़ डालें या बल्ला टूट जाय तो वे काम आयें। अिस सूचनामें मेरे लिअे चेतावनी है, यह मैं समझ गया। अिससे मैंने जोरसे कहा हाँ हाँ यह सब लाना। अबसे हम रोजाना घुड़दौड़के मदानकी ओर ही जायेंगे। और खच्चर भी य ही रहेंगे।

६६

काव्यमय बरात

हमारे बचपनमें बाअिसिकलें नहीं थी। सबसे पहले ट्राअिसिकल यानी तीन पहियोंकी गाड़ी आयी। ठोस रबड़के पेंद भैसके सींग जैसा हैंडल-बार और अेक बाअिश्त चौड़ा सुगीर (सीट) — अिस तरहकी यह अजीबोगरीब चीज देखकर हमें मजा मजा आता। कोओ कहते कि अगर अेक पहियेके नीचे पत्थर आ जाय तो यह ट्राअिसिकल अुलट जाती है। खड़-खड़ आवाज करती हुओ यह ट्राअिसिकल जब रास्ते पर चलती तब लोग अुसे देखनके लिअे दौड़ आते। अिसके बाद बाअिसिकल आयी।

मैंने जो सबसे पहली साअिकल देखी वह थी डॉ॰ पुरुषोत्तम शिरगांवकरकी। सारे बेलगांव या शाहपुरमें दूसरी साअिकल थी ही नहीं। जहां भी देखिये लोग साअिकलकी ही बातें करते। अेक कहता हम पान खाते हैं अितनेमें तो यह पैरगाड़ी (अुस वक्त साअिकल शब्द प्रचलित नहीं था सब पैरगाड़ी ही कहते। मालूम नहीं यह शब्द क्यों मतरूक हो गया। अभी भी मुझे साअिकलकी अपेक्षा पैरगाड़ी शब्द ज्यादा पसन्द है।) शाहपुरसे बेलगांव पहुँच जाती है।" दूसरा कहता "अिसके पहिये अेकके पीछे अेक होते हुअे भी यह गिरती क्यों नहीं? कोओ कहता "अिसके पहिये बिलकुल सीधमें नहीं होते अुनमें कुछ अंतर रहता है।" अपनको बहुत अक्लमन्द समझनेवाला कोओ आदमी अिस पर जवाब देता जैसे रस्सी पर चलने-वाला नट अपना सन्तुलन रखनेके लिअे हाथमें आड़ा बांस रखता है वैसे ही पैरगाड़ीवाला अपने दोनों हाथोंमें यह पकड़ता हुआ डंडा रखा रखता है अिसलिअे यह नहीं गिरता।" अेक बार अेक बूढ़ा हिम्मत

करके खुद डॉक्टरसे ही पूछा कि आप गिर कैसे नहीं जाते? डॉक्टरने अुलटा सवाल किया तुम अपनी साढ़े तीन हाथ लम्बी देहको लेकर बालिश्त भर पावों पर खड़े रहते और चलते हो तब तुम कैसे नहीं गिरते? सभी खिलखिलाकर हँस पड़े और बचारा बूढ़ा झेंप गया।

अुस वक्त मैं था बहुत ही छोटा स्कूल भी नहीं जाता था। परंतु अुस दिनसे मेरे मनमें भी अेक वासना पैठ गयी कि यदि हमारी भी साअिकल हो तो कितना अच्छा! लेकिन साअिकल जैसी तीन-चार सौ रुपयोंकी क़ीमती चीज हमारे घरमें कैसे आयगी अिसी विचारके कारण साअिकलकी तमन्ना मन ही मनमें रह जाती।

फिर तो धीरे-धीरे साअिकलें बढ़ती गयीं। जहाँ देखिये वहाँ साअिकल। पैरगाड़ी शब्द भी मतरूक हो गया और अुसके बदले बाअिसिकल शब्द सभ्य माना जाने लगा। कुछ दिनमें यह शब्द भी पुराना हो गया और प्रतिष्ठित लोग बाअिक शब्दका अिस्तेमाल करने लगे। लेकिन जब अिस द्विचक्रीने हमारे घरमें प्रवेश किया, तब साअिकल शब्द बाअिकसे होड़ करने लगा था।

लेकिन बाअिक जब तक घरमें नहीं आयी थी तब तक अुसका ध्यान ज्यादा लगा रहता था। हम छोटे हैं तीन चार सौ रुपये खर्च करके हमें कौन साअिकल ला देगा? हिम्मत करके माँगें भी तो वे पूछेंगे कि तुझे साअिकल लेकर क्या करना है? अिससे मनमें विचार आता कि साअिकल प्राप्त करनेका अेक ही अुपाय है। हम शादीके समय रूठकर बैठेंगे और ससुरसे कहेंगे हमें न तो सोनेकी कंठी चाहिये न पहुँची ही। हमें तो बढ़िया साअिकल ला दीजिये। मेरे बड़े भाअियोंकी शादियाँ बचपनमें ही हो गयी थीं। शादीके समय व कैसे रूठ कर बैठते थे यह मैंने देख लिया था अिसीलिअे यह विचार मेरे मनमें आया था।

बचपनसे रामदास स्वामीकी बातें सुननेके बाद मनमें यह बात जम गयी थी कि शादी करना खराब चीज है। शादी कर देंगे अिस डरसे

मैंने और गोंदूने घरसे भाग निकलनेकी चेष्टा भी की थी। लेकिन साअिकलने मेरी बुद्धिको भ्रष्ट कर दिया! चूंकि साअिकल तुरन्त प्राप्त करनेका यही अेक रास्ता दिखाअी देता था अिसलिअे साअिकलके लोभसे मैं शादी करनेको भी तैयार हो गया। फिर तो कल्पनाके घोड़ — अरे नहीं! भूला! — कल्पनाकी साअिकलें दौड़ने लगीं।

अेक दिन शादीके विचार और साअिकलके विचार अद्‌भुत रूपसे अेक-दूसरेमें मिल गये। मनमें विचार आया कि यदि शादीका सारा जुलूस (बरात) साअिकल पर निकाला जाये तो कितना मजा आयेगा! वर-वधू तो साअिकल पर रहें ही लेकिन सारे बराती, अितना ही नहीं, बल्कि शहनाअी बजानेवाले आतिशबाजी छोड़नेवाले, पुरोहित ब्राह्मण मशालें पकड़नेवाले सभी साअिकल पर बैठकर शहरमें घूमें तो कितना अद्‌भुत व मजेदार दृश्य अुपस्थित होगा? अैसा भी प्रबंध हो कि हरअेक आदमी साअिकलकी जो घंटी या भोंपू बजायेगा अुसमें से शारीगमकी आवाजें निकलें। लेकिन अैसा जुलूस तो जल्दी ही घूम लेगा लोग अच्छी तरह देख भी नहीं पायेंगे। अिसलिअे सारे शहरमें अिसे कमसे कम दस बार घुमाना चाहिये। और जिन्हें यह मजा देखनेका बहुत शौक हो वे खुद किराये कि साअिकलें लेकर अुसके साथ घूमते रहें — अैसी अैसी मजेदार कल्पनायें मनमें बहने लगीं।

मजा अैसी मजेदार कल्पनाओंका आनन्द क्या अकेले-अकेले लूटा जा सकता था? मैंने गोंदूको यह सब सुनायीं। अुसके पेटमें वह थोड़े ही रह सकती थीं! अुसने अुसी दिन हँसते-हँसते घरके सब लोगोंका विस्तारसे साथ कह दिया। कुछ ही दिनोंमें बात घरके बाहर भी फैल गयी। और हर व्यक्ति मुझे साअिकलकी बरातके बारेमें पूछ-पूछ कर चिढ़ाने और हैरान करने लगा।

अच्छा हुआ कि अुसी साल मेरी शादी नहीं हुअी वरना कोअी मुझे मुझसे शादी भी न करने देता। मेरी शादी हुअी अुस वक्त तक अिस बातको भूल गये थे सिर्फ मैं ही नहीं भूला था। लेकिन

रोजाना श्रीश्वरसे प्रार्थना करता था कि जब तक सारा समारोह पूरा न हो जाय तब तक किसीको साअिकलके जुलूसका स्मरण न हो।' शादीमें जब रूठनेका प्रसंग आया तब भी मनमें तीव्र अिच्छा तो थी, लेकिन मैंने साअिकलका नाम तक नहीं लिया — कहीं अुसीसे मामियोंको साअिकलकी बरातका स्मरण न हो जाय!

फिर जब सचमुच ही साअिकल हमारे घरमें आ गयी और मैं साअिकल पर बैठन लगा तब मैंने गोंदूस कहा नाना (अब मैं गांदूको नाना कहने लगा था।) साअिकलके साथ मेरा अेक फोटो खींच दो न? ' वह कहने लगा अिसमें कौनसी बड़ी बात है? आज ही खींच लेंगे। लेकिन अेक बात है। मैं फोटोके नीचे यह लिखूंगा कि 'साअिकलकी बरात। अिस शर्तको माफ़ करवानेके लिअे मुझ नानाकी बहुत ही मिन्नतें करनी पड़ी थीं।

७०

चोरोंका पीछा

प्लेगके दिनोंमें शाहपुरसे बाहर झोंपड़ियोंमें रहना अितना निममित बन गया था कि लोगोंने वहां झोंपड़ियोंके बदले कच्चे मकान बनाना ही ठीक समझा। फिर भी अुन्हें झोंपड़ी ही कहते थे। हमारी झोंपड़ीकी दीवार बांसकी थी। बांसोंके अूपर अन्दर-बाहर मिट्टीका पलस्तर लगाया गया था। छप्पर पर खपरे थे। अिस झोंपड़ीके बन जानके बाद मुझे सदा वहीं रहना अच्छा लगता फिर गांवमें ताअून हो या न हो। अुस वक्त मैं शायद अंग्रेजी पांचवीं कक्षामें पढ़ता था। आसपास पांच दस झोंपड़ियां थीं। अुनमें भी हमारी जातिके ही लोग रहते थे। सिर्फ़ हमारे पड़ोसमें अेक लिंगायत कुटुम्ब रहता था। अुनके पिछवाड़में अक किसान रहता था, जिसकी झोंपड़ी सचमुच घास-फूसकी थी। अुस ओर चोर बहुत आया करते थे।

अक बार चोरोंने आकर बेचारे किसानके यहाँ सेंध लगायी और करीब चालीस रुपयेकी गठरी अुठाकर ले गये। किसान अुन्हें पकड़नेको दौड़ा। लेकिन चोरोंने अुसके सिर पर कुल्हाड़ीसे वार किया। चोट अुसकी भौंह पर लगी। कुछ ही नीचा लगा होता, तो बेचारेकी आँख ही चली जाती।

जब अुसके घरमें शोर मचा तब हमारे घरसे मैंने अुसे हिम्मत बंधानेके लिअे आवाज लगायी: "अरे डरो मत; हमारे घरमें बहुतसे मेहमान आये हुअे हैं। हम अभी मददके लिअे आ रहे हैं।" सच बात तो यह थी कि घरमें पुरुष सिर्फ़ मैं ही था। मैं हमेशा अपनी बन्दूक भरी हुअी रखता था। बन्दूक लेकर मैं बाहर निकला। लेकिन चोरोंके पास मेरी राह देखने जितनी फ़ुरसत कहाँ थी? अुस किसानकी झोंपड़ीमें जाकर मैं सारा हाल पूछ आया और हवामें बन्दूक दागकर और फिरसे अुसे भरकर सो गया।

दूसरी बार हमारी झोंपड़ीके मवेशीखानेमें जंजीर टूटनेकी आवाज हुअी। हम अपनी भैंस और गाड़ीके बैलोंको लोहेकी जंजीरसे बाँधते थे। मैं फौरन बन्दूक लेकर निकला। आधी रातका समय था। मैंने दरवाजा खोला तो माँ जाग गयी। यह मुझे जाने नहीं देती थी। मैंने कहा, "चोर गोठमें घुसे हैं। घरके ढोरोंको कैसे जाने दिया जा सकता है?"

मैं बाहर निकला। माँ कहने लगी, "ढोर जायें तो भले ही जायें। तू खतरा मोल न ले।"

"माँ, बचपनमें तो तू अैसी सीख नहीं देती थी," कहकर मैं दौड़ पड़ा। गोठमें जाकर देखा तो भैंस नहीं थी। दोनों बैल चौकन्ने-से खड़े थे। भैंसको न देखकर मेरे दिल पर क्या गुजरी होगी, जिसकी कल्पना तो जिसने मवेशी पाले हों वही कर सकता है। भैंसको रोज नहलानेका काम मेरा था; दुहनेका काम भी मैं ही करता था। अगर नौकर भूल जाता तो मैं स्वयं कुअेंसे पानी निकालकर अुसे

पिलाता। मेरी साअिकलकी घंटी सुनती तो वह तुरन्त मुझे दूरसे पहचान लेती और रांभकर मेरा स्वागत करती। अब अुस भैंसको मैं कभी नहीं देख सकूँगा, वह तो हमेशाके लिअे चली गयी, यह विचार असह्य हो गया। चोर यदि अछूत होंगे तो वे भैंसको मारकर खा भी जायेंगे। अब क्या किया जाय?

मैंने सोचा चोर सीधे रास्तेसे तो जायेंगे नहीं। पश्चिम और अुत्तरकी ओर झोंपड़ियाँ थीं अिसलिअे अुस ओरसे भी अुनका जाना संभव न था। पूर्वकी ओर खेत थे। अतः मैं अुधर दौड़ा। भैंस कहीं नजदीक हो, तो अुसे आश्वासन देनेके लिअे मैं भी अुसीकी तरह रांभा। दो खेत पार किये। तीसरा खेत कुछ गहराअीमें था। पास ही अेक पक्का कुआँ था और रास्तेके किनारे अेक पीपलका पेड़ था। पुराने जमानेमें वहाँ पर अेक सत्पुरुषका दाहकर्म हुआ था अिसलिअे लोग अुसे 'सोनेका पीपल' कहते थे। अुस खेतमें घास भी बहुत थी। नंगे पैर अंधेरेमें अुस खेतमें घुसनेकी मेरी हिम्मत न हुअी। अतः मैं फिर रांभा। भैंसने रांभकर जवाब दिया। अेक क्षणमें मेरी चिन्ता दूर हुअी और मुझमें हिम्मत आयी। मैं अुस खेतमें कूद पड़ा। भैंस मेरे हाथमें बन्दूक देखकर कुछ चमकी और दौड़ने लगी। अतः मैंने पास जाकर अुसे चुमकारते हुअे अुसका कान पकड़ा और अुसे घर ले आया।

दूसरे दिन सवेरे माँने भैंसको ज्वार पकाकर खिलायी और मुझे भी बढ़िया हलुवा मिला।

७१

गृहस्थाश्रम

हमारी झोंपड़ीके पास ही लिंगायत जातिके अेक सज्जन रहते थे। अेक दिन अुनके यहाँ अुनका दामाद आया। मैं अुसे देखने गया। बिलकुल छोटा लड़का था। ससुरके सामने बैठकर पान चबा रहा था। ससुरने मुझसे कहा "मेरी लड़कीके लड़का हुआ है। अिसलिअे पुत्र-मुखदर्शनकी खातिर आज जमाअी महाशयको बुलाया है।"

मेरे सामने बैठे हुअे लड़केका अेक बालकके पिताके रूपमें परिचय पाते हुअे मुझ कुछ शर्म-सी आयी। लेकिन वे 'पिताजी' तो बिलकुल शानके साथ पान चबा रहे थे। पुत्रोत्सवकी शक्कर खाकर मैं वापस आया। मुझे कुछ धुंधली-सी याद है कि कुछ ही दिनोंमें मुझे अुस बच्चेकी मृत्युका शोक मनानेके लिअे जाना पड़ा था।

लेकिन अुस लिंगायत कुटुम्बका स्मरण तो मुझे दूसरे ही कारणसे रहा है। कुछ ही महीनोंमें हमारे पड़ोसी — अुन 'पिताजी' के ससुर — गुजर गये। वे बड़े मालदार थे अिसलिअे बहुतसे लोग अिकट्ठा हुअे थे। लिंगायत लोगोंके रिवाजके मुताबिक शवको आँगनमें पलथी लगाकर दीवालके सहारे बैठाया गया था। शवके सामने दही-भात रखा गया था। सगे-सम्बन्धियोंमें से अेक-अेक व्यक्ति आता दही-भातका ग्रास हाथमें लेकर शवके मुँह तक ले जाता और फिर नीचे रखकर रो पड़ता — अुंडिल्ला! (जीमे नहीं!)

दूसरा रिवाज और भी ज्यादा ध्यान खींचने जैसा था। शवके पास अेक नयी साड़ी रखी गयी थी। लिंगायतोंमें पुनर्विवाहका निषेध नहीं है। लेकिन शवको अुठाते समय यदि अुसकी पत्नी वह साड़ी अुठाकर पहन ले, तो अुसका अर्थ यह लगाया जाता है कि अुसने

आजीवन वैधव्य स्वीकार किया है। यदि यह निश्चय न हो, तो वह अुस साड़ीको छूती भी नहीं। मरनेवालेकी स्त्री जवान थी। सब यही मानते थे कि वह फिरसे शादी करेगी। वह क्या करती है, यह देखनेके लिये मैं वहाँ गया था। घरमें सब रो रहे थे, सिर्फ़ वह स्त्री ही नहीं रो रही थी। अुसकी आँखोंमें गीलापन भी नहीं दिखाअी देता था। बहुतेरोंको अिससे आश्चर्य हुआ। मुझे भी आश्चर्य हुआ। लेकिन अुसकी शून्यमनस्क आँखोंकी चमकको देखकर मुझे यह शंका अवश्य हुअी कि अिस नारीने अिस दुनियासे अपना जीवन रस वापस खींच लिया है। आँसुओंके ज़रिये वह अपना दुःख हलका करना नहीं चाहती थी। जैसे ही शवके पास वैधव्यकी साड़ी रखी गयी कि अुसने तुरन्त ही अुठकर अुसे पहन लिया और अपना फ़ैसला जाहिर कर दिया।

सब लोग दुःखके साथ ही आश्चर्यमें डूब गये। मृत शरीरको श्मशानमें गाड़कर सब सगे-सम्बन्धी शहरमें रहने चले गये। दूसरे दिन खबर मिली कि अुस मृत पुरुषकी विधवाने अन्नत्याग कर दिया है। जहाँ तक मुझे याद है अुस स्त्रीने आठ-दस दिनके अन्दर ही देहत्याग कर दिया। बगैर किसी रोगके वह सती अपने दुःखके आवेगसे ही शरीरसे प्राणोंको अलग कर सकी। आज भी शवके पाससे साड़ी अुठाते वक़्तकी अुसकी भावमयी और अुसकी अुन निश्चययुक्त आँखोंको मैं भूला नहीं हूँ।

७२

बच्चोंका खेल

हमारी बापजीके पास हमारी जातिके लोगोंकी कुछ झोंपड़ियां थीं। मैं अुन लोगोंके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं रखता था। लेकिन अुनमें से अेक बुढ़िया हमारी बुआसे मिलने आया करती थी। असलमें यह बुआ मेरी मांकी बुआ थीं फिर भी हम सब अुन्हें बुआ कहकर ही पुकारते थे। वे अितनी बूढ़ी हो गयी थीं कि बिलकुल ठिगनी लगती थीं। वे अच्छी तरह तनकर चल भी नहीं सकती थीं। व मुझे खाना पकाकर खिलातीं और सारे दिन छोटे धनुषसे रूअी धुनकर आरतीके लिअे बातियां बनाती रहतीं। मेरे बारेमें अुनकी हमेशा यह शिकायत रहती कि मैं भरपेट खाना नहीं खाता। व कहतीं तुम्हारे लिअे खाना पकानेको बर्तनोंकी कोअी जरूरत ही नहीं है। बस दवातमें खाना पकाया जाय और दिवलीमें छौंक दिया जाय! अुनकी यह बात सुनकर मुझे बड़ा मजा आता। जब आकाशमें बादल घिर आते तो अुनके घुटने दर्द करने लगते। अुस वक्त वे कहतीं आकाशमें मोड' आते ही मेरा जिस्म भी 'मोड़ने' (यानी टूटने) लगता है। (कन्नड़ भाषामें बादलोंके लिअे मोड शब्द प्रयुक्त होता है।) पड़ोसकी बाड़से मैं अुन्हें थूहरकी टहनियां ला देता। अुनका दूध (लासा) निकालकर वे अपने घुटनोंमें लगातीं।

पड़ोसकी वह बुढ़िया अेक दिन मुझसे पूछने लगी 'हमारी मनू (मणिकर्णिका) अपनी सहेलियोंके साथ तुम्हारे यहां घर-घर खेलना चाहती है। क्या तुम्हारी अिजाजत है?'

लड़कियोंकी धृष्टता मुझे बिलकुल ही पसन्द नहीं थी लेकिन शिष्टाचारकी खातिर मैंने मना नहीं किया। मैंने अितना ही कहा

कि "जिसमें मुझसे क्या पूछना है? आप बुआसे पूछिये। वे जैसा कहें वैसा कीजिये।'

दोपहरमें लड़कियाँ आयीं। घंटों तक अुनका खेल चलता रहा। मुझे भी अुनका खेल देखनमें बहुत मजा आया। मनू शान्त मेहनती और दक्ष लड़की थी। सहेलियोंका खुश रखकर अुन पर क़ाबू पाना, अुनसे काम लेना और सबमें दिलचस्पी बनाये रखना जिस सबमें वह बहुत कुशल थी। लड़कियोंने तरह तरहके खेल खेले। फिर अुन्होंने खाना बनाया। अेक थाली परोसकर मेरे सामने भी रखी गयी। दोपहरके असमयमें खानेकी जिच्छा किसे थी? लेकिन फिर भी मैंने थोड़ा-सा खाया। शाम होनेके पहले सब लड़कियाँ अपने अपने घर लौट गयीं।

दूसरे दिन मनूकी दादी मेरे पास आकर कहने लगी, हमारी मनू छोटी थी तब अुसे अेक पड़ोसिनने नीचे गिरा दिया था। तबसे अुसका हाथ टूट गया है। लेकिन तुमने देखा होगा कि वह राँधने आदिका सब काम आसानीसे कर सकती है। क्या तुम अुससे शादी करनेको तैयार हो? तुम्हारी माँसे पूछूँगी तो वे तो ना ही कहेंगी। लेकिन आजकलके तुम लड़के अपनी पत्नी खुद ही पसन्द करना ज्यादा अच्छा समझते हो जिसलिअे तुमसे पूछ रही हूँ। तुम यदि हाँ कहो तो फिर तुम्हारी माँको मना लेनका काम मेरा रहा।"

कलके षड्यंत्रका भेद अब मुझ पर खुल गया। अुस औरतकी धृष्टता देखकर मैं हैरान रह गया। मैंने कहा, आपकी बात सही है लेकिन मुझ तो शादी करनी ही नहीं है। अतः पसन्दगी या नापसन्दगीका सवाल ही नहीं अुठता।

बुढ़ियाने अेक ही सवाल पूछा, "लेकिन तुम्हें लड़की तो पसन्द है न? मनूकी दादी बिलकुल ही भोली स्त्री थी। अुसमें छल-कपट बिलकुल न था। मुझके अन्धे प्रेमने अुससे यह सब करवाया था जिसे मैं अच्छी तरह जानता था। अतः मुझे अुस पर बहुत

ओर मुखातिब हो कर वह बोला, माँ, आज अक्का अपने घर वापस जानेवाली है न? मुसे यों तो नहीं जाने दिया जा सकता। मुसे कोओी अच्छा-सा कपड़ा देकर भेजना। तुम कहो तो मैं ही बाजारसे मँगाये देता हूँ। और माँका जवाब सुननेसे पहले ही माअूने चपरासीसे कहा "अरे घोंडी, आज अक्का अपने घर जानेवाली है। मुसे पहुँचानेके लिये तीन बजे आ जाना और अभी बाजार जाकर माँ कहें वैसा खंड (ब्लाअुज या चोलीका कपड़ा) ले आना।"

यह युक्ति अचूक साबित हुयी, और केसूको सन्तोष हुआ।

लेकिन बकरी गयी और अूँट घरमें आ घुसा। अुसी दिन कोओी युरोपियन मेहमान अुस बँगलेमें आ गये। सरकारी मेहमान और सरकारी बँगला। अुन्हें कैसे मना किया जा सकता था? बँगलेका जो आधा हिस्सा खाली था अुसमें वे ठहर गये। पति-पत्नी दो ही थे। साथमें अुनके दो घोड़े भी थे। दोनों पति-पत्नी घोड़की सवारीमें बड़े माहिर थे। साहब कुछ शान्त स्वभावका था, लेकिन मेमको तो बाघिन ही समझिये। सारे दिन नौकरों पर गुर्राती रहती। घोड़ोंके लिये चनेकी दाली अपने हाथों तैयार करके दोनों हथेलियोंमें दो कौर अुठाकर खुद ही घोड़ोंको खिलाती और जब तक घोड़े खा न लेते तब तक वहीं खड़ी रहती।

अेक रोज दोपहरके वक्त वह मेम थककर सो रही थी। पासके कमरेमें हम टवल पर शेर-बकरीका खेल खेल रहे थे। खेलते-खेलते लड़ पड़े। हमारा शोर काफ़ी बढ़ गया। मेम साहबाकी नींद टूट गयी। नागिनकी तरह फुंफकारती हुयी वह अुठी और हमारे दोनों कमरोंके बीचके बन्द दरवाजे पर जोरसे घूँसे मारकर अंग्रेजीमें गरजी, 'अरे लड़को क्या अूधम मचा रखा है? जरा सोने भी दोगे या नहीं?" हम चूहोंकी तरह चुप हो गये। सिर्फ़ माअूने कहा 'थैंक यू।' और हमने वह कमरा छोड़ दिया। हमारे मनमें आया कि यह बला कब टलेगी?

अिधर हमारी यह परेशानी थी अुधर पिताजी दूसरी ही चिन्तामें मग्न थे। हम जीमनेको बैठे तब पिताजी माँसे कहने लगे, "ये गोरे लोग हमारे घरमें आकर रहने लगे हैं। मांस-मछली खायेंगे। जिस घरमें परधर्मी बसते हैं और मांसाहार चलता है, वहाँ यदि पानी भी पिया जाय तो छूत लगती है।

माँने समाधानका मार्ग बतलाते हुअे कहा हम कहाँ अेक ही घरमें हैं? अुनका हिस्सा अलग है हमारा अलग है।

पिताजीने कहा 'अिस तरह मनको समझानेसे कोअी फ़ायदा नहीं। सारे बँगलेका छत तो अेक ही है न? यह तो अेक ही घर कहलायेगा। अितने साल नौकरी की लेकिन अैसा प्रसंग कभी नहीं आया था। अिसका कोअी अिलाज भी नहीं दिखाअी देता। अिसलिअे अब तो अिस संकटको झेलना ही पड़ेगा। भगवान जानता है कि अिसमें हमारा कोअी क़सूर नहीं है।

दो रात रहकर दोनों घुड़सवार यहाँसे विदा हो गये और हमने दूसरी बार सन्तोषकी साँस ली।

—

ही मिलते। बिठू सारे वर्षके कामकाजकी तफ़सील बतलाता और आगे क्या करना चाहिये अुस सम्बन्धमें सुझाव भी देता। बिठूके पास छिपाकर रखने जैसा कुछ रहता ही न था। लेकिन फिर भी हम यदि अुससे कोअी बात गुप्त रखनेके लिअे कहते तो वह अुसे मध्ययुगकी वफ़ादारीसे गुप्त रखता। बिठू जबसे हमारे घरमें रहने लगा, तबसे शायद ही कभी वह अपने घर जाता। सालका चार कुड़व (बम्बअीकी ओर अेक कुड़व क़रीब सौ सेरका होता है)-अनाज और बीस रुपये घर दे आता। जितना अनाज अेक छोटे कुटुम्बको अेक वर्षके लिअे काफ़ी होता था।

सन्तु नामक बिठूका अेक भाअी था। अुसे भी हम अपने यहाँ मज़दूरी पर लगा लिया करते थे। लेकिन सन्तुमें परिश्रम बिलकुल नहीं था। सन्तुकी हीन वृत्ति देखकर बिठू शर्मसे गड़ जाता। अपने कारण सन्तुको हमारे यहाँ आश्रय मिलता है और अुससे वह नाजायज़ फ़ायदा अुठाता है, यह देखकर बिठू मन ही मन दुःखी होता और जिस बातका ख़ास ध्यान रखता कि अुसके हाथों सन्तुके प्रति कहीं पक्षपात न हो जाय।

देखते-देखते बिठूने सारे कामका बोझ अुठा लिया। बिठूकी साख हमारे गाँवमें बहुत जम गयी। अुसकी जड़में अुसकी न्यायनिष्ठा और हमारी प्रतिष्ठा दोनों थीं। चंद देहाती अपनी बचतकी रक़म हमारे यहाँ धरोहरके रूपमें रखनेको आते। मेरे बड़े भाअी देहातमें धर्मावतारके नामसे प्रसिद्ध थे। लोगोंको विश्वास रहता कि बिठू और बड़े भाअी जहाँ हैं वहाँ चाहे जितनी बड़ी रक़म हो तो भी वह सुरक्षित है। हमारे यहाँके देहाती साहूकार ग़रीब किसानोंको किस प्रकार सताते और ठगते हैं अुसकी जिसे कल्पना होगी वही जिस विश्वासकी अहमियतको समझ सकेगा। धरोहरकी रक़म जैसे-जैसे बढ़ती गयी, वैसे वैसे अुसमें से छोटी-छोटी रक़में अुधार देनेका रिवाज भी बड़े भाअीने शुरू किया। धरोहरके लिअे ब्याज देना-लेना

नहीं होता था, असी तरह पैसे देनेमें भी ब्याजका सवाल नहीं रहता था। सिर्फ़ विठुका जिस मनुष्य पर भरोसा होता असे ही रुपये अुधार दिये जाते थे। कुछ किसान अपने चाँदीके गहने भी हमारे यहाँ सुरक्षितताकी दृष्टिसे रखते थे। किसी भी मनुष्यके यहाँ शादी होती, तो विठु असल मालिककी अिजाजतसे वे गहने शादीमें पहननेके लिये भी देता था। बहुतेरे किसान अपने साफ़ व्यवहारसे विठु पर अच्छी छाप डालनेका प्रयत्न करते थे।

विठु हमारे यहाँ रहता, लेकिन असने किसी भी समय अपने घरका स्वार्थ सिद्ध नहीं किया। जिस तरह शिवजी सारी दुनियाको चाहे जो वरदान देते हैं लेकिन खुद तो बगैर कुछ भी संग्रह किये भस्म लगाये बैठते हैं वैसी ही विठुकी वृत्ति थी। कभी-कभी विठु मेरे बड़े भाअीकी आज्ञाका अुल्लंघन करके भी असे जो ठीक लगता वही करता। हमें यदि बेलगुंदीसे बेलगाँव जाना होता तो विठुकी अिच्छासे ही हमें बैठनेको गाड़ी मिलती। विठु यदि कह देता कि आज खेतीका काम है या बैल थक गये हैं तो हमें गाड़ी नहीं मिल पाती थी। मेरी माँको भी यदि कोअी जरूरी काम होता तो विठुको अन्दर बुलाकर कामका महत्त्व असके गले अुतारना पड़ता था। माँ असे दो चार गालियाँ भी देती, लेकिन विठुसे विश्वास होता तभी वह हाँ कहता!

गहने-पैसे असे ही घरमें रखना सुरक्षित न समझकर मेरे भाअीने अेक तिजोरी मँगवायी। लेकिन फलाँ आदमीके घर तिजोरी आयी है अितनी खबरके फैलने भरसे ही चोर अुस घरकी ताकमें रहने लगते थे। अिसलिये विठुने दादासे कहा, आप बगैर किसीको बताये पूनासे तिजोरी मँगवाअिये। मैं बेलगाँव स्टेशनसे रात ही रातमें अपने विश्वसनीय दोस्तोंके साथ जाकर असे गाड़ीमें रखकर ले आअूँगा और दूसरोंको मालूम हो असके पहले ही बीचके कमरेमें जमीनमें गाड़ दूँगा। सिर्फ़ असका मुँह ही खुला रहेगा। अुस पर पटिया रखकर

आप अपना बिस्तर लगाया करे।" अैसी व्यवस्था बिठूने पोस्ट-ऑफिसमें देखी थी।

बिठूके दोस्त क्या, मानो विश्वासकी मूर्तियाँ थीं! परश्या गिड्डया, घुमश्या और मुम्या मानो शिवाजीके मावळे! होशियारसे होशियार और वफ़ादारसे वफ़ादार! मुझे याजीने अेक बार परश्याको आंगनमें बाँसकी बाड़ लगानेका कहा था। दो दिनमें काम पूरा हो सकता था। परश्याने कुछ ढील की, जिससे वह याजीन बिठूके सामने परश्याको कुछ फटकारा। अुस वक्त रातके आठ बजे होंगे। दूसरे दिन सवेरे अुठकर देखते ह तो बाड़ तैयार! परश्याने रात ही में बगीचेमें जाकर बाँस काटे और जमीनमें गड्ढे खोद कर बाड़ तैयार की थी। और सो भी किसीकी मददके बिना, अकेले ही!

जमखंडीमें जब पहल-पहल प्लेग शुरू हुआ, तब गाँवके बाहर अेक पहाड़ीके ढाल पर झोंपड़ियाँ बनाकर हम रहने लगे। ढोरोंके लिअे भी अेक अलहदा झोंपड़ी बनायी गयी थी। बिठूको सबके रक्षणकी चिन्ता थी जिसलिअे रोजाना रातको हमारी झोंपड़ीके आसपास सोनेके लिअे वह पन्द्रह-बीस जवानोंको अिकट्ठा करता। ओढ़ने-बिछानेके लिअे घास तो चाहे जितनी थी। सिर्फ़ हमें चार-पाँच सेर तम्बाकू वहाँ रखना पड़ता और सारी रात आग जलती रहे अितने अुपलोंका प्रबन्ध करना पड़ता। बिठूको गाना नहीं आता था लेकिन वह दूसरोंसे गवाता था। जिस तरह सारी रात हमारी झोंपड़ीके आसपास चौकी बनी रहती थी। बादमें बिठूने सोचा कि दूसरे लोगोंके पहले हम गाँवके घरमें रखें गुड़के बजाय चुपचाप अिसी झोंपड़ीमें लाकर रखें तो क्या हर्ज है? जिस तरह खुले मैदानमें कीमती माल रखना माँको सुरक्षित नहीं मालूम हुआ। वह बोली, "जिससे लोगोंका माल भी बचा जायगा और तुममें से किसीकी जान भी बची जायगी।" लेकिन बिठू बोला, "आप जिसमें कुछ नहीं

समझ सकतीं।" और अेक छोटीसी थैलीमें अुन सारे गहनोंको भरकर विठुने मवेशियोंकी झोंपड़ीमें ढोरोंको घास डालनेकी जगह नीचे दबा दिया और गोशालाकी व्यवस्था अपने हाथमें ले ली। विठुको ढोरों पर तो अपार प्रेम था ही, अिसलिअे वह गोशालामें क्यों सोता है, यह शंका किसीके मनमें कैसे आती?

हमारी झोंपड़ीकी सुरक्षितता देखकर हमारे सगे-सम्बन्धियोंमें से कओी लोगोंने हमारी झोंपड़ीके आसपास अपनी-अपनी झोंपड़ियाँ बनायीं। विठुको यह सब अच्छा नहीं लगा। वह अितना ही कहता, 'ये लोग अच्छे नहीं हैं।' लेकिन आखिर अुन्हें सहन किये बिना कोअी चारा नहीं था। ये लोग जब मेरे बड़े भाअी या माँके पास कुछ चीज या सहूलियत माँगने आते तो विठु बड़ी मुश्किलसे अुनके प्रति अपने मनके तिरस्कारको छिपा पाता था। अेक दफ़ा मैंने अुससे पूछा, 'विठु तुम अिन लोगोंसे अितने अधिक नाराज क्यों रहते हो?" तो वह बोला, दत्तू अप्पा आप रिश्तेदारोंके दोषोंको आप कैसे देख पायेंगे? अिन लोगोंके दिलोंमें ग़रीबोंके प्रति तनिक भी दयाभाव नहीं है। यदि ये लोग किसी पर अुपकार करें भी तो दस बार अुसकी चर्चा करेंगे, अुसके सामने बार-बार अुसका जिक्र करेंगे और अुस व्यक्तिसे जायज-नाजायज फ़ायदा अुठाये बग़ैर नहीं रहेंगे। अिन्हीं लोगोंने तो सारे गाँवको खराब कर डाला है।"

मेरे बड़े भाअी बेलगुंदीमें खेती करते और पिताजी बेलगाँवमें कलेक्टरके दफ़्तरमें हेड अेकाअुन्टेंट (प्रधान आयव्यय-लेखक) थे। बेलगाँवमें भी बार-बार प्लेग होता था, अिसलिअे हमें बेलगाँवसे तीन-चार मील दूर अेक पक्की कुटिया बनाकर रहना पड़ता था। कुटियासे कचहरी तक जानेके लिअे दो बैलोंवाला अेक ताँगा रखना पड़ा था। अिस बैलोंके ताँगेकी रचना अैसी होती है कि चाहे जितनी बारिश होती हो तो भी अंदर बैठनेवालोंको कोअी तकलीफ़ नहीं होती।

यह ताँगा या गाड़ी चलाने तथा घरका काम करनेके लिअे हमने अेक नौकर रखा था। अुसका नाम था भानु। भानु कदमें लम्बा हट्टा-कट्टा और अुम्रमें लगभग ३०-३५ वर्षका था। वह असलमें कोंकणका रहनेवाला था। काफ़ी तनख्वाह मिलने पर ये लोग चाहे जितनी मेहनत करते हैं। सबेरे छः से लेकर रातके आठ-दस बजे तक वह काम करता। हमने अुसके लिअे अेक छोटी-सी झोंपड़ी बनवा दी थी। अुसीमें वह रहता और हाथसे पकाकर खाता। वह बरतन माँजता, पुरुषोंके कपड़े धोता गाड़ी हाँकता रोजाना गाड़ी धोता बैलोंको साफ़ रखता कहीं सन्देशा देना हो तो दे आता कुआ निकालता, बिस्तर बिछाता और लालटेनें साफ़ करके अुनमें तेल भरता। अुसे खाना देनेका करार न था नकद तनख्वाह ही दी जाती थी। अुसने घर पर थोड़ी-सी खेती थी और सिर पर कर्ज भी था। जिससे वह हमारे यहाँ नौकरी करके तनख्वाहके क़रीब सभी पैसे घर भेज देता और तीन-साढ़े तीन रुपयेमें अपना गुजारा चलाता था।

अेक दिन मैं अुसकी झोंपड़ी देखने चला गया। अुसका वैभव था दो-चार मटके और अेक मिट्टीकी कड़ाही। अुसकी कड़छी नारियलकी खोपड़ीमें बाँसकी डंडी बैठाकर बनायी हुआी थी। मेरी मामीने जब मुझसे अुसके घरकी हालत सुनी तो अुनका अन्तःकरण पसीज अुठा। अुस दिनसे हर रोज कुछ न कुछ खानेकी चीज अवश्य बचती और भानुको लगभग नियमित रूपसे रोटी तरकारी अचार आदि मिलने लगा।

भानु मानो पक्षपातकी प्रतिमूर्ति। घरके दूसरे लोगोंके कपड़े वह किसी तरह धो देता लेकिन विद्यार्थीके कपड़ोंके लिअे कितनी मेहनत करनी चाहिये जिसकी अुसके पास कोआी सीमा ही नहीं थी। मेरे कपड़ों पर भी अुसकी थोड़ी-सी मेहरबानी रहती थी। लेकिन मैं नहीं मानता कि खुद मेरे प्रति अुसके मनमें कुछ आकर्षण होगा। मेरी

अपेक्षा मेरे कपड़ोंकी ओर अुसका ध्यान अधिक होनेका कारण अेक दिन मुझे अचानक मालूम हुआ।

हाओीस्कूलमें पढ़नेके लिअे मैं अकसर पिताजीके साथ गाड़ीमें जाता था। छुट्टीके वक्त पिताजीके दफ्तरमें भी जाकर बैठता क्योंकि पिताजीके दफ्तरके पास ही मेरा स्कूल था। अिससे मानुके मनमें आया कि मेरे कपड़े यदि गन्दे रहे, तो कलेक्टरकी कचहरी और हाओीस्कूलमें काम करनेवाले अुसके जातिके वड़ आदमियोंमें जो कि चपरासी या हरकारेका काम करते थे अुसकी कीमत अेकदम घट जायगी। मानु अधिकारियोंके घर काम करनेको ही पैदा हुआ था। चपरासियोंकी सिफ़ारिशसे ही अुसे किसी अफ़सरके यहाँ नौकरी मिल सकती थी। हमारे यहाँ भी दशरथ नामक चपरासीकी सिफ़ारिशसे ही वह आया था। मेरे कपड़े देखकर यदि अुसको अुलाहना मिल जाता तो अुसकी दुनिया ही बिगड़ जाती।

मानुकी दुनियामें मेरे पिताजी थे केन्द्रमें और अिसलिअे अुसकी यह अपेक्षा रहती कि सारी दुनियाको मेरे पिताजीके चारों ओर ही घूमना चाहिये। जब वह पिताजीकी सेवामें होता तब किसीकी परवाह न करता। अुसके मनमें सभी पिताजीके आश्रित थे। मैं नहानेके लिअे गुसलखानेमें चला गया होता और अितनेमें पिताजी नहानेके लिअे तैयार हो जाते तो वह पिताजीसे कभी नहीं कहता कि 'दत्तू अप्पा नहा रहे हैं।'' वह मुझीसे कहता 'साहब नहाने आ रहे हैं आप हट जाअिये।'

मानु घरमें आया तबसे हम भी पिताजीको साहब कहने लग गये। बचपनमें हम अुन्हें दादा कहते थे। जब हम अंग्रेजी पढ़ने लगे तो पत्रोंमें हम अुन्हें My Dear Papa लिखा करते थे। मानुके कारण घरके सभी लोग पिताजीका विशेष अदब करना सीख गये। अुसके पहले स्वाभाविक प्रेम और आदर तो अुनके प्रति था ही लेकिन अदब-क़ायदेकी तफ़्सीली बातें हमारे पास नहीं

साबुन खा गया? इतनेमें पिताजी वहाँ आ गये। उन्होंने भानुकी बात सुन ली थी। अतः उससे पूछा "भानु, क्या बात है?" भानु गुस्सेमें ही था। उसने फिर कहा 'मैंने कोभी इनका साबुन खा तो नहीं लिया। आपके और इनके कपड़ोंमें ही खर्च किया है।" पिताजीने कहा ऐसा गुस्ताख नौकर घरमें कैसे चल सकता है? उसे निकालनेका तो किसीका विचार था ही नहीं, लेकिन उसे लगा कि मुझे बरतरफ़ कर दिया गया है। इसलिए कपड़े पहनकर वह चलता बना।

भानु घर गया और फिर पछताया। दूसरे दिन दशरथ आकर पूछने लगा "साहब भानुसे क्या कसूर हुआ? उसे आपने क्यों बरतरफ़ किया?" पिताजीने कहा "हमने तो उसे नहीं निकाला। उसे आना हो तो खुशीसे आ सकता है।" दूसरे दिन भानु वापस आया और पहलेकी तरह काम करने लगा। मैंने भानुसे साबुनके बारेमें सिर्फ़ यही जाननेके लिये पूछा था कि क्या उसे किसीके ज्यादा कपड़े धोने पड़े थे या यों ही ज्यादा साबुन खर्च हो गया था? हम उसे जिस तरहसे घरमें रखते थे उस परसे उसे जानना चाहिये था कि उस पर किसीको शक नहीं था। उस दिनसे भानु कभी साबुनवाली बातका जिक्र नहीं होने देता था। वह इस तरह पेश आता रहा मानो कुछ हुआ ही न हो।

हमारे नौकर अपनी भूलकी क्षमा इसी तरह माँगते हैं। भानुने शब्दोंमें क्षमा नहीं माँगी। लेकिन शब्दोंसे उसकी यह रीति और भाव ज्यादा अर्थपूर्ण थे।

भानु भी घरकी व्यवस्थामें कभी-कभी हेरफर सुझाता। किन किन जगहों पर बचत की जा सकती है इसकी योजनायें वह पेश करता। लेकिन उन सबके पीछे पिताजीकी सुविधा और आरामका ही प्रयास मुख्य रहता। दूसरे किसीकी असुविधा उठानी पड़ती तो उसकी और उनका बिलकुल ध्यान न रहता। उसकी

यही दलील रहती कि जब जितनी बचत हो रही है तो दूसरोंको असुविधा बर्दाश्त करनी ही चाहिये। सिर्फ़ पिताजी ही अुसके अर्थ शास्त्रमें अपवादरूप थे और कुछ हद तक माँ भी। शेष सब अुसकी दृष्टिमें केवल आश्रित ही थे।

धीरे-धीरे घरमें भानुकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। बाजारसे चीजें लाना छोटा-मोटा हिसाब रखना धोबीको टरकाना भाअीको समयसे दुग्ना वगैरा काम अुसके सुपुर्द हो गये। भानु कहे तब कपड़े बदलने ही चाहिये भानु कहे तब हजामतके लिअे बैठना ही चाहिये। वह जो सब्जी लाता वही हमें स्वादके साथ खानी चाहिये। हमें अच्छे लगें या न लगें हमने मँगाये हों या न मँगाये हों लेकिन अमुक प्रकारके फल तो घरमें जरूर आते। भानुके प्रबंधसे हम सबको सन्तोष था।

सरकारी नौकरीके सिलसिलेमें पिताजीको दूसरे गाँव जाना पड़ता। सावंतवाड़ी रियासतका शासन चूँकि अंग्रेज सरकारके द्वारा चलता था अिसलिअे वहाँके आय-व्ययका निरीक्षण करनेके लिअे हर साल अेक ब्रिटिश अधिकारी वहाँ जाया करता था। अेकबार पिताजीको अन्वेषक (ऑडिटर) की हैसियतसे दो महीनेके लिअे सावंतवाड़ी जाना पड़ा था। स्वाभाविक ही भानु अुनके साथ जाना चाहता था। लेकिन देशी राज्योंमें ब्रिटिश अधिकारियोंकी सेवामें जितने नौकर रख जाते कि भानुकी वहाँ कोअी आवश्यकता नहीं थी। अिससे बड़े भाअीने कहा भानुको वेंग्‍र्ुलेमें भेज दीजिये तो मेरी बड़ी मदद होगी। भानु होशियार है वफ़ादार है मेहनती है। अतः मेरे लिअे यह बहुत ही कामका साबित होगा। विठुको भी यही लगा। यह बात तो थी ही कहो कि भानुको देहातमें रहनका आनन्द नहीं चाहिये था। अिसलिअे सर्वानुमतिसे बड़े भाअीका प्रस्ताव पास हुआ।

मैं पिताजीके साथ सावंतवाड़ी गया था। वहाँसे अेक महीने बाद लौटकर देखा तो भानु और विठुके बीच कशमकश चल रही थी।

काम करने लगा। विठ्ठु को देखा तो तुरन्त ही गुस्सा भुन खुबल पड़ा। देहातमें कटनीके समय खेतमें चप्पल पहनकर जाना बहुत ही अशुभ माना जाता है। भुससे भूमिमाताका अपमान होता है खेतमें आयी हुआी लक्ष्मीका अनादर होता है और खेतके मालिकका अशुभ होता है। अपने पर काबू न रख पानेके कारण विठ्ठुके मुँहसे गाली निकल गयी। वह भानुको मारने दौड़ा। दोनों जमकर लड़ते, लेकिन मैंने बीच-बचाव किया। विठ्ठुको मैंने काफ़ी समझाया दिया और भानुको मेरा खाना लानेके लिअे घर भेज दिया।

शामको हम भाओी दादाके सामने बैठे। समाज-व्यवस्था और लोक-रूढ़िके बुनियादी सिद्धान्तोंकी वे चर्चा कर रहे थे और साथ ही सेवक-धर्मकी मीमांसा भी। रोजकी तरह मूर्तिके जैसे भानु और विठ्ठु यथापूर्वक धर्मविचारका प्रवचन सुन रहे थे। लेकिन वह सब औंधे घड़े पर पानी डालनेके समान था। दोनों जहाँ थे वहीं रहे। बाबाके प्रवचनमें से जिसे जो वाक्य अनुकूल लगे, भुसने वह अपना लिये।

रोजाना व दिनमें दो-चार बार लड़ पड़ते थे। हर वक्त तो कोओी युक्ति खोजकर भुनका झगड़ा टालनेके लिअे मैं वहाँ हाजिर नहीं रहता और न धर्मचर्चाके लिअे बड़े भाओी ही रहते थे। जिस-लिअे दोनोंके बीच कड़ुवाहट बढ़ने लगी। हम तंग आ गये। भुन दोनोंको भी लगा कि जिस घरमें अब हमारी प्रतिष्ठा नहीं रही। लेकिन घर छोड़कर जानेका भी किसीका मन न होता था। और हम भी भुन्हें काम बनका तैयार न थे। दोनों अपना अपना काम ठीक तरह करते लेकिन दिलमें दुःखी रहने लगे।

सावंतवाड़ीसे आनेके बाद पिताजीने तीन महीनेकी छुट्टी ले ली। जिस कारण हम सब बेलगुंदीमें ही रहने लगे। अतः भानु और विठ्ठुको अलग-अलग रखनेकी मेरी युक्ति भी न चल पायी। जिननमें

कोंकणसे भानुकी मॉके गुजर जानेकी खबर आयी। घरमें खेतीकी देखभाल करनेवाला कोअी न होनके कारण अुसे हमारे घरसे रुखसत लेनी पड़ी। हमें भानुको छोड़ते हुअे बड़ा दुःख हुआ। और वह भी बार-बार रोया। विठुको भी भानुका जाना अखरा। अुसने भानुको सब कुछ भूल जानेको कहा। अुसे अपने यहाँ तीन दिन तक मेहमान रखा और भरे दिलसे दोनों अेक-दूसरेसे अलग हुअे।

भानुके जानेके बाद विठोबा कितनी ही बार भानुके गुणोंका वर्णन करता। वह स्वीकार करता कि भानुसे मैंने यह सीखा वह सीखा। अपने दोस्तोंको भानुके समान अदब रखनेके लिअे कहता। और अुसने भानुके साथ जो बेकार लड़ाअी की थी अुस पर पछताता। फिर भी कहता भानु आखिर था तो शहरी आदमी! चाहे जितना भी होशियार हो फिर भी क्या हुआ? हम जैसा तो वह नहीं हो सकता। आज है और कल चला। हमीं तो आखिर घरके आदमी हैं।

अिसके बाद छ आठ महीनेमें ही विठु प्लेगसे मर गया। अुसकी स्त्री पुनर्विवाह करके दूसरे गाँव चली गयी। अुसके कोअी बालबच्चे नहीं थे। अुसका भाअी भावज आदि लोग कअी साल तक हमारे यहाँ मजदूरीके लिअे आते रहे। परश्या और सुम्प्या थोड़े ही दिनोंमें गुजर गये। गिड्ड्या और घुमड्यान हमारे यहाँ बहुत साल तक काम किया, लेकिन विठुकी बराबरी वे न कर सके।

७५

जला हुआ भगत

अेक बार सावंतवाड़ीमें अेक घरमें आग लगी। सारे मुहल्लेमें हू-हा मच गयी। हमने यह हल्ला सुना और क्या है यह देखनेको दौड़ पड़े। बिठु अपराधी हमारे साथ था। दो चार गलियोंमें चक्कर लगाकर हम आगकी जगह जा पहुँचे। घर तो जलकर बैठ ही गया था। सिर्फ़ दीवारें खड़ी थीं। अैसे घरमें देखने जैसा क्या हो सकता था? छतकी लकड़ियाँ चमककर जल रही थीं। घरका सामान रास्ते पर तितर-बितर पड़ा था। अेक बुढ़िया रास्ते पर सिर पीट रही थी। कअी लोग घरके ढेरमें से अभी भी बचाने लायक चीजें बाहर खींचकर निकाल रहे थे। दूसरे कितने ही दैववादी लोग हाथ बाँधे खड़े खड़े सिर्फ़ बकवास ही कर रहे थे।

हमें वहाँ ज्यादा खड़े रहना अच्छा न लगा। हम लौट रहे थे, अितनेमें किसीने कहा 'जलते हुअे घर पर अेक भला आदमी चढ़ा था। लेकिन पैर फिसल जानेसे भीतर जा गिरा, काफ़ी जल गया है। लोगोंने बड़ी मुश्किलसे अुसे बाहर निकाला। अब अुसे अस्पताल ले गये हैं।' अुसका नाम सुनते ही बिठु बोला, 'अरे यह तो हमारा भगत है। कितना भला आदमी है वह!'

हमें अुस भगतको देखनेके लिअे जानेकी अिच्छा हुआी। हमने बिठुसे कहा, "चलो, कहाँ है वह अस्पताल? हम वहाँ चलें।"

'दोपहरके भोजनके बाद चलें तो?'

'नहीं, अभी चलो। बेचारेको देखें तो सही।'

'लेकिन साहब नाराज होंगे। घर जानेमें देर जो हो जायगी।'

'नहीं, साहब नहीं नाराज होंगे। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ।'

हम अस्पताल गये। वहाँ अनेक बीमारोंके बीच भगतकी खटिया थी। बेचारेके कओी जगह पट्टियाँ बँधी थीं। विठु अुसे पहचानता था। अुसने भगतसे कहा : हमारे साहबके लड़के तुम्हें देखने आये हैं। भगत अुठनेकी कोशिश करने लगा। पर हमने अुसे रोक दिया।

मेरे मनमें विचार आया कि अिसने जिस प्रकार जो बहादुरी दिखाओी है अुसकी हमें कद्र करनी चाहिये। अिसे लगना चाहिये कि दुनियामें अुसके जैसेकी कद्र करनेवाले लोग भी हैं। अुसे अच्छा लगे अिसलिअे कुछ चुने हुअे वचन भी कह देने चाहियें। लेकिन क्या बोलना यह नहीं सूझता था। कृत्रिम शिष्टाचारने कहा "कुछ न कुछ मीठी बातें कर तो सही। लेकिन जो भी वाक्य मनमें बनाता, अुसके पहले ही हृदय कहता : यह सब बनावटी जान पड़ता है।

अिसी मनोमन्थनमें मैं कुछ बोल तो गया। लेकिन वह अैसा बेढंगा था कि हम सब परेशानीमें पड़ गये। भगत भी कुछ-कुछ घबड़ाया-सा दिखाओी देने लगा। अुसे पूरा विश्वास हो गया था कि अब वह बचनेवाला नहीं है। अुसने कहा : भगवानने मेरा सदा भला किया है। आज यदि वह अपने घर बुला ले तो वह अच्छा ही होगा।

मैंने कहा : भगतजी घबड़ाअिये नहीं। पांडुरंग आपको जरूर चंगा ही करेगा। आपकी मेहनत व्यर्थ नहीं जा सकती।

भगतको खुशामद सूझी या शिष्टाचार याद आया? वह बोला : आप जैसे बड़े लोग मुझे देखने आये अिसीमें मुझे सब कुछ मिल गया।

अब वहाँ ज्यादा खड़े रहनेकी आवश्यकता नहीं थी। घर जाकर मैंने पिताजीको सारा माजरा कह सुनाया। देर बहुत हो गयी थी मगर पिताजीने विठुसे कुछ नहीं कहा। अेक महीने बाद भगत चंगा हो गये और विठुसे सुना कि वे भगवानके नहीं, बल्कि अपने ही घर वापस आ गये। यह बात तो सब कोअी कहता था कि भगतने अुस दिन अुस जलते घरको बचानेमें कैसे सबसे ज्यादा मेहनत की थी और दिलेरीके साथ वे कैसे आगमें कूद पड़े थे।

७६

तेरदालका मृगजल

मेरी शादी हुआके बाद कुछ ही दिनोंमें हम जमखिण्डी गये। पिताजी हमसे पहले ही वहाँ पहुँच गये थे। मुझे याद है कि हमारे साथ सामान बहुत था अिसलिअ कुडची स्टेशन पर मुझे समेसके दूने पैसे देने पड़े थे। रास्तेमें ही हम बैलगाड़ीमें बैठकर निकले। दोनों बैल सफ़ेद और मोटे-ताजे थे। रंग, सींगोंका आकार, मुखमुद्रा, चलनेका ढंग सब बातें दोनोंमें समान थीं। हमारे यहाँ अैसी जोड़ीको खिल्लारी कहते हैं। अिन बैलोंने हमें २४ घण्टोंमें ३५ मील पर पहुँचा दिया था। रास्तेमें भोजन आदिके लिअे जितना समय लगा वह अिसीमें शामिल है।

जमखिण्डी जाते हुअ रास्तेमें तेरदाल आता है, जो सांगली रियासतका गाँव था। हम जब तेरदालके पास पहुँचे तब दोपहर हो चुकी थी। दाहिनी ओर दूर-दूर तक खेत फैले हुअे थे। बहुत ही दूर, लगभग क्षितिजके पास अक बड़ी-सी नदी बहती हुअी दिखाअी दी। पानी पर सख्त धूप पड़नेके कारण वह चमचमा रहा था और पानी जितने जोरसे बह रहा है अिसकी भी कुछ कुछ कल्पना होती थी। लेकिन अैसी सुन्दर नदीके किनारे वृक्ष कम क्यों हैं अिसका कारण मैं समझ न सका। मैंने गाड़ीवानसे पूछा 'अिस नदीका क्या नाम है? कितनी बड़ी दिखाअी दे रही है? कृष्णा तो नहीं है?' गाड़ीवान हँस पड़ा। बोला 'यहाँ कैसी नदी बहेगी आपकी? यह तो मृगजल है। पानीके अिस दृश्यसे बेचारे मृग धोखेमें आ जाते हैं और धूपमें दौड़ दौड़ कर और तड़प-तड़प कर मर जाते हैं। अिसलिअ अिसे मृगजल कहते हैं।'

मृगजलके बारेमें मैंने पढ़ा तो था। पानीकी तरह मृगजलमें अूपरके वृक्षका अुलटा प्रतिबिम्ब भी दिखाअी देता है रेगिस्तानमें चलनेवाले अूंटका प्रतिबिम्ब भी दिखाअी देता है वगैरा जानकारी और अुसके चित्र मैंने पुस्तकमें देखे थे। लेकिन मैं समझता था कि मृगजल तो अफ्रीकामें ही दिखाअी देता होगा। सहाराके रेगिस्तानकी २१ दिनकी मुसाफ़िरीमें ही यह अद्भुत दृश्य देखनेको मिलता होगा। हिन्दुस्तानमें भी मृगजल दिखाअी दे सकता है अिसकी अगर मुझे कल्पना होती तो मैं अितनी आसानीसे और अिस बुरी तरहसे धोखा नहीं खाता।

अब मैंने देखा कि हम जैसे जैसे अपनी गाड़ीमें आगे बढ़ते जाते हैं वैसे वैसे पानी भी साथ ही साथ खिसकता जाता है। मैंने यह भी देखा कि पानीके आसपास हरियाली नहीं है और पानीकी सतह आसपासकी जमीनसे नीची नहीं है। सपाट जमीन पर से ही पानी बहता है। थोड़ी देर बाद अूपरकी हवामें भी धूपकी गर्मीके कारण अेक तरहकी लहरें दिखाअी देने लगीं। फिर तो मृगजलका खेल देखने और अुसका स्वरूप समझनेमें बहुत आनन्द आने लगा। बेचारे बैल अधमुंदी आंखोंसे अपनी गतिके तालमें अेक समान चल रहे थे। कोअी बैल चलते-चलते पेशाब करता तो अुसकी धार जमीन पर गिरती और अुससे अेक खास क़िस्मका आलेख बन जाता। कुछ ही देरमें वह लकीर सूख जाती। अुस आलेखके बारेमें सोचनेमें कुछ समय बिताया लेकिन बार-बार मेरा ध्यान हिरनोंकी पीठ जलानेवाली अुस धूपकी तरफ़ ही जाता। हम आध-आधे घण्टेसे सुराहीसे पानी लेकर पीते थे तो भी प्यास नहीं बुझती थी।

अिस तरह खुदा खुदा करके तेरदाल आया। धर्मशाला पत्थरकी बनी हुअी थी। देशी राज्यका गाँव था अिसलिअे धर्मशाला बढ़िया बनी हुअी थी। लेकिन प्रचंड धूपके कारण वह भी अुदास-सी लग रही थी। मुकाम पर पहुँचनेके बाद मैं तालाबमें नहा आया। साथमें पूजाके देवता थे। अुन्हें भी बैंतकी पटीमें से निकालकर पूजाके लिअे जमाया।

दयरावर्गोंमें अेक शालिग्राम था। वह तुलसीपत्रके बिना भोजन नहीं करता, अिसलिअे मैं गीली धोतीसे और खुले पैरों तुलसीपत्रकी खोजमें निकला। सौभाग्यसे अेक घरके आँगनमें सफ़ेद कनरके फूल भी मिले और तुलसीपत्र भी। दोपहरका वक्त था, पेटमें भूख थी, पैर जल रहे थे, सिर गरम हो गया था — अैसे त्रिविध तापमें मैं पूजा करने बैठा। दयता भी कुछ कम न थ। भीश्वर अेक अवश्य है, लेकिन अिसलिअे यदि सबकी ओरसे अेक ही दवताकी पूजा करता, तो वह चल नहीं सकता था। पूजा करते-करते आँखोंके सामने अँधेरा छाने लगा। बड़ी मुश्किलसे पूजा की और भोजनकर सो गया।

स्वप्नमें मैंने देखा कि हिरनोंका अेक बड़ा झुंड गेंदकी तरह दौड़ता हुआ मृगजलका पानी पीने जा रहा है। मैं अुन हिरनोंको कैसे रोकता या समझाता?

अैसा ही अेक मृगजल दांडीयात्राके समय नवसारीसे दांडीके समुद्र-किनारेकी ओर जाते समय देखनेको मिला था। हमें यह विश्वास होते हुअे भी कि यह मृगजल है, आँखोंका भ्रम तनिक भी कम नहीं होता था। वेदान्तका ज्ञान आँखोंको कैसे स्वीकार हो?

आजकल कलकत्तेकी कोलतारकी सड़कों पर भी दोपहरके समय अैसा मृगजल चमकने लगता है, जिससे भ्रम होता है कि अभी-अभी बारिश हुअी है। दौड़नेवाली मोटरोंकी परछाअियाँ भी अुसमें दिखाअी देती हैं। भगवानने यह मृगजल शायद अिसीलिअे बनाया है कि ज्ञान होने पर भी मनुष्य कैसे मोहवश रह सकता है अिस सवालका जवाब मुझे मिल जाय।

७७

जीवन-पाथेय

मेरे पाँच भाशियोंमें स अकेले अण्णा ही बी० अ० तक जा पाय थे। शप सब बीचमें ही शिधर अुधर अटक गये थ। अंग्रजी शिक्षाके लिअे बेहद खर्च करन पर भी किसीने पिताजीकी आशा पूर्ण नहीं की थी। शिससे अुनका दिल टूट गया था। मेरे बारेमें अुन्होंने पहलेसे ही तय कर लिया था कि दत्तूको कॉलिजमें भेजूँगा ही नहीं। शिस पर मे मन ही मन कुढ़ता था। ग़लती दूसरेकी और सजा मुझे क्यों? लेकिन मैंने कुछ कहा नहीं। जब पहले ही वर्ष में मैट्रिक पास हो गया तो मेरी कुछ कुछ साख जमी। अुसी साल अपने स्कूलकी आबरू रखनेके लिअे हम मैट्रिकके तीन विद्यार्थी युनिवर्सिटी स्कूल फ़ाअिनलकी परीक्षामें भी बैठे थे। शिस परीक्षाका भी वह आखिरी वर्ष था। युनिवर्सिटीन यह परीक्षा बादमें बन्द कर दी और वह शिक्षा-विभागको सौंप दी। शिस परीक्षामें भी मै पास हुआ शितना ही नहीं, शिसमें मेरा नम्बर काफ़ी अूँचा रहा। मुझसे पेश्तर घरमें कोअी पहल ही साल मैट्रिकमें अुत्तीर्ण नहीं हुआ था। और मैन तो पहले ही वर्ष दोनों परीक्षाअें पास की थीं। शिस बल पर मैंने कॉलिजमें भरती होनकी माँग पेश की। फिर भी पिताजी टससे मस न हुअे। आखिर मैंने अुनसे कहा आप जानते हैं कि मेरे अंग्रजी और गणित दोनों विषय अच्छे हैं। मुझे अिंजीनियरिंगमें जाने दीजिये। प्रीवियस (अफ० अे०) की परीक्षा पास किये बिना अिंजीनियरिंग कॉलिजमें भरती नहीं किया जा सकता शिसलिअे मैं अेक ही वर्षके लिअे आदस कॉलिजमें जाअूँगा। मेरी शिस दलीलस पिताजी कुछ पिघल और अुन्होंने मुझे कॉलिजमें जानेकी शिजाजत दे दी।

बी० अ० अल-अल० बी० को छोड़कर अल० सी० बी० पसन्द करनेके पीछे मेरी जो विचार-शृंखला थी, उसका स्मरण करते भी मुझे बड़ी शर्म आती है। पहले मैंने सोचा था कि विलायत जाकर बैरिस्टर हो जाऊँ, लेकिन बड़े भाइयोंने पिताजीको निराश किया था और विलायत जानेका खर्च पिताजी उठा नहीं सकते थे। मैंने मनमें सोचा कि हमारे पास कोई ऐसी पूँजी नहीं कि व्यापार करके हम मालदार बन सकें। और व्यापारमें प्रतिष्ठा भी कहाँ है? यदि नौकरी की तो उसमें तनख्वाह क्या मिलेगी? सरकारी नौकर यदि पैसेवाले बनते हैं तो रिश्वत लेकर ही। वकील बनकर औरोंके झगड़े विदेशी अदालतोंमें लड़ाते रहना मुझे पसन्द नहीं था। यदि बी० अ० अल-अल० बी० हो जाऊँगा, तो तहसीलदार या मुन्सिफ हो सकूँगा। जिस लाइनमें रिश्वत भी बहुत मिलती है। लेकिन उसके लिए प्रजाको लूटना पड़ता है और उसके साथ अन्याय भी करना पड़ता है। यह मुझसे नहीं हो सकता। जिससे तो अल० सी० बी० हो गया और पहले तीन परीक्षार्थियोंमें आ गया, तो देखते-देखते डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर बन सकूँगा। बड़े-बड़े आलीशान मकान बनवानेका, जंगलमें से रास्ते निकालनेका और नदियों पर पुल बनानेका मजा तो सारी ज़िन्दगी मिलेगा। फिर घोड़े पर बैठकर सवेरेसे शाम तक घूमनेका मजा भी मिल सकेगा। यदि ठेकेदारोंसे रिश्वत लेंगे, तो उससे सरकारका ही नुकसान होगा। उसमें प्रजाको लूटनेका प्रश्न ही नहीं रहता। मुझे जिसी ख्यालसे गर्वका अनुभव ही रहा था कि मैं अधर्ममें भी धर्मका पालन कर रहा हूँ। ये विचार अनेक बार मनमें आते लेकिन किसीसे कहनेकी हिम्मत या बेवकूफी मुझमें नहीं थी।

जिस दिन मैं कॉलिजमें जानेवाला था उसी दिन पिताजी साँगली राज्यके ट्रेजरी-ऑफिसरकी हैसियतसे तीन लाख रुपये लेकर पुलिस-रक्षाके साथ पूना जानेवाले थे। पूनासे राज्यके लिये प्रॉमिसरी

नोट खरीदने थे। सांगली स्टेशन पर हम साथ हो गये। पिताजी पूना क्यों जा रहे हैं यह मुझे मालूम हो गया। मैंने पिताजीसे कहा, "नोटोंके भाव रोजाना बदलते रहते हैं। हम यदि कुछ कोशिश करें, तो खुले बाजारसे कुछ सस्ती कीमतमें नोट खरीद सकेंगे। राज्यको तो खुले भाव ही बतलायें और बीचमें जो मुनाफा होगा वह हम ले लें। किसीको पता भी न चलेगा और सहज ही बहुत-सा मुनाफा मिल जायेगा।

मुझे लगा कि पिताजीने मेरी बात शान्तिसे सुन ली है। लेकिन मेरी बातसे उन्हें कितनी चोट पहुँची है, जिसकी मुझे उस वक्त कल्पना तक नहीं आयी। मैं समझ रहा था कि मेरे सुझाव पर कैसे अमल किया जा सकता है जिसके बारेमें पिताजी विचार कर रहे हैं।

थोड़ी देर बाद पिताजीने मर्मभेदी हुई आवाजमें कहा "दत्तू मैं यह नहीं मानता था कि तुममें जितनी हीनता होगी। तेरी बातका अर्थ यही है न कि मैं अपने अन्नदाताको धोखा दूँ? लानत है तेरी शिक्षा पर! अपने कुलदेवताने हमें जितनी रोटी दी है उतनीसे हमें सन्तोष मानना चाहिये। लक्ष्मी तो आज है कल चली जायगी। जिज्जतके साथ अन्त तक रहना ही बड़ी बात है। मरनेके बाद जब औश्वरके सामने खड़ा होऊँगा तब क्या जवाब दूँगा? तू कॉलेजमें जा रहा है। वहाँ पढ़-लिखकर क्या तू यही करेगा? जिसकी अपेक्षा यदि यहींसे वापस लौट जाय तो क्या बुरा है?"

मैं सन्न रह गया। गाड़ीमें सारी रात मुझे नींद नहीं आयी। सवेरे पूना पहुँचनेके पहले मैंने मनमें निश्चय किया कि हरामके धनका लोभ मैं कभी नहीं करूँगा। पिताजीका नाम नहीं डुबाऊँगा।

पिताजीको शहरमें छोड़कर जिस निश्चयके साथ मैं कॉलेजमें गया। कॉलेजकी सच्ची शिक्षा तो मुझे सांगली और पूनाके बीच ट्रेनमें ही मिल चुकी थी।

[भिन दो पीढ़ियोंके अनुभवोंसे अक्लमंद बननेकी बात मुझे भी नहीं सूझी। मने जितना ही सुधार किया कि हम न तो पैसे कमायें और न खर्च ही करें। शिक्षा समाप्त होते ही मैं सार्वजनिक कामोंमें लग गया। अुतना ही पैसा लिया जितनेकी जरूरत थी। कभी किसीसे कर्जा नहीं लिया। जितना हाथमें होता अुसीसे काम चला लिया और सुखी हुआ।]

नतीजा यह हुआ कि मेरे पिताजीको अत्यन्त गरीबीमें दिन काटकर थोड़ासा अंग्रेजीका ज्ञान प्राप्त करना पड़ा। अुन दिनों मैट्रिककी परीक्षा नहीं थी, थिटल गो आदि परीक्षायें थीं। वे गर्वसे कहते कि प्रख्यात पवित्र विद्वान् शंकर पांडुरंग पंडित कुछ दिन तक अुनके शिक्षक रहे थे। गरीबीके कारण छोटी अुम्रमें ही मेरे पिताजी फ़ौजी विभागमें भरती हो गये थे। यदि वे अुसी विभागमें रहे होते तो शायद हमारा जीवनक्रम ही अलग होता। फ़ौजकी छावनी मौजूदा बीजापुर जिलेके कलादगी गाँवमें थी। फ़ौजके बड़े अधिकारीने स्वदेश लौटते समय मालगुजारी विभागमें पिताजीकी सिफ़ारिश की। बीजापुरके प्रसिद्ध अकालमें जब लोगोंको सरकारी मदद दी जा रही थी, तब पिताजीने बहुत मेहनत अुठायी थी। अुस वक्तके अकालका वर्णन जब पिताजीसे सुनता तो रोंगटे खड़े हो जाते थे।

शाहपुरके किसी कुटुम्बके साथ हमारा पुराना सम्बन्ध था। मेरी बुआ किसी कुटुम्बमें ब्याही गयी थी। मेरी माँ भी अिसी कुटुम्बकी थी। आगे चलकर मेरे दो भाअियोंकी शादी भी अिसी कुटुम्बमें हुअी थी। दो कुटुम्बोंके बीच अिस तरह बार-बार शरीर सम्बन्ध होना आरोग्यकी दृष्टिसे, गार्हस्थ्य विकासकी दृष्टिसे और सामाजिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे हितकारक नहीं होता, अैसी मेरी राय बन गयी है।

अुस जमानेका सामाजिक जीवन सामान्य कोटिका ही माना जायगा। राजनीतिक अस्मिता सामाजिक सुधार, औद्योगिक जागृति

अथवा मौलिक धर्म-विचारकी दृष्टिसे तो समाजमें लगभग अँधेरा ही था। जैसे-तैसे अपनी कमाओी बढ़ाना और बालबच्चोंको सुखी करना —अिससे अधिक सामान्य कुटुम्बमें व्यवहारका दूसरा आदर्श था ही नहीं। आज भी अैसा नहीं कहा जा सकता कि अुस स्थितिमें विशेष फ़र्क पड़ा है। अलबत्ता जहाँ-तहाँ विचार-जागृति अवश्य दिखाओी देती है। सामान्य लोगोंका नीतिशास्त्र अितना ही था कि अैसा जीवन बिताया जाय जिससे समाजके भले आदमियोंका अुलाहना न मिले। व्यवहारमें यही कहा जाता कि चोरी चुगली और व्यभिचार न किया तो काफ़ी है। बाकी स्वार्थके लिअे मनुष्य कुछ भी कर सकता है।

धर्ममें तो सड़ियल रूढ़िवादका ही बोलबाला था। प्रार्थना समाजका तो किसीने नाम भी न सुना था। सुधारकोंका नाम कभी कभी सुनाओी पड़ता था लेकिन वह समाजद्रोही धर्मभ्रष्टके रूपमें ही। सामान्य लोगोंके समाजमें सुधारकका अर्थ था मांसाहारी शराबी नास्तिक, विधवा-विवाह करनेवाले लगभग औसाओी बन हुअे लोग। धर्मका मतलब था पूर्व परम्परासे चली आयी रूढ़ियाँ जात-पाँतका अूँच-नीचपन मत्सर अवं विद्वेष खान-पानके पेचीदा नियम अनेक देवी-देवता और भूत प्रेतोंके कोपका डर, अिनसे सम्बन्ध रखनेवाली बलि और कर व्रत त्यौहार और अुत्सव। अिस सम्बन्धमें बाबा-बैरागी हरदास-पुराणिक (कथावाचक) और पंडे-पुरोहित जैसा कुछ मार्गदर्शन करते थे अुसी रास्ते समाज जाता था।

बचपनमें मैंने ज्यादा सन्यासियोंको नहीं देखा था। अुनका निवास तो आम तौर पर तीर्थक्षेत्रोंमें ही होता था। तीर्थयात्रा धार्मिक जीवनका मानो सबसे अूँचा शिखर था। जिन्दगीभर मेहनत करके जो कुछ पूँजी बचायी हो अुसीमें से बुढ़ापेमें काशी-रामेश्वरकी यात्रा की जाती। लोग दिलसे अैसा समझते थे कि जीवनमें जो कुछ पाप

अपने हाथों हो गये हैं वे अैसी भावनाओंसे भुल जाते हैं। समाजके नियमोंका विशेष अुल्लंघन होता, तो समाजको संतुष्ट करनेके लिअे प्रायश्चित्त करना पड़ता। लेकिन अिस तरहका प्रायश्चित्त बहुत महँगा और अपमानजनक होनेके कारण अुससे बच जानेकी ही कोशिश रहती। आज भी कुछ हद तक यही हालत है, लेकिन हर विषयमें समाजकी श्रद्धा डगमगाने लगी है। समाज-मानस हर स्थान पर सापेक्ष बन गया है। सामाजिक संगठन लगभग टूट गया है अब सामाजिक यंत्रणा भी कम हो गयी है। साथ ही साथ अलग अलग महापुरुषोंके चारित्र्य-तेज और अनेकानेक विभूतियों द्वारा चलायी गयी अलग अर्थ विविध धर्मोंके कारण व्यक्तिगत तथा सामाजिक धर्म जीवनका मुख्य आशय समाजके सम्मुख अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा है। सुधारकता और नास्तिकताके सम्बन्धमें छिछलापन दूर होकर अुसमें बहुत कुछ गंभीरता आ रही है। प्रत्यक्ष आचरणमें शिथिलता बढ़ रही है सही, लेकिन मानसिक भूमिकामें बड़े महत्त्वका परिवर्तन होता जा रहा है।

दरिद्री अेवं लालची लोग जैसे घरका कबाड़ अेवं निकम्मा सामान बाहर फेंक देनेकी हिम्मत नहीं करते और अुसके कारण अनेकों असुविधामें भुगतते रहते हैं, यही हाल धर्ममें रूढ़ियों और अंध विश्वासोंका है। जैसे डरपोक लाचार और लालची आदमी अुद्दंड या जबरदस्त गुंडोंके सामने झुक जाते हैं और अुनकी खुशामद करते हैं वैसे ही साधारण मनुष्य देवी-देवताओं और धार्मिक रिवाजोंके सामने झुका रहता है। कुछ भी परिवर्तन करने या खतरनाक बातोंको निकाल देनेकी हिम्मत तो अुसमें हो ही नहीं सकती। अच्छा या बुरा, जो कुछ भी आलस, लापरवाही या गफलतसे मिट जाय वह भले मिट जाय। लेकिन यह नहीं बनता कि जीवनमें विचारपूर्वक परिवर्तन किया जाय जो खराब मालूम हो अुसे निश्चयतः छोड़ दिया जाय और जो अच्छा हो अुसे आग्रहके साथ स्वीकार किया

जाय। यह अिसलिअे नहीं हो सकता कि अिसके लिअे चैतन्यकी जरूरत रहती है। हरअेकके मनमें यह अेक भय रहता है कि करने जायें कुछ और हो जाये कुछ तो? अिसलिअे पुराना तो सब क़ायम ही रहता है फिर वह भला हो या बुरा। अिसके अलावा यदि कोअी डर और लालचके आधार पर नया ही रिति़वाज खड़ा कर दे, तो समाजमें अुसका मुक़ाबला करनेकी भी हिम्मत नहीं है। हर चीजमें कुछ न कुछ अुपयोगिता जरूर होगी अैसा कहकर संग्रहको बढ़ाते ही जाते हैं। यही मनोवृत्ति पायी जाती है कि जो कुछ आये अुसे आने दिया जाय।

मेरा बचपन घरके सभी कुलाचारों व्रतों अुत्सवों अंध विश्वासों आदिका श्रद्धापूर्वक पालन करनेमें बीता था। अिस रूढ़ि निष्ठासे मुझमें भाली भक्तिका अुदय हुआ। औरोंकी अपेक्षा मुझमें यह भक्ति अधिक विकसित हुअी। मुझे यह अनुभव हुआ कि भक्तिसे निश्चयकी सामर्थ्य अेवं संकल्पशक्ति दृढ़ होती है। बादमें जब अिस भक्ति पर तार्किकताने हमले करने शुरू किये तो अुसमें से शंकाशीलता पैदा हुअी। अिस शंकाशीलता और केवल तार्किकताने कुछ दिन तक नास्तिकताका रूप ले लिया। अिस नास्तिकतामें से शुद्ध जिज्ञासा प्रकट हुअी और मैं बुद्धिनिष्ठ अज्ञेयवादी बन गया। लेकिन बुद्धिवादका नशा मुझ पर कभी सवार नहीं हुआ। मेरी जिज्ञासा निर्मल अेवं नम्र थी। अतः सोचते सोचते मुझे बुद्धिवादकी मर्यादायें सीमायें दिखाअी देने लगीं। जब यह मालूम हुआ कि बुद्धिवादकी पहुँच अज्ञेयवाद तक ही सीमित रहती है तो वृत्ति फिर वापस लौटी और श्रद्धाके सच्चे क्षेत्रोंकी झाँकी मिल गयी। नास्तिकता बुद्धिवाद अज्ञेयवाद आदिसे जो भूमि बीज बोनेके लिअे अच्छी तरह तैयार हो चुकी थी अुसमें बढ़िया फसल आयी और अन्तमें धर्मके शुद्ध अुज्ज्वल और सनातन यानी नित्य-नूतन स्वरूपका कुछ साक्षात्कार हुआ। अिस तरह अुस-अुस जमानेमें और अुस-अुस क्रमसे

सारी वृत्तियोंका अनुशीलन होनेके कारण समजीवनके सारे पहलुओंको सममावपूर्वक श्रद्धास किन्तु तर्कयुक्त दृष्टिसे जाँचनेका अवसर मुझ मिला।

पुराने जमानेके जीवनकी संस्कार-समृद्धि, कला-रसिकता और सार्वत्रिक सन्तोष जिन तीनों बातोंका मैंने अनुभव किया है। अतः पुराने जीवनके प्रति मेरे मनमें अनादर नहीं, बल्कि कृतज्ञता और भक्ति ही है। फिर भी मुझे लगता है कि जैसे आम परसे राग हटानेकी जरूरत होती है या परका निकम्मा कबाड़ (जिसे अंग्रेजीमें 'लम्बर' कहते हैं) निकाल देना होता है, वैसे ही धर्मवृक्षको भी समय-समय पर झकझोरकर उसके सूखे या सड़े-गले पत्तोंको गिरानेकी आवश्यकता रहती है। गुजरातीमें अेक कहावत है 'सचव्यो साप काममो।'—जिसका मतलब है सांपको भी हम सँभालकर रखें, तो वह किसी दिन काम आ सकता है। जिस कहावतके मूलमें अेक लोककथा है। वह जिस प्रकार है

अेक बनियेके यहाँ अेक साँप निकला। उसने उसे तुरन्त मार डाला। अब उस मरे हुअे साँपका क्या किया जाय? इस्लामानुष नौकर उस सांपको शहरसे बाहर ले जाकर फेंक देनेवाला था लेकिन बनिया बोला 'सचव्यो साप काममो।' जिस साँपको घरके छप्पर पर रख दो वहीं पर वह सूखता पड़ा रहे।"

अब अेक दिन हुआ क्या कि अेक चील राजमहल पर मँडरा रही थी। वहाँ उसने अेक मोतियोंका हार देखा जो राजकन्याने जल-विहार करते समय किनारे पर रख दिया था। चीलने झपटकर वह हार उठा लिया और वहाँसे उड़ती हुअी वह उस बनियेकी छत पर आ बैठी। वहाँ उसने सोचा कि हार तो कोअी खानेकी चीज है नहीं। जितनेमें उसकी नजर उस मरे हुअे साँप पर पड़ी। अतः उसने तुरन्त वह हार वहीं फेंक दिया और साँपको उठाकर वहाँसे उड़ गयी। बनियेका अनायास मोतियोंका लाभ हुआ। उस दिनसे बनियोंकी जातिने यह फैसला कर दिया कि मरे हुअे साँपको

भी फेंकना नहीं चाहिये सँभालकर रखना चाहिये ताकि वह किसी दिन काम आये।

अब अिस कहानीका साँप मरा हुआ था और छत पर पड़ा पड़ा धूपमें सूख रहा था। वही अगर जिन्दा हो या कुअेंमें पड़कर सड़नके कारण पानीको जहरीला बना रहा हो तो भी क्या अुसका संग्रह करना चाहिये?

हम लोग परम्परागत सनातन धर्मके नाम पर रत्न भी जमा करते हैं और कंकर भी हलाहल भी अिकट्ठा करते हैं और अमृत भी। हमारे सँभाल कर रखे हुये साँपोंमें से कअी तो जिन्दा और जहरीले हैं और कअी असलमें निरुपद्रवी होते हुये भी आज सड़कर महामारी फैला रहे हैं। और अुससे हमारे शुद्ध अुदात्त सनातन आर्यधर्मका दम घुट रहा है। गोडाअी-निराअी किये बिना धर्मक्षेत्रमें से अच्छी फ़सल नहीं प्राप्त की जा सकती।

मेरे जन्मके समय पिताजी सातारामें कलेक्टरके हेड-अकाअुण्टेंट थे। अुन दिनों रेलगाड़ी नहीं थी। मुसाफ़िरी बैलगाड़ीसे करनी पड़ती थी। डाकके लाने ले जानेके लिये खास घोड़ा-गाड़ीका प्रयोग किया जाता था। जब रेलगाड़ी शुरू हुअी अुस वक्त लोग अुसे दूर दूरसे देखने और पूजनेको हाथमें नारियल लेकर आते थे, अैसा मैंने पिताजीसे सुना था। रेलगाड़ीमें बैठनसे पहले डिब्बकी दहलीजको स्पर्श करके वह हाथ माथेसे लगानेवाले लोग तो स्वयं मैंने भी देखे हैं।

* * *

हम थे छः भाअी और अेक बहन। मैं था सबमें छोटा। सबसे बड़े भाअी थे बाबा। मेरे सस्मरणोंकी शुरुआत होती है अुस वक्त अुनकी और अुनसे छोटे भाअी अण्णाकी शादी हो चुकी थी। मुझे याद है कि अुन सबकी शादियाँ मुझके बचपनमें ही हुअी थीं। तीसरे भाअी विष्णुकी शादी हुअी तब हम सातारासे बैलगाड़ीमें बैठकर

शाहपुर-बसगाँव गये थे। शिवाजी बादमें डाकके हौमेमें आये थे। विष्णुकी शादीमें जुलूसके समय दूल्हेका घोड़ा बहुत अूधम करता था और विष्णुका अपनी बैठक पर जमे रहनेमें मुश्किल ही रही थी। वह चित्र आज भी नजरके सामने आता है। कमूकी और मथी शादीके समय में काफी बड़ा हो चुका था।

सातारामें हम समाजमें बहुत घुल-मिलते न थे। हमारी जातिवाले सातारामें बहुत नहीं थे। दो-तीन सरकारी अधिकारी और अुनके कुटुम्बी ही हमारे यहाँ आते थे। मनीकी माँ नामकी हमारी माँकी अेक सहेली थी। अुसकी लड़कीका नाम मनी था। मनीके साथ हम खेलते रहते और अुसके घर भी जाते। लेकिन अुसकी माँका नाम मैंने कभी नहीं सुना। वह तो केवल 'मनीकी माँ' थी। बच्चोंके नामसे अुनकी माताओंका सम्बोधन करना महाराष्ट्रका आम रिवाज है जो आज भी चल रहा है। हमारे पड़ोसमें अेक दर्जी रहता था। अुसके दो लड़के नाना और हरि हमारे साथ खेलने आते। दाम्या नामका अेक मुस्लिम लड़का था। वह केरूके साथ खेला करता। यादो गोपाळ मुहल्लेका मारुती और अन्य अेक चमड़ेका दोस्या (ढोंढवाला) गणपति भी मुझे अब तक याद है।

हम शाहपुर जाते तब हमारा सारा वातावरण बदल जाता। शाहपुर तो हमारा ही गाँव था। वहाँके तीन चार बड़े-बड़े मुहल्लोंमें हमारी ही जातिके लोग रहते थे। लगभग सभी लोग सर्राफ या व्यापारी थे या अब मामूली नौकरियाँ करते थे। अिन सब कुटुम्बोंका परस्पर सम्बन्ध कितना घनिष्ठ था कि हर घरमें क्या पका था या सास-बहूमें कैसा झगड़ा हुआ था, अिसकी खबर शाम होनेसे पहले ही चारों मुहल्लोंमें फैल जाती। बीच बीचमें जाति भोजन होता, कभी वसन्तोत्सव मनाया जाता, किसी नर्तकीका नाच या गाना होता या गर्मियोंके दिनोंमें बच्चे आपसमें मिलकर बनाये हुअे पर्वत (पना) का सामुदायिक पान होता, जो हमारी सारी जाति

जमा हो जाती। सीमोल्लंघन (दशहरे) जैसे अुत्सवमें तो सभी जातियाँ अिकट्ठा हो जातीं। हमारी जातिके लोगों द्वारा बनाये हुओ मन्दिरोंमें ही हम सब लोग जमा हो जाते थे।

हम शाहपुरके बाशिन्दे तो थे लेकिन मेरे पिताजीकी नौकरीकी वजहसे हम लोग अकसर सातारा, कारवार, धारवाड़ आदि शहरोंमें ही रहते थे। अिस कारणसे और हम सभी भाअियोंके शिक्षाके विषयमें बहुत अुत्साही होनेसे हमारी जातिमें हमारा आदर किया जाता था। अपनी जातिका कोअी आदमी सरकारी नौकरी करके अूँचा चढ़ता तो जातिके लोगोंको अुसमें बड़ा गौरव महसूस होता। अिस कारणसे भी हमारे समाजमें हमारी प्रतिष्ठा थी। अतः शाहपुर जाते ही हमें समाजमें मिलना-जुलना पड़ता था।

मिलने-जुलनेकी कलामें मुझे जरा भी सफलता नहीं मिली। कहीं जाना-आना मुझे अखरता था। मनुष्यमें या तो सामाजिक शिष्टाचार होना चाहिये या अुसकी भावना अितनी भोथरी होनी चाहिये कि कोअी कुछ बोले या हँसी अुड़ाये तो अुसकी तनिक भी परवाह न हो। मेरे पास शिष्टाचारका अभाव था और तुनुकमिजाजीकी यह हालत थी कि मामूलीसे मामूली बातसे भी मेरा दिल दुःखी हो जाता। अतः मैंने मिलने-जुलनेके प्रसंगोंको टालना शुरू किया। कहींसे जीमनेका निमंत्रण आता, तो हमारे घरके सब लोग चले जाते, पर मैं नहीं जाता। मेरा यह स्वभाव देखकर सभी सगे-सम्बन्धी मुझ पर नाराज होते। अिससे मैंने अेक बहाना गढ़ा। बूढ़े और ज्यादा प्रतिष्ठावाले लोग दूसरोंके घर में जीमनेका व्रत लेते हैं। यह देखकर मैंने भी यह व्रत लिया और अिस ढालको आगे करके लोगोंमें मिलने जुलनेके अवसरोंको टालता रहा। नतीजा यह हुआ कि मैंने अपने सामाजिक जीवनके अेक पहलूको बिलकुल कमजोर कर दिया। आज भी सार्वजनिक या खानगी प्रसंगोंके समय लोगोंसे मिलते-जुलते मुझे बड़ा अखरता है। अपरिचित आदमीसे मिलते समय हमेशा बेचैनी

रहती है। जिसे सार्वजनिक सेवा करनी हो, उसके लिये यह भारी दोष ही समझना चाहिये।

बरसों तक हम शाहपुर और सातारा के बीच आते जाते रहे। बेलगांव तो शाहपुरके बिलकुल पास है लेकिन बेलगांवके साथका हमारा सम्बन्ध केवल सिरर्णेकर डॉक्टर तक ही सीमित रहा। कुटुम्बमें कोओ न कोओ बीमार रहना ही चाहिये, अैसा मानो हमारे घरका रिवाज हो गया था। जिसमें मेरे पिताजीका ही अपवाद था। उन्हें बरसों तक कभी बुखार नहीं आता था, और न कभी सर्दी ही होती थी। वे छिहत्तर बरसकी उम्र तक जीये, लेकिन उनका अेक भी दांत टूटा नहीं था या कमजोर भी नहीं हुआ था। मेरी बहन अक्का तो प्रसूतिमें हीं विषमज्वरसे गुजर गयी थी। उस वक्त मैं बहुत छोटा था। बचपनकी उस पर अैसी छाप है कि स्त्रीवर्गमें से शायद ही कोओ कभी बीमार पड़ता था। बीमार तो पुरुष ही होते थे। हम बालक कभी कभी बीमार पड़ते तो हमारा बहुत ही लाड़-प्यार होता था। अेक तो जिस कारणसे और दूसरे यह कि बीमार होनेमें उस वक्त कोओ हमारी गलती या लापरवाही नहीं मानता था जिसलिये हमें बीमार पड़नेमें शर्म नहीं आती थी। उलटे बीमार होनेसे हम हफ्ते भर पाठशालासे बच जाते हैं और सारे दिन बिस्तरमें पड़े रहते हैं, तो भी कोओ नाराज नहीं होता पढ़ाओके बारेमें कोओ नहीं पूछता पहाड़े नहीं बोलने पड़ते — वगैरा कारणोंसे हमें बीमार पड़नेमें मजा ही आता था।

हम जब शाहपुर जाते तब वहांसे सात-आठ मील दूर बेलगुंदी गांवमें अेक बार अवश्य जाते। वहां हमारे मामा रहते थे। मौसी भी वहीं रहती थीं। बेलगुंदीके बचपनके संस्मरण अमरूद आम जामुन करौंदे, काजू कटहल वगैरा फल खाने और गन्ना चूसनेके साथ ही जुड़े हुअे हैं। मैं बेलगुंदीके जंगलों और खेतोंमें खूब घूमा

हूँ। ग्रामजीवनका सर्वोत्तम आनंद मैंने यहीं पाया है। लेकिन ये बातें बचपनकी नहीं भावकी हैं।

हमारे दोनों कुटुम्बोंमें सामाजिक धार्मिक, औद्योगिक या राजनैतिक सुधारका वातावरण कहीं नहीं था। मेरे जन्मसे पहले पिताजीको सितार बजानेका शौक था लेकिन बादमें वह भी अुन्होंने छोड़ दिया था। व्यसनके नामसे तो घरमें कुछ भी न था। पिताजी पान तक नहीं खाते थे। त्यौहारके दिन जब ब्राह्मणोंको जीमनको बुलाया जाता तभी बाजारसे पान-सुपारी ले आया करते थे। अुस दिन पानका बीड़ा तैयार करके अगर पिताजीको दिया जाता तो कभी तो वे खा लेते और कभी जेबमें रखकर भूल जाते थे। व्यसनमुक्त, निर्दोष और विद्यापरायण परिवारकी हैसियतसे हमारे कुटुम्बकी शाहपुरमें अुस वक्त काफ़ी ख्याति थी।

पिताजीका तबादला सातारासे कारवार हो गया। तनख्वाह बढ़ी लेकिन मुसाफ़िरीका खर्च भी बढ़ा। कारवार जानेसे मैं सह्याद्रिकी शोभा देख सका समुद्र और समुद्रयात्राका अनुभव हुआ। खुले आम मछली खानेवाले समाजसे भी थोड़ा-सा परिचय हुआ। आसपास अपरिचित लोग होनेसे अकेले-अकेले अपने मनमें विचार करना और कल्पनाके घोड़े दौड़ाना भी सीखा। अिस आदतका मेरे जीवन पर अच्छा और बुरा दोनों तरहका असर पैदा है।

हम कारवारमें क़रीब पाँच-छः साल रहे। अिसके बाद पिताजीका तबादला धारवाड़को हुआ। कारवारमें मुख्य भाषा कोकणी थी लेकिन स्कूलकी पढ़ाअी और सरकारी कामकाज कन्नड़ भाषामें होता था। धारवाड़में तो केवल कन्नड़ भाषा ही थी। यहाँ पर देशस्थ ब्राह्मण, लिंगायत बढ़्अी वगैरा छोटी-बड़ी जातियोंसे नया परिचय हुआ। प्लेगका अनुभव हुआ। हमने शहरसे बाहर खुले मैदानमें झोंपड़ी बनाकर रहना सीखा। मेरे बिलकुल बचपनमें मेरी अिकलौती बहन

रहना पड़ा। भुनमें से दो अपनी पत्नियोंके साथ यहाँ रहते थे। माँ भी कुछ दिनके लिये पूना आकर रही थी। अतः मेरी मराठी दूसरी कक्षाकी पढ़ाभी यहीं नूतन मराठी विद्यालयमें हुआी। पूनासे पिताजीके पास कारवार गया। कारवार हमने १८९८-९९ में छोड़ा। भुसके बाद से कारवार अभी-अभी तक नहीं गया था।

बिलकुल बचपनमें आदमीने चाहे जितनी यात्रा की हो तो भी संस्कारोंको ग्रहण करनेकी भुसकी शक्ति सीमित होनेसे असी मुसाफिरीसे मिलनेवाला लाभ भी परिमित होता है। फिर भी भुसमें जो ताजगी आती है वह भुस भुम्रके लिअे बहुत पुष्टिकर होती है। खास पढ़ाओके लिअे पूनाका निवास, पिताजीके साथ सातारा, शाहपुर, कारवार, धारवाड़, बेलगाँव और सांगलीका परिचय, और भुपरोक्त देशी राज्योंकी राजधानियोंका दर्शन, भिसका अनुभव अठारह वर्षकी भुम्रके लिअे कम नहीं कहा जा सकता। हमारे नाना श्री बाबा भिसकी जमीन बेलगुंदीमें थी। भुनकी और मामाओंकी निगरानीसे फ़ायदा भुठानेके लिअे स्वाभाविक ही पिताजीने भी वहीं जमीनें खरीदीं। शाहपुरमें तीन मकान खरीदे और अेक मकान बेलगुंदीमें बनाया।

भिसके अलावा तीर्थयात्राके कारण भी मैं बचपनमें बहुत घूमा था। कारवारसे दक्षिणमें गोकर्ण-महाबलेश्वर, सांगली-मिरजके पास नरसोबाकी वाड़ी और कुरुन्दवाड़, अथवा आम पंढरपुर, साताराके पास अरला और पराली, गोवामें मंगसी शान्ता दुर्गा, पुराने गोवाके कैथोलिक भीसाभियोंके भालीशान गिरजाघर, पणजी जैसे रमणीय स्थान मैंने पूज्य श्रद्धा-भक्तिसे देखे थे। गोकर्ण तो दक्षिणकी काशी माना जाता है।

समुद्र किनारेके तीर्थस्थानोंकी गिनती कुछ और ही होती है। भारतवर्षके दक्षिणमें रामेश्वर और कन्याकुमारी, पूर्वमें दक्षिणमें देवेन्द्र, पूर्वमें जगन्नाथपुरी और पश्चिममें द्वारका तथा सोमनाथ। भिन

स्थानोंका माहात्म्य भले ही शास्त्रोंमें न लिखा हो फिर भी अिनका निरालापन छिप नहीं सकता।

नरसोबाकी वाड़ी गुरु दत्तात्रयका स्थान —— ब्राह्मणोंके कर्मकाण्डका मजबूत गढ़। जिसे भूत लग जाता है वह नरसोबाकी वाडीमें आकर गुरु दत्तात्रेयकी सेवामें रहकर अुससे छूट सकता है और अुस भूतको भी गति मिलती है। जिसे कर्मकाण्डका भूत लगा हो अुसे दूसरे भूत लगनेकी शायद हिम्मत नहीं कर सकते होंगे।

पंढरपुर तो भक्तिमार्गी महाराष्ट्रकी धार्मिक राजधानी महाराष्ट्रके साधु-सन्तोंका पीहर। वहाँ भक्तिका महोत्सव अखण्ड चलता रहता है। वर्ण-जाति-अभिमानके कारण पतित बने हुअे अिस देशमें पंढरपुर ही मनुष्यकी समानता और अीश्वरके सामने सबका अभेद कुछ हद तक क़ायम रख पाया है। परळी हनुमानका स्थान है। और परळी हनुमानके अवताररूप समर्थ रामदासका स्थान। रामदासी लोग यदि चाहें तो परळीको आजकी धर्म-जागृतिका अुद्गम स्थान बना सकते हैं। लेकिन तीर्थस्थान न जाने क्यों पुरानी पूँजी पर निभनेवाले कुटुम्बोंकी तरह क्षीण-तेज, पिछड़े हुअे और बासी होते जा रहे हैं।

कोंकण-गोवाके मंगेशी और शान्ता दुर्गा आदि स्थान चूँकि हमारी जातिके कौटुम्बिक देवताओंके हैं अिसलिअे अुनमें कौटुम्बिक श्रद्धा और जातिका वैभव ही ज्यादा दिखाअी देता है। अंग्रेजीमें जिसे गार्डियन डीटी (प्रतिपालक देवता) कहते हैं, वही स्थान अिन कुल देवताओंका होता है। आज भी मैं मानता हूँ कि अिस दृष्टिसे ये तीर्थस्थान जाग्रत हैं।

श्रद्धासे चलनेवाले मनुष्यके लिअे तीर्थयात्रा असाधारण संतोषका साधन है। शिक्षाकी दृष्टिसे भ्रमणवालोंको भी बहुत लाभ होता है। जिसे धार्मिक समाजकी भाड़ी परखनी हो अुसे तो तीर्थस्थान जरूर देखने चाहियें।

जिस तरह मेरा बचपन बिलकुल अेक ही जगह रहकर बाकायदा पढ़ाओी करनेके बदले रोजाना नयी-नयी जगह जाकर नये अनुभव लेनेमें ही बीता। मेरी पढ़ाओीकी ओर किसीने खास ध्यान नहीं दिया और मुझ भी स्थिरताके साथ दीर्घकाल तक कोओी काम करनेकी आदत कभी नहीं पड़ी।

मेरे पिताजी थे तो बहुत प्रेमल लेकिन अुन्होंने प्रेमको मुँहसे प्रकट करनेकी भाषा अच्छी तरह सीखी नहीं थी। वे मेरे स्वास्थ्यकी हमेशा चिन्ता रखते बीमार पड़ता तो तीमारदारी करते, जो भी आवश्यक होता वह ला देते, मेरी अिच्छायें पूरी करते और मेरे लाड़ लड़ाते। लेकिन मुझे कौनसी खुराक अनुकूल रहती है, मैं कसरत करता हूँ या नहीं, पाठशालामें बराबर पढ़ता हूँ या नहीं, और पाठशालामें मैंने कैसे साथी चुने हैं जिन बातोंकी ओर अुन्होंने कुछ भी ध्यान न दिया।

फलां काम ही हमारे खानदानमें किया जा सकता है फलां नहीं किया जा सकता फलां जरूर करना चाहिये — अैसी भावनामें पचाकर अुनके द्वारा नीति-शिक्षा देनेका काम मेरी माँने खूब किया था। पिताजीमें न्यायबुद्धि और अीश्वरसे डर कर चलनेकी वृत्ति ज्यादा थी। वे स्वयं कुछ भी नहीं बताते। अगर कोओी पूछता तो अपनी राय कह देते। अुन्हें महत्त्वाकांक्षा छू तक नहीं गयी थी। माताको सामाजिक प्रतिष्ठाका शौक बहुत था। 'कालेलकरोंका परिवार सदाचारी है अेक दिलसे रहता है परोपकारी है घरमें आयी हुओी बहुयें सुखसे रहती है,' अैसी कीर्ति प्राप्त करनेके लिअे मेरी माँ हमेशा लालायित रहती। कभी बार वह मुझसे कहती, "मेरी यह अिच्छा है कि भगवान मुझे बहुत दे दें और मैं लोगोंके काम आअूँ।" मैं अुससे हँसीमें कहता "भगवानकी दी हुओी संपत्तिमें से तू कितना हिस्सा लोगोंको दे देगी? अगर तू सब कुछ दे डाले तो भगवान तुझे यथेच्छ देगा। लेकिन हम तो भगवानके व्यापारमें कमिशन ही बहुत माँगते हैं।"

तो फिर भगवानको जो कुछ देना हो, वह सीधे ही लोगोंको क्यों न दे दे ?'

पिताजीको मौज-शौक और समाजमें दिखाओ देनेवाली 'रसिकता' से आम तौर पर डर ही लगता था। वे समझते थ कि अगर ये बातें घरमें घुस गयीं तो 'सारा परिवार तहस-नहस हो जायगा। अुनका अेकमात्र मनोविनोद फोटोग्राफी ही था।

हमारे बचपनमें फोटोग्राफी आजकी अपेक्षा ज्यादा झंझटी थी। आजकी तरह अुन दिनों प्लेटें और फिल्में बाजारमें तैयार नहीं मिलती थीं। मौजूदा प्लेटें जब शुरू-शुरू बाजारमें आयीं तब अुन्हें ड्राय (कोरी) प्लेटस कहते थ। सातारामें जब पिताजी फोटो खींचते तो सादा स्वच्छ काँच लेकर अुस पर कलोडिन डालकर अुसी वक्त प्लेट तैयार कर लेते थे। अुस प्लेटके सूखनेस पहले फोटो खींचकर अुसे 'डेवलप करना पड़ता था। सारी क्रियायें बहुत तेजीसे करनी पड़तीं। कलोडिनकी प्लेट डेवलप होनेसे पहले सूख जाती तो अुसमें सिलवटें पड़ जातीं। अुस वक्त फोटोग्राफीके लिअे बहुत परिश्रम करना पड़ता था। अिस शौकके लिअे पिताजी काफी पैसे खर्च करते थे।

जब हम साँगली गये तो वहाँ मेरे भाओी मानाको सितारका शौक लगा। अुससे मुझमें भी संगीत सुननेका शौक पैदा हुआ। और भगवानकी कृपासे मुझे बहुत अच्छा संगीत सुननेका मौका मिला। मेरे सबसे बड़े भाओी बाबा साहित्यके शौकीन थ — खासकर संस्कृत साहित्य और ज्ञानेश्वरीके। दूसरे भाओी थे अण्णा। अुन्हें बचपनमें तरह तरहके प्रयोग करनेका शौक था। बादमें अुन्होंने घरमें वेदान्त दाखिल किया। विष्णु बढ़िया गाता था। अुसे गणपति-अुत्सव शिवाजी-अुत्सव वगैरा सार्वजनिक कामोंमें हाथ बँटाने और लोगोंमें नाम पानेका बड़ा शौक था। घरमें भाअियोंमें मेरा नेता था केशू। वह था शीघ्रकोपी और भोला। पढ़नेमें अुसे गहरी दिलचस्पी थी। रटन पर अुसे ज्यादा भरोसा था। अुस पर नेपोलियनकी जीवनीका प्रभाव ज्यादा था। गुप्त

मंडलीकी स्थापना करके लड़ाओीकी तैयारी करना अंग्रेजोंको मार भगानेके लिअे बड़ी सेना खड़ी करना वगैरा महत्त्वाकांक्षायें अुसके मनमें थीं। लेकिन कॉलेजमें जानेके बाद अुसे लकवा हो गया और अुसकी सभी महत्त्वाकांक्षायें मुरझा गयीं। गोंदू या माना मेरा सबसे निकटका भाओी था। हम दोनोंमें सिर्फ दो बरसका अंतर था। बचपनके सच्चे साथी तो हम दोनों ही थे। स्कूलमें नागा करने और पढ़ाओी न करनेकी सारी तरकीबें मैंने गोंदूसे ही सीखी थीं। अुसे केमिस्ट्री (रसायनशास्त्र), ड्राअिंग (चित्रकला) और फोटोग्राफीका शौक ज्यादा था। आगे चलकर अुसने व्यवसायके तौर पर फोटोग्राफीको ही पसंद किया।

मैं पिताजीका भक्त और माँका सेवक था। माँकी चोटी गूँथनेका काम भी मैं ही किया करता था। बड़े भाओीको मैं सत्पुरुषकी तरह पूजता था। अण्णाने मेरे बचपनमें मेरी शिक्षाकी तरफ कुछ ध्यान दिया था। लेकिन मैं अनुयायी तो केशूका ही था। केशू और विष्णुमें बहुत कम बनती थी, जिसलिअे केशूके हिमायतीके नाते विष्णुके साथ मुझे कभी बार लड़ना पड़ता था और मैं निष्काम भावसे यह करता रहता। गोंदू तो ठहरा मेरा लँगोटिया मित्र। अुसके मनोराज्यकी बातें मुझे दिन रात सुननी पड़तीं। घरके लोग गोंदूके बारेमें कहते कि, 'यह स्कूलमें कुछ लिखता-पढ़ता नहीं है, हर वक्त चित्र खींचता रहता है, फोटोग्राफीके विषयमें पुस्तकें पढ़ता है, और किसी तरह वक्त बरबाद करता है।' जब कभी अण्णा अुस पर नाराज हो जाते, तब वे अुसके चित्र फाड़ डालते। अेक बार अुसके बनाये हुअे लकड़ीके ठप्पे अण्णाने जला दिये थे। जिस तरहकी तकलीफोंसे बचनेके लिअे गोंदू रातको ९ बजे सोकर १२ बजे जाग जाता था। और बारह बजेसे लेकर तीन बजे तक फोटोग्राफीकी किताबें पढ़ता रहता। अुसमें यदि कोओी मजेदार और दिलचस्प प्रयोग अुसे मिल जाता तो अुस आधी रातके समय मुझे जगाकर वह अुसकी जानकारी तफसीलके साथ मुझे दे देता। अगर मैं झटसे न जाग जाता या ध्यानसे अुसकी

बात न सुनता तो वह घुड़कियाँ काटकर मुझे भगा देता था। मेरी ज्ञाननिष्ठा अितनी अधिक थी कि अिस तरहकी ज़बर्दस्तीके खिलाफ़ मैंने कभी शिकायत नहीं की।

हम सभी भाअी मित्र-प्रेममें भरेपूरे थे। बाबा साहित्यरसिक थे और अुन्हें घर पर पढ़ानेके लिअे अिसे मास्टर और शास्त्रीजी आते थे। अिसलिअे बाबाका कमरा कअी विद्यार्थियोंके लिअे शिक्षाका धाम बन गया था। अण्णामें अहप्रेम ज्यादा था अिसलिअे अुनके मित्र अक्सर अुनके अनुयायी ही होते थे। सच्चा वात्सल्यपूर्ण स्वभाव था विष्णुका। लेकिन वह पढ़ाअीमें कच्चा था। सामाजिक शिष्टाचारकी जान कारी अेवं कद्र अुसमें सबसे ज्यादा थी। दूसरोंके लिअे चीजें खरीदना, लोगोंको अपने यहाँ बुलाकर खिलाना-पिलाना यह सब कुछ अुसे अच्छी तरह आता था। केशूको बचपनमें मिरगीकी बीमारी थी। अिससे सभीको अुसका मिजाज सँभालना पड़ता था। अिस बातका अुसके स्वभाव पर बहुत असर पड़ा था। वह स्वभावसे तरंगी ज़िद्दी और दिलदार था। अुसके रागद्वेष अत्यन्त तीव्र लेकिन क्षणजीवी होते। गोंदूमें अुसके शास्त्रीय शौकके बलावा दूसरी कोअी भी खासियत अुस वक्त न थी। आगे चलकर अुसे वेदान्त भाविका शौक हुआ और अुसीसे अुसका सत्यानाश हुआ। मैं अुससे कहता कि "वेदान्त तो पारेके रसायन जैसा है। अगर वह हज़म हो गया तो आदमी वज्रकाय बनेगा वरना वह शरीरसे फूट पड़ेगा। धूर्त लोग वेदान्तके साथ भले ही खिलवाड़ करें क्योंकि वे अुससे बहुत फ़ायदा अुठा सकते हैं अुन्हें अुसके बुरे असरका डर नहीं रहता।" गोंदूमें अहंप्रेमकी बू तक न थी। हम सभी भाअी कम या अधिक मात्रामें आलसी अवश्य थे। नियम या व्यवस्था किसीके जीवनमें नहीं दिखाअी दी।

मैं सबसे छोटा था, अिसलिअे घरमें आयी हुअी भाभियोंके साथ मेरी खूब दोस्ती और समभाव रहता था। अुनके प्रति मेरे मनमें सहानुभूति थी। अुन्हें अपने पतियोंसे क्यों डर कर रहना

पड़ता था सास-ससुरके सामने वे मूठ क्यों बोलती थीं, पीहरके प्रति अुनके मनमें कितना और कैसा आकर्षण रहता था, यह सब मुझे विभिन्न पहलुओंसे देखनेका मौका मिला था। जिससे कौटुम्बिक जीवनके अनेक प्रश्न बचपनसे मेरी समझमें अच्छी तरह आ गये थे। कौटुम्बिक जीवन अेक तरहसे तो स्वर्ग है और दूसरी तरहसे अखण्ड चलती रहनेवाली अन्तविहीन ट्रेजेडी (शोकान्तिका) है, यह मैं बहुत पहले देख चुका था। माता-पिताके गुजर जानेके बाद तुरन्त ही शाहपुर-बेलगांवका और कुटुम्बका वातावरण छोड़कर मैं जो महाराष्ट्रके दूसरे सिरे पर गुजरातमें आकर बसा अुसका अेक कारण यह भी है यद्यपि अुसे गौण ही कहना चाहिये। महाराष्ट्रमें रहनेके बजाय अन्यत्र जाकर सेवा करने और अुसके लिअे गुजरातको पसन्द करनेके जो कारण थे वे अलग ही हैं।

*　　　*　　　*

सार्वजनिक जीवनके साथ मेरा बाल-परिचय बहुत ही कम रहा है। हम पूनामें थे तब वहाँ हिन्दू-मुसलमानोंके बीच अेक बड़ा झगड़ा हुआ था। अुस वक्त यह मालूम न हो सका कि यह दंगा बम्बआीसे पूना पहुँचा था या पूनासे बम्बआी। बिलकुल मामूली कारणको लेकर दोनों जातियाँ लड़ पड़ीं और काफ़ी मार-पीट हुआी थी। बड़ी अुम्रके लोग भी पागल होकर अेक-दूसरेको गालियाँ देते हैं और मार-पीट करते हैं, यह बात पहली बार जानकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ था। अुस झगड़ेके बाद भी सभामें थी बाल गंगाधर तिलकने अेक भाषण दिया था और अुसमें जाहिर किया था कि गलती दोनों फ़िरक़ोंकी है, लेकिन भूल मिलाकर ज्यादा दोष मुसलमानोंका ही है। अुस वक्त तिलकजीको लोकमान्यकी पदवी प्राप्त नहीं हुआी थी।

जिसके बाद मैंने जो सार्वजनिक घटना सुनी वह थी चीन जापान-युद्ध। अुस वक्त सुना था कि जापानने पहले ही झपट्टमें चीनका अेक बड़ा जहाज डुबो दिया। 'चैम्पियन' नामके अेक अंग्रेजी अखबारमें

अिस जंगकी खबरें आया करती थीं। अिसके बादकी अद्भुत घटना थी गोवामें पलनेवाले राणा लोगोंके बलवेकी। अुस वक्त सुनी हुअी बातोंको यदि अिकट्ठा किया जाता, तो वीर-रसका अेक महाकाव्य बन सकता था। राणा लोग पार्तुगीज सरकारका विरोध करके जंगलमें जा छिपे थे। वहाँ वे लुहारोंसे बन्दूकें और गोलाबारूद तैयार करवाते। अचूक निशानेबाज होनेसे पाखला (पोर्तुगीज सोल्जर) लोगोंको चुन-चुनकर गोलियोंसे अुड़ा देते थे। अंतमें समझौता करनेके लिअे अुन लोगोंके नेताको गोवाके गवर्नरने अपने पास बुलाया और धोखा देकर गोलीसे अुड़ा दिया वगैरा बहुत-सी बातें लोगोंके मुँहसे सुनी थी। अुस वक्तके दादा राणा दीपू राणा आदि शूरोंके बारेमें गावोंमें कअी लोकगीत गाये जाते होंगे। क्या आज वे मिल सकते है ?

लेकिन सारे समाजको कुतूहल डर अेवं अपेक्षासे अुत्तेजित करनेवाली घटना तो महारानी विक्टोरियाके हीरक महोत्सवके दिन रातके वक्त गवनरके यहाँसे खाना खाकर वापस लौटनेवाले पूनाके प्लग अफ़सर रैंडके खूनकी थी। प्लेग अुस वक्त सचमुच अेक बड़ी राष्ट्रीय आपत्ति थी। लोगोंको प्लगकी अपेक्षा प्लेगके मुकाबलेके लिअे अपनाये जानवाले कठोर अुपायोंसे ज्यादा परेशानी होती थी। मृत्युकी कल्पामें तो हमारे लोग पहलेसे ही माहिर हो गय हैं। लेकिन करंतीन (Quarantine) का ज़ुल्म घरोंकी बरबादी नारियोंका अपमान आदि बातें अुनके लिअे असह्य हो गयी थीं। रैन्ड और आयर्स्टके खूनके बाद तिलकजीको राजद्रोहके लिअ सजा मिली थी। सरदार नातु बंधुओंको घुड़सवारी विमानका वर्ग चलाया था, जितनी-सी बात पर सरकारको दाब हुआ और अुसने अुन्हें राजबन्दीकी हैसियतसे बेलगाँवमें रख दिया। चाफेकर बन्धुओंका षड्यन्त्र पुलिसवालोंने ढूँढ़ निकाला था। चाफेकर बन्धुओंको फाँसीकी सजा हुअी और अुन्हें पकड़ा देनेवाले अुनके साथी द्रविड़ बन्धुओंका भी खून हुआ। अैसी सब घटनाओंके कारण मनमें

अुस वक्त भी यह स्पष्ट देखा था कि समाजमें अेक-दूसरेके प्रति शंका अविश्वास और सरकारका डर बहुत बढ़ गया था। घरमें बैठकर बोलनेवाले लोग भी धीमी आवाजमें बातें करते। यह तय करना मुश्किल हो गया कि देशभक्त कौन है और दगाबाज कौन। मैंने यह भी देखा कि अिसीमें साथ लोगोंमें देश और देशभक्तिके विचार भी बढ़े थे। कमसे कम मुर्दार शान्ति तो खतम ही हो गयी थी।

अिसके बाद जो सार्वजनिक चर्चा सुनी, वह थी किसानोंको कर्जसे मुक्त करनेवाले सरकारी कानूनके बारेमें। अिस कानूनसे साहूकार मारे जायेंगे और किसान तो मुक्त हो ही नहीं सकेंगे अैसी टीका अुस समय बहुत सुनाओी देती थी। अंग्रेज सरकार प्रजाको छीलकर खा जाना चाहती है, यह विचार तो लोगोंमें सर्वत्र था। अिस अेक भावनामें महाराष्ट्र अन्य प्रान्तोंकी अपेक्षा हमेशा आगे बढ़ा हुआ है। अंग्रेज सरकारके हेतुके बारेमें महाराष्ट्रीय जनताको कभी विश्वास नहीं हुआ।

अिसीलिअे जब दक्षिण अफ्रीकामें ट्रान्सवालके बोअरों और अंग्रेजोंमें युद्ध शुरू हुआ तब हमारे लोगोंकी सहानुभूति बोअर लोगोंके साथ ही थी। दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले कुछ हिन्दुस्तानी लोग अंग्रेज सरकारकी मदद कर रहे हैं मुर्दे अुठानेका काम करते हैं, यह सुनकर अुस वक्त हम सबको यही लगता कि वे सब बेवकूफ हैं। जावर्ट, जौन्हे डिवारे, क्रिस्टिअन आदि नाम हमें अितने प्रिय हो गये थे मानो वे हमारे राष्ट्रीय वीरोंके ही नाम हों। लेडी स्मिथ प्रिटोरिया, किम्बर्ले ब्लोअेम फान्टेन आदि शहरोंका भूगोल हमें कंठस्थ हो गया था। अिसके बाद जो विराट घटना हुअी वह थी रूस-जापानके युद्धकी। लेकिन अुस वक्त में कॉलेजमें पहुँच गया था।

बिलकुल बचपनमें मैंने कांग्रेसका नाम अेक ही बार सुना था। मेरे मामाके लड़केने अपने कुछ मित्रोंकी मददसे संभाजी नाटक खेला था और अुसकी आमदनी कांग्रेसको दी थी। चूँकि मैं अुस वक्त यह

नहीं जानता था कि कांग्रेस क्या चीज है, अिसलिअ मुझ पर यही छाप पड़ी थी कि रामाने नाटककी आमदनी बेकार गँवा दी है। अुस वक्त अितनी ही जानकारी थी कि सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी नामक अेक जबरदस्त वक्ता कांग्रेसके लिअे पूनाम आया था।

* * *

लोगोंसे मिलने-जुलनेकी शर्म और पाँच बड़े भाअियोंका दबाव अिन दो कारणोंसे मेरा स्वाभाविक विकास बहुत कुछ अवरुद्ध हुआ। लेकिन अेक ओरसे रुँधी हुअी शक्ति दूसरी ओर प्रकट हुअी। मैं कल्पनाविहारमें मशगूल रहने लगा। बड़ा होने पर मैं क्या करूँगा राजा बन गया तो राज्य कैसे चलाअूँगा आदि कल्पनाअें अखंड रूपसे चलती रहतीं। अिमारतें बनाना जंगलोंमें रास्ते निकालना नदियों पर पुल बनाना पहाड़ोंको खोदकर सुरंगें तैयार करना घोड़े पर बैठकर सारा देश घूम आना — आदि कल्पनाअें करना मुझे बहुत पसंद था। लेकिन अुस वक्त मुझे यह नहीं सूझा कि कोअी भी कल्पना मनमें आनेके बाद अुसे व्यवहारकी कसौटी पर कसकर देखना चाहिये। अिसलिअे मेरी सारी योजनाअें शेखचिल्लीकी कल्पनाअें ही होतीं। आजकी दृष्टिसे सोचने पर मुझे अैसा लगता है कि मेरी रचनात्मक बुद्धिके विकासमें मेरी कल्पनाओं और योजनाओंसे बहुत कुछ मदद अवश्य मिली होगी।

अिस अन्तर्मुख वृत्तिके साथ ही सृष्टि-सौन्दर्यकी ओर भी मेरा ध्यान बहुत जल्द आकर्षित हुआ। मनुष्योंमें बहुत हिलना-मिलना नहीं था अिसलिअे सहज ही नदी नाले तालाब बगीचे चरागाह खेत आदि देखनेमें मेरा मन तल्लीन होने लगा। अिसमें कुछ सौंदर्योपासना है अितना समझने जितनी प्रौढ़ता मुझमें बहुत देरीसे आयी। नदीके घाट पर बैठकर नदीके प्रवाहकी ओर टकटकी लगाये देखते रहनेमें मुझे बड़ा आनन्द आता। अूँचे अूँचे पहाड़, पुराने किले आकाशकी ओर अिशारा करनेवाले मन्दिरोंके शिखर और रोशनीके साथ

झगड़नेवाले घने जंगल बचपनसे ही मेरी भक्तिके विषय बन गये हैं। जिस तरह निर्दोष आनन्द लूटनेकी कला अनायास ही मेरे हाथ लग गयी है। नदीके घाट, दोनों किनारों पर आसन जमाये बैठे हुअे नदीके पुल, नदीके पृष्ठ भाग पर चूहोंकी तरह दौड़नेवाली नावें और भैंसोंकी तरह धीमे चलनेवाले जहाज — यह सब देखकर मनुष्य और प्रकृतिका सख्य मन पर अच्छी तरह अंकित हो गया था। आज भी पुल और नाव देखनेका कुतूहल मेरे मनमें कम नहीं हुआ है। अितने सालोंसे घासके फूल और आकाशके तारे देखते रहने पर भी अुनका आकर्षण मेरे लिअे कम नहीं हुआ है। नदीमें बाढ़ आती है, आकाशसे तारे टूटने लगते हैं, भूचाल होता है, जंगलोंमें आग लगती है या मूसलधार बारिश होनेसे चारों तरफ पानी ही पानी हो जाता है तो अुससे मेरी चित्तवृत्ति दबती नहीं बल्कि अुस अुस प्रसंगके साथ तदाकार होकर अुसकी मस्तीका अनुभव करती है।

कुदरतके शौकके साथ अजायबघर देखनेकी भूख अुत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। मैंने पहले-पहल जो म्यूज़ियम देखा वह सावंतवाड़ीके मोती तालाबके किनारे पर था। अुससे मुझे खूब शिक्षा मिली। कीड़ों और तितलियोंको मारकर अुन्हें आलपीनोंसे नत्थी किये हुअे देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ, क्योंकि फूलों पर फुदकनेवाली तितलियोंके साथ मैं बहुत खेलता था। मरे हुअे पक्षियोंके शरीरमें घास-फूस भरा हुआ देखकर मुझे रोना आता था। पक्षी दिखाओ दें और अुनकी चहक सुनाओ न दे अिससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती थी? मिरज और जमखिण्डी (रामतीर्थ) के म्यूज़ियम तो अिसकी तुलनामें बिलकुल छोटे ही थे। लेकिन वे भी अब तक याद हैं। बचपनकी अिस दिलचस्पीके कारण आगे जाकर बम्बई, बड़ौदा कलकत्ता, जयपुर, मद्रास लखनऊ, लाहौर, कराची सारनाथ नालन्दा श्रीनगर, कोलम्बो, गौहाटी वगैरा स्थानोंके कम या ज्यादा प्रख्यात म्यूज़ियमोंको देखनेकी दृष्टि मुझे

मिली। अुसके बाद तो काश्मीरका अनन्तपुर, अशोकका पाटलीपुत्र और सिंधका मोहन-जो-दड़ो जैसे जमीनमें दबे हुअे स्थान भी बड़े शौकसे देख आया हूँ।

सौभाग्यसे मुझे बचपनमें पैदल और बैलगाड़ीसे मुसाफ़िरी करनेका खूब मौक़ा मिला, अिसलिअे मैं सभी जगह आरामसे देख सका। अिसके बाद तो रेल और मोटरकी हज़ारों मीलकी मुसाफ़िरी मैंने की है। अिस मुसाफ़िरीके फ़ायदे भी मैं जानता हूँ। लेकिन बैलगाड़ीकी और पैदल मुसाफ़िरीकी बराबरी वह कभी नहीं कर सकती। यह वाक्य अक्षरशः सत्य है कि जो पदल चलता है अुसकी यात्रा सबसे अच्छी होती है। (He travels best who travels on foot.)

* * *

मनुष्यके निर्माणमें जितना हिस्सा अुसके माँ-बाप और भाओी बहनोंका होता है अुतना ही अुसके स्कूल तथा खलके साथियों और शिक्षकोंका होता है। अिस विषयमें भी मैं बहुत कुछ वंचित रहा। बचपनके अिन बारह वर्षोंमें मैंने किसी अेक जगह लगातार पूरा साल नहीं बिताया। अिससे बचपनकी गहरी मैत्रीका मुझे अनुभव ही नहीं मिला। शिक्षकोंके बहुतेरे नाम मैंने संस्मरणोंमें दिये हैं। मेरे सबसे बड़े दो भाओी मेरे पहले शिक्षक थे। कारवारके हिन्दू स्कूलके धुमाधी और कामत अिन दो शिक्षकोंने मुझ पर स्थायी असर डाला है। आगे चलकर विद्याकी अभिरुचि पैदा करनवालोंमें पवार, चंदावरकर, नाड़कर्णी किचुर, गोखले और रावजी बाळाजी फरन्दीकर प्रमुख थ। पवार मास्टरकी निगरानीमें मैंन अंग्रेजी पाँचवीं कक्षाकी पढ़ाओी की। वे जातिके मराठा (अब्राह्मण) थे। शायद प्रार्थनासमाजके प्रति अुनमें भक्ति थी। अुन्हें संग्रही और ख़ास करके अंग्रेजी व्याकरणका शौक़ ज्यादा था। वे नियमितता अनुशासन व्यवस्था वग़ैराके तो हिमायती थे ही लेकिन होशियार विद्यार्थियोंके प्रति अुनका जितना पक्षपात रहता

कि वह छिप नहीं सकता था। चंदावरकर मास्टर विचारशील थे। अुन्हें मुन्शीके कह मुताबिक तीन 'प्रेम' का व्यसन था म्यूजिक, मैथेमेटिक्स और मेटाफ़िजिक्स (संगीत, गणित और तत्त्वज्ञान)। मेरे हिस्सेमें अुनका गणित ही आया था। अुसे वे बहुत अच्छी तरह पढ़ाते थे। अुनकी सज्जनता और साफ़-सुथरेपनका मुझ पर बहुत असर पड़ा था। लेकिन अुनके वरिष्ठ नाडकर्णी मास्टरकी सरलताको मैं ज्यादा पूजता था। विठूर मास्टर पुराने ढंगके देशस्थ ब्राह्मण थे। अुनकी विद्यार्थी-वत्सलता अुनकी कड़ाओीके नीचे भी नहीं छिपती थी। मैं जो थोड़ी-बहुत संस्कृत जानता हूँ अुसके लिओ अुन्हींका ऋणी हूँ। गोखले मास्टर बिलकुल नये जमानेके शिक्षक कहे जायेंगे। लेकिन जिन गोखलेका अिन संस्मरणोंमें जिक्र है, वे ये नहीं हैं। पर मैं मानता हूँ कि अिन्हींके कुटुम्बमें से होंगे। गोखले हमें अंग्रेजी भी पढ़ाते और सायन्स भी। अुनमें गुरुपन जरा भी न था। विद्यार्थियोंके अुन्हें मित्र ही कहना चाहिये। होशियार विद्यार्थियोंकी वो अितनी सूक्ष्मतासे तारीफ़ करते कि विद्यार्थी अुनकी ओर आकर्षित हुओ बिना नहीं रहते। अुन्होंने अपनी सायन्सकी अलमारीकी चाभियाँ मेरे पास दे रखी थीं। कभी दिल होता तो मैं चार विद्यार्थियोंको साथमें लेकर स्कूलमें खोलनेके लिओ जाता और घरमें कैमेरा अिस्तेमाल करनेकी आदत होनेसे स्कूलकी दूरबीनसे आकाशमें पृथ्वीका चंद्र गुरुके चंद्र आदि देखनेका मजा लूटता।

रावजी बाळाजी गरम्डीकर अेक समर्थ व्यक्ति थे। जहाँ जाते वहाँ अपनी छाप डाले बिना नहीं रहते थे। आगे चलकर वे ओज्युकेशनल अिन्स्पेक्टर हो गये थे। पाठ्यपुस्तकोंकी समितिमें भी नियुक्त किये गये थे। बचपनमें मधुकरी (भिक्षा) माँगकर अुन्होंने पढ़ाओी की थी। मैंने सुना था कि अुन्होंने मरते समय अपनी बचतके अेक लाख रुपये ग़रीब विद्यार्थियोंके शिक्षणके लिओ दे दिये थे। अुनसे पहलेके हेडमास्टर शाम्भ और अितिहासके निष्णात

थे। लेकिन अुनके प्रभावमें मैं ज्यादा नहीं आ पाया। हाअीस्कूल या कॉलेजमें मुझे कोअी अंग्रेज अध्यापक नहीं मिला। कभी कभी मनमें यह भाव अुठता है कि अंग्रेज अध्यापक मिला होता तो अच्छा होता। यह अिस आशासे नहीं कि गोरोंसे कोअी खास संस्कार मिलते बल्कि अिसलिअे कि अुससे मिले हुअे संस्कारोंमें विविधता आ जाती।

* * *

सौंदर्य या कल्पका प्रेम मने पहले प्रकृति और धार्मिक संस्कारोंसे ग्रहण किया था। लेकिन सौभाग्यसे कला या सौंदर्यानुभवका विधिवत् स्पष्ट मान तो बहुत देरसे जाग्रत हुआ। घरमें नौकर होते हुअे भी रोजानाका आटा घरमें ही प्रतिदिन पीसनेका काम मेरी माँ और भाभियाँ ही करती थीं। अुस वक्त बिस्तरसे अुठकर माँकी गोदमें सिर रखकर सवेरेकी मीठी नींद लेनेकी मुझे आदत थी। माँ चक्का और भाभी पीसते समय गीत भी गाती जातीं। काव्य और संगीतके साथ यही मेरा प्रथम परिचय था।

चैत्र मासमें जब गौरीकी पूजा होती तब गौरीके आसपास आरास (आराअिश सजावट)की जाती। अेक पूरे कमरेको सुन्दरताके अनेक नमूनोंसे सजानेसे कोअी कम तालीम नहीं मिलती थी। गुड़ियोंके प्रदर्शनसे लेकर कृत्रिम बगीचे और पानीके कृत्रिम फुहारे तककी सभी चीजें अुस आराअिशमें मौजूद रहती थीं। फिर हम घर-घर भिन्न-भिन्न आराअिश देखने जाते। गणेश-चतुर्थी पर भी अैसा ही होता था। बचपनसे मैं घरके देवताओंकी पूजा किया करता था। पूजनके साथ पुष्परचनामें दिलचस्पी पैदा हुअी। मन्दिरोंमें जानेके कारण गायन नर्तन, काव्य-श्रवण कथा-कीर्तन पौराणिक चित्र और रामलीला जैसे नाटक अुत्सवोंकी व्यापक विधियाँ और स्वादिष्ट प्रसाद आदिसे सात्त्विक कलारसिकताकी कीमती तालीम मिलती थी। घरमें त्यौहार और अुत्सव बड़े अुत्साह और भक्तिके साथ मनाये जाते थे। गणेश-चतुर्थी आती तो बरसाती तितलियोंकी तरह

घर-घर गणपति आ जाते, और तीनसे दस दिनके मेहमान रहकर निजधामको (अपने घर) चले जाते। अुस वक्तसे मेरे मनमें आता कि दरअसल ये गणेशजी बड़े समझदार हैं। अपना काम हो गया, मियाद पूरी हुआी कि चले अपने घर। मनुष्यको भी समय पर अपनी शिक्षा पूरी कर लेनी चाहिये समयसे अपनी नौकरीसे पेन्शन ले लेनी चाहिये समयसे अपने धन्धेसे निवृत्त हो जाना चाहिये और जीवनसे भी यथासमय विदा ले लेनी चाहिये। कहीं भी लालचसे चिपके नहीं रहना चाहिये।

ऋषि-पंचमीके दिन बैलकी मेहनतका कुछ न खाने और सालमें अेक दिन पशुद्रोहसे बचनेका व्रत मुझे बहुत आकर्षक लगता। मैंने हमेशा माना है कि यह व्रत सिर्फ बहनोंके लिये ही नहीं होना चाहिये। हरतालिका और वटसावित्री तो स्त्रियोंके खास त्योहार हैं। जिनके पीछे कितने बड़े पौराणिक कथा-कादम्बरी सृष्टि फली हुआी है! नाग पंचमीके दिन हम घरमें ही हाथसे नाग बनाते और अुसकी पूजा करते। चिकनी मिट्टीका बड़ा फनपर नाग बनाते और अुसके फन पर दसका आँकड़ा बनाते। अुसकी आँखोंकी जगह दो घुंघचियाँ बैठाते, दूर्वा दलसे नागकी दो जीभें तैयार करते। गोकुल-अष्टमीके दिन हम अेक बड़े पाट पर सारा गोकुल बनाते थे। चारों ओर किलेकी छोटी-छोटी दीवारें चुनते दीवारों पर घासके तिनकोंके सिरों पर कौवे बैठाते चारों ओर चार महाद्वार, अन्दर नन्द यशोदा बलराम, कृष्ण अुनका साथी पेंद्या, पुरोहित महाबल भट्ट गायें-बछड़े सभी हाथसे बनाकर गोकुलके अन्दर बैठा देते थे। अुस दिन सात पहाड़ियोंमें रोमको बसानेवाले रेम्युलस और रीमसकी तरह या गारेमें से फौज तैयार करनेवाले शालिवाहनकी तरह ही हमारा सीना गर्वसे फूल जाता। रामनवमी और जन्माष्टमी, तुलसी-विवाह और होली, प्रत्येक त्योहारका वातावरण अलग अलग होता था। गोपालकालाके दिन हम कृष्णलीला करके दही चुराते थे। जाड़ेके दिनोंमें दो पटनके

पहले नदीमें नहाकर हम मन्दिरमें काकड़ आरती देखनेको जाते। भाद्रपद महीनेमें श्राद्धके समय पितरोंका स्मरण करते। महाशिवरात्रिके दिन निर्जल अुपवास करके वचननिष्ठ हिरनोंको याद करते और महादेव पर अपने दूधका अभिषेक करनेवाली गायका स्मरण करके हम भी रुद्राभिषेक करते। अिस तरह कर्म-काण्ड, अुत्सव भक्ति व्रत वैकल्य, वेदान्त पुराणश्रवण वेदान्तचर्चा आदि तरह तरहके संस्कारोंसे हृदय समृद्ध होता था।

धार्मिक वाचनमें ठेठ बचपनमें अेक शनिमाहात्म्य और स्वप्नाध्याय पढ़ा था। स्वप्नाध्याय पढ़नेके बाद जो सपने दिखाओ देते अुनकी चर्चा हम दिन भर किया करते। सत्यनारायणकी कथाको तो हलुवेके साथ ही सेवन करते। अेक बार अेक शकुनवती हमारे हाथ लगी थी। अुसके अकों पर आँखें मूँदकर कमर रखकर हम भविष्य जाननेका प्रयत्न करते थे। अिसके बाद हमने जो धार्मिक अध्ययन किया वह था पाण्डवप्रताप रामविजय हरिविजय भक्ति विजय गुरुचरित्र सतलीलामृत शिवलीलामृत गजेन्द्रमोक्ष वगैरा ग्रंथोंका। कर्मकाण्डके साथ भक्तियोगका मिश्रण होनसे धार्मिक जीवनमें भी अेकांगीपन नहीं रहा। हम कुछ बड़े हुअे कि स्वामी विवेकानन्दके ग्रंथ मराठीमें आ पहुँचे। अुसमें से भगवद्गीताका अध्ययन शुरू हुआ। प्रबुद्ध भारत और ब्रह्मवादिन्' जैसे दो मासिकोंमें अंग्रेजीमें वेदान्तका सन्देश आता था। जिसमें कुछ लेखोंका सार हमें अण्णासे मिलता था। वाबाजी तुकाराम ज्ञानेश्वर आदि सन्तोंकी वाणीका परिचय कराया था। श्रीरामदास स्वामीके मनके श्लोक' हमने बचपनमें ही कंठस्थ कर लिये थे। पदों भजनों और गीतोंके प्रति अक्का और माँके कारण दिलचस्पी पैदा हुअी थी। सावंतवाड़ी जानेके बाद श्री रघुनाथ बापू रांगणेकरने पिताजी और अण्णाको राजयोगकी दीक्षा दी।

* * *

हमें कितना बुरा लगता है, अिसका प्रत्यक्ष अनुभव होनेसे औरोंके प्रति सहानुभूति रखना भी मैंने सीख लिया। अिसीलिये आगे चलकर महाराष्ट्रके बाहर जानेके बाद सिन्धी गुजराती मुसलमान, पारसी बंगाली असमी मारवाड़ी, मद्रासी आदि सब समाजोंके साथ मिल-जुलकर रहना मुझे अच्छा लगने लगा। और यह स्वभाव बन गया कि आदमी जितनी अधिक दूरका हो अुतना ही अुसके प्रति अधिक आकर्षण होता है। मनमें यह भावना दृढ़ हो गयी कि हमसे कुछ गलती जरूर हो रही है अिसीलिये अितने अुज्ज्वल धर्मकी विरासत हासिल होने पर भी हम अितने पतित हो गये हैं।

अिस तरह विविध प्रकारोंसे तैयारी हो जानेके बाद मैंने कॉलेजमें प्रवेश किया।